DIONYSI

HALICARNASENSIS

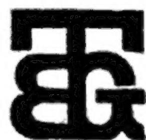
ANTIQVITATVM ROMANARVM

QVAE SVPERSVNT

RECENSVIT

ADOLPHVS KIESSLING

VOL. IV



LIPSIAE
IN AEDIBVS B. G. TEVBNERI
MDCCCLXX.



LIPSIAE: TYPIS B. G. TEVBNERI

ADNOTATIO CRITICA.

LIBER X

1 post inscriptionem libri haec leguntur in *AB*: *ἡ δεκάτη βύβλος τῆς ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας ἣν συνέγραψε* [*συνεγράψατο A*] *Διονύσιος ὁ Ἀλεξάνδρου Ἁλικαρνασεὺς περιείληφε τὰ πραχθέντα ὑπὸ Ῥωμαίων ἀπὸ τοῦ πρώτου τῆς ὀγδοηκοστῆς ὀλυμπιάδος ἔτους καὶ ἀπὸ τῶν* (om. *A*) *ὑπάτων Ποπλίου Οὐολουμνίου καὶ Ποπλίου Σολπικίου. χρόνος τῶν ὑπὸ τῆς βύβλου δηλουμένων πράξεων ἔτη δεκαδύο:* ∾ *Μετὰ δε κ. τ. λ.* | 4 *Σερουίλιος AB* | *Μακερῖνος B* | 5 *στρατείαν B* | 16 *βασιλεῖς ἐφ᾽ αὐτῶν* maluit Reiske | 20 *ἔργα A εἶτα Ba ἔργα εἶτα Bb* | *καὶ δὴ καὶ ἡ τοῦ δικαίου δ.* Reiske.

2, 3 *τοῖς ἐπιτρόποις* libri, corr. Reiske qui et *ἀκόλουθα ἦν* post *ἀρχόντων* transponenda censuit | 5 *βίβλοις ABb* | 8 *γεωργοῦντες διὰ* libri, *καὶ* inserui | 11 *Τεργέντιος AB* | 13 *στρατοπέδου A* | 15 *αὐτῷ* maluit Reiske.

3, 2 *διανοίας*? | 3 *ὅμοια τότε συνέπιπτεν* c. Reiske. | 4 *ἧττον δὲ καὶ μᾶλλον AB*, correxit Sylburg | 5 *δὲ* inserui ex *B* | 8 *ἔτι μετάρσια* Reiske | 9 *προσπετόμενα — ὅσα ἐστὶν ἀγελαῖα* maluit Casaubonus | 10 *τὴν* addidi ex *B* | 12 *διέμεινεν* Casaubonus inseruit, quo vocabulo addito *κείμενα* fortasse delendum est | *οἷα πάσχουσι* Casaubonus *οἷαν ἴσχουσι* libri | 14 *διαλυόμεναι* libri, quod correxi | 22 *ἀποτρέψαι B ἀποστρέψαι A* | *ἔσεσθαι A* | 23 *ἱερεῖα* maluit Stephanus | 29 *καταλύσασθαι δεῖν*?

4, 1 *καὶ πῶς* omisi cum *B* | *παύσεται τὸ στασιάζον A* | 7 *ἀνάξιον δρᾶν οὔτε ἄδικον A ἀξιοῦν οὔτε ἄδ. B* | 10 *ἔσεσθαι*] *γενέσθαι*? | 11 *ἔθη* libri *ἤθη* Sylburg | 14 *οὔτε δημόσιον οὔτ' ἴδιον* maluit Reiske | 15 *ἐγίνετο ABb* | 16 *μὲν* addidi ex *B* | 18 *εἰς ἐκκλησίαν*? | 24 *φρονίμους AB*, correxit Sylburg.

5, 16 *ἐπιτρέψουσιν* (*A*) | 20 *φανερωτάτου*? | 23 *ποίαν* uolgo *ποίας AB* | 32 *ἀρχαιρεσίων B*.

6, 1 *οὐκέτι* addidi ex *B* | 4 *ἀρχαιρεσίων B* | 8 *ἔν τι B ἔτι A* | 16 *ἴδια* om. *B* | 19 *αὐτὸν* libri | 24 *πρὸς λόγους* coniecit Reiske | 30 *αὐτοὶ B αὐτὸν A*.

7, 27 *μόνον μὴ Bb μόνον ABa* | 28 *εἰς ὀλίγους* scripsi *εἰς λόγους* libri | 32 *παρὰ τῶν πολιτῶν*?

8, 1 *πάσας* libri | 2 *τἀριστεῖα*? | 5 *ἀντὶ* addidi ex *B* | 13 *τὸ* addidi | 14 *Κόιντε AB* | 16 *πάρεστιν* libri *περίεστιν* Reiske | 24 *νῦν γ'*? | 25 *μεθ' ἡμῶν* maluit Portus | 26 *τε* om. *B* | 29 *ὅτι ἠγνόεις A*.

9, 1 *ἐπιτρέφων* libri, correxit Stephanus | 16 *νῦν γε δὴ ἡνίκα* maluit Reiske | 25 *εἰς* om. *B* | 26 *ὡς ἂν AB ὅσ' ἂν* scripsi | *εἰς τούτων ἕνα εἶπεν* coniecit Reiske | 31 *ὠμότητα καὶ* add. *B* | 32 *τοσαῦτα* addidi ex *B*.

10, 7 *μου* addidi ex *B* | 9 *ἐγίνετο* libri quod correxi | 14 *Λευκίου δὲ* addidi ex *B* | 17 *τῶν ὑπάτων* add. *AB* | 19 *προέλθοιμι* libri, correxit Reiske | 30 *ἡ τοῦ δαιμονίου πρόνοια* maluit Stephanus.

11, 4 *χρήμασι δὲ ἐγγυηθὲν B* | 11 *ψευδῆ* om. *B* | 12 *ὡς A ὅτ' B* | 16 *Τεβέριος B* | 19 *τὴν πόλιν* Reiske | 29 *τοὺς αὐτοὺς B*.

12, 13 *τῷ βιαίῳ τρόπῳ* mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 345 | 18 *δι' ἧς καταπλήξονται μὲν τὸν δῆμον ἀναβαλοῦσι δὲ* libri quae correxi; partem veri viderat Stephanus qui *καταβαλοῦσι* coniecerat | 25 *ταῦτα* om. *A* | 31 *εἶπαν Ba*.

13, 1 *προεῖδε τούτων ἄδικα AB*, correxit Sylburg | 3 *ἂν* om. *B* | 4 *δηλώσομεν* et 5 *πράξομεν Bb* | 5 *δέοντα A δόξαντα B* | 8 *παρηγγέλλετο AB* | 15 *ἀγείραντα* libri quod correxi | 18 *καταλυθείη B* | 27 *προσελθόντες* libri, quod correxi.

14, 2 τὸ om. *B* | 12 νεωστὶ om. *A* | 23 εἶεν libri εἰσὶν scripsi | 25 τι add. *B* | 28 ἄλλους aut abesse maluit Reiske aut scribere ἄλλους[τε πολλοὺς καὶ μάλιστα] τοὺς; ἀθρόους Grasberger Philol. XXVIII, 346 | 32 καὶ ἀναιρεθῆναι?

15, 5 ἡμετέρων (*A*) | 9 προτείνονται *A* | 11 δὲ omisi cum *B* | 12 ἥξει *B* ἥξειν *A* | 17 χωρήσειν quod correxi addidit *A* om. *B*.

16, 1 μηνυόντων *A* | 8 ἡμᾶς *AB* quod correxi | 12 καὶ om. *B* | 16 ἢ *B* εἰ δὲ μή που *A* | 24 πώποτε add. *B* | 26 ἀξιώσομεν *Bb* | 27 ποιεῖτε *B* | 28 οὐκ delevi cum *B* | 30 οὕτως addidi | 32 οὐ *Ba* οἷς *ABb*.

17, 8 συγχωρεῖν addidi ex *A*, om. *B* | 13 ὡς om. *B* | 15 ὄντος *B* οὕτως *A* quod fortasse praestat. | 20 οὕτως ὂν μέγα *A* | 24 εἰ om. *B* | 28 πρώτας om. *A* | 32 τὸ om. *B* | βούλημα libri, quod correxit Sylburg.

18, 2 ἐπιβαλόμενοι Reiske | 3 νῦν aut delendum aut in κατὰ νοῦν mutandum censet Reiske; an νῦν τε ὑμῶν? | 7 ἀξιῶσι *Ba* ἀξιώσῃ *Bb A* | 14 μὴ del. Sylburg et Reiske, et abfuit ab *Ba* | 17 δόξῃ] δοκῇ *B* | 21 τὴν addidi ex *B* | τε addidi ex *B* | 32 τῶν ἀντιπάλων Grasberger Philol. XXVIII, 346.

19, 2 συμβουλεύοντας καὶ omisi cum *B* | 5 εὐαγεστάτων *A* | 7 Οὐεργίνιε καὶ ὑμεῖς οἱ τὰ δ. maluit Reiske | 13 τί οὐκ ἄγετε proposuit Reiske | 14 πρώτου Reiske | 17 γινόμεναι *B* γενόμεναι *A* | 21 ὑμῶν *A* ἡμῶν *B* | οὐ καθ' ἡμῶν σ. ἀλλὰ κατὰ τούτων δ. maluit Reiske | 22 μάτην κρύψαντες coniecit Reiske | 30 ἀθρόως libri, quod correxi.

20, 6 ἵνα συντέμω Reiske συντέμω *A* συντεμῶ *B* | 7 παύσομαι libri, correxit Reiske; an v. 8 παραινῶν reponendum? | 9 ἐκφέροντας libri quod correxi | 12 τι om. *B* | 32 συμπράττων mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 346.

21, 5 τοὺς om. libri, addidit Reiske | 9 Τεβέριος *B* | 16 ἄκλειστοι ἀνειμέναι coniecit Reiske | 17 Καρμεντίνας libri quod correxi | 18 εἶχε libri εἷλε scripsi | 26 ἀνελάβοντο *AB* | 30 οὐδεμίαν om. *B*.

22, 6 *καὶ* om. *Ba* | 24 *ἐγνώσθη κεκρατημένα τὰ τῆς π.* maluit Sintenis Em. D. III, p. 15.

23, 1 *ὑμῖν* libri, quod correxi | 3 *ἡμῖν A ὑμῖν B* | 11 *τῆς* om. *B* | 16 *συνάρηται ABb συναρεῖται Ba* | 26 *πολέμους?* | *τά γε δίκαια* libri, correxit Sintenis l. l. III, p. 25 | 27 aut *διαφορὰς* aut *παρατριβὰς* coniecit Reiske | 31 *ὤμοσεν* libri *ὡμολόγησεν* scripsi | *συναίρηται Ba*.

24, 1 *προσθεῖναι* libri, correxit Hudson | 13 *ὑπὸ — σημαίας* maluit Sylburg | 14 *καὶ* om. *Bh* | 17 *ὁ κλῆρος* om. *Ba* | 24 verba *ὅσα τῆς πόλεως ἐντὸς ἦν* vix sana videntur | 30 *μόνων?*

25, 3 *ἐγίνετο B* | *δ' ἢ*] *δὲ AB* | 7 *ὑπὲρ*] *ἐπὶ* maluit Reiske | *τῶν λόφων B* | *συμφέροντες B* | *αὕων* scripsi *αὐτῶν A* om. *B* | 17 *ἀσκήσαντες* scripsi *καταστήσαντες* libri | 29 *ἐπιλιπόντων* maluit Reiske.

26, 32 *καὶ* add. *B*.

27, 10 *ἀπολειπομένων* libri, quod correxi | 13 *παραληψομένους τὸν ἄνδρα?* | 19 *τε* add. *B* | 22 *ἀμφιασάμενος AB*.

28, 9 *τὸ σώζειν*] *ἀποσώζει?* | 16 *Οὐολούσκους B* | 19 post *ὀμωμόκασι* in *B* tres litterae erasae; an *ἤδη?* | 20 *πολεμίους?* | 24 *χρήσασθαι* libri correxit Stephanus.

29, 4 *τελεῖσθαι* libri *τελέσαι* scripsi auctore Reiskio | 9 *ὅλης τῆς ἡμέρας A* | 22 post *ἀγαπῆσαι πολλάκις* intercidisse suspicatus est Reiske | 24 *ἐπεὶ A ἐπὶ B*.

30, 20 *καὶ* om. *B* | *ἄνδρας πολλοὺς A ἄνδρας μὲν οὖν πολλοὺς B*; *οὐ* addidi auctore Reiskio | 22 *σωσάμενοι?* | *διὰ τῶν ἐναντίων πυλῶν* coniecit Reiske | 27 *ὑπὸ τῶν διαφυγόντων?*

31, 19 *Τυσκλάνῳ A Τυσκλάνων B* | 20 *ἐλαύνων* om. *B*.

32, 2 *Ἄλγιδον Ba* | *Ἀλγηδόνα ABb* | 8 *δὲ* om. *Ba* | 10 *πεζοὶ οὖν ἀλαλάξαντες B*, correxit Reiske | 13 *ἔφευγον B φεύγοντες ἐσκεδάννυντο A* | 19 *ἐν* om. *B*.

33, 4 *αὐτῶν* om. *B* | 21 *ἦσαν δ' οὐ πολλοί?* | 29 *χώραν?*

34, 4 *παραλαβὸν Ba παραλαβὼν ABb παραλαβόντες* scripsi | 19 *ἐκ τοῦ φανεροῦ?* | 27 *γράγχος ABb* hic et passim.

35, 2 *ἔφερεν A* | 26 *λαλεῖτε· φηγὸν δείξας* Reiske | 32 *ἱερεῖς A* quod recipere debui.

36, 15 *ψιλοῖς B ὑψηλοῖς A* | 19 *βιάσασθαι δὲ?* | 21 *αὐτὸν* libri *αὐτῶν* Sylburg auctore Gelenio | 28 *ἀναγκαιότατον* libri, correxit Sylburg.

37, 4 *ὀλίγοις B τοῖς ἄλλοις A* | 7 *πολιτῶν* libri *βουλευτῶν* scripsi | 10 *Κοίντιον* praeter libros addidi | 22 *ἐκοσμεῖτο B* | 25 *ἀλλὰ καὶ?*

38, 4 *γενναῖον* libri quod correxi | 6 *λαβὼν* libri *παραλαβὼν* coniecit Reiske | 7 *ἧκεν* libri *ἦγεν* Reiske | 15 *τὰ πολέμια* seclusi, nisi malis *καὶ τὰ πολέμια δεινὸς* | 20 *πάλιν* add. *B* | *αὐτοῦ B* | 21 *ὁ* addidi | 25 *ἐπιέναι?* | 26 *οἱ* om. *B* | 28 *πανταχόθεν?* | 29 *διαλεξόμενοι?* | 31 *σώμασιν B*, an *σώμασιν ἄδειαν?*

39, 2 *χρήσασθαι* libri, correxit Sylburg | 10 *τῶν Αἰκανῶν* addidi ex *B* | *προήεσαν* libri *ἀπήεσαν* scripsi | *μετὰ τοὺς Ba μετά τ' οὐ Bb* | 14 *καθ' ἕνα* addidi ex *A* | 17 *περὶ* libri *ὑπὲρ* Portus.

40, 3 *ἀγαγὼν A* om. *B* | 5 *παντὶ B πάντῃ A* | *νόμῳ* libri, correxit Sylburg | 10 *τε* delevi cum *A* | 17 *μετειλήφει AB* | 26 *παρέλαβε* libri, quod correxi.

41, 2 *ἐν* om. *B* | 5 hiatum significavit Sintenis em. Dion. III 9 *καὶ τὴν πόλιν κατέσχον αὐτοί* intercidisse suspicatus | 6 . . . . *ρτῶνα Ba βοτῶνα Bb βιρτῶνα A* | 9 *γὰρ* addidi ex *A* | 15 *ἀνέστρεψαν* om. *ABa*.

42, 8 *φερομένης A* | 18 *ἀπεφήνατο μάλιστα ABa ἀπεφήνατο ἐν ᾗ μάλιστα Bb*; in *ἐν ᾗ* exitum participii ut [*πᾶσι κεχαρισμ*]*ένην* latere suspicor, nisi ut a correctore fictum deleas | 19 *πείθει B* | 22 *ἀναβάλλεσθαι Ba* | 23 *πλησιάσοντα* maluit Stephanus | 29 *ὑπὲρ* addidit Reiske.

43, 3 *ἐν αὐτῇ* vix sana | 5 *ἀπολήψεσθαι Ba ἀπολείψεσθαι* maluit Reiske | 28 *χρόνου A* om. *B* | *εἰ* om. *ABa*, add. *Bb*.

44, 1 *τὸν περὶ?* | 4 *ἡμεῖς* add. *B* | 5 *ὁ* om. *B* | *βίος ἡμῶν A* | 21 *ἐγκαταλιποῦσι B* | 24 *ταύτην γε διαφεύξεσθε* coniecit Reiske | 28 *οὐ γὰρ δὴ?* | 31 *τὰς δὲ A τὰ δὲ B τοὺς δὲ* maluit Sylburg.

45, 4. ὁρῶντες delet Cobet N. L. p. 272 | 16 λέγεσθαι add. *B* | 19 ὁ om. *AB* | 31 καταστησαμένοις?

46, 3 τῷ μεταδοῦναι *Ba* | 17 ἐνεγκάμενος *B* εἰς ἓν συνενεγκάμενος coniecit Reiske | 25 τὸν add. *B* | 29 ἐν τῇ libri ἐπὶ τῇ Sylburg.

47, 11 πλείους Sylburg πλείστους libri | 14 ἄρχον libri, correxit Sylburg.

48, 1 πολλὴν τῆς χώρας Grasberger Philol. XXVIII, 346. | 8 τινα addidi ex *B* | 9 πλέον addidi ex coniectura Reiskii | 14 πρώτοις *B* | 17 ῥωμαίοις *ABa* | 23 ᾤκητο libri, quod correxi | 31 ὑπὸ τῶν ὑπάτων addidi ex *B*.

49, 1 ῥίψαντες *Ba* | 3 ὑβρίσθαι δοκοῦντες *B* | 10 ἐπιβαλόμενον scripsi βαλόμενον *B* βουλόμενον *A* | 12 ὅπερ scripsi ὃ γὰρ *B* ἀλλ' ὁ ἂν *A* | 13 τοῦτ' εἶναι κύριον omissa ab *AB* seclusi | 22 ἐφῆκαν libri, correxit Sylburg | 24 τὸν delevi auctore Reiskio | 30 ὁ om. *AB*.

50, 6 λόφου νόμον *A* νόμου λόγον *B* | 7 ἐκ τοῦ δικαίου? | 11 ἂν delevi cum *B* | 20 συγκαταλέγοντες libri συναγορεύοντες scripsi ex coniectura Reiskii | 22 τοῦτο οἱ ἱεροφαντῶν *B* | 31 τρεῖς *AB*.

51, 12 sive παρέσχον ὠφέλειαν sive οὐ μικρὰ δ' ὠφέλησαν maluit Sylburg | 25 ἰδόντες *Ba* ut videtur.

52, 2 εἰς addidi ex *B* | 6 αὐτοὶ δὴ μόνοι ἐξουσίαν ἐκ τῶν νόμων *B* οἱ ἐκ τῶν νόμων ἐξουσίαν *A* | 10 καὶ addidi et lacunam significavi, sed utrumque male, cum codicum scriptura proba sit | 23 ὡς addidi ex *B* | 27 τὰ add. *B* | 29 ἑαυτῶν *B* | 30 ἀπὸ τῆς *A* τῆς *Bb* om. *Ba* || 31 μόνον δ' εἰς *B*.

53, 7 τῆς τε ὕβρεως *B* quod correxi, τε om. *A* | 20 ἂν μὴ βουλὴ *ABa* | 31 ἀπεῖναι *AB*.

54, 6 πάντα τὰ ἐγκλήματα *B* τὰ πάντων ἐγκλήματα *A* | 8 τοῖς νόμοις om. *ABa*, add. *Bb* | 9 κελεύουσιν ἢ ποιεῖν ἢ τεθνάναι libri, correxit Casaubonus | 18 κωλύσαν maluit Reiske | 24 ταῖς ἑξῆς ἡμέραις libri quod correxi | 28 ἐπιβουλῆς *B* | 29 τε add. *B* | 31 ἀφήκασι libri, correxit Sylburg.

55, 1 ἠδικεῖτο libri quod correxi | 7 τὰς ἡμέρας? |

10 *αὐτοὶ* ante *διελθόντες* delevi cum *AB* | 29 *ἐγὼ δ' ὦ AB* | 30 *καθ' ἓν ἕκαστον* maluit Sylburg.

56, 1 *μὲν* add. *B* | 2 *ὑπὲρ*] *περὶ AB* | 12 *τῇ σπείρα B* | 13 *ἐν αἰσχύνῃ* libri, correxit Reiske | 16 *αὐτοί γε B αὐτοὶ A*, quod correxi | 21 *τάγματος* Reiske *συντάγματος* libri.

57, 21 *καὶ ἑκατὸν* add. *B* | 29 lacunam significavi quam sic fere supplere licet: *ἀλλὰ* [*πάντας ὑποστὰς*] | *καὶ ἐν* scripsi *ἦν ἐν* libri | 31 *μόνοις B*.

58, 4 *ἔχετε* libri, quod correxi | *καὶ ἄλλων τινῶν* delevi cum *B* | 17 *ὑμέτερα AB* | 23 *προεχόμενος ABa προελόμενος Bb* | 26 *ὑπερβαλλόμενος B*.

59, 7 *τὰ γὰρ ἄλλα* maluit Reiske | 11 *πρῶτον* om. *AB* | 14 *λαμπρότατον*? | 21 *πολίτευμα τοῦτο B* | 32 *ὅτε*?

60, 8 *λάβετε*? aut *καὶ* delendum?

61, 3 *χρήσασθαι AB*, correxit Hudson.

62, 13 *βούλονται B* | 14 *τοῦ ἑπομένου B τότε ἑπομένου A* quod correxi | 14—16 verba inclusa quae in *AB* desunt delevi | 16 *παρῄεσαν B* | 17 *τῷ δήμῳ* omisi cum *AB* | 29 *καὶ τοῦτο καὶ AB*.

63, 7 *φοβερώτατον AB* | 11 *περὶ τῆς κληρουχίας* om. *A* | 30 *ἐπιτελέσασθαι B*.

64, 3 *τῶν* om. *B* | 8 *γοῦν* et *δύναμις καὶ* delevi cum *AB* | 16 *τῶν* om. *B* | 23 *οὖν* delevi cum *A* | 26 *τις* add. *B* | 29 *ἔπραξεν* libri, correxit Reiske.

65, 4 *τῇ* addidit Reiske | 7 *συμμάχων B* | 23 *κεχρημένῃ*] *ἐξηρτυμένῃ* mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 347 | 27 *ἀνίου B* | 32 *οὐ* om. *B*.

66, 3 *τοῖς* addidi | 7 *διατρίβειν τὸν χρόνον* coniecit Reiske | 10 *τοῦ* Reiske *τὸ* libri | 12 *ἐκ* delevit Sylburg | *προήγαγεν*? | 24 *εὐκατέργαστοι γένωνται* post *βιαζόμενοι* transponenda censuit Sylburg | 25 *τὸν* om. *Ba*.

67, 3 *αὐτοὺς A αὐτὸν B αὐτὴν* scripsi | 5 *ἐν αὐτῷ* Reiske | 26 *οἵ* om. *AB* add. Reiske | 27 *ψέλια AB* | 31 *ὡς ἀλάζων* add. *B*.

68, 3 *σοι θάτερον ἢ ζῶντα διεργάσασθαι* libri, quae correxi | 4 *ἀποδοῦναι* corruptum est; an *εἰς τὸ μηδὲν ἀποδοθῆναι*? | 8 *κατεγνωσμένον Ba* | 24 *ἀγαγὼν*? | *τε*

addidi ex *A* | 29 *καὶ* ante *ἄδηλον* aut delendum aut in *κατ'* mutandum esse censuit Reiske | 30 *κατὰ κορυφὴν* libri, correxit Reiske.

69, 2 *ἐπιόντα* mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 347 | 4 *σὺν πολλῷ πόνῳ χρόνῳ* coniecit Reiske | 5 *παρακείμενον* libri, quod correxi | 7 *ἐγένετο Ba* | 10 *παρεχόμενοι AB*.

70, 3 *ἀνήεσαν Bb* | 4 *τοὺς* om. *AB*, addidit Sylburg | 13 *τὰ* om. *Ba* | 15 *καὶ τῶν ἄλλων φιλοφρονήσεων ἡδονὰς AB*, correxit Reiske | 16 *ἅμα τοῖς ὑπάτοις* addidi ex *AB* | 17 *ἀπὸ* om. *AB* | 22 *ὀρθῶς* delevi cum *B* | 25 *μὲν* om. *AB* | 28 *καὶ σίτου* addidi ex *AB*.

71, 8 *εἰς ἐκκλησίαν B*; an intercidit *τὸν δῆμον*? | 14 *ἡ* post *δύναμις* om. *AB* | 16 *τὴν* addidi ex *A* | 19 *οὔτ' ἔλαττον* addidi ex *B* | 26 *οὐδὲ γὰρ οὐδ' ἡ βουλὴ* maluit Sylburg | 30 *ἀπέδειξαν B*.

72, 4 *περὶ τῶν ἀρχῶν* maluit Sylburg | 15 *θύσας εἰσιτήρια* coniecit Reiske | 19 *Λεύκιος* corruptum; an *Γενύκιος*? apud Livium III 31 est L. Allienus | 22 *προσεκαλέσατο* Reiske | 25 *ὑπατικοὶ B ὑπόδικοι A* | 31 *καιρὸς A χρόνος B*.

73, 11 *καὶ* add. *B* | 26 *ἀγαπήσειν AB* correxit Sylburg | 31 *αὐτῶν ἐκείνων* libri, correxit Reiske.

74, 8 *φρονοῦντα* libri quod correxi | 9 *οἱ πολλοί*? | 32 *μόνοις* om. *AB*.

75, 1 *ἐπ' αὐτοῖς ζημιοῦσιν AB* quod correxi | 7 *γράφειν AB* | 17 *ἑαυτῷ* libri, correxit Sylburg | 23 *ἕνεκα B χάριν A* | *ἔγωγε* om. *B* | *ὑμῖν* delet Grasberger Philolog. XXVIII, 349 | 26—29 verba *ἀπὸ τοῦ βελτίστου τὰ συμφέροντα ἐρῶ. θαυμάσῃ δὲ μηδεὶς εἰ πρότερόν τε πολλάκις καὶ ἡνίκα ὕπατος ἦν τῆς ἑτέρας* om. *A* | 31 *τὰ τότε καλῶς δόξαντα* maluit Reiske.

76, 6 *ἀραμένους* maluit Sylburg | 11 *καὶ* addidi ex *AB* | 25 *συνδικῶν ὑμῖν* libri, correxit Reiske | *προβαλόντας Ba προβάλλοντας ABb* | 29 *κεφάλαια*?

77, 19 *ἡγεῖσθαι* Sylburg *γίνεσθαι* libri | 21 *ἀποδείξασθαι A ὑποδείξασθαι B* quod recipiendum erat, *ἐπιλέξασθαι* coniecit Reiske.

78, 2 *Σερουίλιος Σολπίκιος AB* | 11 *δεδεγμένων B* | 13 *πρότερον B* | 16 *εἰς τὸ βοηθεῖν A ἔτι βοηθεῖν B* | 26 *ἀπορίας AB*, correxit Sylburg | 30 *ἀπογινομένων* libri, quod correxi.

79, 19 *Κοίντιος B Κόιντος A* | 20 *φρούριος* libri | 23 *πόλεως πονούσης*?

80, 5 *Σήστιος Bb Σίκκιος A* et *Ba* ut videtur | 9 *θαλείαις Bb* | 11 *καὶ* seclusi cum *A* | 12 *ἤχθη* libri, quod correxi | 14 *ἐπὶ* scripsi *ἐν* libri | 24 *ἐπὶ τῆς αὐτῶν ἀρχῆς* add. *B* | 26 *δεῖν* scripsi *δέον* libri | *ποιήσεται δὲ A ποιῆσαι τε Bb ποιήσειν δὲ* Reiske | 29 *ἀνύσειν Bb*.

81, 1 *Γενύκιον*] *Λεύκιον AB* | 2 *περὶ* addidi ex *A* | 7 *ἐμπεσούσης* libri, correxit Sylburg | 10 *ὧν* Reiske *ἦν* libri | 19 *ξένη νέαν* scripsi *ξένην* libri | 28 *πάντα βουλευσάμενος*?

82, 1 *τοὺς νομοθέτας* maluit Sylburg | 3 *παντὸς* addidi ex *A* | 4 *ἀποφαίνονται ταύτην τὴν γνώμην φανερῶς*? | 10 *νέαν* add. *B* | 12 *ἡμῶν*] *νέων*? | 14 *τῆς ὑπατείας* add. *B* | 16 *καὶ τὴν προθυμίαν B* | 30 *πρῶτον* libri *πρότερον* Sylburg.

83, 7 *τούτους* addidi | 8 *διαιτᾶν* coniecit Portus | 12 *θέντος* libri, quod correxi | 22 *τίτος λεύκιος γενύκιος AB* | 24 *τρεῖς τε* libri, quod correxi | 25 *Σερουίλιος* libri, correxit Sylburg | 32 *ἡ B αἱ A*.

84, 12 *ἑκάστου* Reiske *ἐπ' αὐτοῦ B ἐπ' ἐνιαυτοῦ A* | 13 *παραλαμβάνοντες B* | 15 *τ'* inserui | *ἰδιωτικὰ B δημοτικὰ A* | 20 *δεκαρχίας* libri, quod correxi | 24 *τῶν πολλῶν B* | 26 *σώφρονος* libri, correxit Reiske.

85, 13 *ἐκάλεσαν* libri, quod correxi | 25 *τε* addidi ex *B* | 28 *δεῖν* scripsi *δὲ* libri.

86, 13 *αὐτόν* addidit *B* | 14 *καὶ* ante *ὀχληρᾶς* addidi ex *B* | 15 *μετεῖναι AB* | 19 *ἀποδείκνυται μὲν οὖν πάλιν* maluit Reiske | 24 *Μάρκος Κορνήλιος καὶ* om. *AB* add. Sylburg | 25 *Σέργιος*] *Σερουίλιος AB*, correxit Sylburg | 26 *ῥαβόλιος* libri | 28 *δοιάλ·ιος BbA* | *ὄππιος Ba ἄππιος ABb*.

87, 4 *ὑπὸ* addidi ex *B* | 8 *μαίαις Ba μέαις Bb μέ-*

σαις *A* | 15 ἰσοτίμους τε ἅπαντας *Bb* | 21 παντὸς *ABa* πάντες *Bb* | 32 καὶ addidi ex *A*.

88, 1 ἐγίνετο *Bb* | 10 ἐπισκεψόμενοι *B* | 12 φαινόμενον coniecit Reiske | γένηται scripsi φαίνηται libri | 20 αὐτῶν om. *B* | 30 δοκεῖ οἱ πάσαις libri, ἐδόκει οὓς ἐκεῖνοι πάσαις scripsi οἳ πάσαις δουλεύοντες vulgo.

89, 3 καὶ delendum censuit Reiske | 10 τὰ addidi | 26 ὁ om. *ABa*.

90, 3—10 quae ex initio libri XI male repetita in libris leguntur, hoc loco delevi.

LIBER XI.

Undecimi libri codices mihi praesto erant hi:

L = Laurentianus Plut. LXX 5 chart. saec. XV.
V = Vaticanus 133 chart. saec. XV.
M = Ambrosianus A 159 sup. chart. saec. XV.
C = Coislianus.

Ex his libris fide et bonitate praestat Laurentianus, praeter Dionysii librum undecimum Appiani reliquasi continens, quem plerumque secutus sum; ex ipso enim archetypo lacerato et pessime habito accuratissime descriptus mihi videtur. proximus ei est Vaticanus qui undecimi libri fragmenta una cum decem prioribus Dionysii antiquitatum libris exhibet, quamvis interpolationis maculis hinc et inde inquinatus, tamen longe superior reliquis codicibus, velut Coisliniano et Ambrosiano, in quibus hae reliquiae ex ignoti cuiusdam Itali recensione emendatae vel potius depravatae leguntur. Laurentianum librum partim ipse partim Wilmanns et Dilthey amici excusserunt; Ambrosianum ipse contuli. Vaticani collatio ab Aem. Braunio in Ritschelii usum confecta mihi praesto erat, et de Coisliniani scripturis potioribus C. Wescher humanissime me certiorem fecit, unde intellexi plerumque eum cum Ambrosiano consentire. Elbingensis libri ab Ambrosio detecti accuratiorem cognitionem non habui.

91, 6 *στάδιόν* om. libri | 18 *περὶ τούτου* maluit Sylburg.

92, 2 *ἐπετέλεσα* *V* | 15 lacunam indicavit Reiske, qui *οὔτε ἀντιλέξαντες οὐδὲν* intercidisse coniecit | 21 *ἐν* om. *L* | 26 *παρὰ τοὺς — καιρούς*? | 31 *παραδείγματα τοιαῦτα* *M* *παραδειγμάτων ταυτὰ* *LV*; *ἐπὶ παραδείγμασι — πολλοῖς* maluit Casaubonus.

93, 7 *λέγω δὴ* (*M*) | 11 *δεκαρχίας* libri, quod correxi | 13 *γεννηθείσας* *LV* | 14 *ἦν ἡ* addidit Reiske | 16 *τὴν τρίτην ἀρχὴν τῇ δευτέρᾳ* proposuit Reiske | 21 *κατηγόρουν τε αὐτοὺς* *M* | 25 *ἐν τῇ πολιτείᾳ* maluit Sylburg.

94, 3 *συγγενὲς* Sylburg *ἀσθενὲς* libri | *τὴν ἔναγχος δεδομένην* maluit Sylburg | 7 *τε* libri *γε* scripsi | 9 *οὔθ' οἱ* Reiske *οὐδ' οἱ* libri | 17 *δυναμένους* *LM* | 18 *ἀσελγέσι* libri quod correxi | 19 *ἔθνους* *LV* *μέρους* *M* | 21 *Αἰκανοὶ* Casaubonus *ἐκεῖνοι οἱ* libri, an *ἔχειν οἱ*? | 31 *Ἠρήτῳ* Sylburg *ῥητῶ* *L* *ῥηγῶ* *MV*.

95, 2 *ἐκβαλόντες* *L* | 3 *ἀλγηδοπόλει* *L* *ἀργηδοπόλει* *M* *ἀλγειδοπόλει* *V* | 15 *μετρίαν* *L* | 16 *οὔτ'* libri, correxit Reiske | 24 *ἐπιτρέψη* libri | 28 *καταλυομένης* *MV* *καταλελυμένης* *L* | 30 *εἴ τι δόξειεν* libri quod correxi.

96, 2 *ἑταίρων* *LV* *γονέων* *M* | 4 *ταῦτα* *LV* | 6 *βουλεύοντας* maluit Reiske | 10 *τῆς πόλεως μέρος* coniecit Reiske | *οἱ δὲ καὶ ταῦθ'* libri, correxit Reiske | 17 *ἀνεβάλλοντο* libri, correxit Casaubonus | 20 *προσελθὼν* libri, correxit Portus | *δεκαρχίας* libri, quod correxi | *ἀπήγγελεν* *LV*, quod correxi | 26 *γαλέριος* hic et passim libri | 27 *μεγαλοφρονῶν* libri, quod correxi.

97, 2 *καθ' ἑαυτοῦ* maluit Reiske | 19 *κακοῦ* (*M*) | *ὅτε* libri *ὅτι* Sylburg | 23 *τὴν ἴσην ἐκείνῳ ἐξουσίαν* coniecit Reiske | 26 *βούλομαι* scripsi *βουλόμενος* libri.

98, 1 *Λεύκιος Οὐαλέριος* delevi cum *LV*, extant in *CM* | 7 *ὀρούγιος* libri | *πολέμια*? | 12 *σχολὴν* *CLaM* *χολὴν* *Lb*(*V*) | *με* (*V*) *μὲν* *CM* om. *L* | 13 *ἀναγκάσεις* libri, correxit Portus | 16 *βουλευομένους* *CL* | 19 *δ' ἡ διαδοχή*? | 25 *πράσσειν* libri, correxit Sylburg | 26 *ἀφείλεσθε* libri, correxit Casaubonus | 30 verba *ταῦτ' εἰς τὸν δῆμον βου-*

λεύεσθε ἐξενεγκεῖν absunt ab *MCa* | 32 *βουλευόμενον ὑμῶν L* | *κωλύσον* coniecit Reiske.

99, 1 *τὴν ἐξουσίαν* libri, correxit Reiske | 3 *τὴν* deest in *L* in lacuna sex litterarum | *δεκαρχίαν* libri, quod correxi | 5 *καὶ εἰ τοῦτο* desunt in *L* in lacuna decem litterarum | *ὑπομείνῃ LV ὑπομένειν C ὑπομείνει M*, unde colligitur in hiatu codicis Florentini esse reponendum *κἂν τοῦτο* | 6 *καὶ εἰ* om. *L* in lacuna quinque litterarum; an *μὴ δὴ*? | 7 verba *καὶ εἰ δίκαια ταῦτα δόξωσιν* quae prorsus inepta sunt omisit *L* in lacuna quindecim litterarum | 9 *τούτων* om. *CM* | *ὑμῖν* libri, correxit Hudson. | 10 *τε* om. *CM* | 20 *προελθὼν* maluit Portus | 22 *ἐπισχὼν MV ἐπισχεῖν L*.

100, 1 post *οὐδὲν* aliquid intercidisse ut *ἐνδώσομεν αὐτοῖς* suspicor | *δ'* inserui ex *LV* | 14 *κράτιστα*? | 16 *πρῶτον* libri praeter *L* | 22 *τιμῶν δὴ τὸ σ.* maluit Reiske.

101, 2 *ἡμῖν* proposuit Sylburg | 4 *ἀκούοντες* libri, correxit Reiske | 9 *προπολεμήσασαν LV* | 10 *ἕξειν LMV*; an *ὅρκον ἀπαντήσειν*? | 12 *χρήσασθαι LV* | 14 *τοὺς δέ γε* maluit Reiske | 23 *πολέμοις LV πολεμίοις M* ut videtur, Sylburg | 27 *τὰ ὅλα L τἄλλα VM* | 29 *διαφθεῖραι*?

102, 1 *ἐπαρθέντων* vix sanum est; an *ἐκ τῶν παρόντων*? | 4 *ἐκείνοις LM* | 12 *ἐπανορθούμενοι* scripsi ... *θούμενοι L ὠθούμενοι MV* | 13 *διαλεγόμενοι* Reiske *διαλεξόμενοι* libri, quod retinere debui | 13 *τε* (*M*) *τὰς LV* | 14 *νοῦν* (*V*) *νῦν LM* | 20 *εἰς τοῦτο καταστῆσαι τὸν π. L εἰς τοῦτον καταστήσαιντο π. V εἰς τοῦτο καταστήσαιντο περὶ πολέμων M*; correxit Reiske | 21 *σκοπεῖν* delevi cum *V* | 22 *οὕτως ἐχόντων καὶ M*; om. *LV* quos secutus sum | 23 *εἶχε V* | 24 *τοῦτον* et 25 *ἐκείνῳ* Reiske, *ἐκεῖνον* et *τούτῳ* libri | 28 *αὐτῶν* libri *ἄλλων* maluit Sylburg.

103, 1 *ἁπάντων συμφέρον* Sylburg *ἀπὸ τῶν συμφερόντων* libri | 4 *ἀπεχθάνεσθαι* libri, quod correxi | 10 *τῇ πατρίδι δώσιν V τῇ πατρίδι σώσειν L τῇ πατρίδι μέλει τοῦ καλῶς ἔχειν M* et volgo ex aperta interpolatione | 12 *ἄρξειν L ἄρχειν* Sylburg (*MV*) | 16 *δεκαρχίας* libri, quod correxi | 17 *ὅταν μάλιστα* libri, transposuit Sylburg | 18 *πάντως* libri *παντὸς* Sylburg | 19 *τοιαύτην* addidi cum

Sylburgio | 20 διαδέδειγμαι *LV* | 23 hiatum significavit Reiske; an supplendum φυλάξω δὴ τοιαύτην τοῦ β. π.? | 27 πάντες αὐτῇ μέγιστον — τεκμήριον· πάντες οἱ τὰ κοινὰ διοικοῦντες ὃ μόνον libri, quae transponendo sanavi | 28 ἡμῖν libri, correxit Sylburg.

104, 4 ἄγουσιν mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 348 | 6 ὅτι libri ὅτε Sylburg | 9 ὅτε γὰρ Hudson | 10 τὴν om. *LV* | 32 οὐδεὶς ὡς εἰπεῖν libri, correxit Casaubonus.

105, 4 καὶ addidi | 12 γενόμενον libri, correxit Reiske | 15 ἀρχὴν ὑμῶν *M* | 17 ἔσθ'] ἔθ'? | 32 γε Reiske τε libri | γενόμενον libri, correxit Sylburg.

106, 13 post πατρίδος intercidisse γεγενημένας coniecit Reiske | 20 πρόθυμος in μικρόθυμος correxit *Lb.*

107, 2 γὰρ om. *L* | ὁ addidi ex *L* | 15 οὖν *LMV* | 16 αἱ Portus ἐὰν libri | 20 κατὰ σκιὰς *V* καὶ τὰς σκοτίας *M* κατὰ σκοτίας *L*, correxit Sylburg | εὐηθειῶν libri, correxit Reiske | 26 χαρίεις τε καὶ *LM*, correxit Reiske | 27 στρέφε libri, correxit Reiske | 32 οὐδ' ἐν *M* οὐδὲν *LV* οὐδὲ volgo.

108, 3 γέ τοι *L* γάρ τοι *V* γὰρ *M* | μηδὲ maluit Sylburg | 9 ὑπέστρεψαν libri, correxit Casaubonus | 10 ἀκόλουθον *MV* ἀκολούθως (*L*) Reiske | 11 πάντες addidi ex *L* | 19 ἐκθέσθαι *MV* ὑποθέσθαι *L* | 20 μόνος μόνῳ libri praeter *L* | 23 πρὸς τὸν οἰκεῖον maluit Reiske | 24 ἕτερά τι *LV* | 25 δή τι Reiske δ' ἐπὶ libri | 27 ἐφ' *M* ἀφ' *LV* | 30 ἐν addidit Casaubonus.

109, 1 παρ' ἀνθρώποις quid sibi velint non magis intellego quam Reiske | 2 δή σου libri | 16 πλείω ταῦτα maluit Reiske | 26 ὀλιγαρχιῶν *LMV* | 30 τῇ φρονιμωτάτῃ libri, quod correxi | 31 τῶν ἰδίᾳ συμφερόντων?

110, 1 ἀνὴρ πρεσβύτερος libri, quod correxi | 6 ἀποδειξάμενος *LMV* | 11 ὦ addidit Sylburg | 12 ἀπόκλεισον *LV* 13 ὅσονπερ Sylburg ὥσπερ libri | 19 Ἰνρίλιον libri, correxit Sylburg | 22 δεκαρχίαν libri, quod correxi | 25 ἀποδείκνυμι libri, correxit Sintenis Em. Dion. II, 14 | 26 ἂν delevi cum *L* | 27 νέαι ἀρχαὶ? idem suasit Grasberger in tess. Herbip. p. 34. | 37 Κόιντος libri | ὁ om. *LV*.

111, 1 δέκα praeter libros ab editoribus expulsum

restitui | 4 τιμῆς ἀξίωσιν? | 11 οἵ L εἰ (MV) | 12 οἷαν addidi praeter libros | 15 ἔχουσι omittunt libri, addidit Sylburg | 16 orationem corruptam et fortasse mutilam sic restitui posse existimavit Reiske: οὓς ἐχρῆν οἷον ἐντελῆ [καὶ ὁλόκληρον τοῖς πολεμίοις αὐτὴν] φυλάττειν | 24 τοῦτό γε Casaubonus τούτοις libri | 25 θεοβλαβείας ἀπεῖναι ἐοίκασι? verba οὐ πόρρω δὲ θεοβλαβείας cum praecedentibus coniunxit Reiske, sic pergens: [οὕτω δὲ] πεποιήκασι.

112, 1 μετανάστατον libri, correxit Sylburg | 11 πονηρὰς addidi | 12 λέγουσι Reiske ἔχουσι libri | 15 βουληθέντα V | 16 ἂν om. LV | 17 ἄλλως Casaubonus ἀληθῶς libri | 20 παραιτοῦντας libri, correxit Sylburg | 28 μηδὲ δυνάμεις? | 32 εὐπρεπῆ M.

113, 3 ἐκβολὰς M | 4 διαλύσατε LV ληψόμεθα M | 12 ὑμῖν LV | 19 ὑπονοθευομένῃ libri, correxit Sylburg | 27 ὡς delevit Reiske.

114, 5 ἡμῖν LM | 9 ἀμφοτέραις libri, correxit Sylburg | 11 λάβοι L | 13 λόγον ἀπαιτεῖται τοῖς δέκα V | 15 καὶ τιμωρεῖσθε addidi | 20 τὴν om. L | 22 ταῦτα addidi ex LMV | 26 ἐκ addidi ex LMV.

115, 7 αὐτοῖς libri, correxit Sintenis Em. Dion. II, 25 | 13 τὰ seclusi | 14 ἐστὶ libri ἔσται auctore Sylburgio Sintenis l. l. | 15 δεκαρχίας libri | 25 ὑμῶν Sylburg male.

116, 2 οὐδεμίαν ἐμὴν coniecit Reiske | ὑμῖν La ἡμῖν Lb V | 5 εἰκῇ maluit Reiske | 7 ὧνπερ νῦν coniecit Sintenis Em. Dion. II, 12 | 10 γενυκίου libri Μινυκίου Sylburg | 17 Σαβίνων libri, correxit Sylburg | 18 εἶναι scripsi ἦν libri, quod nunc retinere malim | μήθ' libri μηδὲν Reiske | 25 εὕρασθε libri | ἥπερ M ἧπερ L ὅπερ (V) | 27 verba περὶ μέσας νύκτας εἰς τὸ βουλευτήριον συνελθόντες, quae in libris post εὕρασθε ὑμεῖς v. 25 leguntur, huc transposui | 28 ἀποδεῖξαι LMV | 29 καὶ εἰρήνης (M) τῆς εἰρήνης LV.

117, 4 αὐτὸν LV | 6 καὶ delevi cum LV | 8 κωλύσον libri, quod correxi | 10 ὑμᾶς libri, correxit Sylburg | 12 ὑποβαλώμεθα LV | 16 ἐπιτηδειότερον libri, correxit Reiske | ἐκλέξαντες libri, quod correxi | 18 μεσοβασιλεῖς libri, correxit Sylburg | 25 τῇ τοῦδε προφάσει maluit Reiske.

118, 3 *εἴη* libri *ἦν* Sylburg | 4 *αὐτῶν V αὐτῷ L* | 8 *ἀναδικασίαν* maluit Reiske | *τῶν γνωμῶν* coniecit Sylburg | 12 *συμβασιλεύων LMaV συμβουλεύων Mb* | 17 *ἑκατέρου*? | 23 *τῶν Κορνηλίῳ L*.

119, 1 *διέγνω τὰς LV διέγνωτε* Sylburg | 2 *περὶ ὧν LV παριὼν* Reiske | 4 *νόμων L νόμους MV* quod correxi | 13 *στρατοῦ ποιεῖσθαι* maluit Reiske | 20 *καὶ στρατιᾶς* addidi ex *L* | 22 *ὡς* addidit Reiske | 23 *καὶ* abesse malim | 24 *ἀγενεστέρων LMV* | 25 verba *καὶ κατανέμειν ἑαυτοὺς εἰς τὰς ὀλιγαρχικὰς* (sic *LV*) *ἑταιρίας* desunt in *M* | 30 *φυλακῆς L* | 31 *μετανάστάσει* libri, correxit Reiske.

120, 1 *δεκαρχίας* libri, quod correxi | 5 *μήτε τι VM μητ' ἐκ L* quod recipere debui | *μήτ' ἐκ τοῦ δολίου* om. *M* | 6 verba *μήτ' ἐκ τοῦ φανεροῦ δειλίαν καταγνωσθῆναι* quae prorsus inepta sunt cum *LV* seclusi | 10 *ἀνόητον* scripsi *οὐ ῥάδιον* libri | 11 *οὐ ῥάδιον* scripsi *ἀνόητον* libri *ἀνήνυτον* maluit Reiske | 13 *ἦν* addidit Sintenis Em. Dion. III, 6 | 20 *ἀθρόον MV ἀθρόου L*.

121, 1 *δὴ* addidit Portus | 3 *πατρίους L* | 4 *μὲν γὰρ* maluit Sylburg | 7 *διέμεινεν MV* | 15 *ἀφείλαντο* libri | 29 *Ἄππιος MV* | 30 *Πουτέλλιος* libri.

122, 7 *σύμμαχον* vel *συμμαχικὴν* maluit Reiske | 13 *καὶ φάλαγξ* addidi praeter libros | 23 *ἀργιδίῳ LMV* | 25 *λαμβάνοντες ὑπὸ L* | 26 *ἐπανορθωσάμενοι LV*.

123, 6 *ὅσοιπερ* scripsi *ὅσοι γὰρ* libri | 15 *ἐκ πολλῆς ὑπεροψίας* libri, quod a Reiskio deceptus mutare non debui | 25 *καὶ* addidi ex *L* | 31 *οἱ δὲ M οὐδὲ LV*.

124, 2 *ἐγίνετο δὴ*? | 18 *ἀριστεῖα* libri, quod correxi | 26 *δὴ L δὲ V* om. *M*.

125, 7 *τῶν ἐκεῖ ἡγεμόνων* maluit Sylburg | 11 *τῇ γοητείᾳ* libri, correxit Sylburg | 12 *ἐγίνετο L* | 13 *ἐπύθετο V ἐπείθετο LM ὑπέθετο* Sylburg | 26 *εὐζώνων M*.

126, 3 *ἀνιόντι Lb ἀπιόντι LaMV* | 4 *ὡς ἅμα χωρήσοντες* Sintenis Em. Dion. III, 14 *ὡς ἀναχωρήσοντες LMV* | 6 *πολέμια*? cf. quoque Grasberger tess. Herbip. p. 35 | 12 *ἅμα πολλῶν L πάντων πολλῶν ὄντων VM* | 13 *ἅμα περὶ L* | 17 *τι* delevi cum *LV* | 21 *τὸν ὄχθον* Reiske *τῶν ὄχθων* libri | 28 *διέσπειρον* maluit Sylburg.

127, 5 *τῷ* addidi ex *V* | 6 *τιμαῖς* libri, quod correxi | *διαφόρου L διαφόροις VM* | 11 *ἀναίρεσιν L* | 15 *περὶ Va ἐπὶ Vb* | *βουλῆς V ἐπιβουλῆς L* | 17 *τε οὐδαμοῦ* delevi cum *LV* | 19 sive *ὑποκαθίζεσθαι* sive *λόχους* mavolt Grasberger tess. Herbip. p. 36. | 25 *περιείλαντο LbVM εἵλαντο La*; an *ἀφείλοντο*?

128, 2 *ἀκοντί τ' LMV* | 3 *ἐνυπόστατον M* | 6 *αὐτός γε LV* | 8 *ὑπὸ βελῶν* pro *ὑπὸ μαχαιρῶν* maluit Reiske | 11 *οὐδὲ μιᾷ LM*, correxit Portus, qui totum locum sic scribendum censuit: *πάντες μαχαιρῶν μέν, χερμάδων δὲ ἢ σαυνίων ἢ βέλους οὐδεμίαν* | 11 *ἀγανάκτησις δὲ L* | *καὶ πάντων MV* | 12 *ὀδυρμὸς MV ὁ δρόμος L* | 25 *ἐπαρχόμενοι* libri, correxit Sylburg | 30 *τοῦ πρεσβυτάτου MV*.

129, 4 *πολέμια* mavolt Grasberger tess. Herbip. p. 36. | 11 *τὴν* om. *L* | 16 *περιιέναι V* | 21 *δι' ὑπεροψίας*? | 26 *διδομένων* libri, quod correxi | *παρειγγέλλετο L παρηγγέλετο V* quod correxi | 30 *ἔπειθεν V*.

130, 17 *καὶ* delevit Sylburg | 18 *Νομιτόριος* libri | 21 *ἐνεγγυημένος* libri, quod correxi | 28 *χρόνον La λόγον MVLb* | 30 *αὐτῆς* Sylburg *αὐτὸς* libri | 31 *ἐμοὶ LV*.

131, 11 *ἔγγονα LV* | 12 *μὲν οὐσῶν* Reiske *τε οὐσῶν* libri | 16 *ὑπέχειν τοῖς βουλομένοις* coniecit Reiske | 17 *καθίστησιν* libri, quod correxi | *ἀξιοχρέους L* | 18 *τὴν* addidi | 20 *μήτε* libri *μηδὲ* scripsi | 21 *προσλέγειν* libri, correxit Reiske | 27 in *οὖν ἣν* latere videtur *γνήσιον* vel tale quid; *ἣν* abest a *MV* | 32 *τραφεῖσα L*.

132, 3 *ἔστη* libri, correxit Casaubonus | 6 *δὲ* delendum censuit Reiske | 13 *στρατείας* libri, correxit Sylburg | 16 *τὰς δίκας* maluit Reiske | 17 *ἀποδίδοται* libri, quod correxi; Reiske audacius totum locum sic refingere voluit: *τοῖς ἄλλοις ἅπασι δέδοκται Ῥωμαίοις δίκαιον, εἰ δὲ μὴ δεῖ ὑποστέλλεσθαι πᾶσιν ἀνθρώποις* | 24 *δεκαρχίας* libri | 32 *πάντων ὃ* libri, transposuit Portus.

133, 9 *ἔδοξε* libri *ἔλεξε* Casaubonus | 27 *τόνδι' ὑπὲρ τῆς ἐγγυήσεως L*; an *τὸν ὑπὲρ τῆς διεγγυήσεως*? | 29 *τοὺς ἀφαιρουμένους LM*.

134, 2 *ἐκεῖνο L* | 3 *ἀξιοχρέους L* | 9 *ὑπὲρ M ὑπὸ LV* | 12 *τε* addidi ex *L* | 14 *ἀπέξεται L* | 17 *ἀρνοῦ* om. *M* | *κέλευε*

addidit Sylburg | ἀποκόψας libri, correxit Sylburg | 24 ἤ τοι scripsi ἤτοι ἢ LV ὅτι ἡ M | 28 ὑπὸ L | 31 πένθος libri πάθος scripsi.

135, 14 ἐᾶσαι μὲν τοῖς συγγενέσιν τὴν παρθένον, δοῦναι δὲ ἐγγύησιν maluit Sintenis Em. Dion. II, 10 quae non intellego | 19 αὐτὸν scripsi αὔριον libri | 25 μεθεῖσθαι libri, correxit Reiske | τοῖς παρθένου L | 30 δοκῇ τοῦτο πράττειν scripsi δίκῃ τοῦτο πράττῃ libri.

136, 1 καὶ delendum censuerunt Sylburg et Reiske | 2 ὑφ' ὃν libri | αὐτοῦ κατέχειν maluit Reiske | 18 τε addidi ex V | 32 τεύξωνται LV, correxit Sylburg.

137, 2 ἵνα delevi | 10 τὰ addidi ex L | 11 ἀνελάμβανε libri, correxit Reiske | 14 ἕξειν LM | 15 ὁποίαν L | ἂν addidi | 16 ἀνάγκη libri, correxit Stephanus | 17 τῶν τέκνων δεομένην vix sana sunt | 30 τὴν addidi | 32 ὡς addidit Sylburg.

138, 5 τὸ τικτόμενον deleto παιδίον? | 6 ἐπεδείκνυτο libri, correxit Sylburg | ἠξίου VM | 8 πολλῶν libri, correxit Reiske | 15 ἐν libri ἐπὶ scripsi | 17 τὸν λόγον La | 20 καλλὸν L; an κάλλος? | 22 ψυχῆς L | 30 διεφθαρμένον L.

139, 2 τῆς κόρης om. LV | 3 πλείονος ἦν LV | 6 καταφανὴς libri, quod correxi | 7 τοῖς τἀληθὲς ὑπονοοῦσιν coniecit Reiske | 8 ἔγραψε LV ἔπλασε M quod correxi | 12 ἐλάμβανε libri, correxit Casaubonus | 22 παῖδα libri νήπιον scripsi | 26 περὶ LV | 28 ἐμαυτῷ οὐ προσήκει L | 32 χρηματισθεὶς ἢ libri, correxit Reiske.

140, 7 εἶχον libri, correxit Sylburg | 18 τε quod libri post σιωπὴν addunt delevit Sylburg | 19 παύσησθε LV | 23 κατὰ πετωλίου L | 25 παρασκευάσαι libri, correxit Sylburg.

141, 1 aut ὑπεχώρουν aut ἀνεχώρουν aut ἀπεχώρουν maluit Reiske | 12 εἰς τὴν libri αὐτὴν Portus | 13 κατέχουσαν libri, correxit Reiske | 15 ἦν om. L | 19 κατὰ γῆν libri, correxit Sylburg | 20 οὐχὶ scripsi οὐχ libri | ἔχειν addidi ex L | 21 σφραγίδα La quod correxi, μάχαιραν LbMV | 22 ὃ προσέφυσεν libri, correxit Casaubonus.

142, 10 ὁ δ' ὡς εἶχεν ὀργῆς πέμπει maluit Grasberger

tess. Herbip. p. 37 | 11 τάχους addidit Sylburg | 16 μὲν Portus δ' libri | 17 δὲ inseruit Portus | 21 περιβαλλομένων libri, correxit Sylburg | 25 ὁ om. *L* | 26 κελεύευειν (*sic!*) *L* | 31 ἔχοντες maluit Sylburg | 32 ἐγίνοντο libri, quod correxi.

143, 1 προπηλακιστὰς *L* | 6 κωλύσεως libri, correxit Sylburg | 18 ὀλιγαρχῶν libri, correxit Portus | 25 αὐτοὺς δὴ τοὺς *M* | 26 ὀλιγαρχικῆς libri, correxit Reiske | 31 ἐπιβαλλόμενος libri, correxit Reiske | 32 ἂν add. Sylburg.

144, 2 τῆς addidit Reiske | 10 ἔμελλον libri, quod correxi | 13 κόμης libri, κομίζουσαι Lobeck Aglaopham. p. 1095 | 20 ὀλιγαρχιῶν libri, quod correxi | 30 σφαγίδα *La* μάχαιραν *LbMV*.

145, 6 θορύβων *MV* θορύβου *La* θορύβω *Lb* | περιεχόμενοι libri, correxit Sylburg | 24 ἐκλογιζόμενος libri, quod correxi.

146, 6 τισι] σφίσι? | 9 ὑμῖν add. *L* | 15 καὶ addidit Reiske οἰκεῖα φύσεως προγόνων maluit Sintenis Em. Dion. III, 24 | 24 ἄλλους addidi ex *LV* | 32 διαχειρισαμένης *M*.

147, 1 ἐπὶ τῷ πάθει post παρωξύνθησαν transposita in *L*. | 13 καὶ ὑπομενεῖτε *M* | 16 πολλαὶ libri, correxit Sylburg | 18 καὶ add. Reiske | 19 τοῦ *MV* τούτου*L* | 21 ἡμῶν *L* | 25 σκαιότητος *M* κακότητος *LV* et *M* in margine | 26 νοούμενα libri, correxit Reiske.

148, 2 ὅτε libri, quod correxi | 16 παύσωσι libri, quod correxi | 27 τοὺς σφετέρους *CbMb* τοῖς σφετέροις *LVCaMa* | ἐῶντας om. *L* in lacuna quattuor litterarum | 32 vocabula uncis inclusa hinc usque ad finem capitis desunt in lacunis *LV*, addita sunt in *CM* vulgo ex foedissima interpolatione.

149, 2 ὄχλους libri, quod correxi | 3 ὡς *CM* ὅτι *LV* | 4 χρηστὰς λαβόντες ἐλπίδας? | 9 δι' ἀνδρίαν *L*, unde δι' ἀνανδρίαν correxi | 12 ὅσοις *M* | 16 πᾶσι corruptum videtur, νομιζόντων τοῖς πᾶσι *V*.

150, 8 ἡγούμενοι καὶ om. *MV* | 11 πλήθεσι? | 14 τοσοῦτο *L* | 16 πορευθέντες maluit Reiske | 25 οὐδὲν libri, quod correxi; οὐδένα οὐδέν maluit Reiske | 29 θ' scripsi δ' libri | 32 ἄππιος libri Ὄππιος Sylburg.

151, 7 πρότερον libri, correxit Sylburg | 17 ἄπιον et 26 ἄπιος libri, correxit Sylburg | 29 τὸ δέος *M* | 32 οἱ addidit Sylburg.

152, 5 ἀπεῖναι libri, correxit Sylburg | κατέχοντας scripsi ταχθέντας libri | v. 14 hic in libris sequitur lacuna, in *L* cum nota λείπει φύλλα β̄, quam excipiunt verba μηδὲν δὲ αὐτῶν cap. 52 usque ad finem libri; ordinem restituit Sylburg | 18 ἥρμοττον *L*.

153, 2 λέγειν *La* γράφειν *Lb* reliqui | 6 προέκειντο maluit Sylburg | 13 αὐτὸν libri αὐτοῖς Reiske | 14 ἴδιον libri, quod correxi | 26 ὑπὸ τὴν δίκην maluit Reiske.

154, 4 τῶν πολλῶν? | καὶ delere voluit Reiske | 14 ἐπιδειχθεῖσαν libri, correxit Reiske | 18 ἄπιος libri | 25 τῶν πολιτικῶν οἱ *V* τῶν πεφευγότων *M* τῶν πο........ *L*, quod correxi | 27 ἐπιλαβόμενος *MV*.

155, 3 πολιτῶν libri πολλῶν festinantius reposui | τῶν inserui et hiatum significavi; ἐν πολεμίων γενέσθαι λόγῳ προσδοκώντων Grasberger Philol. XXVIII, p. 349. sed hostium mentionem necessariam esse demonstrant quae sequuntur | 5 κατὰ πόλεις *LV* | 6 τὴν βουλὴν om. *L*, in lacuna | οἱ ὕπατοι addidit Reiske | 15 ἐπαρθέντας Reiske παρόντας libri | 18 δεδιότως maluit Reiske | 26 καταλιπομένην *LV* | 28 παρέστησεν libri, quod correxi | 30 ἑξῆς om. *L* in lacuna.

156, 1 ταχέως ἧκον Reiske τοῦ ἄστεως ἧκον *MV*, om. *L* in lacuna | 2 εἶχον om. *L* in lacuna | 9 verba τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν κρατήσαντες χρήματα πολλὰ καὶ λείαν ἄφθονον περιεβάλοντο in solo *L* servata addidi | 14 προαγαγὼν, quod in libris post ἔγνω v. 15 legitur, huc transposui | 16 ὅλῃ δυνάμει om. *L* in lacuna | 18 verba uncis inclusa desunt in *L* in lacuna et manifestam interpolationem redolent | 19 verba πρὸς τοὺς usque ad προηγούμενος v. 21 in *L* a priore manu omissa supplevit *Lb*, sed item ob interpolationem mihi suspecta sunt; ἦν γὰρ etqs. ad Romanorum ducem referenda esse apparet | 20 ἀντεχομένους *LbM* ἀντιμαχομένους *V* | 26 τετυχηκὼς om. *L* in lacuna | αὐτῶν *L* αὐτοῦ *MV* | 27 ἀποσκευὴν

.........ων πολλὴν *L* | 30 ante ἀνεσώσατο in *MV* adduntur εὗρε καὶ, quae omisi cum *L*.

157, 7 καὶ om. *L* in lacuna καὶ ἦν *MV*, καλὴ Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 8 γε]τε *L* | 10 εἰς quod addidi om. libri | 19 ὅσα οὗτοι πολιτευόμενοι *MV* ὅσα τοῦ ..... πολιτευόμενοι *L*; an ὅσα ὑπὲρ τοῦ δήμου π.? | 23 συνθήκας γενομένην? | 29 ἐλέου reponendum, cf. Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 30 ἁνὴρ scripsi ἀνὴρ libri | ἀνὴρ ἀπέφυγεν ἂν maluit Reiske | 31 πολλὰ ἃ τὸ κοινὸν ἐφαίνετο εὖ πεπ. coniecit Reiske | 32 ἄνθρωποι scripsi ἄνθρωποι libri.

158, 2 ἄλλα *L*, quod reponere debui | φέρων add. *Lb* in lacuna | εἰς οἶκτον ..... ομένου τὸ π. *L* | 3 δὴ *MV* δὲ *L* | 4—5 ὑπάτων πολ......... τῶν παρόντων *L* cum lacuna fere viginti litterarum, ὑπάτων πολλὰ κατ' αὐτῶν ἐκχέαντος Κλαυδίου Γαίου καὶ αὐτῶν παρόντων *V* ὑπάτων πολλὰ φέρων εἰς οἶκτον ἐφελκόμενα τὸ πλῆθος κατ' αὐτῶν ἐκχεάντος Κλαυδίου Γαίου καὶ αὐτῶν παρόντων *M*; lacunam sic fere suppleverim ὑπάτων [ἐκχέαντος Κλαυδίου καὶ ἐπαινεσάντων ἁπάντων] τῶν π. | 7 τιμῶν scripsi τινῶν libri | τοσούτων? | συγχωρήσεων libri, quod correxi | οὔτε *L* | 14 νόμων libri, correxit Reiske | 23 αὐξηθεῖσαν maluit Reiske | ὀλίγοις libri ἀλόγοις scripsi | 25 δόξα δ' αὕτη ἰσχυρὰ coniecit Reiske | 26 τοῦ addidit Reiske | 29 Ἐρουίνιος libri, correxit Sylburg | 30 Μάρκος Γε libri qui hic desinunt, vide quae dixi ad p. 152, 14.

159, 2 κάπτιος *L* κάπλιος *V* κάτλιος *M* | 6 ὁρῶντες del. Cobet N. L. p. 272 | 7 καπτίου *L* καπλίου *V* | 19 τῆς ἀμφισβήτου μὴ γῆς *L* τῆς ἀμφισβήτου γῆς *VM* quod correxi | 22 αὐτοὺς maluit Reiske | 25 ἑτέροις *MV* ἑτέρων *L* | 27 καδδείσσιον *V* καδδίσιον *M* | 31 μινυκίου *M* μενυκίου *V* γενυκίου *L*.

160, 27 καὶ δεόμενοι Reiske δεόμενοι libri.

161, 5 ὑπὸ τῶν ὑπάτων scripsi ὑπ' αὐτῶν libri | 6 verba ἔχουσι δ' ἐξουσίαν ἐναντιοῦσθαι δήμαρχοι τοῖς ὑπάτοις quae glossema sapiunt seclusi | 13 οἱ δήμαρχοι scripsi οἱ δὲ libri | 15 ἐάσειν *La* ἐλεῖν *Lb* | 16 ὑπ' Sylburg ὑπὲρ libri | 21 διωμόσαντο Sylburg διομοσάμενοι libri | μηδὲν

scripsi *μηδέ τι* libri | 22 *καταλύειν M*, om. *LV* | 25 *εἰς ἰδιωτικὸν σύλλογον οὐχ ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἀλλ' αὐτοὶ* maluit Reiske.

162, 1 *ποιούμενος LMV* | 19 *ψῆφον ἀναλαβεῖν*? | *οὐ δυνάμενος LMV* | 20 *μόνος* addidi ex *L* | 21 *βουλήμασι* libri, quod correxi | 27 *ἐστι* add. *L* | 30 *χιλιάρχους μὲν* maluit Reiske | *ἀποδεικνύναι* maluit Portus | 32 *τε* scripsi *δὲ* libri.

163, 1 *ἐλάττονος ἀριθμοῦ* libri, correxit Reiske | 4 *καταβάλητε* libri, correxit Reiske | 10 *λόγον* addidit Sylburg | 13 *ἄρξησθε V ἄρξεσθε L* | 22 *εἰσηγεῖσθαι* libri, correxit Reiske | 29 *τῷ δήμῳ* libri, correxit Sylburg | 30 *ἀλλ' LV καὶ M*.

164, 10 *Κάτων Κενολήιος LV*, correxit Sylburg; an *καίσων*? | 30 *δικαίῳ γεγένηται* maluit Reiske.

165, 4 *Κενοληίου* libri | 5 *μὴ* om. *L* | 10 *τι* addidit Sylburg | 25 *βουλευτῶν μαρτυράμενος* Reiske, quod recipiendum erat | 26 *ἀπολύσασθαι* libri, quod correxi; *διαλύσεσθαι* maluit Sylburg | 29 *τῇ ἐρωτήσει* Reiske | *κατάξειν* maluit Sylburg *καλέσαι* coniecit Reiske | 31 *ἀποδίδοται* Portus.

166, 14 *πεπολιτευμένων* maluit Reiske | 16 *ἀποδείξασι* libri, correxit Sylburg | 20 *μὴ* om. *LMV* | 20 *εἶναι* om. *LMV* | 21 *ἀνέλῃ* Stephanus *ἂν ἐᾶν LMV* | 23 *γε* Sylburg *τε* libri | 24 *ἐπιδεδειγμένοις* maluit Sylburg | 29 *στρατηγῶν MVa στρατιωτῶν LVb*.

167, 4 *οὐ ταὐτὸ* maluit Portus | 9 *ἐπελέξαντο* libri, correxit Sylburg | 22 *ἐθισμοῖς διαπεπρᾶχθαι* maluit Reiske | 23 *αὐτῷ ἡ γνώμη* Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 32 *αὐτὸν La ταύτῃ LbMV αὐτῇ* Reiske.

168, 3 *ἀποτρίψασθαι* maluit Reiske | *βουλομένην* coniecit Sylburg | 7 *παρασπάσαι τοι L* | 9 *τε* add. *L* | 22 *ἀποδεξαμένου L* | 23 *ἐγένετο M*.

169, 4 *καταλήψοντες L* | 5 *αὐτὴν L* | 14 *ἀτέλιον* libri | *λοῦσχον MV λοῦγχον La λοῦγγον Lb* | *Κλύδιον L* | 18 *μετασχόντες* libri, correxit Sylburg | 29 *Μενύκιος πατρίκιος M μενίκιος παπίριος LV*.

170, 1 *ἔχειν L ἔχουσι V* | 2 *φαίνονται* libri, cor-

rexit Sylburg | 27 verba *ὑπατείας ὥστε* in *L* in lacuna suppleta, om. *V* | 28—30 edidi secundum *LV*; in *M* haec sic interpolata leguntur: *ὥστε τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ ὠφελίμους ἄνδρας ἐν τιμαῖς καὶ ἐν στρατείαις εἶναι, τοὺς δ' ἀσελγεστάτους καὶ πονηροτάτους ἀτίμους καταλείπεσθαι, καὶ τόπον ἕτερον μεταλαμβάνειν, ἐν ᾧ περίεστι ζῆν αὐτοῖς ὡς προῄρηνται.* Hinc sequuntur in libris verba *ἀλλ' ὑπὲρ τῶν.* 'P. cap. 44. cf. ad pag. 152, 15.

FRAGMENTA.

Amplissimi Constantiniani operis quae Dionysii reliquias continent partes sunt haece:

Val. = Excerpta *περὶ ἀρετῆς καὶ κακίας* ab Henrico Valesio edita 1634 ex codice Turonensi, in quo nunc multorum foliorum interitu Dionysii quoque reliquias periisse certiorem me fecit L. Wollenberg.

Vrs = Excerpta *περὶ πρεσβειῶν* ab Fulvio Ursino edita 1582, quorum mihi praesto erant scripturae libri Monacensis 267 chart. saec. XVI, a Nisseno amico enotatae et libri Vaticani 1418 chart. saec. XVI, ex libris Fulvii Ursini, quem ipse inspexi.

Esc. = Excerpta *περὶ ἐπιβουλῶν* ex codice Scorialensi (I Ω 11 chart. saec. XVI) a Federo (1855) et C. Müllero in fragmentorum Historicorum Graecorum volumine altero (Par. 1848) edita.

Ath. = Excerpta *περὶ πολιορκιῶν* ex Poliorceticorum codice vetustissimo ab Atho monte Parisios transvecto primum a C. Müllero ex Minae apographo ad calcem alterius voluminis Iosephi operum Parisiis apud fratres Didot 1847, deinde a Weschero Poliorcétique des Grecques Parisiis 1868 accuratissime edita.

Huc accedunt.

Ambr. = Eclogae Ambrosianae ex codice Ambrosiano (Q 13 sup. chart. saec. XV) ab Angelo Maio neglegentissime editae. Ipse librum denuo contuli. Qui praeterea Mediolani servatur harum eclogarum liber (A 80 sup.) alterius apographum sine ullo pretio est, itaque eum prorsus neglexi. In his eclogis emendandis mihi praesto erant Caroli Ludovici Struvii notae

editionis Francofurtensis margini adscriptae, quarum usum debeo Th. Struvii V. Cl. benevolentiae.

Nova fragmenta quae ex Escorialensi et Parisino libro accesserunt suis locis inserui, ordine volgato plerumque servato, quem si emendare voluissem, certe XIII, 10 — fin. ante XIII 6 collocanda erant. Nolui autem eclogarii Ambrosiani consilium corrigere. Librorum XVII et XVIII fragmenta distinguere non potui propter perturbationem qua numerorum notae apud Stephanum Byzantium confusae sunt. Maiorem denique decimi noni qui fertur libri partem vicesimo adscripsi propter adnotatiunculam, quae in initio fragmenti Parisini legitur, unde apparet bellum contra Pyrrhum fere totum in ultimo libro a Dionysio esse narratum.

171, 3 *Μάλλιος* hic et passim *Esc.* | 5 *ἡλικίαν τε Esc.* | 11 *τὴν ῥαστώνην τῶν Esc.* correxit Feder | 16 *διεμέρει Esc.* correxit Müller.

172, 4 *μεστὰς* Feder *μετὰ Esc.* | 13 *οὐδὲν Esc.* *οὐδενὸς* scripsi | 14 *βαρὺς ἔτι Esc.* correxit Müller | 17 *ἔθος ἐστὶν Esc.* teste Müllero | 20 *ἔπαρχον* Feder *ὕπαρχον Esc.* | 23. *τῆς ἀρχῆς?* | 26 *πράττοντες Esc.* | 26 *ὀλίγους Esc.* correxit Feder.

173, 10 *ἐξάνθρώπων Esc.* quod correxi | 14 *ἐλάττωνα Esc.* | 16 *λαμπρᾷ Esc.* quod correxi | 21 *κατέπαυσε Esc.* *κατέπλησε* Müller *κατέκλυσε* scripsi | 26 *ἐπιτρέποντος Esc.* *ἐπιστρεφόμενος* Müller.

174, 8—10 verba corrupta satis probabili emendatione sanare non potui; *ποιήσῃ τὴν διάστασιν ἐκ τ. ἐ.* Feder, altero *ποιήσηται* deleto *μηχανήσηται* maluit Müller | 18 *βέβαιον Esc.* quod correxi | 26 *ἐφέρειν Esc.* | 28 *βουλευόμενοι Esc.* correxit Feder.

175, 5 *μετέωρον Esc.* | 10 lacunam significavit Müller | 19 *ἔδει, τότε?* | 22 hiatum notavit Feder | 23 *ὑπ'* addidi | 25 *ἔξωθεν Esc.* | 30 *ἐπὶ Esc.*

176, 2 *ὅπου Esc.* correxit Feder | 11 *τρέχουσι?* | 18 *ἄξοντα Esc.* correxit Müller | 23 *ἀναπήδα Esc.* *ἀνεπήδα*

tess. Herbip. p. 37 | 11 τάχους addidit Sylburg | 16 μὲν Portus δ' libri | 17 δὲ inseruit Portus | 21 περιβαλλομένων libri, correxit Sylburg | 25 ὁ om. *L* | 26 κελεύευειν (*sic!*) *L* | 31 ἔχοντες maluit Sylburg | 32 ἐγίνοντο libri, quod correxi.

143, 1 προπηλακιστὰς *L* | 6 κωλύσεως libri, correxit Sylburg | 18 ὀλιγαρχῶν libri, correxit Portus | 25 αὐτοὺς δὴ τοὺς *M* | 26 ὀλιγαρχικῆς libri, correxit Reiske | 31 ἐπιβαλλόμενος libri, correxit Reiske | 32 ἂν add. Sylburg.

144, 2 τῆς addidit Reiske | 10 ἔμελλον libri, quod correxi | 13 κόμης libri, κομίζουσαι Lobeck Aglaopham. p. 1095 | 20 ὀλιγαρχιῶν libri, quod correxi | 30 σφαγίδα *La* μάχαιραν *LbMV*.

145, 6 θορύβων *MV* θορύβου *La* θορύβω *Lb* | περιεχόμενοι libri, correxit Sylburg | 24 ἐκλογιζόμενος libri, quod correxi.

146, 6 τισι] σφίσι? | 9 ὑμῖν add. *L* | 15 καὶ addidit Reiske οἰκεῖα φύσεως προγόνων maluit Sintenis Em. Dion. III, 24 | 24 ἄλλους addidi ex *LV* | 32 διαχειρισαμένης *M*.

147, 1 ἐπὶ τῷ πάθει post παρωξύνθησαν transposita in *L*. | 13 καὶ ὑπομενεῖτε *M* | 16 πολλαὶ libri, correxit Sylburg | 18 καὶ add. Reiske | 19 τοῦ *MV* τούτου*L* | 21 ἡμῶν *L* | 25 σκαιότητος *M* κακότητος *LV* et *M* in margine | 26 νοούμενα libri, correxit Reiske.

148, 2 ὅτε libri, quod correxi | 16 παύσωσι libri, quod correxi | 27 τοὺς σφετέρους *CbMb* τοῖς σφετέροις *LVCaMa* | ἐῶντας om. *L* in lacuna quattuor litterarum | 32 vocabula uncis inclusa hinc usque ad finem capitis desunt in lacunis *LV*, addita sunt in *CM* vulgo ex foedissima interpolatione.

149, 2 ὄχλους libri, quod correxi | 3 ὡς *CM* ὅτι *LV* | 4 χρηστὰς λαβόντες ἐλπίδας? | 9 δι' ἀνδρίαν *L*, unde δι' ἀνανδρίαν correxi | 12 ὅσοις *M* | 16 πᾶσι corruptum videtur, νομιζόντων τοῖς πᾶσι *V*.

150, 8 ἡγούμενοι καὶ om. *MV* | 11 πλήθεσι? | 14 τοσοῦτο *L* | 16 πορευθέντες maluit Reiske | 25 οὐδὲν libri, quod correxi; οὐδένα οὐδέν maluit Reiske | 29 θ' scripsi δ' libri | 32 ἄππιος libri Ὄππιος Sylburg.

151, 7 πρότερον libri, correxit Sylburg | 17 ἄππιον et 26 ἄππιος libri, correxit Sylburg | 29 τὸ δέος *M* | 32 οἱ addidit Sylburg.

152, 5 ἀπεῖναι libri, correxit Sylburg | κατέχοντας scripsi ταχθέντας libri | v. 14 hic in libris sequitur lacuna, in *L* cum nota λείπει φύλλα β̄, quam excipiunt verba μηδὲν δὲ αὐτῶν cap. 52 usque ad finem libri; ordinem restituit Sylburg | 18 ἥρμοττον *L*.

153, 2 λέγειν *La* γράφειν *Lb* reliqui | 6 προέκειντο maluit Sylburg | 13 αὐτὸν libri αὐτοῖς Reiske | 14 ἴδιον libri, quod correxi | 26 ὑπὸ τὴν δίκην maluit Reiske.

154, 4 τῶν πολλῶν? | καὶ delere voluit Reiske | 14 ἐπιδειχθεῖσαν libri, correxit Reiske | 18 ἄππιος libri | 25 τῶν πολιτικῶν οἱ *V* τῶν πεφευγότων *M* τῶν πο........*L*, quod correxi | 27 ἐπιλαβόμενος *MV*.

155, 3 πολιτῶν libri πολλῶν festinantius reposui | τῶν inserui et hiatum significavi; ἐν πολεμίων γενέσθαι λόγῳ προσδοκώντων Grasberger Philol. XXVIII, p. 349. sed hostium mentionem necessariam esse demonstrant quae sequuntur | 5 κατὰ πόλεις *LV* | 6 τὴν βουλὴν om. *L*, in lacuna | οἱ ὕπατοι addidit Reiske | 15 ἐπαρθέντας Reiske παρόντας libri | 18 δεδιότως maluit Reiske | 26 καταλιπομένην *LV* | 28 παρέστησεν libri, quod correxi | 30 ἑξῆς om. *L* in lacuna.

156, 1 ταχέως ἧκον Reiske τοῦ ἄστεως ἧκον *MV*, om. *L* in lacuna | 2 εἶχον om. *L* in lacuna | 9 verba τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν κρατήσαντες χρήματα πολλὰ καὶ λείαν ἄφθονον περιεβάλοντο in solo *L* servata addidi | 14 προαγαγών, quod in libris post ἔγνω v. 15 legitur, huc transposui | 16 ὅλῃ δυνάμει om. *L* in lacuna | 18 verba uncis inclusa desunt in *L* in lacuna et manifestam interpolationem redolent | 19 verba πρὸς τοὺς usque ad προηγούμενος v. 21 in *L* a priore manu omissa supplevit *Lb*, sed item ob interpolationem mihi suspecta sunt; ἦν γὰρ etqs. ad Romanorum ducem referenda esse apparet | 20 ἀντεχομένους *LbM* ἀντιμαχομένους *V* | 26 τετυχηκὼς om. *L* in lacuna | αὐτῶν *L* αὐτοῦ *MV* | 27 ἀποσκευὴν

.........ων πολλὴν *L* | 30 ante ἀνεσώσατο in *MV* adduntur εὗρε καὶ, quae omisi cum *L*.

157, 7 καὶ om. *L* in lacuna καὶ ἦν *MV*, καλὴ Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 8 γε]τε *L* | 10 εἰς quod addidi om. libri | 19 ὅσα οὗτοι πολιτευόμενοι *MV* ὅσα τοῦ ..... πολιτευόμενοι *L*; an ὅσα ὑπὲρ τοῦ δήμου π.? | 23 συνθήκας γενομένην? | 29 ἐλέου reponendum, cf. Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 30 ἀνὴρ scripsi ἀνὴρ libri | ἀνὴρ ἀπέφυγεν ἂν maluit Reiske | 31 πολλὰ ἃ τὸ κοινὸν ἐφαίνετο εὖ πεπ. coniecit Reiske | 32 ἄνθρωποι scripsi ἄνθρωποι libri.

158, 2 ἄλλα *L*, quod reponere debui | φέρων add. *Lb* in lacuna | εἰς οἶκτον ..... ομένου τὸ π. *L* | 3 δὴ *MV* δὲ *L* | 4—5 ὑπάτων πολ......... τῶν παρόντων *L* cum lacuna fere viginti litterarum, ὑπάτων πολλὰ κατ' αὐτῶν ἐκχέαντος Κλαυδίου Γαίου καὶ αὐτῶν παρόντων *V* ὑπάτων πολλὰ φέρων εἰς οἶκτον ἐφελκόμενα τὸ πλῆθος κατ' αὐτῶν ἐκχεάντος Κλαυδίου Γαίου καὶ αὐτῶν παρόντων *M*; lacunam sic fere suppleverim ὑπάτων [ἐκχέαντος Κλαυδίου καὶ ἐπαινεσάντων ἁπάντων] τῶν π. | 7 τιμῶν scripsi τινῶν libri | τοσούτων? | συγχωρήσεων libri, quod correxi | οὔτε *L* | 14 νόμων libri, correxit Reiske | 23 αὐξηθεῖσαν maluit Reiske | ὀλίγοις libri ἀλόγοις scripsi | 25 δόξα δ' αὕτη ἰσχυρὰ coniecit Reiske | 26 τοῦ addidit Reiske | 29 Ἐρουίνιος libri, correxit Sylburg | 30 Μάρκος Γε libri qui hic desinunt, vide quae dixi ad p. 152, 14.

159, 2 κάπτιος *L* κάπλιος *V* κάτλιος *M* | 6 ὁρῶντες del. Cobet N. L. p. 272 | 7 καπτίου *L* καπλίου *V* | 19 τῆς ἀμφισβήτου μὴ γῆς *L* τῆς ἀμφισβήτου γῆς *VM* quod correxi | 22 αὐτοὺς maluit Reiske | 25 ἑτέροις *MV* ἑτέρων *L* | 27 καδδείσσιον *V* καδδίσιον *M* | 31 μινυκίου *M* μεννκίου *V* γεννκίου *L*.

160, 27 καὶ δεόμενοι Reiske δεόμενοι libri.

161, 5 ὑπὸ τῶν ὑπάτων scripsi ὑπ' αὐτῶν libri | 6 verba ἔχουσι δ' ἐξουσίαν ἐναντιοῦσθαι δήμαρχοι τοῖς ὑπάτοις quae glossema sapiunt seclusi | 13 οἱ δήμαρχοι scripsi οἱ δὲ libri | 15 ἐάσειν *La* ἑλεῖν *Lb* | 16 ὑπ' Sylburg ὑπὲρ libri | 21 διωμόσαντο Sylburg διομοσάμενοι libri | μηδὲν

scripsi *μηδέ τι* libri | 22 *καταλύειν M*, om. *LV* | 25 *εἰς ἰδιωτικὸν σύλλογον οὐχ ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἀλλ' αὐτοὶ* maluit Reiske.

162, 1 *ποιούμενος LMV* | 19 *ψῆφον ἀναλαβεῖν*? | *οὐ δυνάμενος LMV* | 20 *μόνος* addidi ex *L* | 21 *βουλήμασι* libri, quod correxi | 27 *ἐστι* add. *L* | 30 *χιλιάρχους μὲν* maluit Reiske | *ἀποδεικνύναι* maluit Portus | 32 *τε* scripsi *δὲ* libri.

163, 1 *ἐλάττονος ἀριθμοῦ* libri, correxit Reiske | 4 *καταβάλητε* libri, correxit Reiske | 10 *λόγον* addidit Sylburg | 13 *ἄρξησθε V ἄρξεσθε L* | 22 *εἰσηγεῖσθαι* libri, correxit Reiske | 29 *τῷ δήμῳ* libri, correxit Sylburg | 30 *ἀλλ' LV καὶ M*.

164, 10 *Κάτων Κενολήιος LV*, correxit Sylburg; an *καίσων*? | 30 *δικαίῳ γεγένηται* maluit Reiske.

165, 4 *Κενοληίου* libri | 5 *μὴ* om. *L* | 10 *τι* addidit Sylburg | 25 *βουλευτῶν μαρτυράμενος* Reiske, quod recipiendum erat | 26 *ἀπολύσασθαι* libri, quod correxi; *διαλύσεσθαι* maluit Sylburg | 29 *τῇ ἐρωτήσει* Reiske | *κατάξειν* maluit Sylburg *καλέσαι* coniecit Reiske | 31 *ἀποδίδοται* Portus.

166, 14 *πεπολιτευμένων* maluit Reiske | 16 *ἀποδείξασι* libri, correxit Sylburg | 20 *μὴ* om. *LMV* | 20 *εἶναι* om. *LMV* | 21 *ἀνέλῃ* Stephanus *ἂν ἐᾶν LMV* | 23 *γε* Sylburg *τε* libri | 24 *ἐπιδεδειγμένοις* maluit Sylburg | 29 *στρατηγῶν MVa στρατιωτῶν LVb*.

167, 4 *οὐ ταὐτὸ* maluit Portus | 9 *ἐπελέξαντο* libri, correxit Sylburg | 22 *ἐθισμοῖς διαπεπράχθαι* maluit Reiske | 23 *αὐτῷ ἡ γνώμη* Grasberger Philol. XXVIII, p. 349 | 32 *αὐτὸν La ταύτῃ LbMV αὐτῇ* Reiske.

168, 3 *ἀποτρίψασθαι* maluit Reiske | *βουλομένην* coniecit Sylburg | 7 *παρασπάσαι τοι L* | 9 *τε* add. *L* | 22 *ἀποδεξαμένου L* | 23 *ἐγένετο M*.

169, 4 *καταλήψοντες L* | 5 *αὐτὴν L* | 14 *ἀτέλιον* libri | *λοῦσχον MV λοῦγχον La λοῦγγον Lb* | *Κλύδιον L* | 18 *μετασχόντες* libri, correxit Sylburg | 29 *Μενύκιος πατρίκιος M μενίκιος παπίριος LV*.

170, 1 *ἔχειν L ἔχουσι V* | 2 *φαίνονται* libri, cor-

rexit Sylburg | 27 verba *ὑπατείας ὥστε* in *L* in lacuna suppleta, om. *V* | 28—30 edidi secundum *LV*; in *M* haec sic interpolata leguntur: *ὥστε τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ ὠφελίμους ἄνδρας ἐν τιμαῖς καὶ ἐν στρατείαις εἶναι, τοὺς δ' ἀσελγεστάτους καὶ πονηροτάτους ἀτίμους καταλείπεσθαι, καὶ τόπον ἕτερον μεταλαμβάνειν, ἐν ᾧ περίεστι ζῆν αὐτοῖς ὡς προῄρηνται.* Hinc sequuntur in libris verba *ἀλλ' ὑπὲρ τῶν.* '*P.* cap. 44. cf. ad pag. 152, 15.

FRAGMENTA.

Amplissimi Constantiniani operis quae Dionysii reliquias continent partes sunt haece:

Val. = Excerpta *περὶ ἀρετῆς καὶ κακίας* ab Henrico Valesio edita 1634 ex codice Turonensi, in quo nunc multorum foliorum interitu Dionysii quoque reliquias periisse certiorem me fecit L. Wollenberg.

Vrs = Excerpta *περὶ πρεσβειῶν* ab Fulvio Ursino edita 1582, quorum mihi praesto erant scripturae libri Monacensis 267 chart. saec. XVI, a Nisseno amico enotatae et libri Vaticani 1418 chart. saec. XVI, ex libris Fulvii Ursini, quem ipse inspexi.

Esc. = Excerpta *περὶ ἐπιβουλῶν* ex codice Scorialensi (I Ω 11 chart. saec. XVI) a Federo (1855) et C. Müllero in fragmentorum Historicorum Graecorum volumine altero (Par. 1848) edita.

Ath. = Excerpta *περὶ πολιορκιῶν* ex Poliorceticorum codice vetustissimo ab Atho monte Parisios transvecto primum a C. Müllero ex Minae apographo ad calcem alterius voluminis Iosephi operum Parisiis apud fratres Didot 1847, deinde a Weschero Poliorcétique des Grecques Parisiis 1868 accuratissime edita.

Huc accedunt.

Ambr. = Eclogae Ambrosianae ex codice Ambrosiano (Q 13 sup. chart. saec. XV) ab Angelo Maio neglegentissime editae. Ipse librum denuo contuli. Qui praeterea Mediolani servatur harum eclogarum liber (A 80 sup.) alterius apographum sine ullo pretio est, itaque eum prorsus neglexi. In his eclogis emendandis mihi praesto erant Caroli Ludovici Struvii notae

editionis Francofurtensis margini adscriptae, quarum usum debeo Th. Struvii V. Cl. benevolentiae.

Nova fragmenta quae ex Escorialensi et Parisino libro accesserunt suis locis inserui, ordine volgato plerumque servato, quem si emendare voluissem, certe XIII, 10 — fin. ante XIII 6 collocanda erant. Nolui autem eclogarii Ambrosiani consilium corrigere.

Librorum XVII et XVIII fragmenta distinguere non potui propter perturbationem qua numerorum notae apud Stephanum Byzantium confusae sunt. Maiorem denique decimi noni qui fertur libri partem vicesimo adscripsi propter adnotatiunculam, quae in initio fragmenti Parisini legitur, unde apparet bellum contra Pyrrhum fere totum in ultimo libro a Dionysio esse narratum.

171, 3 *Μάλλιος* hic et passim *Esc.* | 5 *ἡλικίαν τε Esc.* | 11 *τὴν ῥαστώνην τῶν Esc.* correxit Feder | 16 *διεμέρει Esc.* correxit Müller.

172, 4 *μεστὰς* Feder *μετὰ Esc.* | 13 *οὐδὲν Esc.* *οὐδενὸς* scripsi | 14 *βαρὺς ἔτι Esc.* correxit Müller | 17 *ἔθος ἐστὶν Esc.* teste Müllero | 20 *ἔπαρχον* Feder *ὕπαρχον Esc.* | 23. *τῆς ἀρχῆς?* | 26 *πράττοντες Esc.* | 26 *ὀλίγους Esc.* correxit Feder.

173, 10 *ἐξἀνθρώπων Esc.* quod correxi | 14 *ἐλάττωνα Esc.* | 16 *λαμπρᾷ Esc.* quod correxi | 21 *κατέπαυσε Esc.* *κατέπλησε* Müller *κατέκλυσε* scripsi | 26 *ἐπιτρέποντος Esc.* *ἐπιστρεφόμενος* Müller.

174, 8—10 verba corrupta satis probabili emendatione sanare non potui; *ποιήσῃ τὴν διάστασιν ἐκ τ. ἐ.* Feder, altero *ποιήσηται* deleto *μηχανήσηται* maluit Müller | 18 *βέβαιον Esc.* quod correxi | 26 *ἐφέρειν Esc.* | 28 *βουλευόμενοι Esc.* correxit Feder.

175, 5 *μετέωρον Esc.* | 10 lacunam significavit Müller | 19 *ἔδει, τότε?* | 22 hiatum notavit Feder | 23 *ὑπ'* addidi | 25 *ἔξωθεν Esc.* | 30 *ἐπὶ Esc.*

176, 2 *ὅπου Esc.* correxit Feder | 11 *τρέχουσι?* | 18 *ἄξοντα Esc.* correxit Müller | 23 *ἀναπήδα Esc.* *ἀνεπήδα*

Müller | 26 *καλοῦμαι* delevi | *πρὸς αὐτὸν Esc.* quod correxi | 30 *ὑποκαθιεῖσθαι Esc.* correxit Feder.

177, 4 *ἀθρόον Esc.* correxit Feder | 14 *τῶν δεδρακότων Esc.* correxit Müller | 21 fragmentum Ambrosianum hic inserui | 27 *μὴ Ambr.* quod correxi.

178, 1 *μὲν οὐ* addidit Müller | 2 *ἐπὶ* addidi | 4 *κοινωνήσαντες οὖν τῆς καὶ τὸ σ. Esc.* | 11 *τοῦ θορύβου Esc.* correxit Feder | 15 *κέχρηται Esc.* | *Κίρκεος καὶ Καλπουρνίνος Esc.* | 16 *καὶ ἄλλοι ἐπιχώριοι?* | 21 *καὶ* inseruit Müller | 22 *ἡ μὲν Esc.* | 23 *πεισθέντες Esc.* | *καὶ* delevi | 27 *προελθόντα Esc.* quod correxi.

179, 3 *καὶ* addidi | 10 *μάχας Esc.* | 17 *τὸ ἰσόπεδον αἰκυμίλιον Ῥωμαῖοι καλοῦσιν· αἶκον γὰρ τὸ μηδ. Ambr. ἰσόπεδον μένον Esc*, quod in *l. Μήλιον* correxi | 18 *καλεῖται Esc. λέγουσι Ambr.* | *τόπον οὖν τινα Μήλιον ἐξ ἀρχῆς κληθέντα ὕστερον* add. *Ambr.* a Struvio correctus, om. *Esc.* | 20 *δὲ* om. *Ambr.* | *κατὰ τὴν εἰς μίαν λέξιν συνεκφορὰν* maluit Struve | 21 *αἰκύμηνον Esc.* | 27 *πάνδεινα ποιοῦντος* corrupta esse censuit Struve.

180, 4 *τοῦ* addidit Struve | 5 *αὐτὸν* addidi ex *Ambr.* | 12 *ναματιαίων* maluit Struve | 13 *ἐπίλειψις* extat in *Ambr.* | 21 *μαθεῖν Ambr. βαθεῖαν* Struve | 24 *ταῖς πολιτικαῖς—ταραχαῖς Ambr.* correxit Struve | 26 *ἀνίστανται?* | 28 *καὶ Ambr. κεὶ* Struve | 29 *ἐλπίδες ἥττους?*

181, 6 *αὐτῶν?* | 8 *τιμηθέντες* corruptum censuit Struve | 19 *περιφανῶς Ambr.* | 23 *χιλίας* om. *Ambr.* | 27 *ῥᾴδιον τὸ πρᾶγμα* maluit Struve | 30 *τοῖς* addidi ex *Ambr.* | 31 *ἴσον Ambr.*

182, 7 *κατενείφθη Ambr.* correxit Struve | 15 *ἐγένοντο Ambr.* correxit Struve | 16 *ἐλέχθησαν Ambr. ἐλύθησαν* scripsi | 25 *γῆν ἀέρος?*

183, 3 *καταθύοντες Ambr.* | 10 *πληθυνούσης δ'?* | 15 *ἑορτάδων Ambr.* correxit Struve | 21 *οὐ πλεῖον* Struve | 27 *καταλαβεῖν Ambr.* correxit Struve | 27 *τελευτῶσαν (Ambr.) τελευτῶσα* Struve.

184, 5 *ἀπέστειλαν* addidi ex *Ambr.* | 8 *ἐκ προγόνων* maluit Struve | 20 *τὴν* et 21 *τότε* addidi ex *Ambr.* | 26 *σκοπῷ Ambr.* quod correxi.

185, 2 αὐτῷ *Ambr.* correxit Struve | 5 συνιόντας *Ambr.* correxit Struve | 9 περιβαλὼν *Ambr.* correxit Struve | 17 ἡ addidit Struve.

186, 2 τεινομένοις maluit Struve | 14 τὰς θυρὰς *Ambr.* correxit Struve | 15 εἰς addidi ex *Ambr.* | 17 οἵ — ἀξιοῦτε? | 31 ὅσους *Ambr.* correxit Maius.

187, 10 δυνάμεις *Ambr.* correxit Maius | 12 πολέμους quod abest ab *Ambr.* huc inserui | 13 πολεμεῖν corruptum esse vidit Struve, qui ἐγκλείεσθαι vel tale quid coniecit | 21 ἔμελλεν *Ambr.* correxit Struve | καινὴ Struve | 22 τῶν Ῥωμαίων *Ambr.* | 28 ὑπερκείμενον *Ambr.* correxit Struve.

188, 1 περιουσίων coniecit Struve | 7 ἀρχαίων *Ambr.* | 11 πολεμίου ὄψιν Struve | 19 πατρικίοις *Ambr.* | 25 ὅτι] οὔτε *Ambr.* correxit Maius | 29 καὶ τὸ addidi ex *Ambr.*

189, 1 τῶν Φαλίσκων *Ambr.* quod correxi | 2 Φαλερίων *Ambr.* quod correxi | 3 ἰδία *Ambr.* correxit Struve | 12 ὁπλιτῶν maluit Struve | 15 αὐτῶν addidi ex *Ambr.* | 16 περιποιουμένους Suidas s. v. περιποιήσει.

190, 11 παραδοὺς maluit Struve | 14 κομισάμενοι *Ambr.*, quod correxi | 22 καταστήσασθαι *Ambr.* correxit Struve.

191, 3 ὑφ᾽ ὧν maluit Struve | 7 σπανισάμενος *Ambr.* | 9 lacunam significavit Struve; an ἐγένετο, ὁπηνίκα? | 14 δεῖν addidi | 23 ἀσσαρίων addidit Maius.

192, 23 τὴν addidi ex *Ambr.* | 28 Κεδίκιον hic et 32 *Ambr.*

193, 5 με maluit Struve | 9 ἐλθούσας *Ambr.* | 13 μόνον *Ambr.* correxit Struve | 19 τῷ addidit Struve | 22 καὶ delendum censuit Struve.

194, 8 ὁ delevit Struve | 10 δὲ inseruit Struve | 12 τὴν ὑπάτου ἀρχὴν maluit Struve | 14 καὶ inserui | 16 πάλει *Ambr.* | 17 ἢ delevi | 24 τροφὴν *Ambr.* quod correxi | 25 ἐν addidit Struve.

195, 16 τοῖς addidit Struve | 24 ἐς om. *Ambr.*, addidit Maius | 31 καταληφθεῖσαν *Ambr.* correxit Struve | 30 γεγόνει coniecit Struve.

196, 6 καὶ om. *Ambr.*, add. Maius | 7 ἀσπασμῷ *Ambr.*,

correxit Struve | 22 *δὲ* inseruit Struve, qui postea maluit *τό τε πρῶτον*.

197, 2 *Κλουσήνους Ambr.* | 3 *πολεμεῖν Ambr.* quod correxi | 9 *ἠξίου Ambr.* | 12 *ἀναγκαίως*] *ἐξαπιναίως* coniecit Struve | 17 *τε* addidi ex *Ambr.* | 19 *καὶ* delevi.

198, 3 *καθήκοντα Ambr.* | 5 *Ῥιπαίοις* maluit Struve | 12 *μέγιστός ἐστι?* | 13 *τὸν ποντικὸν Ambr.* | 20 *Γερμανία μέχρι δρυμοῦ Ταρκυνίου Ambr.*

199, 2 *βλέποντα Ambr.* correxit Struve | 3 *παραλαμβάνουσα Ambr.* correxit Struve | 21 *τοῦ* scripsi *τῇ Ambr.* | 31 *καλιὰ Ambr.* quod correxi.

200, 5 *ἐπικάμπτον Ambr.* correxit Struve | 17 *πολεμικὰ Tur. πολιτικὰ* Valesius | 22 *τὸν ἐὰν αυτῶν Ambr.*

201, 18 *ἐν τῇ πόλει* Vales. quod correxi | 24 post *πρᾶξιν* verbum ut *συνέχειν* intercidisse coniecit Valesius.

202, 10 *χάριτι* maluit Valesius | 12 *μηδενὶ* Valesius, correxit Reiske | 13 *πρὸς* inserui | 14 *τὰ ἐπὶ πλεῖον* Vales. quod correxi; *τὰ ἐπιεικῆ πλείονα* coniecit Reiske | 19 *γίνωνται* Vales. quod correxi | 21 *ἀλλὰ* delevit Reiske.

203, 10 *ἀμφ'*] *ἀφ' Ambr.* | 11 pro *ἐν οἷς καὶ τάδε* quae in *Ambr.* extant, inde a Maio edebatur *Ἄνδρες τὰ μὲν* | 22 *λόγχοι Ambr.* | *μάχαιραι* delevi *μαγειρικαὶ* maluit Struve | 23 *δὲ* Struve *τε Ambr.* quod servare debui | 26 *φοβείτω Ambr.* correxit Struve | *μηδὲ Ambr. μηδεὶς* Maius | 30 *κρείττων Ambr.*

204, 5 *αἵ* add. Struve || 6 *δίττονται Ambr.* | 8 *ἂν* delevi auctore Struvio | 9 *ἐργάσεσθαι Ambr.* quod correxi | 11 *αἵ δὲ δὴ Ambr.* quod correxi | 14 *μορφῆς Ambr.* | 16 *πέφυκε* addidi ex *Ambr.* | 17 *πρὸς τὰ δεινὰ* maluit Struve | 20 *τὴν* add. Struve | 30 *ἐν τῇ πατρίδι στέφανον καταλαβεῖν* coniecit Struve.

205, 1 *ἐκπληρώσοντες Ambr.*, *οἵ ταύτῃ ἂν ἐκπληρώσαντες* coniecit Struve | 7 *τοῖς ἐν ὅπλοις Ambr.* | 15 *εὔπαιδος Ambr.* correxit Struve | 16 *διαιρομένων Ambr.* quod correxi | 26 *βοῇ Ambr.*

206, 9 *διαρραγῆναι Ambr.*, quod correxi ut et v. 11 *διαμένειν* | 13 *τῶν Ῥωμαίων Ambr.* correxit Struve |

15 ἁπάντων ἀγαθῶν ἀνήσει coniecit Struve, quod recipiendum erat | 17 ὧν ᾤετο ἔχειν Struve.

207, 3 ἐπεὶ δὲ *Ambr.* | 16 τιβερνάτας *Ambr.* | 21 ὁ πρεσβευτὴς maluit Struve | 28 βέβαιοι *Ambr.* quod correxi | 29 δ' inseruit Struve.

208, 9 ἐκφέρει *Ambr.* | 12 γίνεσθαι *Ambr.* | 16 προσβολῆς *Ambr.* quod correxi.

209, 8 νεκροὺς *Ambr.* correxit Struve | 17 ἐπικλύσαισαι *Ambr.* | 19 ὑπατεύοντος delevit Müller | 20 Ροτύλλου *Esc.* | 30 ἄγειν *Esc.* correxit Feder.

210, 6 γενομένης *Esc.* | 27 distinxi post ὀλίγοις | 30 καὶ fortasse delendum.

211, 1 ἐν delevi | 4 τὶ δαὶ *Esc.* | 7 βελτίστου scripsi πεδίου *Esc.* παλαιοῦ Feder | 8 Τυρανοῖς *Esc.* | 12 ἄρξαντες Feder | 13 τὶ δαὶ *Esc.* | κωλῦσαν *Esc.* quod correxi | 17 ἡμᾶς τε *Esc.* quod correxi | 18 ἐάσωμεν *Esc.* | 19 ἑκάστοις *Esc.* quod correxi | 21 προσποιοῦνται?

212, 2 ἐμφανές *Esc.* quod correxi | 6 παρείληψεν ὅτι *Esc.* παρειληφότα scripsi Federo auctore | 7 ὄντι *Esc.* | 8 λέξειν *Esc.* correxit Feder | 9 μηδ' scripsi μήτ' *Esc.* | 12 αὐτοὺς *Esc.* αὐτὸς Feder | 13 προσεσκεύασε *Esc.* quod correxi | 15 ἐπεὶ δὲ *Esc.* correxit Feder | 28 ὑπομένοντες *Esc.* quod correxi.

213, 4 τοῦτο *Esc.* quod correxi | 7 τινα *Esc.* τινῶν Feder | 10 οἱ addidit Feder | Ταρακινάπολιν *Esc.* || 15 τὸν addidit Feder | 18 χεὶρ] γὰρ *Esc.* teste Müllero | 28 βασιληνῶν *Esc.*

214, 9 τὲ γὰρ *Esc.* τ' ἀγείρειν Feder | 10 τῆς *Esc.* τὰς scripsi | 12 χρόνου *Esc.* χρονισμοῦ Müller | 16 ἀπιθὲς *Esc.* correxit Müller | 23 φόνον *Esc.* teste Federo, qui correxit; ψόγον teste Müllero | 24 πολεμίων] πόλεων *Esc.* | 28 καὶ om. *Vat.* | 31 κατὰ addidit Ursinus | 31—32 Νεαπολιτῶν ἀποστεῖλαι *Vat.* (?) Νεαπολιτῶν πρέσβεις ἐποιήσατο πρὸς τοὺς Νεαπολίτας ἀποστείλας *Mon.* quae nunc sic potius corrigenda esse video: *N.* πρέσβεις ἐ ψ η φ ί σ α τ ο πρὸς *τ. N.* ἀποστεῖλαι.

215, 1 ἀξιώσαντας libri, correxit Sylburg | 3 καὶ delevit Valesius | εἴγε libri, correxit Sylburg | 4 post

λόγων verbum intercidisse ut *διαλύσασθαι* suspicatus est Stephanus | 7 *ἃ* Stephanus *τὰ* libri | *προσῆκεν* scripsi *προσήκειν* libri | 9 *θεραπείας* libri, correxit Sylburg | 18 *καταλύεσθαι* maluit Reiske | 23 *πιστεύοντες* libri, correxit Portus | 24 *ἀφανιζομένη* libri, correxit Ursinus | 28 *οὖν τῆς Mon. δὲ Vat.*

216, 8 *διεξίεσαν* libri, correxit Sylburg | 10 *ἀπίστους καὶ δολίους* libri, correxit Ursinus | *τελευτῶντος* libri, correxit Sylburg | 11 *τοὺς Νεαπολίτας* libri, correxit Ursinus | 16 *κακείνους* libri, correxit Sylburg | 17 *ἐπιχορηγοῦντες* libri, correxit Reiske | 24 *κατεῖχον Mon. κατεῖσχον Vat.* | *πάνυ πολλὴν* Reiske *τινα πόλιν* libri | 26 *εὐλόγιστον* maluit Stephanus | 30 *συνελάμβανεν* maluit Ursinus. *πόλεμον ὥρμα, ἐξ ὧν ἐπειδὴ ἕκαστος τῷ ἑαυτοῦ μέρει συνελάμβανεν* coniecit Reiske | 31 *χειροκρατίαι* maluit Stephanus.

217, 6 *βουλευμάτων* libri, correxit Sylburg | 9 *ὀνόματι* libri, quod correxi | 15 *Ῥωμαίους* libri, correxit Ursinus | 19 *Οὐολούσκοις συστάντες* libri, correxit Sylburg | 25 *ἡμῶν* libri, correxit Reiske | 26 *ἐγείροντες* libri, correxit Sylburg | 28 *ἐποίκους* libri, correxit Ursinus.

218, 1 *ποιοῦντες* delevit Ursinus | 2 *ἔκριναν* libri, correxit Reiske | 4 *προσκαλούμεθα* libri, correxit Sylburg | 7 *μηδεμίαν* Ursinus *δὲ μίαν* libri | 10 *ἔδοξεν* scripsi *δόξατα* libri | *ὑμῖν ἃ ἔπραττόν τινες ἀλλ'* libri, quae transponendo correxi | 23 *ἡμεῖς* libri, correxit Ursinus | *ἐπηχθέντες* libri, correxit Sylburg | 24 *γὰρ γοῦν Vat.* | 25 *οἱ* add. Stephanus | 26 *ὑμετέρων* libri, correxit Ursinus.

219, 3 *οὐδ' ἐν τούτῳ* maluit Reiske | 7 *διαφθείρειν* Reiske *φέρειν* libri | 13 *φυλακαῖς Vat.* | 14 *ἀντικαλούμεθα* libri, correxit Sylburg | 15 *φλυγέλλης* libri | *οὐ πρὸ πολλοῦ Mon.* | *πολέμου Vat.* | 16 *ὅπερ* libri, correxit Sylburg | 18 *τυχόντες* margo Vaticani *κατέχετε* male *Vat.* | 19 *ἠδικῆσθαι* coniecit Sylburg | 23 lacunam notavit Reiske | 24 *βουλεύεσθε* libri | *τὸν τῶν P. Mon.* | 25 *πατρίους* maluit Stephanus | 32 *ἀραῖς Vat.*

220, 3 *χωρῆσαι* libri | 5 *πράξειεν πᾶσι διδόναι τοῖς πολεμίοις ἐντυχεῖν* libri, nisi quod *εὐτυχεῖν Vat.*; correxit

Reiske | 6 *τὰ περὶ* libri, correxit Reiske | 8 *αὐτοῖς* libri, *αὐτοὺς* scripsi | 9 *δὲ* addidit Stephanus | 12 *βραδύτερα ἔσεσθαι τῶν Ῥωμαίων ἔσεσθαι Mon.* | *τὰ* add. Ursinus | 15 *ἐποίκους* libri, correxit Stephanus | 16 *αὐτοὺς* maluit Ursinus | *συνέβη παθεῖν Vat.* | 23 *ἡ* addidi | 24 *χειμερίζουσα Mon.*

221, 4 *πέντε* in ipso Ambrosiano extat | 6 *κατηνέχθησαν* maluit Struve | 7 *ἕτοιμον Ambr.* correxit Maius | 14 *μετεωροπορεῖν* Struve | 15 *τὸ πῦρ* addidit Struve | 16 *ὑφαίστου Ambr.* | *λύσει Ambr.* quod correxi; *λύοι* Struve | 20 *χωρίον Ambr.* correxit Struve.

222, 15 *βαρὺ Ambr.*, correxit Maius | 23 *κἂν* scripsi *καὶ Ambr.* | 25 *γε* in Ambrosiano extare videtur, *τε* Struve | 28 *τῇδε τῇ γῇ* maluit Struve | 30 *περιχυθέντες*? | *διασπάσασθαι Ambr.* teste Maio.

223, 2 *ἀγορᾶς Ambr.* | 4 *οὔτε ἀγωνιζόμενοι* (in rasura) *παιόμενοι Ambr.* | 12 *τοὺς* additum supra versum | 14 *μιμήμασιν* maluit Struve | 26 *ὑφ' ἑαυτῷ Ambr.*, quod correxi | 30 verba lacera emendare nolui | 32 *ἐφ' ἑλκῶν ἔχοντα*?

224, 5 *κοινὰ καὶ νόμιμα Suidas* | 16 *τοῦ* delevi cum *Suida* | 18 *δημοσίαν* maluit Reiske | 20 *θανάτου* cod. Turonensis | 22 *ἐν ταῖς στρατηγίαις καὶ ταῖς ἄλλαις* coniecit Reiske.

225, 2 *Ποπλίου Turon. Suidas*; an *Πουπλιλίου* conl. Liv. VIII 28? | *ὡς* Reiske *ὧν* libri | 3 *καταληφθεὶς Turon.* | 17 *καὶ τὴν κρίσιν Turon.* om. *Suidas*; *ἀχθεὶς εἰς τὴν κρ.* scripsi | 28 *τοιοῦτό τι σεισμῶν* maluit Struve.

226, 2 *ἐναπολειφθὲν Ambr.*, correxit Struve.

227, 5 *ὁμόρρους Mon.* | *ὁρμηθέντας Vat.* | 7 *τε* delevit Sylburg | 14 *συμπεσεῖν* libri | 15 *ἁπάσης πόλεως* maluit Sylburg | 20 *ἀπεκύρωσε Mon.*

228, 2 *δηλώσαντες* et 4 *παρακαλέσαντες* libri, quod correxi | 3 *τὴν τότε χώραν* libri, correxit Hudson | 6 *ἔργον. περιοψομένη Mon.* | 7 *οἰκέτας Mon.* | 11 *ἰδίᾳ* maluit Sylburg | 13 *οὐ πολλῷ πρότερον* maluit Stephanus | 18 *ἕπεσθαι* libri | 19 *πείσεσθαι Mon. Vat.*, correxit Sylburg ex codice Pacii | 20 *εἰ δὲ μὴ* libri *καὶ εἰ μὴ* scripsi | 24

αὐτὸς Vat. | 30 *καταφεύγοντας* libri, correxit Ursinus | 32 *τὴν* inserui.

229, 1 *ἐπὶ πλείω* libri, correxit Sylburg | 2 *εἰ* addidit Reiske | 4 *τε* delevit Stephanus, *καὶ τὰ* maluit Sylburg | 8 *τῆς τάξεως τοῦ γένους Tur. Suidas*, correxit Valesius; *τῆς τ' ἀξίας* maluit Reiske | 14 *πλῆθος* om. *Suid.* | 21 *ἡγεμόνα γενόμενον Suid.* | 31 *Φάβιον Σαυνιτῶν Turn.*, *Φάβιον* post. *Πέντρους* transposui.

230, 2 *ταύτην* add. Reiske | 14 *ἐξέπλευσεν Tur. ἐξήλασεν* Reiske | 16 *Φάβιος μὲν οὖν* maluit Reiske.

231, 3 *ἂν* inserui | 9 *ὃν ᾔτει βουλὴ συνεχώρησεν Tur.* correxit Reiske | 16 *ἔχουσαν Tur.* correxit Valesius.

232, 7 *γινομένας Ambr.*, quod correxi | 17 *ἂν* inseruit Struve.

233, 4 *μένοντας? Ambr.* | 8 *ὠνυισμένην Ambr.*, correxit Creuzer *ὀπυιόμενον* Struve | 11 verba uncinis inclusa desunt in *Ambr.*, addidit Maius | 21 *πεπρωμένον* maluit Maius, quod recipere debui | *καὶ τὸν Ambr.* | 29 *ἀπεῖναι Ambr.* | 32 *δ'* inserui.

234, 5 *ὧν — τόπων Ambr.*, correxit Struve | 9 *αἰνησίας Ambr.*, *ἀνόσιος* Maius | 18 *ταραντίνων Mon.* | 19 *βουλομένων Vat.* | 21 *παρατηροῦν Mon.* | 22 *ἀναστάσεις* libri, correxit Sylburg | 23 *βαρβάρους Mon.* | *βαρβάρουν Vat.* | *τελευτῶν Mon. Vat.*, correxit Ursinus | 25 *Ταραντίνων* Ursinus *παρα τίνων Mon. Vat.* | 26 *ὑπὸ* libri *ἀπὸ* Sylburg.

235, 4 *οὐδὲ* scripsi *οὐ* libri | 10 *δεξόμεθα* libri, correxit Sylburg | *ὅτι μὴ καὶ τὰ* libri, correxit Ursinus | 14 *τὸν* addidi | *ἤκουεν* libri, correxit Stephanus | 14 *τὸν ὑβριστὴν* coniecit Reiske | 29 *ὑποισμένοι* libri *ὑβρισμένοι* Sylburg.

236, 3 *λελύσθαι ἢ μὴ* maluit Reiske | 6 *ὑπ' αὐτῆς* libri, correxit Sylburg | 11 *θύρας Vat.* | 12 *δὲ* inseruit Sylburg ex cod. Pacii | 17 *ἀριθμεῖσθαι Vat. Mon.*, correxit Sylburg ex libro Pacii | 17 *οὔ τοι*] *αἵ* Reiske | 18 *καιροὺς* om. *Vat.* | 21 *ἔχουσαι Ambr.* | 24 *παντὸς ἀγαθοῦ* (ων) *εἶναι σύμβολον* coniecit Struve | 24 *τοῖς ἀλλοτρίοις Ambr.* |

27 *περίσκοποι Ambr.* correxit Struve | 30 nescio quo casu *μέρος* pro eo quod *Ambr.* recte exhibet *θέρος* in ordinem verborum inrepserit.

237, 6 *ῥωμαῖον Ambr.* | 8 *τύχη Ambr.*, correxit Struve | 10 *εἰσελεύσεται κακὰ*? | 13 *προσαυδοῦσαν Ambr.* teste Maio *προσαυλοῦσαν* scripsi | 24 *ἠριθμεῖτε Ambr.*

238, 2 *ἐπαγόμενος Ambr.* correxit Struve | 3 *οἰόμενος δὴ Ambr.* correxit Struve | 4 *ἂν* inserui | *περιμενεῖν* coniecit Struve. Fortasse totum enuntiatum sic interpungendum: *Οἰόμενος δὴ — συμβουλεύω τε — (διαιτήσω γὰρ — τὰ διαφορά) καὶ παρέξω* | 11 *ἃς* Struve *οὓς Ambr.* | 12 *ποιήσητε Ambr.* | 15 *ἐπαγγέλομεν* (sic) *Ambr.*, correxit Maius ex codice Vaticano quodam, mihi ignoto | 22 *ὡς* Maius *καὶ Ambr.*

239, 13 *τοὺς ἄλλους πολεμίους*? | 16 *τοῦτο Ambr.* *ταὐτὸ* Struve | 25 *καὶ* delendum cum Struvio.

240, 13 *νεανιευομένου* extat in *Ambr.* | 18 *διασκεδάσας φέρει τῷ κοντῷ* in *Ambrosiano* addita post *στίφος*, sed postea a librario deleta | 19 *ἀμφοτέρας τὰς χεῖρας Ambr.*, correxit Struve | 31 *τὸ νεκρὸν Ambr.* | 32 *διασήμενος Ambr.*

241, 3 *λυσιτελέστερον Ambr.* correxit Struve | 5 *ἑτέρων Ambr.* | 7 *τὴν κεφαλὴν Ambr.*, correxit Struve | 10 *ἠπειρώτου* libri, correxit Sylburg | 22 *ὅλον Vat.* | 23 *γέωνας Mon.* *νέωνας Vat.* correxit Ursinus | *πολέμῳ κρατήσας ἅπαντας* coniecit Reiske | 27 *πόλεων* libri *πολέμων* Ursinus | 29 *προαίρεσιν* libri, correxit Stephanus | *ἀργύριον αὐτῶν τ. ἀ.* libri, correxit Ursinus.

242, 5 *ἔχοιτε Mon.* | *βουλεύεσθαι* libri, correxit Sylburg | 10 *ἀγαθοὺς ἄνδρας* maluit Reiske | 14 *σε* addidit Ursinus | 15 *κἂν τῷ βίῳ* maluit Struve | 16 *ἄλλας Mon.* *ὅλας Vat.* | 17 *χρημάτων τε* libri, correxit Sylburg | 18 *ἐλασσόμενον* libri, correxit Sylburg | *μηδένα Vat.*, teste Ursino | 29 *μέτασχε Vat.* *μέταχε Mon.*, correxit Sylburg | 31 *ἴσεται Vat.* | 32 *οὐκ ἐλάττω τῶν ἐμῶν φίλων φέρεσθαι καὶ ξένων ἐν τοῖς τιμιωτάτοις εἶναι* Reiske.

243, 2 *ὑπηρετήσας Mon.* | 3 *τε* addidi | 7 *ὡς οὐκ ἐπὶ* maluit Reiske | 9 *οἷς* libri *οὓς* Sylburg | 10 *νενικηκόσι*

libri, correxit Ursinus | 11 ἐγκαταλιπεῖστε καὶ *Vat.* ἐγκαταλιπεῖν δὲ καὶ *Mon.* | 16 εἶναι ῥωμαῖοι ποιήσαντα φίλον *Mon. Vat.* quae correxi | 17 λέγεις *Vat.* | 21 τεκμαιρόμενον libri, correxit Sylburg.

244, 4 περὶ τούτων Sylburg τοῦτον Reiske | 6 πράττει *Vat.* | 8 οὔτε ἀκούσας *Mon.* | 10 παρὰ τῷ libri, correxit Sylburg | 15 ἐξέγινετο *Vat.* | 16 ἄρχων *Mon.* | καὶ μεγίστας libri, correxit Ursinus | 17 καὶ addidit Ursinus | πρεσβεύων *Mon.* | 18 σεβασμίους libri, correxit Sylburg | 20 μετόπῳ *Mon.* μετώπῳ *Vat.* με τόπῳ Sylburg | 22 εἰ μὴ *Vat.* εἰμὶ *Mon.* | 25 ἐνοχλεῖν libri, correxit Ursinus. | 27 ὁ δὲ] οὐδὲ *Mon.* | 29 ἂν addidi | 32 ἀπαξίωσιν *Vat.*

245, 2 ἀλλήλους *Vat.* | 4 κατηγόρηκε *Mon.* κατηγόρηκα *Vat.*, quod correxi | 5 ἐξίσωσε Sylburg ἐποίησε libri | 8 πάντων μακαρίων *Mon.* | ἐμαυτὸν om. *Vat.* | 9 τοῦτο libri, correxit Sylburg | 11 παρέχει *Mon.* | 14 σκεδάσῃ libri, correxit Sylburg | ὅταν libri ὅτι ἂν scripsi | 16 παρασχοῦσα Sylburg | 19 εἶναι libri εἴην Reiske | 20 παρέσχων *Mon.* | 21 ὑπερβαλόντων *Mon.* | 23 τοὺς πλουσίους *Vat.* τοὺς πλεισίους *Mon.*, correxit Sylburg | 25 ὁ om. *Mon.* | 26 αὐτοὺς libri, correxit Ursinus | δ' inseruit Sylburg | 28 ταῦτα τὰ κοινὰ libri, correxit Sylburg | 29 ἐπαίτιον maluit Reiske | 31 αἰτεῖς scripsi αἴτιος εἰ libri.

246, 1 τὸ om. *Mon.* | πράγματα libri χρήματα Ursinus | 2 μακαριωτάτους *Mon.* μακάριον τούτους *Vat.* | 6 καλῶν *Vat.* | πάρασχε *Mon.* | 8 ἐπεὶ inserui ἡνίκα coniecit Reiske | 9 καὶ ante Βρεττίους addidit Ursinus | 10 ἐστάλη *Mon.* | 13 ἐξελὼν libri, correxit Sylburg | 15 προσήνεγκαν libri, correxit Reiske | 17 τῶν θριάμβων libri, correxit Portus | 18 βουλόμην libri, correxit Sylburg | 19 τὸν] τῶν *Vat.* | 21 aut πλεῖστοι aut συχνοὶ cum Sylburgio delendum est | τούτοις libri τούτῳ Sylburg | 23 δέξωμαι *Vat.* | 25 πρὸς τὸ libri πρὸς τῷ Sylburg | 26 καλῷ καὶ δικαίῳ coniecit Reiske | πόσος ἦν libri προσῆν Stephanus | 28 βαρύνοντες libri, correxit Sylburg | 29 κοσμήσας libri, quod cum Sylburgio in κοσμήσῃ corrigendum erat.

247, 6 ταῦτα προφερόμενοι accesserunt ex Ambro-

siano, omittunt libri Ursiniani | 13 ἦν *Ambr.* | 14 ποιήσασθαι εἰρήνην ταύτην ποιήσας Struve ποιήσασθαι *Ambr.* | 22 πρεσβευτικὸν Struve πρεσβύτερον *Ambr.* | 26 τῆς μεγάλης *Ambr.* correxit Struve.

248, 13 μετάγωσιν *Ambr.* quod correxi | 16 περιλαβὼν *Ambr.* correxit Struve | 17 χρήσιμον *Ambr.* correxit Struve | 21 αὐτοῦ *Ambr.* correxit Struve | 31 τὸ εὐγενὲς scripsi εὐγενές *Ambr.*

249, 7 λαμβάνουσι *Ambr.* | 11 ὑφ' ὑμῖν *Ambr.* correxit Struve | ἔστι Maius ἔτι *Ambr.* | 15 πολλὰ ὅσα scripsi ὅλα ὅσα *Ambr.* | 23 ἐμαυτὸν scripsi ἑαυτὸν *Ambr.* | 30 σεαυτῷ maluit Struve | μηδὲ *Ambr.*, quod correxi.

250, 11 συστῆναι et 12 συνέστη coniecit Struve.

251, 12 θὲς πρώτους *Ath.*

252, 3 ὁμοῦ τε *Ath.*, correxit C. Müller | 5 ἐπάρκεσιν Dübner πάρεισιν *Ath.* | 8 ἀμπλακιωτικῇ *Ath.* correxit Wescher | 13 κατομολοττους *Ath.* correxit Müller | 14 κέρας *Ath.* κέρατος Müller | 17 θυρασαφόρω *Ath.* | 18 ουολεσκουο *Ath.* | 23 τ' addidi | 27 στομίσιν coniecit Wescher στάλιξιν Müller στόρθυγξιν ὀρθαῖς Dübner | 29 ἀεπάκρων *Ath.* correxit Wescher | 31 καταράκτας *Ath.*

253, 3 ἃς *Ath.*, correxit Müller | 8 χερμάδων coniecit Müller | 10 τάξεις *Ath.* | 12 ἴδιον *Ath.* Ἰόνιον Müller | 15 τι addidit Müller | 19 ἀλλάξαντες *Ath.*

254, 1 ἵππων *Ath.*, quod correxi | ἡ add. Minas | 10 στρατείας ut et v. 16 *Ath.*, correxit Müller | 11 ἀνέτειλαν *Ath.* | 18 κερασφόροις *Ath.*, correxit Dübner | 21 προαγόντων coniecit Müller | 25 καὶ delevi cum Müllero.

255, 1 λαχόντες mavolt Müller | 7 ἑαυτῶν *Ath.*, correxit Minas | 8 ὑπολαβεῖν *Ath.* correxit Minas | 21 οὔτε scripsi οὐδὲ *Ath.* | 24 συλλαβεῖν *Ath.* συμβαλεῖν scripsi | 32 ἐλθόντες Müller | εἰλήφασι *Ath.* correxit Minas.

256, 3 ὃς Dübner ὡς *Ath.* | 5 παρῆν Dübner παρὼν *Ath.* | γὰρ delevit Dübner | 10 ὑφο *Ath.* ἄφνω Wescher; an ὑφάπτεται ὁ χάραξ.? | 13 ἔφυγον inseruit Dübner | 19 περο√·ιδόντες *Ath.*, correxit Wescher | 22 ὄχλον *Ath.* ὄχθον scripsi | 23 καὶ om. *Ath.* | 27 πιστικῆς *Ath.* correxit

Minas; πεζικῆς Dübner | 31 αὐτὸν add. Wescher | 32 πλείω *Ath.*

257, 15 *Μεσήνην* hic et ubique fere *Esc.* | 24 ἀπελυθόντων *Esc.*, correxit Müller | 25 ἐν τῇ ὑποψίαις *Esc.* sed τῇ a librario iam deletum | 26 ἐν τῇ πόλει mavolt Feder | 28 ἥ τις *Esc.* correxit Müller | 32 τοὺς ἐπιφανεστάτους *Esc.* quod correxi.

258, 1 τε delevi | 2 καὶ ante κατασκευὰς inserendum censent Müller et Feder | 5 ὡς ἄξιους *Esc.* | 7 κοινωνοὺς *Esc.* | 11 ὅτι καὶ *Μεσσήνην* mavolt Müller | 12 πρότειχον *Esc.* correxit Müller; nomen Mamertinorum intercidisse suspicor | ὑφ' οὗ delevit Müller | 14 γραμματάρχας *Esc.* | 17 αὐτοῖς? | ἐπικρεμασθένα *Esc.* correxit Feder; ἐπικρεμασθέντα Müller | 24 ὃς ἐξ ὁδοῦ *Esc.* | 26 μέλλειν *Esc.* correctum a Federo ex Ambrosiano | 29 τινὲς μὲν οὖν mavolt Feder | 32 φθάσειν *Esc.* correxit Feder.

259, 11 τάς τε γὰρ γυναῖκας quamvis dubitanter coniecit Feder | 14 *Δέκιος* δή? | 23 τὸν ἕτερον τῶν κ. π. στρατηγῶν scripsi ἑτέραν τὸν κ. π. στρατηγὸν *Esc.* | 28 περιοδίνας φερούσας *Esc.* | 29 ἄνθρωπον *Esc.*, correxit Feder.

260, 9 ὁ addidit Feder | 12 ἐκκεκαυμένας Müller ἐκκεκαυμένος *Esc.* | 15 φαβρικίου delevi | 19 φρουρὰς *Esc.*

261, 5 οὓς] ὃς *Ambr.* | 12 ὁσιωτέρους et δικαιοτέρους maluit Struve | 18 ἐν ὀδίνους *Ambr.* | 21 πᾶσι *Ambr.* | 27 ταῖς πόλεσι *Tur.* correxit Reiske.

262, 6 κατέλειπε *Tur.* correxit Reiske | 32 τὰ om. *Suidas.*

263, 3 ἐτρέπετο *Tur. Suidas*, correxit Reiske | 15 ἢ ὅτι *Tur.* ἢ delevit Reiske | 17 καὶ add. Reiske | 23 φύλαρχος *Tur.* φρούραρχος Valesius.

264, 9 ἀνοσίων *Tur.* corr. Reiske | 11 ταύτῃ] πάνυ coniecit Reiske | 15 πράγματος, τοῖς εἰσηγησαμένοις praeter libros addidi, partim auctore Valesio | 17 ἐξαχθέντα sive ἐξελχθέντα (sic!) sive ἐξενεχθέντα coniecit Reiske | 21 αὐτῆς *Tur.* | 27 προσενεχθεὶς *Tur.* correxit Reiske.

265, 2 δι' αὐτοῦ Suidas v. παραιτησόμενος | 4 οὐ

om. *Tur.* | 20 ἐπικουρία τοῖς ἑτέροις ἢ ἄφιξις *Tur.* correxit Reiske.

266, 2 συστάδυ *Ambr.* | 3 κατορθοῦνταςτας *Ambr.*

267, 2 κ' ἀργοὺς *Ambr.* | 7 γινομένων? | 8 ἑκάστου *Ambr.* correxit Nauck | 14 τῆς τιμωρίας *Ambr.* | 18 ἀδελφοὺς τῆς οὐσίας maluit Struve | 19 ἀμελείας *Ambr.* ἀσελγείας Struve | 20 ταφρῶν *Ambr.* | 26 Φάκιος *Ambr.* | Ὀγούλνιος scripsi Ἀλγούνιος *Ambr.* | 28 περὶ πρεσβείας mihi ex nota in margine apposita in verborum ordinem irrepsisse videntur | δωρεαῖς ἰδίᾳ maluit Struve.

268, 13 πιαινόμενοι *Ambr.* | 14 συμφαινομένη *Ambr.*, quod correxi; συμφυομένη Struve | 19 διαρκεῖς *Ambr.* | 22 ὅπλων *Ambr.* correxit Struve | 30 καταληφθείσης *Ambr.* | 32 σφαγαί τε καὶ πολλῶν *Ambr.*

269, 9 διὰ πάντων *Ambr.* δὴ ἁπάντων Struve | 24 ᾧ addidit Visconti apud Maium | 27 μείονα Struve πλείονα *Ambr.* in quo aliud latere videtur, velut λιτὸν.

Corrigenda.

6, 13 lege *δὲ* 15, 5 l. *φυγάδων Καίσωνα* 15, 12 l. *ἥξει τε* 48, 31 l. *ἀπήλασε τὸν ὑ.* 66, 3 l. *ἵπποις* 81, 20 l. *πατρίδι, ὁμονοίας τε καὶ εἰρήνης καὶ τ.* 116, 19 l. *οἴῳ* 144, 26 l. *ῥυτῆρος* 145, 24 l. *ἐπιλογιζόμενος* 145, 25 l. *μήτε νόμῳ* 156, 14 l. *Σαβίνων* 161, 13 l. *δήμαρχοι* 166, 19 l. *ἡγεμονίας, ἐπεὶ* 175, 17 l. *Μαίλιος* 175, 21 l. *νὺξ* 182, 1 l. *δόλοις καὶ* 188, 3 l. *Αἰνείαν* 194, 24 l. *τροφῆς* 205, 20 l. *ἐποίουν, αὐτοὶ* 222, 6 l. *λιμῷ* 223, 15 l. *ῥώπου* 228, 27 l. *ἅπαντας* 247, 6 l. 247, 1—6 *Ambr.* 256, 12 l. *ὑπὸ τοῦ βασιλέως.*

ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΛΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΔΕΚΑΤΟΣ.

Μετὰ δὲ τούτους ὀλυμπιὰς μὲν ἦν ὀγδοηκοστή,
ἣν ἐνίκα στάδιον Τορύμβας Θεσσαλὸς ἄρχοντος Ἀθή-
νησι Φρασικλέους· ὕπατοι δὲ ἀπεδείχθησαν ἐν Ῥώμῃ
Πόπλιος Οὐολούμνιος καὶ Σερούιος Σολπίκιος Κα-
μερῖνος. οὗτοι στρατιὰν μὲν οὐδεμίαν ἐξήγαγον οὔτε
82 ἐπὶ τιμωρίας ἀναπράξει τῶν ἀδικούντων σφᾶς τε αὐ-
τοὺς καὶ τοὺς συμμάχους οὔθ᾽ ὡς διὰ φυλακῆς τὰ
οἰκεῖα ἕξοντες· τῶν δ᾽ ἐντὸς τείχους κακῶν πρόνοιαν
ἐποιοῦντο, μή τι δεινὸν ὁ δῆμος ἐπὶ τῇ βουλῇ συστὰς
ἐξεργάσηται. ἐταράττετο γὰρ αὖθις ὑπὸ τῶν δημάρ-
χων ἀναδιδασκόμενος, ὅτι πολιτειῶν κρατίστη τοῖς
ἐλευθέροις ἐστὶν ἰσηγορία, καὶ κατὰ νόμους ἠξίου
διοικεῖσθαι τά τε ἰδιωτικὰ καὶ τὰ δημόσια. οὔπω
γὰρ τότε ἦν οὔτ᾽ ἰσονομία παρὰ Ῥωμαίοις οὔτ᾽ ἰση-
γορία, οὐδ᾽ ἐν γραφαῖς ἅπαντα τὰ δίκαια τεταγμένα·
ἀλλὰ τὸ μὲν ἀρχαῖον οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἔταττον τοῖς
δεομένοις τὰς δίκας, καὶ τὸ δικαιωθὲν ὑπ᾽ ἐκείνων,
τοῦτο νόμος ἦν. ὡς δ᾽ ἐπαύσαντο μοναρχούμενοι,
τοῖς κατ᾽ ἐνιαυτὸν ὑπατεύουσιν ἀνέκειτο τά τε ἄλλα
τῶν βασιλέων ἔργα καὶ ἡ τοῦ δικαίου διάγνωσις, καὶ

τοῖς ἀμφισβητοῦσι πρὸς ἀλλήλους ὑπὲρ ὁτουδήτινος ἐκεῖνοι τὰ δίκαια οἱ διαιροῦντες ἦσαν. τούτων δὲ τὰ μὲν πολλὰ τοῖς τρόποις τῶν ἀρχόντων ἀριστίνδην ἀποδεικνυμένων ἐπὶ τὰς ἀρχὰς ἀκόλουθα ἦν· κομιδῇ 19 δὲ ὀλίγα τινὰ ἐν ἱεραῖς ἦν βύβλοις ἀποκείμενα, ἃ νόμων εἶχε δύναμιν, ὧν οἱ πατρίκιοι τὴν γνῶσιν εἶχον μόνοι διὰ τὰς ἐν ἄστει διατριβάς, οἱ δὲ πολλοὶ ἐμπορευόμενοί τε καὶ γεωργοῦντες καὶ διὰ πολλῶν ἡμερῶν εἰς ἄστυ καταβαίνοντες ἐπὶ τὰς ἀγορὰς ἄπειροι ἔτι ἦσαν. τὸ δὲ πολίτευμα τοῦτο πρῶτος μὲν ἐπείρασεν εἰσαγαγεῖν Γάιος Τερέντιος δημαρχῶν ἐν 19 τῷ παρελθόντι ἔτει· ἀτελὲς δὲ ἠναγκάσθη καταλιπεῖν, τοῦ τε πλήθους ὄντος ἐπὶ στρατοπέδων καὶ τῶν ὑπάτων ἐπίτηδες ἐν τῇ πολεμίᾳ γῇ τὰς δυνάμεις κατασχόντων, ἕως ὁ τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς παρέλθῃ χρόνος.

II. Τότε δ' αὐτὸ παραλαβόντες οἱ περὶ Αὖλον Οὐεργίνιον δήμαρχοι τελειῶσαι ἐβούλοντο· ἵνα δὲ μὴ τοῦτο γένοιτο μηδὲ κατὰ νόμους ἀναγκασθεῖεν πολιτεύεσθαι, πάντα ἐπιμηχανώμενοι διετέλουν οἵ τε ὕπατοι καὶ ἡ βουλὴ καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν οἱ πλεῖστον ἐν τῇ πόλει δυνάμενοι· βουλαί τε πολλαὶ καὶ ἐκκλησίαι συνεχεῖς ἐγίνοντο πεῖραί τε παντοῖαι ταῖς ἀρχαῖς κατ' ἀλλήλων, ἐξ ὧν οὐκ ἄδηλον ἅπασιν ἦν, ὅτι μεγάλη τις καὶ ἀνήκεστος ἐξ ἐκείνης τῆς φιλονεικίας ἀναστήσεται τῇ πόλει συμφορά. συνήπτετο δὲ τοῖς ἀνθρωπίνοις λογισμοῖς καὶ τὰ θεῖα δείματα 198 προσγενόμενα, ὧν ἔνια οὔτ' ἐν δημοσίαις εὑρίσκετο γραφαῖς οὔτε κατ' ἄλλην φυλαττόμενα μνήμην οὐδεμίαν. ὅσα μὲν γὰρ ἐν οὐρανῷ σέλα φερόμενα καὶ πυρὸς ἀνάψεις ἐφ' ἑνὸς μένουσαι τόπου γῆς τε μυκήματα καὶ τρόμοι συνεχεῖς ἐγίνοντο, μορφαί τ' εἰ-

δώλων ἄλλοτ' ἀλλοῖαι δι' ἀέρος φερόμεναι καὶ φωναὶ ταράττουσαι διάνοιαν ἀνθρώπων, καὶ πάντα ὅσα τούτοις ὅμοια συνέπιπτεν, εὑρίσκετο καὶ πάλαι ποτὲ γεγονότα ἧττον τε καὶ μᾶλλον· οὗ δὲ ἄπειροί τε καὶ ἀνήκοοι ἔτι ἦσαν καὶ ἐφ' ᾧ δὲ μάλιστα ἐταράχθησαν, τοιόνδ' ἦν· νιφετὸς ἐξ οὐρανοῦ κατέσκηψεν εἰς γῆν πολὺς οὐ χιόνα καταφέρων, ἀλλὰ σαρκῶν θραύσματα
86 ἐλάττω τε καὶ μείζω. τούτων τὰ μὲν πολλὰ μετάρσια προσπετόμεναι πτηνῶν ὅσαι εἰσὶν ἀγέλαι τοῖς στόμασιν ἥρπαξον· τὰ δ' ἐπὶ τὴν γῆν ἐνεχθέντα ἐν αὐτῇ τε τῇ πόλει καὶ κατὰ τοὺς ἀγροὺς μέχρι πολλοῦ χρόνου κείμενα διέμεινεν οὔτε χρόαν μεταβάλλοντα, οἷα πάσχουσι παλαιούμεναι σάρκες, οὔτε σηπεδόνι διαλυόμενα, ὦζέ τε ἀπ' αὐτῶν οὐδὲν πονηρόν. τοῦτο τὸ τέρας
87 οἱ μὲν ἐπιχώριοι μάντεις οὐχ οἷοί τ' ἦσαν συμβαλεῖν· ἐν δὲ τοῖς Σιβυλλείοις εὑρέθη χρησμοῖς, ὅτι πολεμίων ἀλλοεθνῶν παρελθόντων εἰς τὸ τεῖχος ἀγὼν ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ καταλήψεται τὴν πόλιν, ἄρξει δὲ τοῦ πρὸς τοὺς ἀλλοεθνεῖς πολέμου στάσις ἐμφύλιος, ἣν χρῆν ἀρχομένην ἐξελαύνοντας ἐκ τῆς πόλεως καὶ θεοὺς παραιτουμένους θυσίαις τε καὶ εὐχαῖς ἀποτρέψαι τὰ δεινά· καὶ κρείττους ἔσονται τῶν ἐχθρῶν. ὡς δ' ἐξηνέχθη ταῦτ' εἰς τὸ πλῆθος, ἱερὰ μὲν πρῶτον ἔθυσαν οἷς ἡ τούτων ἐπιμέλεια ἀνέκειτο θεοῖς ἐξακεστηρίοις τε καὶ ἀποτροπαίοις, ἔπειτα συναχθέντες εἰς τὸ βουλευτήριον οἱ σύνεδροι παρόντων καὶ τῶν δημάρχων ὑπὲρ ἀσφαλείας τε καὶ σωτηρίας τῆς πόλεως ἐσκόπουν.

III. Τὸ μὲν οὖν καταλύσασθαι τὰ πρὸς ἀλλήλους ἐγκλήματα, καὶ μιᾷ χρήσασθαι γνώμῃ περὶ τῶν κοινῶν, ὡς ὑπετίθεντο οἱ χρησμοί, πάντες ὡμολόγουν· ὅπως δ' ἂν τοῦτο γένοιτο καὶ ἀπὸ τίνων ἀρξαμένων

εἴκειν τοῖς ἑτέροις τὸ διάφορον [καὶ πῶς] παύσαιτο 198 στασιάζον, οὐ μικρὰν αὐτοῖς παρεῖχεν ἀπορίαν. οἱ μὲν γὰρ ὕπατοι καὶ οἱ τῆς βουλῆς προεστῶτες τοὺς εἰσφέροντας καινὰ πολιτεύματα δημάρχους καὶ καταλύειν ἀξιοῦντας τὸν πάτριον τῆς πολιτείας κόσμον αἰτίους ἀπέφαινον τῆς ταραχῆς. οἱ δὲ δήμαρχοι σφᾶς μὲν αὐτοὺς οὐδὲν ἔλεγον ἀξιοῦν οὔτε ἄδικον οὔτε ἀσύμφορον εὐνομίαν εἰσάγειν βουλομένους καὶ ἰσηγορίαν· τοὺς δὲ ὑπάτους καὶ τοὺς πατρικίους αἰτίους ἔσεσθαι τῆς στάσεως ἔλεγον, ἀνομίαν αὔξοντας καὶ πλεονεξίαν καὶ ζηλοῦντας τὰ τῶν τυράννων ἤθη. ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια παρ' ἑκατέρων ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἐλέγετο, καὶ προύβαινε διὰ κενῆς ὁ χρόνος· ἐν ᾧ τῶν κατὰ τὴν πόλιν οὔτε δημοσίων οὔτε ἰδίων οὐδὲν ἐτελεῖτο. ὡς δ' οὐδὲν ἐγένετο τῶν προὔργου, λόγων μὲν ἐκείνων καὶ κατηγοριῶν, ἃς 19 ἐποιοῦντο κατὰ τῆς βουλῆς, οἱ δήμαρχοι ἀπέστησαν· συναγαγόντες δὲ τὸ πλῆθος εἰς τὴν ἐκκλησίαν ὑπέσχοντο τῷ δήμῳ νόμον εἰσοίσειν ὑπὲρ ὧν ἠξίουν. ἐπαινέσαντος δὲ τοῦ πλήθους τὸν λόγον, οὐδὲν ἔτι ἀναβαλόμενοι τὸν παρασκευασθέντα νόμον ἀνέγνωσαν· κεφάλαια δὲ αὐτοῦ τάδε ἦν· ἄνδρας αἱρεθῆναι δέκα ὑπὸ τοῦ δήμου συναχθείσης ἀγορᾶς ἐννόμου τοὺς πρεσβυτάτους τε καὶ φρονιμωτάτους, οἷς ἔστι πλείστη πρόνοια τιμῆς τε καὶ δόξης ἀγαθῆς· τούτους δὲ συγγράψαντας τοὺς ὑπὲρ ἁπάντων νόμους τῶν τε κοινῶν καὶ τῶν ἰδίων εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν· τοὺς δὲ συγγραφησομένους ὑπ' αὐτῶν νόμους κεῖσθαι ἐν ἀγορᾷ ταῖς καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδειχθησομέναις ἀρχαῖς καὶ τοῖς ἰδιώταις ὅρους τῶν πρὸς ἀλλήλους δικαίων. τοῦτον προθέντες τὸν νόμον, ἐξουσίαν ἔδοσαν τοῖς βουλομένοις αὐτοῦ κατη-

γορεῖν, ἀποδείξαντες τὴν τρίτην ἀγοράν. ἦσαν δὲ
1990 πολλοὶ καὶ οὐχ οἱ φαυλότατοι τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου, πρεσβύτεροι καὶ νέοι, κατήγοροι τοῦ νόμου, λόγους διεξιόντες ἐκ πολλῆς ἐπιμελείας καὶ παρασκευῆς· καὶ τοῦτ᾽ ἐφ᾽ ἡμέρας ἐγίνετο συχνάς. ἔπειτα οἱ δήμαρχοι δυσχεραίνοντες ἐπὶ τῇ διατριβῇ τοῦ χρόνου, λόγον μὲν οὐδένα ἔτι τοῖς κατηγόροις τοῦ νόμου προέθεσαν, ἡμέραν δὲ ἀποδείξαντες, ἐν ᾗ κυρώσειν αὐτὸν ἔμελλον, παρεῖναι τοὺς δημότας εἰς αὐτὴν παρεκάλουν ἀθρόους, ὡς οὐκέτι ταῖς μακραῖς δημηγορίαις ἐνοχληθησομένους, ἀλλ᾽ ἐποίσοντας ὑπὲρ αὐτοῦ τὴν ψῆφον κατὰ φυλάς. οἱ μὲν δὴ ταῦτα ὑποσχόμενοι διέλυσαν τὴν ἐκκλησίαν.

IIII. Μετὰ δὲ ταῦτα οἵ τε ὕπατοι καὶ τῶν πατρικίων οἱ πλεῖστον δυνάμενοι τραχύτερον ἤδη αὐτῶν προσιόντες καθήπτοντο, λέγοντες, ὡς οὐκ ἐπιτρέπουσιν αὐτοῖς νόμους εἰσηγεῖσθαι καὶ τούτους ἀπροβουλεύτους. συνθήκας γὰρ εἶναι κοινὰς πόλεων τοὺς
1991 νόμους, οὐχὶ μέρους τῶν ἐν ταῖς πόλεσιν οἰκούντων. τοῦ τε πονηροτάτου ὀλέθρου καὶ ἀνηκέστου καὶ οὐδ᾽ εὐσχήμονος ἀρχὴν ἀπέφαινον εἶναι πόλεσί τε καὶ οἴκοις, ὅταν τὸ κάκιστον τῷ κρατίστῳ νομοθετῇ. Ποίας δὲ ὑμεῖς, ἔφασαν, ὦ δήμαρχοι, νόμων εἰσφορᾶς ἢ ἀναιρέσεως ἐξουσίαν ἔχετε; οὐκ ἐπὶ ῥητοῖς μὲν δικαίοις ταύτην τὴν ἀρχὴν παρὰ τῆς βουλῆς ἐλάβετε, τοῖς δ᾽ ἀδικουμένοις ἢ κατισχυομένοις τῶν πενήτων βοηθεῖν ᾐτήσασθε τοὺς δημάρχους, ἄλλο δὲ μηδὲν πολυπραγμονεῖν; εἰ δ᾽ οὖν καὶ πρότερον ἦν τις ὑμῖν δύναμις, ἣν οὐκ ἐκ τοῦ δικαίου βιασάμενοι ἡμᾶς ἐλάβετε, ὑποκατακλινομένης ἑκάστῳ πλεονεκτήματι τῆς βουλῆς, οὐχὶ καὶ ταύτην νῦν ἀπολωλέκατε τῇ μεταβολῇ τῶν ἀρχαιρεσιῶν; οὔτε

γὰρ βουλῆς δόγμα ὑμᾶς οὐκέτι ἀποδείκνυσιν ἐπὶ τὴν ἀρχήν, οὔτε αἱ φρᾶτραι τὴν ψῆφον ὑπὲρ ὑμῶν ἐπιφέρουσιν, οὔτε ἱερὰ προθύεται τοῖς θεοῖς πρὸ τῶν 199
ἀρχαιρεσιῶν, ἃ κατὰ νόμους ἐχρῆν ἐπιτελεῖσθαι, οὔτε ἄλλο τῶν πρὸς τοὺς θεοὺς εὐσεβῶν ἢ πρὸς ἀνθρώπους ὁσίων οὐθὲν ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῆς ὑμετέρας γίνεται. τίνος οὖν ὑμῖν ἔτι μέτεστι τῶν ἱερῶν καὶ σεβασμοῦ δεομένων, ὧν ἕν τι καὶ ὁ νόμος ἦν, ἐξαρνησαμένοις ἅπαντα τὰ νόμιμα; Ταῦτά τε δὴ τοῖς δημάρχοις ἔλεγον οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ νέοι αὐτῶν κατὰ ἑταιρίας διεξιόντες ἀνὰ τὴν πόλιν, καὶ τοὺς μὲν ἐπιεικεστέρους τῶν δημοτῶν ὁμιλίαις ἀνελάμβανον κεχαρισμέναις, τοὺς δὲ ἀπειθεῖς καὶ ταραχώδεις ἀπειλαῖς κατεπλήττοντο κινδύνων, εἰ μὴ σωφρονήσειαν· ἤδη δέ τινας τῶν πάνυ ἀπόρων καὶ ἀπερριμμένων, οἷς οὐθενὸς τῶν κοινῶν παρὰ τὰ ἴδια κέρδη φροντὶς ἦν, παίοντες ὥσπερ ἀνδράποδα ἀνεῖργον ἐκ τῆς ἀγορᾶς.

V. Ὁ δὲ πλείστους τε περὶ αὐτὸν ἔχων ἑταίρους καὶ μέγιστον τῶν τότε νέων δυνάμενος Καίσων Κοίντιος ἦν, υἱὸς Λευκίου Κοιντίου τοῦ καλουμένου 199
Κικιννάτου, ᾧ γένος τ' ἦν ἐπιφανὲς καὶ βίος οὐδενὸς δεύτερος, ἀνὴρ ὀφθῆναί τε κάλλιστος νέων καὶ τὰ πολέμια πάντων λαμπρότατος φύσει τε περὶ λόγους κεχρημένος ἀγαθῇ· ὃς ἐν τῷ τότε χρόνῳ πολὺς ἔρρει κατὰ τῶν δημοτικῶν, οὔτε λόγων φειδόμενος, ὧν βαρὺ τοῖς ἐλευθέροις ἀκούειν, οὔτε ἔργων ἀκολούθων τοῖς λόγοις ἀπεχόμενος. οἱ μὲν οὖν πατρίκιοι τίμιον αὐτὸν ἐπὶ τούτοις εἶχον, καὶ μένειν παρὰ τὰ δεινὰ ἠξίουν, αὐτοὶ παρασχεῖν τὸ ἀσφαλὲς ὑπισχνούμενοι· οἱ δ' ἐκ τοῦ δήμου πάντων δὴ μάλιστα αὐτὸν ἀνθρώπων ἐμίσουν. τοῦτον τὸν ἄνδρα

ἔγνωσαν οἱ δήμαρχοι πρῶτον ἐκποδὼν ποιήσασθαι, ὡς καταπληξόμενοι τοὺς λοιποὺς τῶν νέων καὶ προσαναγκάσοντες σωφρονεῖν. γνόντες δὲ ταῦτα καὶ παρασκευασάμενοι λόγους τε καὶ μάρτυρας πολλούς, εἰσάγουσιν αὐτὸν ὑπὸ δίκην ἀδικήματος δημοσίου, θανάτου τιμησάμενοι τὴν δίκην. παραγγείλαντες δ' αὐτῷ παρεῖναι πρὸς τὸν δῆμον, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ χρόνος, ὃν ἔταξαν τῇ δίκῃ, συναγαγόντες ἐκκλησίαν
1994 μακροὺς ἐποιήσαντο κατ' αὐτοῦ λόγους, διεξιόντες ὅσα βίᾳ διαπεπραγμένος ἐτύγχανεν εἰς τοὺς δημότας, ὧν τοὺς πεπονθότας αὐτοὺς παρῆγον μάρτυρας. ὡς δὲ παρέδωκαν τὸν λόγον, αὐτὸ μὲν τὸ μειράκιον οὐχ ὑπήκουε καλούμενον ἐπὶ τὴν ἀπολογίαν, ἀλλ' ἠξίου τοῖς ἰδιώταις αὐτοῖς ὑπὲρ ὧν ᾐτιῶντο παθεῖν κατὰ τὸν νόμον ὑπέχειν δίκας, ἐπὶ τῶν ὑπάτων τῆς κρίσεως γινομένης· ὁ δὲ πατὴρ αὐτοῦ χαλεπῶς φέροντας τὴν αὐθάδειαν τοῦ μειρακίου τοὺς δημοτικοὺς ὁρῶν, ἀπελογεῖτο τὰ μὲν πολλὰ ψευδῆ τε καὶ ἐξ ἐπιβουλῆς συγκείμενα κατὰ τοῦ παιδὸς ἀποδεικνύς· ὅσα δ' οὐκ ἐνῆν ἀρνήσασθαι μικρὰ καὶ φαῦλα καὶ οὐκ ἄξια δημοσίας ὀργῆς εἶναι λέγων, καὶ οὐδὲ ταῦτα ἐξ ἐπιβουλῆς ἢ δι' ὕβριν, ἀλλ' ὑπὸ φιλοτιμίας μειρακιώδους γεγονότα ἐπιδεικνύμενος, δι' ἣν πολλὰ μὲν αὐτῷ συμβῆναι δρᾶσαι τῶν ἀβουλήτων ἐν ἀψιμαχίαις, πολλὰ δ' ἴσως καὶ παθεῖν, οὔτε ἡλικίας ἐν τῷ
1995 κρατίστῳ ὄντι οὔτε φρονήσεως ἐν τῷ καθαρωτάτῳ. ἠξίου τε τοὺς δημοτικοὺς μὴ μόνον ὀργὴν μὴ ἔχειν ἐφ' οἷς ἥμαρτεν εἰς ὀλίγους, ἀλλὰ καὶ χάριν εἰδέναι περὶ ὧν ἅπαντας εὖ ποιῶν ἐν τοῖς πολέμοις διετέλεσε, τοῖς μὲν ἰδιώταις ἐλευθερίαν κτώμενος, τῇ δὲ πατρίδι ἡγεμονίαν, ἑαυτῷ δὲ εἴ ποτε ἁμάρτοι τι φιλανθρωπίαν παρὰ τῶν πολλῶν καὶ βοήθειαν. καὶ

διεξῄει τάς τε στρατείας ἁπάσας καὶ τοὺς ἀγῶνας ἅπαντας, ἐξ ὧν ἀριστεῖα καὶ στεφάνους παρὰ τῶν στρατηγῶν ἔλαβε, πολιτῶν τε ὁπόσων ἐν ταῖς μάχαις ὑπερήσπισε καὶ τείχεσι πολεμίων ὁσάκις πρῶτος ἐπέβη. τελευτῶν δ' εἰς οἴκτους κατέβαινε καὶ δεήσεις, ἀντὶ τῆς ἑαυτοῦ πρὸς ἅπαντας ἐπιεικείας βίου τε, ὃς ἐμαρτυρεῖτο αὐτῷ πάσης καθαρὸς διαβολῆς, μίαν ἀπαιτῶν παρὰ τοῦ δήμου χάριν, φυλάξαι τὸν υἱὸν αὐτῷ.

VI. Ὁ μὲν οὖν δῆμος ἥδετο πάνυ τοῖς λόγοις καὶ χαρίζεσθαι τὸ μειράκιον τῷ πατρὶ πρόθυμος ἦν. ὁ δὲ Οὐεργίνιος ὁρῶν, ὅτι μὴ δόντος ἐκείνου δίκην 199 ἀφόρητον ἔσται τὸ θράσος τῶν αὐθαδῶν μειρακίων, ἀνίσταται καί φησιν· Σοὶ μέν, ὦ Κοίντιε, ἥ τε ἄλλη μαρτυρεῖται πᾶσα ἀρετὴ καὶ ἡ πρὸς τοὺς δημοτικοὺς εὔνοια, ἀνθ' ὧν τὸ τιμᾶσθαί σοι περίεστιν. ἡ δὲ τοῦ μειρακίου βαρύτης καὶ ἡ πρὸς ἅπαντας ἡμᾶς ὑπερηφανία παραίτησιν ἢ συγγνώμην οὐδεμίαν ἐπιδέχεται· ὅστις ὑπὸ τοῖς σοῖς ἤθεσι τραφείς, οὕτως οὖσι δημοτικοῖς καὶ μετρίοις ὡς ἅπαντες ἴσμεν, τῶν μὲν σῶν ὑπερεῖδεν ἐπιτηδευμάτων, τυραννικὴν δὲ αὐθάδειαν καὶ βαρβάρων ἀνθρώπων ὕβριν ἠγάπησε, καὶ πονηρῶν ἔργων ζῆλον εἰς τὴν πόλιν ἡμῶν εἰσαγήοχεν. εἰ μὲν οὖν ἐλάνθανέ σε τοιοῦτος ὤν, νῦν ὅτ' ἔγνωκας ἀγανακτεῖν ὑπὲρ ἡμῶν δίκαιος ἂν εἴης· εἰ δὲ συνῄδεις τε καὶ συνέπραττες οἷς προεπηλάκιζε τὴν τῶν πενήτων πολιτῶν τύχην, πονηρὸς ἄρα καὶ αὐτὸς ἦσθα, καὶ ἡ τῆς καλοκἀγαθίας δόξα οὐκ ἐκ τοῦ δικαίου σοι περιγέγονεν. ἀλλὰ γὰρ ἠγνόεις αὐτὸν οὐκ ὄντα τῆς σῆς ἀρετῆς ἄξιον· ἐγώ σοι τοῦτ' ἔχω 1997 μαρτυρεῖν. ἀπολύων δέ σε τοῦ τότε συναδικεῖν ἡμᾶς, μέμφομαι τοῦ νῦν ἡμῖν μὴ συναγανακτεῖν. ἵνα δὲ

μᾶλλον μάθῃς, ἡλίκον ἄρα τῇ πόλει κακὸν ὑποτρέ-
φων ἐλάνθανες, ὡς ὠμὸν καὶ τυραννικὸν καὶ οὐδὲ
φόνου πολιτικοῦ καθαρόν, ἄκουσον αὐτοῦ φιλότιμον
ἔργον καὶ ἀντιπαρεξέτασον αὐτῷ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις
ἀριστείας· καὶ ὑμῶν ὅσοι συνεπαθεῖτε ἀρτίως οἰκτι-
ζομένῳ τῷ ἀνδρὶ σκοπεῖτε, εἰ ἄρα καλῶς ὑμῖν ἔχει
τοιούτου φείσασθαι πολίτου.

VII. Ταῦτ᾽ εἰπὼν ἀνίστησιν ἐκ τῶν συναρχόν-
των Μάρκον Οὐολούσκιον καὶ λέγειν ἐκέλευσεν, ἃ
σύνοιδε τῷ μειρακίῳ. σιωπῆς δὲ γενομένης καὶ πολ-
λῆς ἐξ ἁπάντων προσδοκίας, μικρὸν ἐπισχὼν ὁ Οὐο-
λούσκιος εἶπεν· Ἐγὼ μάλιστα ἐβουλόμην ἄν, ὦ πολῖ-
ται, δίκην ἰδίαν, ἣν ὁ νόμος δίδωσί μοι, παρὰ τούτου
998 λαβεῖν, δεινὰ καὶ πέρα δεινῶν πεπονθώς· κωλυθεὶς
δὲ τούτου τυχεῖν διὰ πενίαν καὶ ἀσθένειαν καὶ τὸ
τῶν πολλῶν εἷς εἶναι, νῦν γ᾽ ἡνίκα ἔξεστί μοι τὸ
τοῦ μάρτυρος σχῆμα, ἐπειδὴ οὐ τὸ τοῦ κατηγόρου,
λήψομαι. ἃ δὲ πέπονθα, ὡς ὠμὰ καὶ ἀνήκεστα, ἀκού-
σατέ μου. ἀδελφὸς ἦν μοι Λεύκιος, ὃν ἐγὼ πάντων
ἀνθρώπων μᾶλλον ἠγάπησα. οὗτός μοι συνεδείπνει
παρὰ φίλῳ, καὶ μετὰ ταῦτ᾽ ἀναστάντες τῆς ἐχομένης
νυκτὸς ᾠχόμεθα. διεληλυθόσι δ᾽ ἡμῖν τὴν ἀγορὰν
περιτυγχάνει Καίσων οὑτοσὶ κωμάζων σὺν ἑτέροις
ἀγερώχοις μειρακίοις. καὶ οὗτοι τὸ μὲν πρῶτον ἔσκω-
πτόν τε καὶ ὕβριζον εἰς ἡμᾶς, οἷα μεθύοντες ἂν νέοι
καὶ αὐθάδεις, ὅσ᾽ ἂν εἰς ταπεινοὺς καὶ πένητας
ὑβρίσαιεν. ὡς δ᾽ ἠγανακτοῦμεν πρὸς αὐτούς, ἐλεύ-
θερον ῥῆμα εἰς τοῦτον εἶπε. δεινὸν δ᾽ ἡγησάμενος
999 οὑτοσὶ Καίσων ἀκοῦσαί τι, ὧν οὐκ ἐβούλετο, προσ-
δραμὼν αὐτῷ παίων καὶ λακτίζων καὶ πᾶσαν ἄλλην
ὠμότητα καὶ ὕβριν ἐνδεικνύμενος ἀποκτείνει. ἐμοῦ
δὲ κεκραγότος καὶ ἀμυνομένου τοσαῦτα ὅσα ἐδυνάμην,

ἐκεῖνον ἤδη νεκρὸν κείμενον ἀφεὶς ἐμὲ πάλιν ἔπαιε, καὶ οὐ πρότερον ἐπαύσατο, πρὶν ἀκίνητόν τε καὶ ἄφωνον εἶδεν ἐρριμμένον, δόξας εἶναι νεκρόν. μετὰ δὲ ταῦτα οὗτος μὲν ἀπιὼν ᾤχετο χαίρων ὥσπερ ἐπὶ καλῷ ἔργῳ· ἡμᾶς δὲ οἱ παραγενόμενοι μετὰ ταῦτα αἵματι πεφυρμένους αἴρουσι καὶ εἰς τὴν οἰκίαν ἀπεκόμισαν, τὸν μὲν ἀδελφόν μου Λεύκιον νεκρόν, ὥσπερ ἔφην, ἐμὲ δὲ ἡμιθανῆ καὶ ἐλπίδας ἔχοντα τοῦ ζῆν ὀλίγας. ταῦτα δ' ἐγένετο Ποπλίου Σερουιλίου καὶ Λευκίου Αἰβουτίου τὴν ὑπατείαν ἐχόντων, ὅτε ἡ μεγάλη νόσος κατέλαβε τὴν πόλιν, ἧς ἀπελαύσαμεν καὶ ἡμεῖς ἀμφότεροι. τότε μὲν οὖν δίκην οὐχ οἷόν 20
τ' ἦν μοι παρ' αὐτοῦ λαβεῖν, τεθνηκότων ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων· Λευκίου δὲ Λοκρητίου καὶ Τίτου Οὐετουρίου παραλαβόντων τὴν ἀρχὴν βουλόμενος αὐτὸν ἀγαγεῖν ὑπὸ δίκην ἐκωλύθην διὰ τὸν πόλεμον, ἐκλελοιπότων ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων τὴν πόλιν. ὡς δὲ ἀνέστρεψαν ἀπὸ τῆς στρατείας, πολλάκις αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν καλῶν, ὁσάκις προσέλθοιμι· καὶ ταῦτα δὴ πολλοὶ τῶν πολιτῶν ἴσασι· πληγὰς ἐλάμβανον ὑπ' αὐτοῦ. ταῦτ' ἐστὶν ἃ πέπονθα, ὦ δημόται, μετὰ πάσης ἀληθείας εἰρημένα πρὸς ὑμᾶς.

VIII. Ταῦτ' εἰπόντος αὐτοῦ κραυγή τε ἐκ τῶν παρόντων ἐγένετο καὶ ὁρμὴ πολλῶν ἐπὶ τὴν ἐκ χειρὸς δίκην. ἀλλ' οἵ τε ὕπατοι ἐμποδὼν ἐγένοντο καὶ τῶν δημάρχων οἱ πλείους, πονηρὸν ἔθος οὐκ ἀξιοῦντες εἰς τὴν πόλιν εἰσάγειν. ἦν δὲ καὶ τοῦ δήμου τὸ καθαρώτατον οὐ βουλόμενον ἀποστερεῖν λόγου τοὺς ὑπὲρ τῶν μεγίστων ἀγωνιζομένους. τότε μὲν οὖν ἐπέσχε τὴν τῶν θρασυτέρων ὁρμὴν ἡ τοῦ δικαίου πρόνοια, καὶ ἀναβολὴν ἔλαβεν ἡ δίκη, οὐ μικρᾶς 20
ἐμπεσούσης φιλοτιμίας καὶ ζητήσεως ὑπὲρ τοῦ σώμα-

τος, εἴτ' ἐν δεσμοῖς αὐτὸ δεῖ φυλάττεσθαι τέως,
εἴτ' ἐγγυητὰς δοῦναι τῆς ἀφίξεως, ὥσπερ ὁ πατὴρ
ἠξίου· καὶ ἡ βουλὴ συνελθοῦσα ἐψηφίσατο χρήμασι
διεγγυηθὲν ἐλεύθερον εἶναι τὸ σῶμα μέχρι δίκης. τῇ
δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ συναγαγόντες οἱ δήμαρχοι τὸ πλῆθος,
ἐκλιπόντος τοῦ μειρακίου τὴν δίκην, ἐκύρωσαν τὴν
κατ' αὐτοῦ ψῆφον καὶ τοὺς ἐγγυητὰς δέκα ὄντας
ἐπράξαντο τὰ περὶ τοῦ σώματος τῆς ἀποκαταστάσεως
2 ὁμολογηθέντα χρήματα. Καίσων μὲν οὖν τοιαύτῃ
περιπεσὼν ἐπιβουλῇ, κατασκευασαμένων ἅπαντα τῶν
δημάρχων, καὶ Οὐολουσκίου ψευδῆ μαρτυρήσαντος,
ὡς ἐγένετο φανερὸν σὺν χρόνῳ, φεύγων εἰς Τυρρη-
νίαν ᾤχετο· ὁ δὲ πατὴρ αὐτοῦ τὰ πλεῖστα τῆς οὐσίας
ἀπεμπολήσας καὶ τὰ ὁμολογηθέντα ὑπὸ τῶν ἐγγυη-
τῶν χρήματα ἀποδούς, ἑαυτῷ χωρίον ἓν μικρὸν ὑπο-
λειπόμενος πέραν τοῦ Τεβέρεως ποταμοῦ, ἐν ᾧ τα-
πεινή τις ἦν καλύβη, γεωργῶν αὐτόθι μετὰ δούλων
ὀλίγων ἐπίπονον καὶ ταλαίπωρον ἔζη βίον ὑπὸ λύπης
τε καὶ πενίας, οὔτε πόλιν ὁρῶν οὔτε φίλους ἀσπαζό-
μενος οὔθ' ἑορτάζων οὔτ' ἄλλης εὐφροσύνης οὐδε-
μιᾶς ἑαυτῷ μεταδιδούς. τοῖς μέντοι δημάρχοις πολὺ
τὸ παράλογον ἐγένετο τῆς ἐλπίδος. οὐ γὰρ ὅπως
ἐπαύσατο ἡ τῶν νέων φιλοτιμία σωφρονισθεῖσα τῇ
Καίσωνος συμφορᾷ, πολὺ δὲ χαλεπωτέρα καὶ πλείων
3 ἐγένετο ἔργοις τε καὶ λόγοις καταγωνιζομένη τὸν νό-
μον· ὥστ' οὐθὲν ἔτι αὐτοῖς ἐξεγένετο διαπράξασθαι,
δαπανηθέντος εἰς ταῦτα τοῦ χρόνου τῆς ἀρχῆς. ὁ
μέντοι δῆμος εἰς τὸν ἐπιόντα πάλιν ἐνιαυτὸν ἄρχον-
τας ἀπέδειξεν αὐτούς.

VIIII. Ποπλίου δὲ Οὐαλερίου Ποπλικόλα καὶ Γαΐου Κλαυδίου Σαβίνου τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν παραλαβόντων, κίνδυνος ὅσος οὔπω τὴν Ῥώμην κατέ-

σχεν ἐξ ἀλλοεθνοῦς πολέμου, ὃν παρήγαγεν ἐντὸς τείχους ἡ πολιτικὴ στάσις, ὥς οἵ τε Σιβύλλειοι χρησμοὶ προὔλεγον καὶ τὰ ἐκ τοῦ δαιμονίου φανέντα προεθέσπισε τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ. διηγήσομαι δὲ τήν τε αἰτίαν, ἀφ᾽ ἧς ὁ πόλεμος εἰσῆλθε, καὶ τὰ πραχθέντα τοῖς ὑπάτοις κατὰ τὸν τότε ἀγῶνα. οἱ παρειληφότες τὸ δεύτερον τὴν δημαρχίαν ἐπὶ τῇ ἐλπίδι τοῦ κυρώσειν τὸν νόμον, ὁρῶντες τῶν τε ὑπάτων τὸν ἕτερον, Γάιον Κλαύδιον, ἔμφυτον τὸ πρὸς τοὺς δημοτικοὺς ἔχοντα μῖσος διὰ προγόνων καὶ παρεσκευασμένον ἁπάσῃ μηχανῇ κωλύειν τὰ γινόμενα, τῶν τε νέων τοὺς πλεῖστον δυναμένους εἰς ἀπόνοιαν φανερὰν προεληλυθότας, οὓς οὐκ ἐνῆν τῷ βιαίῳ καταγωνίσασθαι, μάλιστα δὲ τοῦ δήμου τὸ πλεῖον ὑποκατακλινόμενον ταῖς θεραπείαις τῶν πατρικίων καὶ προθυμίαν οὐκέτι περὶ τοῦ νόμου τὴν αὐτὴν παρεχόμενον, ἰταμωτέραν ὁδὸν ἔγνωσαν ἐπὶ τὰ πράγματα πορεύεσθαι, δι᾽ ἧς ἀναλήψονται μὲν τὸν δῆμον, καταβαλοῦσι δὲ τὸν ὕπατον. πρῶτον μὲν κατεσκεύασαν φήμας λέγεσθαι κατὰ τὴν πόλιν παντοδαπάς· ἔπειτ᾽ ἐξ ἑωθινοῦ καθεζόμενοι δι᾽ ὅλης ἡμέρας συνήδρευον ἐν τῷ φανερῷ, μεταδιδόντες οὐθενὶ τῶν ἔξωθεν οὔτε βουλεύματος οὔτε λόγου. ἐπεὶ δὲ καιρὸς ἐπιτήδειος ἔδοξεν αὐτοῖς εἶναι πράττειν τὰ βεβουλευμένα, πλασάμενοι γράμματα καὶ ταῦτα παρασκευάσαντες ἀναδοθῆναι σφίσιν ὑπ᾽ ἀνδρὸς ἀγνῶτος καθημένοις ἐν ἀγορᾷ, ὡς διῆλθον αὐτά, παίοντες τὰ μέτωπα καὶ κατηφεῖς τὰς ὄψεις ποιήσαντες ἀνίστανται. πολλοῦ δὲ συνδραμόντος ὄχλου καὶ μέγα τι κακὸν ἐν τοῖς γράμμασιν ἐνεῖναι γεγραμμένον μαντευομένου, σιωπὴν προκηρύξαντες εἶπον· ἐν ἐσχάτοις ἐστὶν ὑμῖν κινδύνοις, ὦ πολῖται, τὸ δημοτικόν· καὶ εἰ μὴ θεῶν

τις εὔνοια προείδετο τῶν ἄδικα πάσχειν μελλόντων, εἰς δεινὰς ἂν ἅπαντες ἤλθομεν συμφοράς. αἰτούμεθα δὲ ὑμᾶς βραχὺν ἐπισχεῖν χρόνον, ἕως [ἂν] τῇ βουλῇ δηλώσωμεν τὰ προσαγγελθέντα καὶ μετὰ κοινῆς γνώμης πράξωμεν τὰ δόξαντα. Ταῦτ' εἰπόντες ᾤχοντο πρὸς τοὺς ὑπάτους. ἐν ὅσῳ δὲ ἡ βουλὴ συνήγετο χρόνῳ πολλοὶ καὶ παντοδαποὶ λόγοι κατὰ τὴν ἀγορὰν ἐγίνοντο, τῶν μὲν ἐκ παρασκευῆς ἃ παρήγγελτο αὐτοῖς ὑπὸ τῶν δημάρχων κατὰ συστροφὰς λαλούντων, τῶν δέ, ἃ μάλιστα ἐδεδοίκεσαν μὴ γένηται, ταῦτα ὡς ἀπηγγελμένα τοῖς δημάρχοις λεγόντων. ἔφη δ' ὁ μέν τις Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους ὑποδεξαμέ-
006 νους Καίσωνα Κοίντιον τὸν ὑπὸ τοῦ δήμου καταδικασθέντα ᾑρῆσθαι στρατηγὸν αὐτοκράτορα τῶν ἐθνῶν, καὶ πολλὰς δυνάμεις ἀγείραντας μέλλειν ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἐλαύνειν· ὁ δέ τις ἀπὸ κοινῆς γνώμης τῶν πατρικίων τὸν ἄνδρα κατάγεσθαι ξενικαῖς δυνάμεσιν, ἵνα ἡ φυλακὴ καταλυθῇ νῦν τε καὶ εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον τῶν δημοτικῶν· ὁ δέ τις οὐχ ἅπαντας εἶναι τοὺς πατρικίους ἔφη τοὺς ταῦτα βεβουλευμένους, ἀλλὰ μόνους τοὺς νέους. ἐτόλμων δέ τινες λέγειν, ὅτι καὶ ἐντὸς τῆς πόλεως ὁ ἀνὴρ εἴη κρυπτόμενος καὶ μέλλοι καταλαμβάνεσθαι τῶν τόπων τοὺς ἐπικαιροτάτους. ὅλης δὲ κραδαινομένης ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ τῶν δεινῶν τῆς πόλεως, καὶ πάντων ἀλλήλους ἐχόντων δι' ὑποψίας καὶ φυλακῆς, οἱ μὲν ὕπατοι τὴν βουλὴν ἐκάλουν, οἱ δὲ δήμαρχοι προελθόντες ἐδείκνυσαν τὰ προσαγγελλόμενα. ἦν δὲ ὁ τοὺς λόγους ὑπὲρ αὐτῶν ποιούμενος Αὖλος Οὐεργίνιος, καὶ ἔλεξε τοιάδε·

X. Ὅσον μὲν χρόνον οὐθὲν ἀκριβὲς ἡμῖν ἐφαίνετο τῶν προσαγγελλομένων δεινῶν, ἀλλὰ φῆμαι
007 μετέωροι, καὶ τὸ βεβαιῶσον αὐτὰς οὐθὲν ἦν, ὀκνοῦ-

μεν, ὦ βουλή, φέρειν τοὺς περὶ αὐτῶν λόγους εἰς [τὸ] μέσον, ταραχάς τε ὑποπτεύοντες ἔσεσθαι μεγάλας, οἷα εἰκὸς ἐπὶ δεινοῖς ἀκούσμασι, καὶ δι᾿ εὐλαβείας ἔχοντες, μὴ ταχύτερα δόξωμεν ὑμῖν βεβουλεῦσθαι μᾶλλον ἢ φρονιμώτερα. οὐ μὴν ὀλιγωρίᾳ γ᾿ αὐτὰ παραδόντες ἀφήκαμεν, ἀλλ᾿ ὅση δύναμις ἡμῖν ἦν ἐπιμελῆ ζήτησιν ἐποιούμεθα τῆς ἀληθείας. ἐπεὶ δὲ ἡ τοῦ δαιμονίου πρόνοια, ὑφ᾿ ἧς ἀεὶ σωζόμεθα κοινῇ, καλῶς ποιοῦσα τὰ κεκρυμμένα βουλεύματα καὶ τὰς ἀνοσίους ἐπιχειρήσεις τῶν θεοῖς ἐχθρῶν εἰς φῶς ἄγει, καὶ γράμματα πάρεστιν ἡμῖν, ἃ δεδέγμεθα νεωστὶ παρὰ ξένων εὔνοιαν ἡμῖν ἐνδεικνυμένων, οὓς ὕστερον ἀκούσεσθε, καὶ συντρέχει τε καὶ συνᾴδει τοῖς ἔξωθεν ἐπιστελλομένοις τὰ ἐνθένδε μηνυόμενα, καὶ τὰ πράγματα οὐκέτι μέλλησιν οὐδ᾿ ἀναβολὴν ἐν χερσὶν ὄντα ἐπιδέχεται, πρὶν εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν, ὑμῖν πρώτοις ὥσπερ ἐστὶ δίκαιον ἀπαγγεῖλαι διέγνωμεν αὐτά. ἴστε δὴ συνωμοσίαν ἐπὶ τῷ δήμῳ γεγενημένην ὑπ᾿ ἀνδρῶν οὐκ ἀφανῶν, ἐν οἷς ἐνεῖναι μέν τι λέγεται μέρος οὐ πολὺ καὶ τῶν εἰς τόδε συλ- 20 λεγομένων τὸ συνέδριον πρεσβυτέρων, τὸ δὲ πλεῖστον ἐκ τῶν ἔξω τῆς βουλῆς ἱππέων, οὓς οὔπω καιρὸς οἵτινές εἰσιν ὑμῖν λέγειν. μέλλουσι δ᾿ οὖν, ὡς πυνθανόμεθα, σκοταίαν φυλάξαντες νύκτα κοιμωμένοις ἡμῖν ἐπιχειρεῖν, ἡνίκα οὔτε προιδεῖν τι τῶν γινομένων οὔτε φυλάξασθαι καθ᾿ ἓν γενόμενοι δυνάμεθα· ἐπιπεσόντες δὲ ταῖς οἰκίαις τούς τε δημάρχους ἡμᾶς κατασφάττειν καὶ τῶν δημοτῶν ἄλλους τοὺς ἐναντιωθέντας ποτὲ αὐτοῖς περὶ ἐλευθερίας ἢ τὸ λοιπὸν ἐναντιωσομένους. ὅταν δὲ ἡμᾶς ἐκποδὼν ποιήσωνται, τότ᾿ ἤδη κατὰ πολλὴν ἀσφάλειαν ἡγοῦνται διαπράξασθαι παρ᾿ ὑμῶν τὰ λοιπὰ ἀναιρεθῆναι διὰ κοι-

νοῦ ψηφίσματος τὰς γενομένας ὑμῖν πρός τὸν δῆμον ὁμολογίας. ὁρῶντες δὲ ὅτι ξενικῆς αὐτοῖς χειρὸς εἰς τὰ πράγματα δεῖ κρύφα παρασκευασθείσης καὶ οὐδὲ
)09 ταύτης μετρίας, ἄνδρα προσειλήφασιν εἰς ταῦτα τῶν ὑμετέρων φυγάδων, Καίσωνα Κοίντιον ἡγεμόνα, ὃν ἐπὶ φόνοις πολιτῶν καὶ διαστάσει τῆς πόλεως ἐξελεγχθέντα διεπράξαντό τινες τῶν ἐνθάδε μὴ δοῦναι δίκην, ἀλλ᾽ ἀθῷον ἀπελθεῖν ἐκ τῆς πόλεως, κάθοδόν τε πράξειν ὑπέσχηνται καὶ ἀρχὰς προτείνουσι καὶ τιμὰς καὶ ἄλλους μισθοὺς τῆς ὑπουργίας. κἀκεῖνος [δὲ] ὑπέσχηται στρατιὰν αὐτοῖς Αἰκανῶν καὶ Οὐολούσκων ἄξειν ἐπίκουρον, ὅσης ἂν δεηθῶσιν, ἥξειν τε οὐκ εἰς μακρὰν αὐτὸς μὲν ἐπαγόμενος τοὺς εὐτολμοτάτους, κρύφα κατ᾽ ὀλίγους εἰσάγων καὶ σποράδας, ἡ δ᾽ ἄλλη δύναμις, ὅταν οἱ τοῦ δήμου προεστηκότες ἡμεῖς διαφθαρῶμεν, ἐπὶ τὸ ἄλλο πλῆθος τῶν πενήτων χωρήσει, ἐάν τινες ἄρα περιέχωνται τῆς ἐλευ-
)10 θερίας. ταῦτ᾽ ἔστιν, ἃ βεβούλευνται ὑπὸ σκότους καὶ μέλλουσι δρᾶν, ὦ βουλή, δεινὰ καὶ ἀνόσια ἔργα, οὔτε θεῖον φοβηθέντες χόλον οὔτε ἀνθρωπίνην ἐντραπέντες νέμεσιν.

XI. Ἐν τοσούτῳ δὴ κινδύνῳ σαλεύοντες ἱκέται γινόμεθα ὑμῶν, ὦ πατέρες, ἐπισκήπτοντες θεούς τε καὶ δαίμονας, οἷς κοινῇ θύομεν, καὶ πολέμων ὑπομιμνήσκοντες, οὓς πολλοὺς καὶ μεγάλους σὺν ὑμῖν ἠράμεθα, μὴ περιιδεῖν ὠμὰ καὶ ἀνόσια ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν παθόντας ἡμᾶς, ἀλλ᾽ ἐπαμῦναί τε καὶ συναγανακτῆσαι τιμωρίας ἡμῖν συνεισπράξαντας παρὰ τῶν ταῦτα βουλευσαμένων τὰς προσηκούσας, μάλιστα μὲν παρὰ πάντων, εἰ δὲ μή γε, παρὰ τῶν ἀρξάντων τῆς ἀθεμίτου συνωμοσίας. πρῶτον δὲ πάντων ἀξιοῦμεν ὑμᾶς, ὦ βουλή, ψηφίσασθαι πρᾶγμα, ὅπερ ἐστὶ δικαι-

ότατον, τὴν ὑπὲρ τῶν μηνυομένων ζήτησιν ὑφ᾽ ἡμῶν
τῶν δημάρχων γίνεσθαι. χωρὶς γὰρ τοῦ δικαίου καὶ
ἀκριβεστάτας ἀνάγκη γίνεσθαι ζητήσεις, ἃς ἂν οἱ κιν- 20
δυνεύοντες ὑπὲρ αὑτῶν ποιήσωνται. εἰ δέ τινες ὑμῶν
εἰσιν οἷοι μηδὲ καθ᾽ ἓν εὐγνωμονεῖν, ἀλλὰ πρὸς
ἅπαντας τοὺς ὑπὲρ τοῦ δήμου λέγοντας ἀντιτάττεσθαι,
ἡδέως ἂν πυθοίμην παρ᾽ αὐτῶν, ἐπὶ τῷ δυσχεραί-
νουσι τῶν ἀξιουμένων καὶ τί μέλλουσιν ὑμᾶς πεί-
θειν· πότερα μηδεμίαν ποιεῖσθαι ζήτησιν, ἀλλ᾽ ὑπερι-
δεῖν ἔργον οὕτω μέγα καὶ μιαρὸν ἐπὶ τῷ δήμῳ συνι-
στάμενον; καὶ τίς ἂν τοὺς ταῦτα λέγοντας ὑγιαίνειν
φήσειεν, ἀλλ᾽ οὐχὶ συνδιεφθάρθαι καὶ κοινωνεῖν τῆς
συνωμοσίας, ἔπειτα ὑπὲρ αὑτῶν δεδιότας, ἵνα μὴ
γένωνται καταφανεῖς, ἀποσπεύδειν τὴν τῆς ἀληθείας
ἐξέτασιν; οἷς οὐκ ἂν δικαίως προσέχοιτε δήπου τὸν
νοῦν. ἢ τῆς διαγνώσεως τῶν μηνυομένων οὐχ ἡμᾶς
εἶναι κυρίους ἀξιώσουσιν, ἀλλὰ τὴν βουλὴν καὶ τοὺς
ὑπάτους; τί οὖν τὸ κωλῦον ἔσται τὸ αὐτὸ τοῦτο καὶ
τοὺς προεστηκότας τοῦ δήμου λέγειν, ἐάν τινες ἐκ 20
τῶν δημοτικῶν ἐπὶ τοῖς ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ συστάν-
τες πράττωσι τὴν τοῦ συνεδρίου κατάλυσιν, ὅτι τὴν
περὶ τῶν δημοτῶν ἐξέτασιν αὐτοὺς δίκαιόν ἐστι ποι-
εῖσθαι τοὺς ἀνειληφότας τὴν τοῦ δήμου φυλακήν; τί
οὖν ἐκ τούτου συμβήσεται; μηδεμίαν πώποτε γενέ-
σθαι ζήτησιν περὶ μηθενὸς πράγματος ἀπορρήτου.
ἀλλ᾽ οὔτε ἡμεῖς ἂν ταῦτα ἀξιώσαιμεν· ὕποπτος γὰρ
ἡ φιλοτιμία· ὑμεῖς τ᾽ οὐκ ἂν ὀρθῶς ποιοῖτε τοῖς τὰ
ὅμοια [οὐκ] ἀξιοῦσι καθ᾽ ἡμῶν προσέχοντες τὸν νοῦν,
ἀλλὰ κοινοὺς ἡγούμενοι τῆς πόλεως ἐχθρούς. οὐδε-
νὸς μέντοιγε οὕτως, ὦ βουλή, τοῖς πράγμασιν ὡς
τάχους δεῖ. ὁ γὰρ κίνδυνος ὀξύς, καὶ ἡ μέλλησις τῆς
ἀσφαλείας ἄωρος ἐν οὐ μέλλουσι δεινοῖς. ὥστ᾽ ἀφέντες

τὸ φιλονεικεῖν καὶ λόγους διεξιέναι μακρούς, ψηφίσασθε ὅ τι ἂν δοκῇ κοινῇ συμφέρειν ἤδη.

XII. Ταῦτα εἰπόντος αὐτοῦ πολλή τις ἔκπληξις 013 κατέσχε τὸ συνέδριον καὶ ἀμηχανία, διελογίζοντό τε καὶ συνελάλουν ἀλλήλοις, ὡς χαλεπὸν ἑκάτερον ἦν, καὶ τὸ συγχωρεῖν τοῖς δημάρχοις ζητήσεις ἐφ᾽ ἑαυτῶν ποιεῖσθαι περὶ κοινοῦ καὶ μεγάλου πράγματος, καὶ τὸ μὴ συγχωρεῖν. ὑποπτεύσας δ᾽ αὐτῶν τὴν γνώμην ἀνέστη τῶν ὑπάτων ἅτερος, Γάιος Κλαύδιος, καὶ ἔλεξε τοιάδε· Οὐ δέδοικα, Οὐεργίνιε, μή με ὑπολάβωσιν οὗτοι κοινωνὸν εἶναι τῆς συνωμοσίας, ἣν ἐφ᾽ ὑμῖν καὶ τῷ δήμῳ πράττεσθαι λέγετε, ἢ τὰ ὑπὲρ ἐμαυτοῦ δεδιότα ἢ τῶν ἐμῶν τινος [ὡς] ἐνόχου ταῖς αἰτίαις ὄντος ἀνεστάναι τἀναντία ὑμῖν ἐροῦντα· ὁ γὰρ βίος ἀπολύει με πάσης ὑποψίας τοιαύτης. ἃ δὲ νομίζω τῇ τε βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ συμφέρειν, ἀπὸ τοῦ κρατίστου καὶ δίχα πάσης εὐλαβείας ἐρῶ. πολλοῦ, μᾶλλον δὲ τοῦ παντὸς ἁμαρτάνειν δοκεῖ μοι Οὐεργίνιος, εἴ τινα ὑπείληφεν ἡμῶν ἐρεῖν, ἢ ὡς ἀνεξέταστον ἀφεῖσθαι δεῖ πρᾶγμα οὑτωσὶ μέγα καὶ 014 ἀναγκαῖον, ἢ ὡς οὐ δεῖ κοινωνεῖν οὐδὲ παρεῖναι τῇ ζητήσει τοὺς ἀνειληφότας τὴν τοῦ δήμου ἀρχήν. οὐθεὶς οὔτε ἠλίθιός ἐστιν οὕτως οὔτε τῷ δήμῳ κακόνους, ὥστε ταῦτα λέγειν. τί οὖν, εἴ τις ἔροιτό με, παθών, ἃ συγχωρῶ καὶ φημὶ δίκαια εἶναι, τούτοις ἀντιλέξων ἀνέστην, καὶ τί βούλεταί μου ὁ λόγος, ἐγὼ νὴ Δία φράσω πρὸς ὑμᾶς. παντὸς οἴομαι δεῖν πράγματος, ὦ βουλή, τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς πρώτας ὑποθέσεις τοὺς εὖ φρονοῦντας ἀκριβῶς σκοπεῖν· οἷαι γὰρ ἂν αὗται τύχωσιν οὖσαι, τοιούτους ἀνάγκη γίνεσθαι καὶ τοὺς περὶ αὐτῶν λόγους. φέρε δὴ τίς ἡ τοῦδε τοῦ πράγματος ὑπόθεσίς ἐστι καὶ τί τὸ βούλευμα τῶν

δημάρχων ἀκούσατέ μου. οὐκ ἐνῆν τούτοις οὐδέν, ὧν ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ πράττειν ἐπιβαλλόμενοι διεκωλύθησαν, ἐπιτελέσασθαι νῦν, ὑμῶν τε ἐναντιουμένων αὐτοῖς ὡς πρότερον καὶ τοῦ δήμου μηκέθ' ὁμοίως συναγωνιζομένου. συνιδόντες δὴ τοῦτο ἐσκόπουν, ὅπως ἂν ὑμεῖς τ' ἀναγκασθείητε παρὰ γνώμην αὐτοῖς εἶξαι, καὶ ὁ δῆμος ἅπαντα ὅσ' ἂν ἀξιῶσι συμπράττειν. ἀληθῆ μὲν οὖν καὶ δικαίαν ὑπόθεσιν οὐδεμίαν 20 εὕρισκον, δι' ἧς ἑκάτερον τούτοις ἔσται, πολλὰ δὲ βουλεύματα πειράζοντες καὶ στρέφοντες ἄνω καὶ κάτω τὸ πρᾶγμα τελευτῶντες ἐπὶ τοιοῦτον δή τινα λογισμὸν ἦλθον· αἰτιασώμεθα συνίστασθαί τινας ἐκ τῶν ἐπιφανῶν ἐπὶ καταλύσει τοῦ δήμου, καὶ σφάττειν διεγνωκέναι τοὺς [μὴ] παρέχοντας αὐτῷ τὸ ἀσφαλές. καὶ ταῦτα ἐκ πολλοῦ παρασκευάσαντες λέγεσθαι κατὰ τὴν πόλιν, ὅταν ἤδη πιστὰ εἶναι τοῖς πολλοῖς δόξῃ· δόξει δὲ διὰ τὸ δέος· ἐπιστολὰς μηχανησώμεθα πολλῶν παρόντων ἡμῖν ὑπ' ἀνδρὸς ἀγνῶτος ἀναδοθῆναι· ἔπειτ' ἐλθόντες ἐπὶ τὸ συνέδριον ἀγανακτῶμέν τε καὶ σχετλιάζωμεν καὶ τοῦ ζητεῖν τὰ προσηγγελμένα αἰτῶμεν τὴν ἐξουσίαν. ἐάν τε γὰρ ἀντιλέγωσιν 20 ἡμῖν οἱ πατρίκιοι, ταύτην ληψόμεθα τοῦ διαβαλεῖν αὐτοὺς πρὸς τὸν δῆμον ἀφορμήν, καὶ οὕτως ἅπαν τὸ δημοτικὸν ἠγριωμένον αὐτοῖς ἕτοιμον ἡμῖν εἰς ἃ βουλόμεθα ὑπάρξει· ἐάν τε συγχωρῶσι, τοὺς γενναιοτάτους ἐξ αὐτῶν καὶ πλεῖστα ἡμῖν ἐναντιωθέντας πρεσβυτέρους τε καὶ νέους ἐλαύνωμεν, ὡς εὑρηκότες ταῖς αἰτίαις ἐνόχους. ἐκεῖνοι δὲ ἄρα τὰς καταγνώσεις δεδιότες, ἢ συμβήσονται πρὸς ἡμᾶς ἐπὶ τῷ μηθὲν ἔτι ἀντιπράττειν, ἢ καταλιπεῖν ἀναγκασθήσονται τὴν πόλιν. ἐκ δὲ τούτου πολλὴν ποιήσομεν ἐρημίαν τοῦ ἀντιπάλου.

XIII. *Ταῦτα τὰ βουλεύματα ἦν αὐτῶν, ὦ βουλή, καὶ τὸν μεταξὺ χρόνον ὃν ἑωρᾶτε [συμβουλεύοντας καὶ] συνεδρεύοντας αὐτούς, οὗτος ὁ δόλος ὑπ' αὐτῶν ὑφαίνετο ἐπὶ τοῖς ἀρίστοις ὑμῶν, καὶ τοῦτο τὸ δίκτυον*
2017 *κατὰ τῶν εὐγενεστάτων ἱππέων ἐπλέκετο. καὶ ὅτι ἀληθῆ ταῦτ' ἐστί, βραχέος μοι πάνυ δεῖ λόγου. φέρε γὰρ εἴπατέ μοι, Οὐεργίνιε, οἱ τὰ δεινὰ πεισόμενοι, παρὰ τίνων ἐδέξασθε τὰ γράμματα ξένων; τῶν ποῦ κατοικούντων, ἢ πόθεν ὑμᾶς εἰδότων, ἢ πῶς τἀνθάδε συνεδρευόμενα ἐπισταμένων; τί ἀναβάλλεσθε καὶ μετὰ ταῦτ' ἐρεῖν αὐτοὺς ὑπισχνεῖσθε, ἀλλ' οὐ πάλαι λέγετε; τίς δ' ὁ τὰ γράμματα κομίσας ὑμῖν ἀνήρ ἐστι; τί οὐ κατάγετε αὐτὸν εἰς μέσον, ἵν' ἀπ' ἐκείνου πρῶτον ἀρξώμεθα ζητεῖν, εἴτε ἀληθῆ ταῦτ' ἐστίν, εἴτε ὡς ἐγώ φημι πλάσματα ὑμέτερα; αἱ δὲ δὴ συνᾴδουσαι τοῖς ξενικοῖς γράμμασι μηνύσεις παρὰ τῶν ἐνθάδε τίνες τ' εἰσὶ καὶ ὑπὸ τίνων γενόμεναι; τί κρύπτετε τὰς πίστεις, ἀλλ' οὐκ εἰς τὸ ἐμφανὲς ἄγετε;*
2018 *ἀλλ' οἶμαι τῶν μήτε γενομένων μήτε ἐσομένων ἀδύνατον εὑρεθῆναι πίστιν. ταῦτ' ἐστίν, ὦ βουλή, μηνύματα, οὐ κατὰ τούτων συνωμοσίας, ἀλλὰ καθ' ὑμῶν δόλου καὶ πονηρᾶς γνώμης, ᾗ κέχρηνται κρύψαντες οὗτοι· τὰ γὰρ πράγματα αὐτὰ βοᾷ. αἴτιοι δ' ὑμεῖς οἱ τὰ πρῶτα ἐπιτρέψαντες αὐτοῖς καὶ τὸ ἀνόητον τῆς ἀρχῆς μεγάλῃ καθοπλίσαντες ἐξουσίᾳ, ὅτε Κοίντιον Καίσωνα τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ κρίνειν ἐπ' αἰτίαις ψευδέσιν εἰάσατε, καὶ τοσοῦτον φύλακα τῆς ἀριστοκρατίας ἁρπαζόμενον ὑπ' αὐτῶν περιείδετε. τοιγαροῦν οὐκέτι μετριάζουσιν οὐδὲ καθ' ἕνα τῶν εὐγενῶν περικόπτουσιν, ἀλλ' ἀθρόους ἤδη περιβαλόντες τοὺς ἀγαθοὺς ἕλκουσιν ἐκ τῆς πόλεως· καὶ πρὸς τοῖς ἄλλοις κακοῖς οὐδ' ἀντειπεῖν αὐτοῖς ἀξιοῦσιν οὐδένα*

ὑμῶν, ἀλλ' εἰς ὑποψίας καὶ διαβολὰς ἄγοντες ὡς
κοινωνοῦντα τῶν ἀπορρήτων δεδίττονται καὶ μισό-
δημον εὐθὺς εἶναι φασί, καὶ προλέγουσιν ἥκειν ἐπὶ 201
τὸν δῆμον ὑφέξοντα τῶν ἐνθάδε ῥηθέντων δίκας.
ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων ἕτερος ἔσται καιρὸς ἐπιτηδειό-
τερος τοῖς λόγοις· νυνὶ δέ, ἵνα συντέμω τὸν λόγον καὶ
παύσωμαι τὰ πλείω διατεινόμενος, φυλάττεσθαι ὑμῖν
παραινῶ τούσδε τοὺς ἄνδρας ὡς συνταράττοντας τὴν
πόλιν καὶ μεγάλων εἰςφέροντας ἀρχὰς κακῶν· καὶ
οὐκ ἐνθάδε μὲν ταῦτα λέγω, πρὸς δὲ τὸν δῆμον ἀπο-
κρύψομαι, ἀλλὰ κἀκεῖ παρρησίᾳ δικαίᾳ χρήσομαι,
διδάσκων ὡς οὐδὲν αὐτοῖς ἐπικρέμαται [τι] δεινόν,
ὅτι μὴ κακοὶ καὶ δόλιοι προστάται πολεμίων ἔργα ἐν
προσποιήματι φίλων διαπραττόμενοι. Ταῦτ' εἰπόντος
τοῦ ὑπάτου κραυγή τε καὶ πολὺς ἔπαινος ἐκ τῶν παρ-
όντων ἐγίνετο· καὶ οὐδὲ λόγου τοῖς δημάρχοις ἔτι
μεταδόντες διέλυσαν τὸν σύλλογον. ἔπειθ' ὁ μὲν
Οὐεργίνιος ἐκκλησίαν συναγαγὼν κατηγόρει τῆς τε
βουλῆς καὶ τῶν ὑπάτων· ὁ δὲ Κλαύδιος ἀπελογεῖτο
τοὺς αὐτοὺς λόγους διεξιών, οὓς εἶπεν ἐπὶ τῆς βου- 202
λῆς. οἱ μὲν οὖν ἐπιεικέστεροι τῶν δημοτικῶν κενὸν
ὑπώπτευον εἶναι τὸν φόβον, οἱ δ' εὐηθέστεροι πι-
στεύοντες ταῖς φήμαις ἀληθῆ· ὅσοι δὲ κακοήθεις ἦσαν
ἐν αὐτοῖς καὶ μεταβολῆς ἀεὶ δεόμενοι, τοῦ μὲν ἐξετά-
ζειν τἀληθὲς ἢ ψεῦδος οὐκ εἶχον πρόνοιαν, ἀφορμὴν
δὲ διχοστασίας ἐζήτουν καὶ θορύβου.

XIIII. Ἐν τοιαύτῃ δὲ ταραχῇ τῆς πόλεως οὔσης
ἀνήρ τις ἐκ τοῦ Σαβίνων ἔθνους πατέρων τε οὐκ
ἀφανῶν καὶ χρήμασι δυνατός, Ἄππιος Ἑρδώνιος
ὄνομα, καταλῦσαι τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν ἐπεβά-
λετο, εἴθ' ἑαυτῷ τυραννίδα κατασκευαζόμενος εἴτε
τῷ Σαβίνων ἔθνει πράττων ἀρχὴν καὶ κράτος εἴτ'

ὀνόματος ἀξιωθῆναι βουλόμενος μεγάλου. κοινωσά-
μενος δὲ πολλοῖς τῶν φίλων ἣν εἶχε διάνοιαν, καὶ
τὸν τρόπον τῆς ἐπιχειρήσεως ἀφηγησάμενος, ἐπειδὴ
κἀκείνοις ἐδόκει συνήθροιζε τοὺς πελάτας καὶ τῶν
θεραπόντων οὓς εἶχε τοὺς εὐτολμοτάτους· καὶ δι'
ὀλίγου χρόνου συγκροτήσας δύναμιν ἀνδρῶν τετρα-
21 κισχιλίων μάλιστα, ὅπλα τε καὶ τροφὰς καὶ τἆλλα
ὅσων δεῖ πολέμῳ πάντα εὐτρεπισάμενος, εἰς σκάφας
ποταμηγοὺς ἐνεβάλετο. πλεύσας δὲ διὰ τοῦ Τεβέρεως
ποταμοῦ προσέσχε τῆς Ῥώμης κατὰ τοῦτο τὸ χωρίον,
ἔνθα τὸ Καπιτώλιόν ἐστιν, οὐδ' ὅλον στάδιον ἀπέχον
τοῦ ποταμοῦ. ἦσαν δὲ μέσαι τηνικαῦτα νύκτες, καὶ
πολλὴ καθ' ὅλην τὴν πόλιν ἡσυχία, ἣν συνεργὸν
λαβὼν ἐξεβίβασε τοὺς ἄνδρας κατὰ σπουδήν, καὶ διὰ
τῶν ἀκλείστων πυλῶν· εἰσὶ γάρ τινες ἱεραὶ πύλαι
τοῦ Καπιτωλίου κατά τι θέσφατον ἀνειμέναι, Καρ-
μεντίδας αὐτὰς καλοῦσιν· ἀναβιβάσας τὴν δύναμιν,
εἷλε τὸ φρούριον. ἐκεῖθεν δ' ἐπὶ τὴν ἄκραν ὠσάμε-
νος, ἔστι δὲ τῷ Καπιτωλίῳ προσεχής, κἀκείνης ἐγε-
γόνει κύριος. ἦν δὲ αὐτοῦ γνώμη μετὰ τὸ κρατῆσαι
τῶν ἐπικαιροτάτων τόπων τούς τε φυγάδας εἰσδέχε-
σθαι καὶ τοὺς δούλους εἰς ἐλευθερίαν καλεῖν καὶ
22 χρεῶν ἄφεσιν ὑπισχνεῖσθαι τοῖς ἀπόροις, τούς τε ἄλ-
λους πολίτας, οἳ ταπεινὰ πράττοντες διὰ φθόνου καὶ
μίσους εἶχον τὰς ὑπεροχὰς καὶ μεταβολῆς ἄσμενοι
ἂν ἐλάβοντο, κοινωνοὺς ποιεῖσθαι τῶν ὠφελειῶν. ἡ
δὲ θαρρεῖν τε αὐτὸν ἐπαγομένη καὶ πλανῶσα ἐλπίς,
ὡς οὐδενὸς ἀτυχήσοντα τῶν προσδοκωμένων, ἡ πολι-
τικὴ στάσις ἦν, δι' ἣν οὔτε φιλίαν οὔτε κοινωνίαν
οὐδεμίαν ὑπελάμβανε τῷ δήμῳ πρὸς τοὺς πατρικίους
ἔτι γενήσεσθαι. ἐὰν δὲ ἄρα μηδὲν αὐτῷ τούτων κατὰ
νοῦν χωρῇ, τηνικαῦτα Σαβίνους τε πανστρατιᾷ κα-

λεῖν ἐδέδοκτο καὶ Οὐολούσκους καὶ τῶν ἄλλων πλησιοχώρων ὅσοις ἂν ᾖ βουλομένοις ἀπηλλάχθαι τῆς Ῥωμαίων ἐπιφθόνου ἀρχῆς.

XV. Συνέβη δὲ αὐτῷ πάντων διαμαρτεῖν ὧν ἤλπισεν, οὔτε δούλων αὐτομολησάντων πρὸς αὐτὸν οὔτε φυγάδων κατελθόντων οὔτε ἀτίμων καὶ καταχρέων τὸ ἴδιον κέρδος ἀντὶ τοῦ κοινῇ συμφέροντος ἀλλαξαμένων, τῆς τε ἔξωθεν ἐπικουρίας οὐ λαβούσης χρόνον ἱκανὸν εἰς παρασκευὴν τοῦ πολέμου· τρισὶ 202 γὰρ ἢ τέτταρσι ταῖς πρώταις ἡμέραις τέλος εἰλήφει τὰ πράγματα μέγα δέος καὶ πολλὴν ταραχὴν Ῥωμαίοις παρασχόντα. ἐπεὶ γὰρ ἑάλω τὰ φρούρια, κραυγῆς ἄφνω γενομένης καὶ φυγῆς τῶν περὶ ἐκείνους οἰκούντων τοὺς τόπους, ὅσοι μὴ παραχρῆμα ἐσφάγησαν, ἀγνοοῦντες οἱ πολλοὶ τὸ δεινὸν ὅ τι ποτ' ἦν ἁρπάσαντες τὰ ὅπλα συνέτρεχον, οἱ μὲν ἐπὶ τὰ μετέωρα χωρία τῆς πόλεως, οἱ δ' εἰς τοὺς ἀναπεπταμένους αὐτῆς τόπους πολλοὺς σφόδρα ὄντας, οἱ δ' εἰς τὰ παρακείμενα πεδία· ὅσοι δ' ἡλικίας ἐν τῷ παρηκμακότι ἦσαν καὶ ῥώμης σώματος ἐν τῷ ἀδυνάτῳ, τὰ τέγη τῶν οἰκιῶν κατεῖχον ἅμα γυναιξίν, ὡς ἀπὸ τούτων ἀγωνιούμενοι πρὸς τοὺς εἰσεληλυθότας· ἅπαντα γὰρ αὐτοῖς ἐδόκει μεστὰ εἶναι πολέμου. ἡμέρας δὲ γενομένης, ὡς ἐγνώσθη τὰ κεκρατημένα τῆς πόλεως χωρία, καὶ ὅστις ἦν ὁ κατέχων ἀνὴρ τοὺς τόπους, οἱ μὲν ὕπατοι προελθόντες εἰς τὴν ἀγορὰν ἐκάλουν τοὺς πολίτας ἐπὶ τὰ 203 ὅπλα, οἱ δὲ δήμαρχοι προσκαλεσάμενοι τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν ἔλεγον, ὅτι τῷ μὲν συμφέροντι τῆς πόλεως οὐδὲν ἀξιοῦσι πράττειν ἐναντίον, δίκαιον δὲ ὑπολαμβάνουσιν εἶναι τηλικοῦτον ἀγῶνα μέλλοντα τὸν δῆμον ὑπομένειν ἐπὶ ῥητοῖς τισι καὶ διωρισμένοις ἐπὶ τὸ κινδύνευμα χωρεῖν. Εἰ μὲν οὖν, ἔφασαν

λέγοντες, ὑπισχνοῦνταί τε ἡμῖν οἱ πατρίκιοι καὶ πίστεις βούλονται δοῦναι τὰς ἐπὶ θεῶν, ὅτι καταλυθέντος τοῦδε τοῦ πολέμου συγχωρήσουσιν ἡμῖν ἀποδεῖξαι νομοθέτας καὶ τὸν λοιπὸν χρόνον ἐν ἰσηγορίᾳ πολιτεύεσθαι, συνελευθερῶμεν αὐτοῖς τὴν πατρίδα· εἰ δὲ οὐθὲν ἀξιοῦσι ποιεῖν τῶν μετρίων, τί κινδυνεύομεν καὶ τὰς ψυχὰς ὑπὲρ αὐτῶν προιέμεθα μηθενὸς ἀγαθοῦ μέλλοντες ἀπολαύσεσθαι; Ταῦτα λεγόντων αὐτῶν, καὶ τοῦ δήμου πειθομένου καὶ μηδὲ φωνὴν ὑπομένοντος ἀκούειν τῶν ἄλλο τι παραινούντων, ὁ μὲν Κλαύδιος οὐθὲν ἠξίου δεῖσθαι [τῆς] τοιαύτης συμ-
2025 μαχίας, ἥτις οὐχ ἑκούσιος ἀλλ' ἐπὶ μισθῷ καὶ οὐδὲ τούτῳ μετρίῳ βοηθεῖν βούλεται τῇ πατρίδι, ἀλλ' αὐτοὺς ἔφη τοὺς πατρικίους ἑαυτῶν σώμασι καὶ τῶν συνόντων αὐτοῖς πελατῶν ὁπλισαμένους, καὶ εἴ τι ἄλλο πλῆθος ἐθελούσιον αὐτοῖς συναρεῖται τοῦ πολέμου, μετὰ τούτων πολιορκεῖν τὰ φρούρια· ἐὰν δὲ μηδ' οὕτως ἀξιόχρεως ἡ δύναμις αὐτοῖς εἶναι δοκῇ, Λατίνους τε καὶ Ἕρνικας παρακαλεῖν, ἐὰν δ' ἀνάγκη, καὶ δούλοις ἐλευθερίαν ὑπισχνεῖσθαι καὶ πάντας μᾶλλον ἢ τοὺς ἐπὶ τοιούτων καιρῶν μνησικακοῦντας σφίσι παρακαλεῖν. ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Οὐαλέριος ἀντέλεγε πρὸς ταῦτα, οὐκ οἰόμενος δεῖν ἠρεθισμένον τὸ δημοτικὸν ἐκπολεμῶσαι τελέως τοῖς πατρικίοις, εἶξαί τε συνεβούλευε τῷ καιρῷ καὶ πρὸς μὲν τοὺς ἔξωθεν πολεμίους τά [γε] βίαια ἀντιτάττειν, πρὸς δὲ τὰς πολιτικὰς διατριβὰς τὰ μέτρια καὶ εὐγνώμονα. ἐπειδὴ δὲ τοῖς πλείοσι τῶν ἐν τῷ συνεδρίῳ τὰ κράτιστα ἐδόκει λέγειν, προελθὼν εἰς τὴν ἐκκλησίαν καὶ
2026 λόγον εὐπρεπῆ διεξελθών, τελευτῶν τῆς δημηγορίας ὡμολόγησεν, ἐὰν ὁ δῆμος συνάρηται μετὰ προθυμίας τοῦ πολέμου καὶ καταστῇ τὰ πράγματα τῆς πόλεως,

συγχωρήσειν τοῖς δημάρχοις προθεῖναι τῷ πλήθει τὴν περὶ τοῦ νόμου διάγνωσιν, ὃν εἰσέφερον ὑπὲρ τῆς ἰσονομίας, καὶ σπουδάσειν ὅπως ἐπὶ τῆς ἑαυτοῦ ἀρχῆς ἐπὶ τέλος ἀχθῇ τὰ δόξαντα τῷ δήμῳ. ἦν δὲ ἄρα οὐθὲν αὐτῷ πεπρωμένον ἐπιτελέσαι τῶν ὁμολογηθέντων, πλησίον οὔσης τῆς τοῦ θανάτου μοίρας.

XVI. Λυθείσης δὲ τῆς ἐκκλησίας περὶ δείλην ὀψίαν συνέρρεον ἐπὶ τοὺς ἀποδειχθέντας ἕκαστοι τόπους, ἀπογραφόμενοί τε πρὸς τοὺς ἡγεμόνας τὰ ὀνόματα καὶ τὸν στρατιωτικὸν ὀμνύντες ὅρκον. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα ὅλην ἀμφὶ ταῦτα ἦσαν· τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ λοχαγοί τε προσενέμοντο ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ ἐπὶ τὰς ἱερὰς ἐτάττοντο σημείας, συνεπιρρέοντος καὶ τοῦ κατ' ἀγροὺς διατρίβοντος ὄχλου. γενομένων δὲ διὰ τάχους ἁπάντων εὐτρεπῶν, μερισάμενοι τὰς δυνάμεις οἱ ὕπατοι 202 κλήρῳ διείλοντο τὰς ἀρχάς. Κλαυδίῳ μὲν οὖν ὁ κλῆρος ἀπέδωκε τὰ πρὸ τῶν τειχῶν διὰ φυλακῆς ἔχειν, μή τις ἔξωθεν ἐπέλθῃ στρατιὰ τοῖς ἔνδον ἐπίκουρος· ὑποψία γὰρ ἅπαντας κατεῖχε μεγάλης σφόδρα κινήσεως, καὶ τὸ ἀντίπαλον ἅπαν ὡς ὁμοῦ συνεπιθησόμενον σφίσιν ἐφοβοῦντο· Οὐαλερίῳ δὲ τὰ φρούρια πολιορκεῖν ὁ δαίμων ἐφῆκεν. ἐτάχθησαν δὲ καὶ ἐπὶ τοῖς ἄλλοις ἐρύμασιν ἡγεμόνες ὅσα τῆς πόλεως ἐντὸς ἦν καθέξοντες, καὶ κατὰ τὰς ἐπὶ τὸ Καπιτώλιον ἀγούσας ὁδοὺς ἕτεροι κωλύσεως ἕνεκεν τῶν ἀποστησομένων πρὸς τοὺς πολεμίους δούλων τε καὶ ἀπόρων, ὃ παντὸς μάλιστα ἐφοβοῦντο. ἐπικουρικὸν δὲ αὐτοῖς οὐδὲν ἔφθασε παρὰ τῶν συμμάχων ἀφικόμενον, ὅτι μὴ παρὰ Τυσκλάνων μόνον ἐν μιᾷ νυκτὶ ἀκουσάντων τε καὶ παρασκευασαμένων, οὓς ἦγε Λεύκιος Μαμίλιος, ἀνὴρ δραστήριος, ἔχων τὴν μεγίστην ἐν

1028 τῇ πόλει τότε ἀρχήν· καὶ συνεκινδύνευον οὗτοι τῷ
Οὐαλερίῳ μόνοι καὶ συνεξεῖλον τὰ φρούρια πᾶσαν
εὔνοιαν καὶ προθυμίαν ἀποδειξάμενοι. ἐγένετο δ' ἡ
προσβολὴ τοῖς φρουρίοις πανταχόθεν· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ
τῶν πλησίον οἰκιῶν ἀσφάλτου καὶ πίσσης πεπυρω-
μένης ἀγγεῖα σφενδόναις ἐναρμόττοντες ἐπέβαλλον
ὑπὲρ τὸν λόφον· οἱ δὲ συμφοροῦντες αὔων φακέλ-
λους φρυγάνων καὶ παρὰ τοῖς ἀποτόμοις τῆς πέτρας
βωμοὺς ἐγείροντες ὑψηλοὺς ὑφῆπτον, ἀνέμῳ παρα-
διδόντες τὰς φλόγας ἐπιφόρῳ. ὅσοι δ' ἦσαν ἀνδρει-
ότατοι πυκνώσαντες τοὺς λόχους ἐχώρουν ἄνω κατὰ
τὰς χειροποιήτους ὁδούς. ἦν δ' αὐτοῖς οὔτε τοῦ πλή-
θους, ᾧ παρὰ πολὺ τῶν ἀντιπάλων προεῖχον, ὄφελος
οὐθὲν διὰ στενῆς ἀνιοῦσιν ὁδοῦ καὶ πληθούσης προ-
βόλων ἄνωθεν ἐπικαταραττομένων, ἔνθα συνεξισω-
θήσεσθαι ἔμελλε τῷ πολλῷ τὸ ὀλίγον· οὔτε τῆς παρὰ
1029 τὰ δεινὰ ὑπομονῆς, ἣν πολλοῖς ἀσκήσαντες πολέ-
μοις εἶχον, οὐδεμία ὄνησις πρὸς ὀρθίους βιαζομένοις
σκοπάς. οὐ γὰρ συστάδην μαχομένους ἔδει τὸ εὔτολ-
μον καὶ καρτερικὸν ἀποδείξασθαι, ἀλλ' ἑκηβόλοις
χρῆσθαι μάχαις. ἦσαν δὲ τῶν μὲν κάτωθεν ἐπὶ τὰ
μετέωρα βαλλομένων βραδεῖαί τε καὶ ἀσθενεῖς, εἰ
καὶ τύχοιεν, ὥσπερ εἰκός, αἱ πληγαί· τῶν δ' ἀφ'
ὕψους κάτω ῥιπτουμένων ὀξεῖαι καὶ καρτεραί, συνερ-
γούντων τοῖς βλήμασι καὶ τῶν ἰδίων βαρῶν. οὐ μὴν
ἔκαμνόν γε οἱ προσβάλλοντες τοῖς ἐρύμασιν, ἀλλὰ
διεκαρτέρουν ἀναγκοφοροῦντες τὰ δεινά, οὔτε ἡμέρας
οὔτε νυκτὸς ἀναπαυόμενοι τῶν πόνων. τέλος δ' οὖν
ὑπολιπόντων τοὺς πολιορκουμένους τῶν βελῶν καὶ
τῶν σωμάτων ἐξαδυνατούντων τρίτῃ τὰ φρούρια
ἐξεπολιόρκησαν ἡμέρᾳ. ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ πολλοὺς
Ῥωμαῖοι καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀπέβαλον, κράτιστον

δέ, ὥσπερ πρὸς ἁπάντων ὡμολόγητο, τὸν ὕπατον· ὃς οὐκ ὀλίγα τραύματα λαβὼν οὐδ᾽ ὣς ἀφίστατο τῶν δεινῶν, ἕως ἐπικαταρραγεὶς αὐτῷ πέτρος ὑπερμεγέθης [203] ἐπιβαίνοντι τοῦ περιτειχίσματος ἅμα τήν τε νίκην αὐτὸν ἀφείλετο καὶ τὴν ψυχήν. ἁλισκομένων δὲ τῶν φρουρίων ὁ μὲν Ἑρδώνιος· ἦν γὰρ καὶ ῥώμῃ σώματος διάφορος καὶ κατὰ χεῖρα γενναῖος· ἄπιστόν τι χρῆμα περὶ αὐτὸν ποιήσας νεκρῶν ὑπὸ πλήθους βελῶν ἀποθνήσκει, τῶν δὲ σὺν αὐτῷ τὰ φρούρια καταλαβομένων ὀλίγοι μέν τινες ζῶντες ἑάλωσαν, οἱ δὲ πλείους σφάττοντες ἑαυτοὺς ἢ κατὰ τῶν κρημνῶν ὠθοῦντες διεφθάρησαν.

XVII. Τοῦτο τὸ τέλος λαβόντος τοῦ λῃστρικοῦ πολέμου, τὴν πολιτικὴν πάλιν ἀνερρίπτουν οἱ δήμαρχοι στάσιν ἀξιοῦντες ἀπολαβεῖν παρὰ τοῦ περιόντος ὑπάτου τὰς ὑποσχέσεις, ἃς ἐποιήσατο πρὸς αὐτοὺς ὁ τεθνηκὼς ἐν τῇ μάχῃ Οὐαλέριος ὑπὲρ τῆς εἰσφορᾶς τοῦ νόμου. ὁ δὲ Κλαύδιος μέχρι μέν τινος παρεῖλκε τὸν χρόνον, τοτὲ μὲν καθαρμοὺς τῆς πόλεως ἐπιτελῶν, τοτὲ δὲ θυσίας τοῖς θεοῖς χαριστηρίους ἀποδιδούς, τοτὲ δ᾽ ἀγῶσι καὶ θέαις ἀναλαμβάνων τὸ πλῆθος εἰς εὐπαθείας. ὡς δ᾽ αἱ σκήψεις αὐτῷ πᾶσαι κατηνάλωντο, τελευτῶν ἔφη δεῖν εἰς τὸν τοῦ τεθνηκότος [203] ὑπάτου τόπον ἕτερον ἀποδειχθῆναι. τὰ μὲν γὰρ ὑφ᾽ ἑαυτοῦ μόνου πραχθέντα οὔτε νόμιμα οὔτε βέβαια ἔσεσθαι, τὰ δ᾽ ὑπ᾽ ἀμφοῖν ἔννομά τε καὶ κύρια. ταύτῃ διακρουσάμενος αὐτοὺς τῇ προφάσει προεῖπεν ἀρχαιρεσίων ἡμέραν, ἐν ᾗ τὸν συνάρχοντα ἔμελλεν ἀποδείξειν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ δι᾽ ἀπορρήτων βουλευμάτων οἱ προεστηκότες τοῦ συνεδρίου συνέθεντο κατὰ σφᾶς αὐτούς, ὅτῳ παραδώσουσι τὴν ἀρχήν. καὶ ἐπειδὴ ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐνέστη χρόνος,

καὶ ὁ κῆρυξ τὴν πρώτην τάξιν ἐκάλεσεν, εἰσελθόντες
εἰς τὸν ἀποδειχθέντα τόπον οἵ τ᾽ ὀκτωκαίδεκα λόχοι
τῶν ἱππέων καὶ οἱ τῶν πεζῶν ὀγδοήκοντα τῶν τὸ
μέγιστον τίμημα ἐχόντων Λεύκιον Κοίντιον Κικιν-
2 νάτον ἀποδεικνύουσιν ὕπατον, οὗ τὸν υἱὸν Καίσωνα
Κοίντιον εἰς ἀγῶνα θανάτου καταστήσαντες οἱ δήμαρ-
χοι τὴν πόλιν ἠνάγκασαν ἐκλιπεῖν· καὶ οὐδεμιᾶς ἔτι
κληθείσης ἐπὶ τὴν ψηφοφορίαν τάξεως· τρισὶ γὰρ
ἦσαν λόχοις πλείους οἱ διενέγκαντες τὴν ψῆφον λόχοι
τῶν ὑπολειπομένων· ὁ μὲν δῆμος ἀπῄει συμφορὰν
βαρεῖαν ἡγούμενος, ὅτι μισῶν αὐτοὺς ἀνὴρ ἐξουσίας
ὑπατικῆς ἔσται κύριος, ἡ βουλὴ δὲ ἔπεμπε τοὺς παρα-
ληψομένους τὸν ὕπατον καὶ ἄξοντας ἐπὶ τὴν ἀρχήν.
ἔτυχε δὲ τηνικαῦτα ὁ Κοίντιος ἄρουράν τινα ὑπερ-
γαζόμενος εἰς σποράν, αὐτὸς ἀκολουθῶν τοῖς σχί-
ζουσι τὴν νειὸν βοιδίοις ἀχίτων, περιζωμάτιον ἔχων
καὶ ἐπὶ τῇ κεφαλῇ πῖλον. ἰδὼν δὲ πλῆθος ἀνθρώπων
εἰς τὸ χωρίον εἰσιόντων τό τε ἄροτρον ἐπέσχε καὶ
πολὺν ἠπόρει χρόνον, οἵτινές τε εἶεν καὶ τίνος δεό-
μενοι πρὸς αὐτὸν ἥκοιεν· ἔπειτα προσδραμόντος τινὸς
καὶ κελεύσαντος κοσμιώτερον ἑαυτὸν ποιῆσαι, παρελ-
33 θὼν εἰς τὴν καλύβην καὶ ἀμφιεσάμενος προῆλθεν.
οἱ δ᾽ ἐπὶ τὴν παράληψιν αὐτοῦ παρόντες ἠσπάσαντό
τε ἅπαντες οὐκ ἐκ τοῦ ὀνόματος ἀλλὰ ὕπατον, καὶ
τὴν περιπόρφυρον ἐσθῆτα περιέθεσαν, τούς τε πελέ-
κεις καὶ τἆλλα παράσημα τῆς ἀρχῆς παραστήσαντες
ἀκολουθεῖν εἰς τὴν πόλιν ἠξίουν. κἀκεῖνος μικρὸν
ἐπισχὼν καὶ διαδακρύσας τοσοῦτον εἶπεν· Ἄσπορον
ἄρα μοι τὸ χωρίον ἔσται τοῦτον τὸν ἐνιαυτόν, καὶ
κινδυνεύσομεν οὐχ ἕξειν πόθεν διατραφῶμεν. ἔπειτα
ἀσπασάμενος τὴν γυναῖκα καὶ τῶν ἔνδον ἐπιμελεῖ-
σθαι παραγγείλας ᾤχετο εἰς τὴν πόλιν. ταῦτα δὲ

οὐχ ἑτέρου τινὸς χάριν εἰπεῖν προήχθην, ἀλλ' ἵνα φανερὸν γένηται πᾶσιν, οἷοι τότε ἦσαν οἱ τῆς Ῥωμαίων πόλεως προεστηκότες, ὡς αὐτουργοὶ καὶ σώφρονες καὶ πενίαν δικαίαν οὐ βαρυνόμενοι καὶ βασιλικὰς οὐ διώκοντες ἐξουσίας, ἀλλὰ καὶ διδομένας ἀναινόμενοι· φανήσονται γὰρ οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἐοικότες ἐκείνοις οἱ νῦν, ἀλλὰ τἀναντία πάντα ἐπιτηδεύοντες 203, πλὴν πάνυ ὀλίγων, δι' οὓς ἕστηκεν ἔτι τὸ τῆς πόλεως ἀξίωμα καὶ τὸ σώζειν τὴν πρὸς ἐκείνους τοὺς ἄνδρας ὁμοιότητα. ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων ἅλις.

XVIII. Ὁ δὲ Κοίντιος παραλαβὼν τὴν ὑπατείαν, πρῶτον μὲν ἔπαυσε τοὺς δημάρχους τῶν καινῶν πολιτευμάτων καὶ τῆς ἐπὶ τῷ νόμῳ σπουδῆς προειπών, ὡς εἰ μὴ παύσονται ταράττοντες τὴν πόλιν ἀπάξει Ῥωμαίους ἅπαντας ἐκ τῆς πόλεως στρατείαν κατὰ Οὐολούσκων παραγγείλας. ἐπεὶ δὲ κωλύσειν αὐτὸν ἔλεγον οἱ δήμαρχοι στρατοῦ ποιεῖσθαι καταγραφήν, συναγαγὼν τὸ πλῆθος εἰς ἐκκλησίαν εἶπεν, ὅτι πάντες ὀμωμόκασι τὸν στρατιωτικὸν ὅρκον, ἀκολουθήσειν τοῖς ὑπάτοις ἐφ' οὓς ἂν καλῶνται πολέμους, καὶ μήτε ἀπολείψειν τὰ σημεῖα μήτε ἄλλο πράξειν μηθὲν ἐναντίον τῷ νόμῳ· παραλαβὼν δὲ τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν αὐτὸς ἔχειν ἔφη κρατουμένους ἅπαντας τοῖς ὅρκοις. εἰπὼν δὲ ταῦτα καὶ διομοσάμενος χρήσεσθαι τῷ νόμῳ κατὰ τῶν ἀπειθούντων, ἐκέλευσεν ἐκ τῶν 203 ἱερῶν τὰ σημεῖα καταφέρειν· καὶ ἵνα, ἔφη, πᾶσαν ἀπογνῶτε δημαγωγίαν ἐπὶ τῆς ἐμῆς ὑπατείας, οὐ πρότερον ἀναστήσω τὸν στρατὸν ἐκ τῆς πολεμίας, πρὶν ἢ πᾶς ὁ τῆς ἀρχῆς μοι διέλθῃ χρόνος. ὡς οὖν ἐν ὑπαίθρῳ χειμάσοντες παρασκευάσασθε τὰ εἰς ἐκεῖνον τὸν καιρὸν ἐπιτήδεια. τούτοις καταπληξάμενος αὐτοὺς τοῖς λόγοις, ἐπειδὴ κοσμιωτέρους εἶδε γεγο-

νότας καὶ δεομένους ἀφεθῆναι τῆς στρατείας, ἐπὶ τούτοις ἔφη χαριεῖσθαι τὰς ἀναπαύλας τῶν πολέμων, ἐφ᾽ ᾧ τε μηθὲν ἔτι παρακινεῖν αὐτούς, ἀλλ᾽ ἐᾶν αὐτὸν ὡς βούλεται τὴν ἀρχὴν τελέσαι, καὶ ἐπὶ τῷ τὰ δίκαια διδόναι τε καὶ λαμβάνειν παρ᾽ ἀλλήλων.

XVIIII. Καταστάντος δὲ τοῦ θορύβου δικαστήριά τε ἀπεδίδου τοῖς δεομένοις ἐκ πολλῶν παρειλκυσμένα χρόνων, καὶ τὰ πλεῖστα τῶν ἐγκλημάτων αὐτὸς ἴσως καὶ δικαίως διέκρινε δι᾽ ὅλης ἡμέρας ἐπὶ τοῦ
036 βήματος καθεζόμενος, εὐπρόσοδόν τε καὶ πρᾷον καὶ φιλάνθρωπον τοῖς ἐπὶ τὴν δικαιοδοσίαν ἀφικνουμένοις ἑαυτὸν παρεῖχε, καὶ παρεσκεύασεν ἀριστοκρατικὴν οὕτως φανῆναι τὴν πολιτείαν, ὥστε μήτε δημάρχων δεηθῆναι τοὺς διὰ πενίαν ἢ δυσγένειαν ἢ ἄλλην τινὰ ταπεινότητα ὑπὸ τῶν κρειττόνων κατισχυομένους, μήτε καινῆς νομοθεσίας πόθον ἔχειν ἔτι τοὺς ἐν ἰσηγορίᾳ πολιτεύεσθαι βουλομένους, ἀλλ᾽ ἀγαπᾶν τε καὶ χαίρειν ἅπαντας ἐπὶ τῇ τότε κατασχούσῃ τὴν πόλιν εὐνομίᾳ. ταῦτά τε δὴ τὰ ἔργα τοῦ ἀνδρὸς ἐπῃνεῖτο ὑπὸ τοῦ δήμου, καὶ ἐπεὶ τὸν ὡρισμένον ἐτέλεσε τῆς ἀρχῆς χρόνον, τὸ μὴ δέξασθαι τὴν ὑπατείαν διδομένην τὸ δεύτερον, μηδὲ ἀγαπῆσαι τηλικαύτην λαμβάνοντα τιμήν. κατεῖχε γὰρ αὐτὸν ἐπὶ τῆς ὑπατικῆς ἐξουσίας ἡ βουλὴ πολλὰς προσφέρουσα δεήσεις, ἐπεὶ
037 τὸ τρίτον οἱ δήμαρχοι διεπράξαντο μὴ ἀποθέσθαι τὴν ἀρχήν, ὡς ἐναντιωσόμενον αὐτοῖς καὶ παύσοντα τῶν καινῶν πολιτευμάτων, τὰ μὲν αἰδοῖ, τὰ δὲ φόβῳ, τὸν δὲ δῆμον ὁρῶσα οὐκ ἀναινόμενον ὑπ᾽ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ ἄρχεσθαι. ὁ δ᾽ οὔτε τῶν δημάρχων ἐπαινεῖν ἔφη τὸ ἀπαραχώρητον τῆς ἐξουσίας, οὔτε αὐτὸς εἰς ὁμοίαν ἐκείνοις ἥξειν διαβολήν. συναγαγὼν δὲ τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν καὶ πολλὴν κατηγορίαν τῶν οὐκ

ἀποτιθεμένων τὰς ἀρχὰς διαθέμενος ὅρκους τε διομοσάμενος ἰσχυροὺς περὶ τοῦ μὴ λήψεσθαι πάλιν τὴν ὑπατείαν, πρὶν ἀποθέσθαι τὴν προτέραν ἀρχήν, προεῖπεν ἀρχαιρεσίων ἡμέραν· ἐν ᾗ καταστήσας ὑπάτους ἀπῄει πάλιν εἰς τὸ μικρὸν ἐκεῖνο καλύβιον καὶ τὸν αὐτουργὸν ἔζη βίον ὡς πρότερον.

XX. Κοίντου δὲ Φαβίου Οὐιβολανοῦ παρειληφότος τὴν ὑπατείαν τὸ τρίτον καὶ Λευκίου Κορνηλίου, καὶ τελούντων πατρίους ἀγῶνας, Αἰκανῶν ἄνδρες 20 ἐπίλεκτοι πλῆθος ἀμφὶ τοὺς ἑξακισχιλίους ὁπλισμῷ τ' εὐζώνῳ συνεσταλμένοι καὶ ἐν νυκτὶ ποιησάμενοι τὴν ἔξοδον, σκότους ἔτι ὄντος ἐπὶ πόλιν ἀφικνοῦνται Τυσκλάνων, ἣ ἔστι μὲν τοῦ Λατίνων ἔθνους, ἀφέστηκε δὲ τῆς Ῥώμης οὐκ ἔλαττον σταδίων ἑκατόν. εὑρόντες δὲ ὡς ἐν εἰρήνῃ πύλας τε ἀκλείστους καὶ τεῖχος ἀφύλακτον αἱροῦσι τὴν πόλιν ἐξ ἐφόδου, μνησικακοῦντες τοῖς Τυσκλάνοις, ὅτι τῇ Ῥωμαίων πόλει τά τε ἄλλα μετὰ προθυμίας συμπράττοντες διετέλουν, καὶ ἐν τῇ πολιορκίᾳ τοῦ Καπιτωλίου μόνοι συνήραντο τοῦ πολέμου. [καὶ] ἄνδρας μὲν οὖν οὐ πολλούς τινας ἐν τῇ καταλήψει διέφθειραν, ἀλλ' ἔφθασαν ἤδη αὐτοὺς ὑπὸ τὴν ἅλωσιν τῆς πόλεως ὠσάμενοι διὰ τῶν πυλῶν οἱ ἔνδον, χωρὶς ἢ ὅσοι ὑπὸ νόσων ἢ γήρως φυγεῖν ἀδύνατοι ἦσαν· γύναια δὲ καὶ παιδία καὶ θεράποντας αὐτῶν ἠνδραποδίσαντο καὶ τὰ χρήματα διήρπασαν. ὡς δ' ἀπηγγέλθη τὸ δεινὸν εἰς τὴν Ῥώ- 20 μην ἐκ τῶν διαφυγόντων ἐκ τῆς ἁλώσεως, οἱ μὲν ὕπατοι βοηθεῖν ᾤοντο δεῖν τοῖς φυγάσι κατὰ τάχος καὶ τὴν πόλιν αὐτοῖς ἀποδιδόναι, ἀντέπραττον δὲ οἱ δήμαρχοι στρατιὰν οὐκ ἐῶντες καταγράφειν, ἕως ἂν ἡ περὶ τοῦ νόμου διενεχθῇ ψῆφος. ἀγανακτούσης δὲ τῆς βουλῆς καὶ διατριβὴν λαμβανούσης τῆς στρατείας,

ἕτεροι παρῆσαν ἀπὸ τοῦ Λατίνων ἔθνους ἀποσταλέντες, οἳ τὴν Ἀντιατῶν πόλιν ἤγγελλον ἐκ τοῦ φανεροῦ ἀφεστηκέναι, μιᾷ χρησαμένων γνώμῃ Οὐολούσκων τε τῶν ἀρχαίων οἰκητόρων τῆς πόλεως καὶ Ῥωμαίων τῶν ἀφικομένων ὡς αὐτοὺς ἐποίκων καὶ μερισαμένων τὴν γῆν. Ἑρνίκων τε ἄγγελοι κατὰ τοὺς αὐτοὺς παρῆσαν χρόνους δηλοῦντες, ὅτι Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν δύναμις πολλὴ ἐξελήλυθε καί ἐστιν ἐν τῇ αὐτῶν ἤδη γῇ. τούτων ἅμα προσαγγελλομένων οὐδεμίαν ἀναστροφὴν ἔτι ποιεῖσθαι τοῖς ἐκ τοῦ συνεδρίου ἐδόκει, ἀλλὰ πανστρατιᾷ βοηθεῖν καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξιέναι· ἐὰν δέ τινες ἀπολειφθῶσι τῆς στρατείας Ῥωμαίων ἢ τῶν συμμάχων, ὡς πολεμίοις αὐτοῖς
2040 χρῆσθαι. εἰξάντων δὲ καὶ τῶν δημάρχων καταγράψαντες τοὺς ἐν ἡλικίᾳ πάντας οἱ ὕπατοι, καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων δυνάμεις μεταπεμψάμενοι κατὰ σπουδὴν ἐξῄεσαν, ὑπολειπόμενοι φυλακὴν τῇ πόλει τρίτην μοῖραν τῆς ἐπιχωρίου στρατιᾶς. Φάβιος μὲν οὖν ἐπὶ τοὺς ἐν τῷ Τυσκλάνῳ ὄντας Αἰκανοὺς τὴν στρατιὰν ἦγε διὰ τάχους [ἐλαύνων]. τῶν δ' οἱ μὲν πλείους ἀπεληλύθεσαν ἤδη διηρπακότες τὴν πόλιν, ὀλίγοι δέ τινες ὑπέμενον φυλάττοντες τὴν ἄκραν· ἔστι δὲ σφόδρα ἐχυρὰ καὶ οὐ πολλῆς δεομένη φυλακῆς. τινὲς μὲν οὖν φασι τοὺς φρουροὺς τῆς ἄκρας ἰδόντας ἐξιοῦσαν ἐκ τῆς Ῥώμης τὴν στρατιάν· εὐσύνοπτα γάρ ἐστιν ἐκ μετεώρου τὰ μεταξὺ χωρία πάντα· ἑκόντας ἐξελθεῖν· ἕτεροι δὲ ἐκπολιορκηθέντας ὑπὸ τοῦ Φαβίου καθ' ὁμολογίαν παραδοῦναι τὸ φρούριον, τοῖς σώμασιν αὐτοῖς ἄδειαν αἰτησαμένους καὶ ζυγὸν ὑποστάντας.

2041 XXI. Ἀποδοὺς δὲ τοῖς Τυσκλάνοις τὴν πόλιν Φάβιος περὶ δείλην ὀψίαν ἀνίστησι τὴν στρατιάν.

καὶ ὡς εἶχε τάχους ἤλαυνεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, ἀκούων περὶ πόλιν Ἄλγιδον ἀθρόας εἶναι τάς τε Οὐολούσκων καὶ τὰς Αἰκανῶν δυνάμεις. ποιησάμενος δὲ δι᾿ ὅλης νυκτὸς σύντονον ὁδὸν ὑπ᾿ αὐτὸν τὸν ὄρθρον ἐπιφαίνεται τοῖς πολεμίοις ἐστρατοπεδευκόσιν ἐν πεδίῳ, καὶ οὔτε τάφρον περιβεβλημένοις οὔτε χάρακα, ὡς ἐν οἰκείᾳ τε γῇ καὶ καταφρονήσει τοῦ ἀντιπάλου. παρακελευσάμενος δὲ τοῖς ἀμφ᾿ αὐτὸν ἀγαθοῖς ἀνδράσι γίνεσθαι, πρῶτος εἰσελαύνει μετὰ τῶν ἱππέων εἰς τὴν τῶν πολεμίων παρεμβολήν, καὶ οἱ πεζοὶ συναλαλάξαντες εἵποντο· τῶν δ᾿ οἱ μὲν ἔτι κοιμώμενοι ἐφονεύοντο, οἱ δ᾿ ἀρτίως ἀνεστηκότες καὶ πρὸς ἀλκὴν ἐπιχειροῦντες τραπέσθαι, οἱ δὲ πλείους ἔφευγον. 204
ἁλόντος δὲ τοῦ στρατοπέδου κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν, ἐπιτρέψας τοῖς στρατιώταις τὰ χρήματα ὠφελεῖσθαι καὶ τὰ σώματα πλὴν ὅσα Τυσκλάνων ἦν, οὐ πολὺν ἐνταῦθα διατρίψας χρόνον ἐπὶ τὴν Ἐχετράνων πόλιν ἦγε τὴν δύναμιν, ἣ τότε ἦν τοῦ Οὐολούσκων ἔθνους ἐπιφανεστάτη τε καὶ ἐν τῷ κρατίστῳ μάλιστα τόπῳ κειμένη. στρατοπεδεύσας δὲ πλησίον τῆς πόλεως ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας κατ᾿ ἐλπίδα τοῦ προελεύσεσθαι τοὺς ἔνδον εἰς μάχην, ὡς οὐδεμία ἐξῄει στρατιά, τὴν γῆν αὐτῶν ἐδῄου ἀνθρώπων μεστὴν οὖσαν καὶ βοσκημάτων. οὐ γὰρ ἔφθασαν ἀνασκευασάμενοι τὰ ἐκ τῶν ἀγρῶν αἰφνιδίου γενηθείσης αὐτοῖς τῆς ἐφόδου. ἐφεὶς δὲ καὶ ταῦτα τοῖς στρατιώταις διαρπάζειν ὁ Φάβιος καὶ πολλὰς ἐν τῇ προνομῇ διατρίψας ἡμέρας ἀπῆγεν ἐπ᾿ οἴκου τὴν δύναμιν. ὁ δ᾿ ἕτερος τῶν ὑπάτων Κορνήλιος ἐπὶ τοὺς ἐν Ἀντίῳ Ῥωμαίους τε καὶ Οὐο- 204
λούσκους ἐλαύνων, ἐπιτυγχάνει στρατιᾷ πρὸ τῶν ὁρίων αὐτὸν ὑποδεχομένῃ. παραταξάμενος δὲ αὐτοῖς καὶ πολλοὺς μὲν φονεύσας, τοὺς δὲ λοιποὺς τρεψά-

μενος, ἀγχοῦ τῆς πόλεως κατεστρατοπέδευσεν. οὐ τολμώντων δὲ τῶν ἐκ τῆς πόλεως οὐκέτι χωρεῖν εἰς μάχην, πρῶτον μὲν τὴν γῆν αὐτῶν ἔκειρεν, ἔπειτα τὴν πόλιν [αὐτῶν] ἀπετάφρευε καὶ περιεχαράκου. τότε δὴ πάλιν ἀναγκασθέντες ἐξῆλθον ἐκ τῆς πόλεως πανστρατιᾷ, πολὺς καὶ ἀσύντακτος ὄχλος, καὶ συμβαλόντες εἰς μάχην ἔτι κάκιον ἀγωνισάμενοι κατακλείονται τὸ δεύτερον εἰς τὴν πόλιν, αἰσχρῶς καὶ ἀνάνδρως φεύγοντες. ὁ δ' ὕπατος οὐδεμίαν αὐτοῖς ἀναστροφὴν ἔτι δοὺς κλίμακας προσέφερε τοῖς τείχεσι καὶ κριοῖς ἐξέκοπτε τὰς πύλας. ἐπιπόνως δὲ καὶ ταλαιπώρως τῶν ἔνδον ἀπομαχομένων, οὐ πολλὰ πραγμα-
14 τευθεὶς κατὰ κράτος αἱρεῖ τὴν πόλιν. χρήματα μὲν οὖν αὐτῶν, ὅσα χρυσὸς καὶ ἄργυρος καὶ χαλκὸς ἐνῆν, εἰς τὸ δημόσιον ἐκέλευσεν ἀναφέρειν, ἀνδράποδα δὲ τοὺς ταμίας παραλαμβάνοντας καὶ τὰ λοιπὰ λάφυρα πωλεῖν· τοῖς δὲ στρατιώταις ἐσθῆτα καὶ τροφὰς καὶ ὅσα ἄλλα τοιαῦτα ἐδύναντο ὠφελεῖσθαι ἐπέτρεψεν. ἔπειτα διακρίνας τῶν τε κληρούχων καὶ τῶν ἀρχαίων Ἀντιατῶν τοὺς ἐπιφανεστάτους τε καὶ τῆς ἀποστάσεως αἰτίους· ἦσαν δὲ πολλοί· ῥάβδοις τε ᾐκίσατο μέχρι πολλοῦ καὶ τοὺς αὐχένας αὐτῶν ἐκέλευσεν ἀποτεμεῖν. ταῦτα διαπραξάμενος ἀπῆγε καὶ αὐτὸς ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν. τούτοις ἡ βουλὴ τοῖς ὑπάτοις προσιοῦσί τε ἀπήντησε, καὶ θριάμβους ἀμφοτέροις καταγαγεῖν ἐψηφίσατο· καὶ πρὸς Αἰκανοὺς πρεσβευσαμένους ὑπὲρ εἰρήνης ἐποιήσατο συνθήκας περὶ καταλύσεως τοῦ πολέμου, ἐν αἷς ἐγράφη, πόλεις τε καὶ χώρας ἔχοντας Αἰκανούς, ὧν ἐκράτουν ὅτε αἱ σπονδαὶ ἐγίνοντο, Ῥωμαίοις εἶναι ὑπηκόους, ἄλλο μὲν ὑποτελοῦντας μηθέν, ἐν δὲ τοῖς πολέμοις συμμαχίαν ἀποστέλλοντας ὁσηνδήποτε,

ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι σύμμαχοι. καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτελεύτα.

XXII. Τῷ δ' ἑξῆς ἐνιαυτῷ Γάιος Ναύτιος τὸ δεύτερον 20 αἱρεθεὶς καὶ Λεύκιος Μηνύκιος παραλαβόντες τὴν ὕπατον ἀρχήν, τέως μὲν ὑπὲρ τῶν πολιτικῶν δικαίων πόλεμον ἐντὸς τείχους ἐπολέμουν πρὸς τοὺς ἅμα Οὐεργινίῳ δημάρχους τοὺς τέταρτον ἔτος ἤδη τὴν αὐτὴν κατασχόντας ἀρχήν. ἐπεὶ δ' ἀπὸ τῶν πλησιοχώρων ἐθνῶν πόλεμος ἐπεγένετο τῇ πόλει, καὶ δέος ἦν μὴ τὴν ἀρχὴν ἀφαιρεθῶσιν, ἀσμένως δεξάμενοι τὸ συμβὰν ἀπὸ τῆς τύχης τὸν στρατιωτικὸν ἐποιοῦντο κατάλογον, καὶ μερισάμενοι τριχῇ τάς τε οἰκείας καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων δυνάμεις, μίαν μὲν ἐν τῇ πόλει μοῖραν κατέλιπον, ἧς ἡγεῖτο Κόιντος Φάβιος Οὐιβολανός· τὰς δὲ λοιπὰς αὐτοὶ παραλαβόντες ἐξῆσαν διὰ ταχέων, ἐπὶ μὲν Σαβίνους Ναύτιος, ἐπὶ δ' Αἰκανοὺς Μηνύκιος. ἀμφότερα γὰρ ταῦτα τὰ ἔθνη κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἀφειστήκει τῆς Ῥωμαίων ἀρχῆς, Σαβῖνοι μὲν ἐκ φανεροῦ, καὶ μέχρι Φιδήνης πόλεως ἤλασαν, ἧς ἐκράτουν Ῥωμαῖοι· τετταράκοντα 20 δ' εἰσὶν οἱ διὰ μέσου τῶν πόλεων στάδιοι· Αἰκανοὶ δὲ λόγῳ μὲν φυλάττοντες τὰ τῆς νεωστὶ γενομένης συμμαχίας δίκαια, ἔργῳ δὲ καὶ οὗτοι πράττοντες τὰ τῶν πολεμίων. ἐπὶ γὰρ τοὺς συμμάχους αὐτῶν Λατίνους ἐστράτευσαν, ὡς οὐ γενομένων αὐτοῖς πρὸς ἐκείνους ὁμολογιῶν περὶ φιλίας. ἡγεῖτο δὲ τῆς στρατιᾶς Γράκχος Κοίλιος, ἀνὴρ δραστήριος ἀρχῇ κοσμηθεὶς αὐτοκράτορι, ἣν ἐπὶ τὸ βασιλικώτερον ἐξήγαγεν. ἐλάσας δὲ μέχρι Τύσκλου πόλεως, ἣν Αἰκανοὶ τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ καταλαβόμενοι καὶ διαρπάσαντες ὑπὸ Ῥωμαίων ἐξεκρούσθησαν, ἀνθρώπους τε πολλοὺς ἐκ τῶν ἀγρῶν συνήρπασε καὶ βοσκήματα ὅσα

κατέλαβε καὶ τοὺς καρποὺς τῆς γῆς ἐν ἀκμῇ ὄντας 2047 ἔφθειρεν. ἀφικομένης δὲ πρεσβείας, ἣν ἀπέστειλεν ἡ Ῥωμαίων βουλὴ μαθεῖν ἀξιοῦσα, τί παθόντες Αἰκανοὶ πολεμοῦσι τοῖς Ῥωμαίων συμμάχοις, φιλίας τ᾿ αὐτοῖς ὀμωμοσμένης νεωστὶ καὶ οὐδενὸς ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ γενομένου προσκρούσματος τοῖς ἔθνεσι, καὶ παραινούσης τῷ Κοιλίῳ τούς τ᾿ αἰχμαλώτους αὐτῶν οὓς εἶχεν ἀφιέναι καὶ τὴν στρατιὰν ἀπάγειν καὶ περὶ ὧν ἠδίκησεν ἢ κατέβλαψε Τυσκλάνους δίκην ὑποσχεῖν, πολὺν μὲν χρόνον διέτριψεν ὁ Γράκχος οὐδ᾿ εἰς λόγους τοῖς πρεσβευταῖς ἐρχόμενος, ὡς ἐν ἀσχολίαις δή τισι γεγονώς. ἐπεὶ δ᾿ οὖν ἔδοξεν αὐτῷ προσάγειν τοὺς πρέσβεις, κἀκεῖνοι τοὺς ἐπισταλέντας ὑπὸ τῆς βουλῆς λόγους διεξῆλθον· Θαυμάζω, φησὶν, ὑμῶν, ὦ Ῥωμαῖοι, τί δή ποτ᾿ αὐτοὶ μὲν ἅπαντας ἀνθρώπους ἡγεῖσθε πολεμίους, καὶ ὑφ᾿ ὧν οὐδὲν κακὸν πεπόνθατε, ἀρχῆς καὶ τυραννίδος ἕνεκα· Αἰκανοῖς δ᾿ οὐ συγχωρεῖτε παρὰ τουτωνὶ Τυσκλάνων ἐχθρῶν ὄντων ἀναπράττεσθαι δίκας, οὐθενὸς ἡμῖν διωμολογημένου περὶ αὐτῶν, ὅτε τὰς πρὸς ὑμᾶς ἐποι-
2048 ούμεθα συνθήκας. εἰ μὲν οὖν τῶν ὑμετέρων ἰδίων ἀδικεῖσθαί τι ἢ βλάπτεσθαι λέγετε ὑφ᾿ ἡμῶν, τὰ δίκαια ὑφέξομεν ὑμῖν κατὰ τὰς ὁμολογίας· εἰ δὲ περὶ Τυσκλάνων ἀναπραξόμενοι δίκας ἥκετε, οὐθείς ἐστιν ὑμῖν πρὸς ἐμὲ περὶ τούτων λόγος, ἀλλὰ πρὸς ταύτην λαλεῖτε τὴν φηγόν· δείξας αὐτοῖς τινα πλησίον πεφυκυῖαν.

XXIII. Ῥωμαῖοι δὲ τοιαῦτα ὑβρισθέντες ὑπὸ τοῦ ἀνδρὸς οὐκ εὐθὺς ὀργῇ ἐπιτρέψαντες ἐξήγαγον τὴν στρατιάν, ἀλλὰ καὶ δευτέραν ὡς αὐτὸν ἀπέστειλαν πρεσβείαν, καὶ τοὺς φιτιάλεις καλουμένους ἄνδρας ἱεροὺς ἔπεμψαν ἐπιμαρτυρούμενοι θεούς τε καὶ δαί-

μονας, ὅτι μὴ δυνηθέντες τῶν δικαίων τυχεῖν ὅσιον ἀναγκασθήσονται πόλεμον ἐκφέρειν· καὶ μετὰ ταῦτα 2049 τὸν ὕπατον ἀπέστειλαν. ὁ δὲ Γράκχος, ἐπειδὴ τοὺς Ῥωμαίους προσιόντας ἔμαθεν, ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἀπῆγε προσωτέρω, τῶν πολεμίων ἐκ ποδὸς ἑπομένων, βουλόμενος αὐτοὺς εἰς τοιαῦτα προσαγαγέσθαι χωρία, ἐν οἷς πλεονεκτήσειν ἔμελλεν· ὅπερ καὶ συνέβη. φυλάξας γὰρ αὐλῶνα περικλειόμενον ὄρεσιν, ὡς ἐνέβαλον εἰς τοῦτον οἱ Ῥωμαῖοι διώκοντες αὐτόν, ὑποστρέφει τε καὶ στρατοπεδεύεται κατὰ τὴν ἐκ τοῦ αὐλῶνος ἔξω φέρουσαν ὁδόν. ἐκ δὲ τούτου συνεβεβήκει τοῖς Ῥωμαίοις οὐχ ὃν ἐβούλοντο ἐκλέξασθαι τόπον εἰς στρατοπεδείαν, ἀλλ' ὃν ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ καιρός, ἔνθα οὔθ' ἵπποις χιλὸν εὔπορον ἦν λαμβάνειν, ὄρεσι περικλειομένου τοῦ τόπου ψιλοῖς καὶ δυσβάτοις, οὔθ' ἑαυτοῖς τροφὰς ἐκ τῆς πολεμίας συγκομίζειν, - ἐπειδὴ κατην'λωντο ἃς οἴκοθεν ἔφερον, οὔτε μεταστρατοπεδεύσασθαι τῶν πολεμίων ἀντικαθημένων καὶ κωλυόντων τὰς ἐξόδους. βιάσασθαί τε προελόμενοι καὶ προελθόντες εἰς μάχην ἀνεκρούσθησαν, καὶ πολλὰς πληγὰς λαβόντες εἰς τὸν αὐτῶν κατεκλείσθησαν χάρακα. 2050 ὁ δὲ Κοίλιος ἐπαρθεὶς τῷ προτερήματι τούτῳ περιετάφρευέ τε αὐτοὺς καὶ περιεχαράκου, καὶ πολλὰς ἐλπίδας εἶχε λιμῷ πιεσθέντας παραδώσειν αὐτῷ τὰ ὅπλα. ἀφικομένης δ' εἰς Ῥώμην περὶ τούτων ἀγγελίας, Κόιντος Φάβιος ὁ καταλειφθεὶς ἐπὶ τῆς πόλεως ἔπαρχος ἀπὸ τῆς σὺν αὐτῷ στρατιᾶς ὅσον ἦν ἀκμαιότατόν τε καὶ κράτιστον μέρος ἐπιλέξας ἐπὶ συμμαχίαν ἔπεμψε τῷ ὑπάτῳ. ἡγεῖτο δὲ τῆς δυνάμεως ταύτης Τῖτος Κοίντιος ὁ ταμίας ἀνὴρ ὑπατικός. πρὸς δὲ τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Ναύτιον ἐπὶ τῆς ἐν Σαβίνοις στρατιᾶς ὄντα γράμ-

ματα διαπέμψας τά τε συμβάντα τῷ Μηνυκίῳ διεσάφησε καὶ αὐτὸν ἥκειν ἠξίου διὰ ταχέων. κἀκεῖνος
2051 ἐπιτρέψας τοῖς πρεσβευταῖς τὸν χάρακα φυλάττειν αὐτὸς σὺν ὀλίγοις ἱππεῦσιν εἰς τὴν Ῥώμην ἐλαύνει συντόνῳ χρησάμενος ἱππασίᾳ· εἰσελθὼν δ' εἰς τὴν πόλιν ἔτι πολλῆς νυκτὸς οὔσης, ἐβουλεύετο σὺν τῷ Φαβίῳ καὶ τῶν ἄλλων βουλευτῶν τοῖς πρεσβυτάτοις ὅ τι χρὴ ποιεῖν. ἐπεὶ δὲ πᾶσιν ἐδόκει δικτάτορος δεῖσθαι ὁ καιρός, ἀποδείκνυσιν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ταύτην Λεύκιον Κοίντιον Κικιννάτον. καὶ αὐτὸς μὲν ταῦτα διαπραξάμενος ᾤχετο πάλιν ἐπὶ τὸ στρατόπεδον,

XXIIII. ὁ δὲ τῆς πόλεως ἔπαρχος Φάβιος ἔπεμπε τοὺς παραληψομένους τὸν Κοίντιον ἐπὶ τὴν ἀρχήν. ἔτυχε δὲ καὶ τότε ὁ ἀνὴρ τῶν κατ' ἀγρὸν ἔργων τι διαπραττόμενος· ἰδὼν δὲ τὸν προσιόντα ὄχλον καὶ ὑποπτεύσας ἐπ' αὐτὸν ἥκειν, ἐσθῆτά τ' ἐλάμβανεν εὐπρεπεστέραν καὶ ὑπαντήσων αὐτοῖς ἐπορεύετο. ὡς δ' ἐγγὺς ἦν, ἵππους τ' αὐτῷ φαλάροις κεκοσμημένους ἐκπρεπέσι προσῆγον καὶ πελέκεις ἅμα ταῖς ῥάβδοις
2052 εἰκοσιτέτταρας παρέστησαν ἐσθῆτά τε ἁλουργῆ καὶ τἆλλα παράσημα, οἷς πρότερον ἡ τῶν βασιλέων ἐκεκόσμητο ἀρχή, προσήνεγκαν. ὁ δὲ μαθὼν ὅτι δικτάτωρ ἀποδέδεικται τῆς πόλεως οὐχ ὅπως ἠγάπησε τηλικαύτης τιμῆς τυχών, ἀλλὰ προσαγανακτήσας εἶπεν· Ἀπολεῖται ἄρα καὶ τούτου τοῦ ἐνιαυτοῦ ὁ καρπὸς διὰ τὰς ἐμὰς ἀσχολίας, καὶ πεινήσομεν ἅπαντες κακῶς. μετὰ ταῦτα παραγενόμενος εἰς τὴν πόλιν, πρῶτον μὲν ἐθάρρυνε τοὺς πολίτας λόγον ἐν τῷ πλήθει διεξελθὼν ἐξεγεῖραι τὰς ψυχὰς δυνάμενον ἐλπίσιν ἀγαθαῖς· ἔπειτα συναγαγὼν ἅπαντας τοὺς ἐν ἀκμῇ, τούς τε κατὰ πόλιν καὶ τοὺς ἐκ τῶν ἀγρῶν,

καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων ἐπικουρίας μεταπεμψάμενος, ἱππάρχην τ᾽ ἀποδείξας Λεύκιον Ταρκύνιον, ἄνδρα τῶν ἠμελημένων μὲν διὰ πενίαν, τὰ δὲ πολέμια γενναίων, ἐξῆγε συγκεκροτημένην ἔχων δύναμιν, 2053 καὶ καταλαβὼν τὸν ταμίαν Τῖτον Κοίντιον ἀναδεχόμενον αὐτοῦ τὴν παρουσίαν, λαβὼν καὶ τὴν σὺν ἐκείνῳ δύναμιν ἧκεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους. ὡς δὲ κατώπτευσε τὴν τῶν χωρίων φύσιν ἐν οἷς ἦν τὰ στρατόπεδα, μέρος μέν τι τῆς στρατιᾶς ἐπὶ τοῖς μετεώροις ἔταξεν, ὡς μήτε βοήθεια παραγένοιτο τοῖς Αἰκανοῖς ἑτέρα μήτε τροφαί· τὴν δὲ λοιπὴν δύναμιν αὐτὸς ἔχων προῆγεν ἐκτεταγμένην ὡς εἰς μάχην. καὶ ὁ Κοίλιος οὐθὲν ὑποδείσας· ἥ τε γὰρ δύναμις ἡ περὶ αὐτὸν ἦν οὐκ ὀλίγη, καὶ αὐτὸς ἐδόκει ψυχὴν οὐ κακὸς εἶναι [τὰ πολέμια]· δέχεται αὐτὸν ἐπιόντα, καὶ γίνεται μάχη καρτερά. χρόνου δὲ πολλοῦ διελθόντος, καὶ τῶν Ῥωμαίων διὰ τοὺς συνεχεῖς πολέμους ἀναφερόντων τὸν πόνον, τῶν τε ἱππέων κατὰ τὸ κάμνον μέρος ἀεὶ ἐπιβοηθούντων τοῖς πεζοῖς, ἡσσηθεὶς ὁ Γράκχος κατακλείεται πάλιν εἰς τὸν ἑαυτοῦ χάρακα. καὶ μετὰ τοῦτο ὁ Κοίντιος περιταφρεύσας αὐτὸν ὑψηλῷ χάρακι καὶ πύργοις πυκνοῖς περιλαβών, ἐπεὶ κάμνοντα ἔμαθε τῶν ἀναγκαίων τῇ σπάνει, αὐτός τε προσβολὰς ἐποιεῖτο συνεχεῖς πρὸς τὸν χάρακα τῶν Αἰκανῶν, καὶ τῷ 2054 Μηνυκίῳ προσέταξεν ἀπὸ τῶν ἑτέρων ἐξιέναι μερῶν. ὥστε ἠναγκάσθησαν [οἱ] Αἰκανοὶ τροφῆς τε ἀπορούμενοι καὶ συμμάχων βοήθειαν ἀπεγνωκότες πολιορκούμενοί τε πολλαχόθεν ἱκετηρίας ἀναλαβόντες ἐπιπρεσβεύεσθαι πρὸς τὸν Κοίντιον περὶ φιλίας διαλεγόμενοι. ὁ δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις Αἰκανοῖς ἔφη σπένδεσθαι καὶ διδόναι τοῖς σώμασι τὴν ἄδειαν, τά τε ὅπλα ἀποθεμένοις καὶ καθ᾽ ἕνα διεξιοῦσιν ὑπὸ ζυγόν,

Γράκχῳ δὲ τῷ ἡγεμόνι τῶν πολεμίων καὶ τοῖς σὺν ἐκείνῳ βουλεύσασι τὴν ἀπόστασιν ὡς πολεμίοις χρήσεσθαι, ἐκέλευσέ τε αὐτοῖς ἄγειν τοὺς ἄνδρας δεδεμένους. ὑπομενόντων δὲ ταῦτα τῶν Αἰκανῶν, τελευταῖον αὐτοῖς ἐκεῖνο προσέταξεν· ἐπειδὴ Τύσκλον πόλιν Ῥωμαίων σύμμαχον ἐξηνδραποδίσαντο καὶ διήρπασαν οὐδὲν ὑπὸ Τυσκλάνων παθόντες κακόν, ἀντιπαρασχεῖν αὐτῷ πόλιν τῶν σφετέρων, Κορβιῶνα, τὰ
055 *ὅμοια διαθεῖναι. ταύτας λαβόντες τὰς ἀποκρίσεις οἱ πρέσβεις τῶν Αἰκανῶν ἀπῆεσαν, καὶ μετ' οὐ πολὺ παρῆσαν ἄγοντες τὸν Γράκχον καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ δεδεμένους· αὐτοὶ δὲ τὰ ὅπλα θέντες ἐξέλιπον τὴν παρεμβολὴν διαπορευόμενοι καθάπερ ὁ στρατηγὸς ἐκέλευσε διὰ τοῦ Ῥωμαίων χάρακος καθ' ἕνα ὑπὸ ζυγόν, καὶ τὴν Κορβιῶνα κατὰ τὰς ὁμολογίας παρέδοσαν, τὰ ἐλεύθερα σώματα μόνον ἐξελθεῖν αἰτησάμενοι, ὑπὲρ ὧν διήλλαξαν τοὺς Τυσκλάνων αἰχμαλώτους.*

XXV. *Παραλαβὼν δὲ ὁ Κοίντιος τὴν πόλιν, τὰ μὲν ἐπιφανέστατα τῶν λαφύρων εἰς Ῥώμην ἐκέλευσε φέρειν, τὰ δ' ἄλλα πάντα διελέσθαι κατὰ λόχους ἐπέτρεψε τοῖς τε σὺν αὐτῷ παραγενομένοις στρατιώταις καὶ τοῖς ἅμα Κοιντίῳ τῷ ταμίᾳ προαποσταλεῖσι. τοῖς δὲ μετὰ Μηνυκίου τοῦ ὑπάτου κατακλεισθεῖσιν ἐν τῷ χάρακι μεγάλην ἔφη δεδωκέναι δωρεὰν τὰ σώματα αὐτῶν ἐκ θανάτου ῥυσάμενος. ταῦτα πράξας καὶ τὸν Μηνύκιον ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν ἀναγκάσας*
056 *ἀνέστρεψεν εἰς τὴν Ῥώμην καὶ κατήγαγε λαμπρότατον ἁπάντων ἡγεμόνων θρίαμβον, ἐν ἡμέραις ἑκκαίδεκα ταῖς πάσαις, ἀφ' ἧς παρέλαβε τὴν ἀρχήν, στρατόπεδόν τε σώσας φίλιον καὶ πολεμίων δύναμιν ἀκμάζουσαν καθελὼν πόλιν τε αὐτῶν πορθήσας καὶ*

φρουρὰν αὐτῆς ὑπολιπὼν τόν τε ἡγεμόνα τοῦ πολέμου καὶ τοὺς ἄλλους ἐπιφανεῖς ἄνδρας ἁλύσει δεδεμένους ἄγων. καὶ ὃ μάλιστα πάντων αὐτοῦ θαυμάζειν ἄξιον, ὅτι τὴν τοσαύτην ἀρχὴν εἰς ἑξάμηνον εἰληφὼς οὐκ ἐχρήσατο παντὶ τῷ χρόνῳ, ἀλλὰ συναγαγὼν τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν καὶ περὶ τῶν πεπραγμένων λόγον ἀποδοὺς ἐξωμόσατο τὴν ἀρχήν, τῆς τε βουλῆς δεομένης γῆν τε ὅσην ἐβούλετο λαβεῖν ἐκ τῆς δορικτήτου καὶ ἀνδράποδα καὶ χρήματα ἐκ τῶν λαφύρων, ἐπανορθῶσαι [τε] τὴν πενίαν πλούτῳ δικαίῳ, ὃν ἀπὸ πολεμίων κάλλιστον ἐκτήσατο τοῖς ἰδίοις πόνοις, οὐκ ἠξίωσε, φίλων τε καὶ συγγενῶν δωρεὰς προσφερόντων μεγάλας καὶ ἀντὶ παντὸς ἀγαθοῦ 205 τιθεμένων ἐκεῖνον τὸν ἄνδρα εὖ ποιεῖν, ἐπαινέσας αὐτοὺς τῆς προθυμίας οὐδὲν τῶν διδομένων ἔλαβεν, ἀλλ' ἀπῆλθε πάλιν εἰς τὸ μικρὸν ἐκεῖνο χωρίον, καὶ τὸν αὐτουργὸν αὐτοῦ ἀντὶ τοῦ βασιλικοῦ μετείληφε βίον, μεῖζον φρονῶν ἐπὶ πενίᾳ ἢ ἄλλοι ἐπὶ πλούτῳ. μετ' οὐ πολὺν δὲ χρόνον καὶ Ναύτιος ἅτερος τῶν ὑπάτων νικήσας Σαβίνους ἐκ παρατάξεως καὶ τῆς χώρας αὐτῶν πολλὴν καταδραμὼν ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὰς δυνάμεις.

XXVI. Μετὰ δὲ τούτους ὀλυμπιὰς μὲν ἦν ὀγδοηκοστὴ καὶ πρώτη, ἣν ἐνίκα στάδιον Πολύμναστος Κυρηναῖος, Ἀθήνησι δὲ ἄρχων Καλλίας, ἐφ' οὗ τὴν ὕπατον ἀρχὴν ἐν Ῥώμῃ παρέλαβον Γάιος Ὁράτιος καὶ Κόιντος Μηνύκιος. ἐπὶ τούτων Σαβῖνοι πάλιν στρατεύσαντες ἐπὶ Ῥωμαίους πολλὴν τῆς χώρας αὐτῶν ἐδῄωσαν, καὶ ἧκον οἱ φυγόντες ἐκ τῶν ἀγρῶν ἀθρόοι, κρατεῖσθαι πάντα ὑπ' αὐτῶν τὰ μεταξὺ Κρουστομερείας τε καὶ Φιδήνης λέγοντες. Αἰκανοί τε οἱ νεωστὶ καταπολεμηθέντες ἐν τοῖς ὅπλοις αὖθις ἦσαν· καὶ 205

οἱ μὲν ἀκμαιότατοι αὐτῶν νυκτὸς ἐλάσαντες ἐπὶ Κορβιῶνα πόλιν, ἣν [ἐν] τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ Ῥωμαίοις παρέδοσαν, τήν τε φρουρὰν τὴν ἐν αὐτῇ κοιμωμένην εὑρόντες κατέσφαξαν πλὴν ὀλίγων, οἳ ἔτυχον ἀφυστεροῦντες.... οἱ δὲ λοιποὶ μεγάλῃ χειρὶ στρατεύσαντες ἐπὶ πόλιν Ὀρτῶνα τοῦ Λατίνων ἔθνους ἐξ ἐφόδου καταλαμβάνονται, καὶ ὅσα Ῥωμαίους οὐχ οἷοί τε ἦσαν ἐργάσασθαι, ταῦτα δι' ὀργὴν τοὺς συμμάχους αὐτῶν διέθεσαν. τοὺς μὲν γὰρ ἐν ἥβῃ πάντας, πλὴν εἴ τινες διέφυγον εὐθὺς ἁλισκομένης τῆς πόλεως, ἀπέκτειναν, γυναῖκας δὲ καὶ παῖδας αὐτῶν καὶ τὰ γηραιὰ τῶν σωμάτων ἠνδραποδίσαντο, καὶ τῶν χρημάτων ὅσα δύναμις ἦν αὐτοῖς φέρειν συσκευασάμενοι κατὰ σπουδήν, πρὶν ἅπαντας ἐπιβοηθῆσαι
059 Λατίνους, ἀνέστρεψαν. τούτων δὲ ἅμα προσαγγελλομένων ὑπό τε Λατίνων καὶ τῶν ἐκ τῆς φρουρᾶς διασωθέντων, ἡ μὲν βουλὴ στρατιὰν ἐκπέμπειν ἐψηφίσατο καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους πορεύεσθαι· οἱ δὲ περὶ τὸν Οὐεργίνιον δήμαρχοι πέμπτον ἔτος ἐπὶ τῆς αὐτῆς ὄντες ἐξουσίας ἐκώλυον, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς πρότερον ἐποίουν ἔτεσιν, ἐνιστάμενοι ταῖς στρατολογίαις τῶν ὑπάτων, τὸν ἐντὸς τείχους πρῶτον ἀξιοῦντες καταλυθῆναι πόλεμον ἀποδοθείσης τῷ δήμῳ τῆς περὶ τοῦ νόμου διαγνώσεως, ὃν ὑπὲρ τῆς ἰσηγορίας εἰσέφερον, ὅ τε δῆμος αὐτοῖς συνελάμβανε πολλοὺς κατὰ τῆς βουλῆς καὶ ἐπιφθόνους διεξιοῦσι λόγους. ἑλκομένου δὲ τοῦ χρόνου, καὶ οὔτε τῶν ὑπάτων ὑπομενόντων προβουλεῦσαί τε καὶ εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν τὸν νόμον, οὔτε τῶν δημάρχων συγχωρῆσαι βουλομένων τὴν καταγραφὴν καὶ τὴν ἔξοδον τῆς στρατιᾶς γενέσθαι, λόγων τε πολλῶν καὶ κατη-
060 γοριῶν ἃς ἐποιοῦντο κατ' ἀλλήλων ἔν τε ταῖς ἐκκλη-

σίαις καὶ ἐπὶ τῆς βουλῆς μάτην ἀναλισκομένων, ἑτέρα τις εἰσαχθεῖσα ὑπὸ τῶν δημάρχων ἐπὶ τῇ βουλῇ πολιτεία καὶ παρακρουσαμένη τὸ συνέδριον, τὴν μὲν τότε κατέχουσαν στάσιν ἐπράυνεν, ἑτέρων δὲ πολλῶν καὶ μεγάλων ἐγένετο πλεονεκτημάτων αἰτία τῷ δήμῳ. διηγήσομαι δὲ καὶ ταύτην τὴν δυναστείαν ὃν τρόπον ὁ δῆμος ἔλαβε.

XXVII. Φθειρομένης καὶ διαρπαζομένης τῆς τε Ῥωμαίων καὶ τῶν συμμάχων γῆς, καὶ τῶν πολεμίων ὡς δι᾽ ἐρημίας ἐλαυνόντων κατ᾽ ἐλπίδα τοῦ μηδεμίαν ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐξελεύσεσθαι δύναμιν διὰ τὴν κατέχουσαν ἐν τῇ πόλει στάσιν, οἱ μὲν ὕπατοι τὴν βουλὴν συνήγαγον, ὡς περὶ τῶν ὅλων ἔσχατον τοῦτο βουλευόμενοι. ῥηθέντων δὲ πολλῶν λόγων, πρῶτος ἐρωτηθεὶς γνώμην Λεύκιος Κοίντιος, ὁ τῷ παρελθόντι γενόμενος ἔτει δικτάτωρ, ἀνὴρ οὐ μόνον τὰ πολέμια δεινότατος τῶν καθ᾽ ἑαυτόν, ἀλλὰ καὶ τὰ πολιτικὰ δοκῶν εἶναι φρονιμώτατος, γνώμην ἀπεφήνατο † .... ἐν ᾗ, μάλιστα μὲν πείθειν τούς τε δημάρχους καὶ τοὺς 2061 ἄλλους πολίτας, τὴν μὲν ὑπὲρ τοῦ νόμου διάγνωσιν οὐδὲν ἐν τῷ παρόντι κατεπείγουσαν εἰς ἑτέρους ἀναβαλέσθαι καιροὺς ἐπιτηδειοτέρους, τὸν δ᾽ ἐν χερσὶν ὄντα καὶ ὅσον οὔπω τῇ πόλει πλησιάζοντα πόλεμον ἄρασθαι πάσῃ προθυμίᾳ, καὶ μὴ περιιδεῖν τὴν μετὰ πολλῶν κτηθεῖσαν ἡγεμονίαν πόνων αἰσχρῶς καὶ ἀνάνδρως ἀπολομένην. ἐὰν δὲ μὴ πείθηται ὁ δῆμος, τοὺς πατρικίους ἅμα τοῖς πελάταις καθοπλισαμένους, τῶν τ᾽ ἄλλων πολιτῶν παραλαβόντας οἷς ἦν ἑκοῦσι συνάρασθαι τοῦ καλλίστου ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνος, χωρεῖν προθύμως ἐπὶ τὸν πόλεμον, θεοὺς ὅσοι φυλάττουσι τὴν Ῥωμαίων πόλιν ἡγεμόνας τῆς ἐξόδου ποιησαμένους. συμβήσεσθαι γὰρ αὐτοῖς δυεῖν καλῶν

ἔργων καὶ δικαίων θάτερον, ἢ νίκην ἐξενέγκασθαι πασῶν ὧν αὐτοί ποτε ἢ οἱ πατέρες ἐξηνέγκαντο λαμπροτάτην, ἢ περὶ τῶν ἐν αὐτῇ καλῶν εὐψύχως ἀγωνιζομένοις ἀποθανεῖν. ταύτης μέντοι τῆς καλῆς πείρας οὔτ᾽ αὐτὸς ἀπολείψεσθαι ἔφη, ἀλλ᾽ ἐν ἴσῳ τοῖς κράτιστα ἐρρωμένοις παρὼν ἀγωνιεῖσθαι, οὔτε τῶν ἄλλων τινὰ πρεσβυτέρων οἷς ἐστιν ἐλευθερίας τε καὶ δόξης ἀγαθῆς λόγος.

XXVIII. Ὡς δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασι ταῦτ᾽ ἐδόκει, καὶ οὐθεὶς ἦν ὁ τἀναντία ἐρῶν, οἱ μὲν ὕπατοι τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν συνεκάλουν. συνελθόντος δ᾽ ὡς ἐπὶ καινοῖς ἀκούσμασι παντὸς τοῦ κατὰ τὴν πόλιν ὄχλου, παρελθὼν ἅτερος τῶν ὑπάτων Γάιος Ὁράτιος ἐπειρᾶτο πείθειν τοὺς δημοτικοὺς ἑκόντας ὑπομεῖναι καὶ ταύτην τὴν στρατείαν. ἀντιλεγόντων δὲ τῶν δημάρχων καὶ τοῦ δήμου προσέχοντος αὐτοῖς τὸν νοῦν, παρελθὼν πάλιν ὁ ὕπατος εἶπε· Καλόν, ὦ Οὐεργίνιε, καὶ θαυμαστὸν ἔργον ἐξειργάσασθε διασπάσαντες ἀπὸ τῆς βουλῆς τὸν δῆμον· καὶ τὸ μὲν ἐφ᾽ ὑμῖν εἶναι μέρος πάντ᾽ ἀπολωλέκαμεν, ὅσα παρὰ τῶν προγόνων παραλαβόντες ἢ τοῖς ἑαυτῶν πόνοις κτησάμενοι κατέσχομεν, τἀγαθά. οὐ μὴν ἡμεῖς γ᾽ ἀκο-
3 ντὶ μεθησόμεθα αὐτῶν, ἀλλ᾽ ἀναλαβόντες τὰ ὅπλα μετὰ τῶν βουλομένων σῴζεσθαι τὴν πατρίδα χωρήσομεν ἐπὶ τὸν ἀγῶνα, τὰς ἀγαθὰς προβαλλόμενοι τῶν ἔργων ἐλπίδας· καὶ εἴ τις ἄρα θεὸς ἐπισκοπεῖ τοὺς καλοὺς καὶ δικαίους ἀγῶνας, καὶ ἡ τὴν πόλιν τήνδε αὔξουσα ἐκ πολλοῦ [χρόνου] τύχη εἰ μήπω προλέλοιπεν αὐτήν, κρείττους τῶν ἐχθρῶν ἐσόμεθα· εἰ δέ τις ἄρα ἐνέστηκε δαίμων καὶ ἐναντιοῦται τῇ σωτηρίᾳ τῆς πόλεως, οὔτοι τό γε ἐν ἡμῖν εὔνουν καὶ πρόθυμον ἀπολεῖται, ἀλλὰ τὸν ἁπάντων κράτιστον θάνατον

αἱρησόμεθα περὶ τῆς πατρίδος. ὑμεῖς δὲ αὐτοῦ μένοντες οἰκουρεῖτε ἅμα ταῖς γυναιξίν, ὦ καλοὶ καὶ γενναῖοι προστάται τῆς πόλεως, ἐγκαταλιπόντες μᾶλλον δὲ προδόντες ἡμᾶς, οἷς οὔτ' ἂν νικήσωμεν ἡμεῖς ὁ βίος ἔσται καλός, οὔτ' ἂν ἄλλως χωρήσῃ τὰ καθ' ἡμᾶς ἀσφαλής· εἰ μὴ ἄρα ἐκείνῃ τῇ ψυχρᾷ ἐλπίδι 20
ἐπαίρεσθε, ὡς διαφθαρέντων τῶν πατρικίων ὑμᾶς ἐάσουσιν οἱ πολέμιοι ταύτην ὑπολογιζόμενοι τὴν εὐεργεσίαν, καὶ συγχωρήσουσιν ὑμῖν τὴν πατρίδα καὶ τὴν ἐλευθερίαν καὶ τὴν ἡγεμονίαν καὶ πάντα τἆλλα ἀγαθά, ὅσα νῦν ἔχετε, καρποῦσθαι, ὧν ὑμεῖς ὅτε τὰ ἄριστα ἐφρονεῖτε πολλὴν μὲν γῆν ἀπετέμεσθε, πολλὰς δὲ πόλεις ἐξανδραποδισάμενοι κατεσκάψατε, πολλὰ δὲ καὶ μεγάλα καὶ οὐδ' ὑπὸ τοῦ παντὸς αἰῶνος ἀφανισθησόμενα τρόπαια καὶ μνημεῖα τῆς ἔχθρας ἀνεστήσατε. ἀλλὰ τί τῷ δήμῳ ταῦτ' ἐπιτιμῶ, ὃς οὐδέποτε πονηρὸς ἑκὼν ἐγένετο, μᾶλλον ἢ οὐχ ὑμῖν, ὦ Οὐεργίνιε, τοῖς τὰ καλὰ ταῦτα πολιτευομένοις; ἡμῖν μὲν οὖν, οἷς ἀνάγκη μηδὲν ταπεινὸν φρονεῖν, δέδοκταί τε καὶ οὐθὲν ἔσται τὸ κωλῦσον ἄρασθαι τὸν ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνα· ὑμῖν δὲ τοῖς ἐγκαταλείπουσι καὶ προδιδοῦσι τὸ κοινὸν ἥξει δίκη τιμωρὸς οὐ μεμπτὴ παρὰ θεῶν, ἐὰν ἄρα διαφύγητε τὴν παρ' ἀνθρώπων κόλασιν. ἀλλ' οὐδὲ ταύτην διαφεύξεσθε· 20
καὶ μή με δεδίττεσθαι ὑπολάβητε, ἀλλ' εὖ ἴστε, ὅτι οἱ καταλειφθέντες ἡμῶν ἐνθάδε φύλακες τῆς πόλεως, ἐὰν κρείττω τὰ τῶν ἐχθρῶν γένηται, φρονήσουσιν ἃ προσῆκεν αὐτοῖς φρονεῖν. οὐ γὰρ ἤδη βαρβάροις μέν τισι ἁλισκομένοις ὑπὸ τῶν πολεμίων εἰς νοῦν ἦλθε μήτε γυναικῶν αὐτοῖς παραχωρῆσαι μήτε παίδων μήτε πόλεων, ἀλλὰ τὰς μὲν ἐμπρῆσαι, τὰς δὲ κατασφάξαι· Ῥωμαίοις δ' ἄρα, οἷς ἑτέρων ἄρχειν

πάτριόν ἐστιν, οὐ παραστήσεται ταῦτα περὶ ἑαυτῶν
φρονεῖν; οὐχ οὕτως ἀγεννεῖς ἔσονται, ἀλλ' ἀφ' ὑμῶν
τῶν ἐχθίστων ἀρξάμενοι, τότε χωρήσουσι πρὸς τὰ
φίλια. πρὸς ταῦτα ὁρῶντες ἐκκλησιάζετε καὶ νόμους
εἰσφέρετε καινούς.

XXVIIII. Ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια εἰπών,
παρεστήσατο τοὺς πρεσβυτάτους τῶν πατρικίων κλαί-
οντας, οὓς ἰδόντες πολλοὶ τῶν δημοτικῶν οὐδ' αὐτοὶ
κατέχειν τὰ δάκρυα ἐδύναντο. γενομένης δὲ πολλῆς
66 συμπαθείας πρός τε τὰς ἡλικίας τῶν ἀνδρῶν καὶ
πρὸς τὰς ἀξίας, μικρὸν ἐπισχὼν ὁ ὕπατος· Οὐκ
αἰσχύνεσθε, ἔφησεν, ὦ πολῖται, οὐδὲ κατὰ γῆς δύε-
σθε, εἰ οἵδε οἱ γέροντες ὑπὲρ ὑμῶν τῶν νέων τὰ
ὅπλα ἀναλήψονται, ἀλλ' ὑπομενεῖτε ἀπολειφθῆναι
τούτων ἡγουμένων, οὓς ἀεὶ πατέρας ἐκαλεῖτε; ὦ σχέ-
τλιοι ὑμεῖς καὶ οὐδὲ πολῖται ταύτης ἄξιοι λέγεσθαι
τῆς γῆς, ἣν ἔκτισαν οἱ τοὺς πατέρας ἐπὶ τῶν ὤμων
ἐνέγκαντες, οἷς καὶ δι' ὅπλων καὶ διὰ πυρὸς ὁδοὺς
ἀσφαλεῖς θεοὶ παρέσχον. Ὡς δὲ κατέμαθεν ὁ Οὐερ-
γίνιος ἀγόμενον τὸν δῆμον ὑπὸ τῶν λόγων, δεδοικὼς
μὴ παρὰ τὴν ἑαυτοῦ γνώμην κοινωνεῖν ὑπομείνῃ τοῦ
πολέμου, παρελθὼν εἶπεν· Ἡμεῖς οὔτ' ἐγκαταλεί-
67 πομεν οὔτε προδίδομεν ὑμᾶς, ὦ πατέρες, οὐδ' ἂν
ἀπολειφθείημεν ὑμῶν, ὥσπερ οὐδὲ πρότερον ἠξιώ-
σαμεν οὐδεμιᾶς ἀπολειφθῆναι στρατείας, ἀλλὰ καὶ
ζῆν αἱρούμεθα σὺν ὑμῖν καὶ πάσχειν, ὅ τι ἂν τῷ
δαίμονι δοκῇ μεθ' ὑμῶν. πρόθυμοι δ' ἐν παντὶ
καιρῷ περὶ ὑμᾶς γεγονότες ἠξιοῦμεν μετρίας παρ'
ὑμῶν τυχεῖν χάριτος, ὥσπερ τῶν κοινῶν κινδύνων
ἰσομοιροῦμεν ὑμῖν, οὕτως καὶ τῶν δικαίων τὸ ἴσον
ἔχειν, νόμους καταστησάμενοι φύλακας τῆς ἐλευθε-
ρίας, οἷς ἅπαντες ἀεὶ χρησόμεθα. εἰ δὲ προσίσταται

τοῦθ' ὑμῖν, καὶ οὐκ ἀξιοῦτε τοῖς ἑαυτῶν πολίταις ταύτην συγχωρῆσαι τὴν χάριν, ἀλλὰ θανάτου τιμᾶσθε τὸ μεταδοῦναι τῷ δήμῳ τῆς ἰσηγορίας, οὐκέτι φιλονεικοῦμεν ὑμῖν· αἰτησόμεθα δ' ἑτέραν παρ' ὑμῶν χάριν, ἧς τυχόντες ἴσως ἂν οὐδὲ καινῶν ἔτι δεηθείημεν νόμων. εἰσέρχεται δ' ἡμᾶς εὐλάβεια, μή ποτε οὐδὲ ταύτης τύχωμεν, ἐξ ἧς τῇ βουλῇ μὲν οὐδὲν ἔσται βλάβος, τῷ δὲ δήμῳ τιμή τις ὑπάρξει καὶ φιλανθρωπία.

XXX. Εἰπόντος δὲ τοῦ ὑπάτου, ὅτι τοῦτο τὸ πολίτευμα τῇ βουλῇ συγχωροῦντες οὐθενὸς ἄλλου ἁμαρτήσονται τῶν μετρίων, καὶ κελεύοντος λέγειν ὅτου δέονται, ὀλίγα διαλεχθεὶς τοῖς συνάρχουσιν ὁ Οὐεργίνιος, ἐπὶ τῆς βουλῆς ἔφησεν ἐρεῖν. καὶ μετὰ ταῦτα συναγαγόντων τὸ συνέδριον τῶν ὑπάτων, παρελθὼν καὶ τὰ δίκαια τοῦ δήμου πρὸς τὴν βουλὴν ἅπαντα εἰσενεγκάμενος, ᾐτήσατο διπλασιασθῆναι τὴν ἀρχὴν τὴν προισταμένην τοῦ δήμου, καὶ ἀντὶ τῶν πέντε δημάρχων δέκα εἰς ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδείκνυσθαι. τοῦτο οἱ μὲν ἄλλοι βλάβην οὐδεμίαν ᾤοντο τῷ κοινῷ φέρειν, ἀλλὰ διδόναι καὶ μὴ ἀντιπράττειν παρῄνουν, ἄρχοντος τῆς γνώμης Λευκίου Κοιντίου, τοῦ τότε μέγιστον ἔχοντος ἐν τῇ βουλῇ κράτος. εἷς δὲ μόνος ἀντέλεγε Γάιος Κλαύδιος, υἱὸς Ἀππίου Κλαυδίου, τοῦ παρὰ πάντα τὸν χρόνον τοῖς εἰσηγήμασι τῶν δημοτικῶν, εἴ τινα μὴ νόμιμα ἦν, ἐναντιωθέντος, διαδεδεγμένος τὰ πολιτεύματα τοῦ πατρός, καὶ ὅτ' αὐτὸς εἶχε τὴν ὕπατον ἀρχὴν κωλύσας δοθῆναι τοῖς δημάρχοις τὴν κατὰ τῶν ἱππέων τῶν ἐπὶ τῇ συνωμοσίᾳ διαβαλλομένων ἐξέτασιν, καὶ μακρὸν διεξελθὼν λόγον ἐδίδασκεν, ὅτι μετριώτερος μὲν ὁ δῆμος οὐδὲν οὐδὲ χρηστότερος ἔσται διπλασιασθείσης

αὐτῷ τῆς ἀρχῆς, ἀνοητότερος δὲ καὶ βαρύτερος. οὐ γὰρ ἐπὶ ῥητοῖς τισι παραλήψεσθαι τὴν ἀρχὴν τοὺς ὕστερον ἀποδειχθησομένους, ὥστε μένειν ἐπὶ τοῖς καθεστηκόσιν, ἀλλὰ καὶ τὸν περὶ τῆς κληρουχίας αὖθις προθήσειν λόγον καὶ τὸν ὑπὲρ τῆς ἰσοτιμίας, καὶ πάντας ἑξῆς ζητήσειν, ὅ τι λέγοντες ἢ πράττοντες τὸ μὲν τοῦ δήμου κράτος αὐξήσουσι, τὰς δὲ τῆς βουλῆς τιμὰς καταλύσουσι. καὶ σφόδρα ἐκίνησε τοὺς πολλοὺς ὁ λόγος. ἔπειτα μετήγαγεν αὐτοὺς ὁ Κοίντιος διδά-
70 σκων, ὅτι πρὸς τῆς βουλῆς ἐστι τὸ πολλοὺς εἶναι τοῦ δήμου προστάτας. ἧττον γὰρ ὁμονοήσειν τοὺς πλείους τῶν ἐλαττόνων, μίαν δὲ βοήθειαν εἶναι τοῖς κοινοῖς, ἣν Ἄππιον Κλαύδιον τὸν Γαΐου πατέρα πρῶτον ἰδεῖν, ἐὰν στασιάζῃ τὸ ἀρχεῖον καὶ μὴ πᾶσι τὸ αὐτὸ δοκῇ. ἐδόκει τε δὴ ταῦτα καὶ γίνεται δόγμα βουλῆς· ἐξεῖναι τῷ δήμῳ δέκα δημάρχους καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδεικνύναι, τῶν δὲ τότε ὄντων ἐν ἀρχῇ μηθένα. τοῦτο τὸ προβούλευμα οἱ περὶ τὸν Οὐεργίνιον λαβόντες ἐξήνεγκαν, καὶ κυρώσαντες τὸν ἐπ' αὐτῷ γραφέντα νόμον δέκα δημάρχους εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ἀπέδειξαν. παυσαμένης δὲ τῆς στάσεως καταγράψαντες τὰς δυνάμεις οἱ ὕπατοι διεκληρώσαντο
71 τὰς ἐξόδους· Μηνυκίῳ μὲν οὖν ὁ κατὰ Σαβίνων πόλεμος ἐδόθη, Ὁρατίῳ δὲ ὁ κατ' Αἰκανῶν, καὶ κατὰ σπουδὴν ἐξῄεσαν ἀμφότεροι. Σαβῖνοι μὲν οὖν τὰς πόλεις διὰ φυλακῆς ἔχοντες ὑπερεῖδον ἀγομένων τε καὶ φερομένων ἁπάντων τῶν κατὰ τοὺς ἀγρούς· Αἰκανοὶ δὲ τὴν ἐναντιωσομένην Ῥωμαίοις δύναμιν ἀπέστειλαν. ἀγωνισάμενοι δὲ λαμπρῶς οὐχ οἷοί τε ἐγένοντο τὴν Ῥωμαίων ὑπερβαλέσθαι δύναμιν, ἀλλ' ἠναγκάσθησαν εἰς τὰς πόλεις ἀπελθεῖν ἀποβαλόντες τὸ πολίχνιον, ὑπὲρ οὗ τὸν ἀγῶνα ἐποιοῦντο. Ὁράτιος

δὲ τρεψάμενος τοὺς πολεμίους καὶ πολλὰ τῆς χώρας αὐτῶν κακώσας τοῦ τε Κορβιῶνος τὰ τείχη κατασπάσας καὶ τὰς οἰκήσεις ἐκ θεμελίων ἀνελὼν ἀπῆγε τὴν δύναμιν ἐπ' οἴκου.

XXXI. Τῷ δ' ἑξῆς ἔτει Μάρκου Οὐαλερίου καὶ Σπορίου Οὐεργινίου τὴν ὑπατείαν ἐχόντων, στρατιὰ μὲν ὑπερόριος οὐδεμία ἐξῆλθε Ῥωμαίων, πολιτικὰ δέ τινα προσκρούσματα τοῖς δημάρχοις πρὸς τοὺς ὑπάτους συνέστη πάλιν, ἐξ ὧν πλέον ἔσχον οἱ δήμαρχοι παρασπάσαντές τι τῆς ὑπατικῆς δυναστείας. τὸν μὲν γὰρ ἔμπροσθεν χρόνον ἐκκλησίας μόνον ἦσαν οἱ δήμαρχοι κύριοι, βουλὴν δὲ συνάγειν ἢ γνώμην ἀγορεύειν οὐκ ἐξῆν αὐτοῖς, ἀλλ' ἦν τῶν ὑπάτων τοῦτο 20
τὸ γέρας. οἱ δὲ τότε δήμαρχοι πρῶτοι συγκαλεῖν ἐπεβάλοντο τὴν βουλήν, Ἰκιλλίου τὴν πεῖραν εἰσηγησαμένου, ὃς ἡγεῖτο μὲν τοῦ ἀρχείου, δραστήριος δέ τις ἦν ἀνὴρ καὶ ὡς Ῥωμαῖος εἰπεῖν οὐκ ἀδύνατος. εἰσέφερε γάρ τι καὶ οὗτος πολίτευμα καινόν, ἀξιῶν ἀπομερισθῆναι τοῖς δημόταις τόπον εἰς οἰκιῶν κατασκευὰς τὸν καλούμενον Αὐεντῖνον. ἔστι δὲ λόφος ὑψηλὸς ἐπιεικῶς, οὐκ ἐλάττων ἢ δώδεκα σταδίων τὴν περίμετρον, ἐμπεριεχόμενος τῇ πόλει, ὃς οὐχ ἅπας τότε ᾠκεῖτο, ἀλλ' ἦν δημόσιός τε καὶ ὕλης ἀνάπλεως. τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰσάγων ὁ δήμαρχος τοῖς τότε ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ προσῄει δεόμενος τὸν ἐπ' αὐτῷ γραφέντα νόμον προβουλεῦσαί τε καὶ εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν. ἀναβαλλομένων δὲ καὶ παρελκόντων τῶν ὑπάτων τὸν χρόνον, πέμψας τὸν ὑπηρέτην ὡς αὐ- 20
τούς, ἐκέλευσεν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ἀκολουθεῖν καὶ τὴν βουλὴν συγκαλεῖν. ἐπεὶ δὲ τῶν ῥαβδούχων τις ἀπήλασε, τὸν ὑπηρέτην κελευσθεὶς ὑπὸ τῶν ὑπάτων, ἀγανακτήσας ὁ Ἰκίλλιος καὶ οἱ συνάρχοντες αὐτοῦ,

συνέλαβον τὸν ῥαβδοῦχον καὶ ἀπῆγον, ὡς ῥίψοντες κατὰ τῆς πέτρας. οἱ δὲ ὕπατοι βιάσασθαι μὲν ἢ τὸν ἀγόμενον ἀφελέσθαι, καίτοι δεινὰ δοκοῦντες ὑβρίσθαι, ἀδύνατοι ἦσαν, ἐπεκαλοῦντο δὲ τὴν ἐκ τῶν ἄλλων δημάρχων βοήθειαν. οὐθὲν γὰρ τῶν πραττομένων ὑπὸ τῆς ἀρχῆς ἐκείνης ἐπισχεῖν ἢ κωλῦσαι τῶν ἄλλων τινὶ ἔξεστιν, ἀλλ' ἑτέρου δημάρχου τοῦτ' ἔστι τὸ κράτος. τοῖς δ' ἄρα πᾶσιν ἦν ταῦτα κατ' ἀρχὰς δεδογμένα, μήτ' εἰσηγήσασθαί τινα καινὸν πολίτευμα μηθὲν ἐφ' ἑαυτῷ ἐπιβαλόμενον, ἐὰν μὴ πᾶσι τὸ αὐτὸ δοκῇ, μήτε ἐναντιωθῆναί τινα τοῖς πραττομένοις, [ἀλλ'] ὅπερ ἂν αἱ πλείους γνῶμαι δοκι-
74 μάσωσι [τοῦτ' εἶναι κύριον], καὶ περὶ τούτων εὐθὺς ἅμα τῷ παραλαβεῖν τὴν ἀρχὴν ἱερὰ θύσαντες ὅρκους ἔδοσαν ἀλλήλοις· οὕτως οἰόμενοι μάλιστα τὸ τῆς δημαρχίας ἀκατάλυτον ἔσεσθαι κράτος, ἐὰν τὸ στασιάζον ἐξ αὐτῆς ἀναιρεθῇ. τοῦτο δὴ φυλάττοντες τὸ συνωμόσιον εἶπον ἀπάγεσθαι τὸν φύλακα τῆς ἀρχῆς τῶν ὑπάτων, κοινὴν ἁπάντων εἶναι λέγοντες τὴν γνώμην, οὐ μὴν διέμειναν γ' ἐπὶ τῆς ὀργῆς, ἀλλὰ τοῖς πρεσβυτάτοις τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου παραιτουμένοις τὸν ἄνδρα ἀφῆκαν, τόν τε φθόνον ὑφορώμενοι τοῦ πράγματος, ὅτι πρῶτοι ἔμελλον θανάτῳ ζημιῶσαι [τὸν] ἄνδρα τὸ κελευσθὲν ὑπὸ τῶν ἀρχόντων ποιήσαντα, καὶ δεδοικότες, μὴ ἀπὸ ταύτης τῆς προφάσεως εἰς ἀπόνοιαν ἀναγκασθῶσιν οἱ πατρίκιοι τραπέσθαι.

XXXII. Μετὰ τοῦτο τὸ ἔργον συναχθείσης τῆς βουλῆς, οἱ μὲν ὕπατοι κατηγορίαν πολλὴν τῶν δημάρχων ἐποιήσαντο· παραλαβὼν δὲ τὸν λόγον ὁ Ἰκίλ-
75 λιος περί τε τῆς εἰς τὸν ὑπηρέτην ὀργῆς ἀπελογεῖτο, τοὺς ἱεροὺς προφερόμενος νόμους, καθ' οὓς οὔτε

ἄρχοντι οὔτ᾽ ἰδιώτῃ συνεχωρεῖτο πράττειν οὐδὲν ἐναντίον δημάρχῳ, καὶ περὶ τοῦ συγκαλεῖν τὴν βουλὴν ἐδίδασκεν, ὡς οὐθὲν εἴη πεποιηκὼς ἄτοπον, πολλοὺς καὶ παντοδαποὺς εἰς τοῦτο παρασκευασάμενος λόγους. ὡς δ᾽ ἀπελύσατο ταύτας τὰς κατηγορίας, τὸν ὑπὲρ τοῦ λόφου νόμον εἰσέφερεν. ἦν δὲ τοιόσδε· Ὅσα μὲν ἰδιῶταί τινες εἶχον ἐκ δικαίου κτησάμενοι, ταῦτα τοὺς κυρίους κατέχειν· ὅσα δὲ βιασάμενοί τινες ἢ κλοπῇ λαβόντες ᾠκοδομήσαντο, κομισαμένους τὰς δαπάνας ἃς ἂν οἱ διαιτηταὶ γνῶσι τῷ δήμῳ παραδιδόναι· τὰ δὲ ἄλλα, ὅσα [ἂν] ἦν δημόσια, χωρὶς ὠνῆς τὸν δῆμον παραλαβόντα διελέσθαι. ἐδίδασκέ τε, ὅτι τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰς πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα συνοίσει τῇ πόλει, μάλιστα δὲ εἰς τὸ μὴ στασιάζειν ἔτι περὶ τῆς δημοσίας χώρας τοὺς πένητας, ἣν οἱ πατρίκιοι κατεῖχον. ἀγαπήσειν γὰρ αὐτοὺς τῆς πόλεως λαχόντας μέρος, ἐπειδὴ τῆς χώρας οὐκ ἔξεστι διὰ τοὺς ἐσφετερισμένους αὐτὴν πολλοὺς ὄντας καὶ δυνατούς. 20 τοιούτων ῥηθέντων ὑπ᾽ αὐτοῦ λόγων, ὁ μὲν ἀντιλέγων Γάιος Κλαύδιος ἦν μόνος, οἱ δὲ συναγορεύοντες πολλοί, καὶ ἔδοξε διδόναι τῷ δήμῳ τὸν τόπον. μετὰ τοῦτο ἱεροφαντῶν τε παρόντων καὶ οἰωνοσκόπων καὶ ἱεροποιῶν δυεῖν, καὶ ποιησαμένων τὰς νομίμους εὐχάς τε καὶ ἀράς, ἐν τῇ λοχίτιδι ἐκκλησίᾳ συναχθείσῃ ὑπὸ τῶν ὑπάτων ὁ νόμος ἐκυρώθη, ὅς ἐστιν ἐν στήλῃ χαλκῇ γεγραμμένος, ἣν ἀνέθεσαν ἐν τῷ Αὐεντίνῳ, κομίσαντες εἰς τὸ τῆς Ἀρτέμιδος ἱερόν. κυρωθέντος δὲ τοῦ νόμου, συνελθόντες οἱ δημοτικοὶ τά τε οἰκόπεδα διελάγχανον καὶ κατῳκοδόμουν ὅσον ἕκαστοι τόπον δυνηθεῖεν ἀπολαμβάνοντες. εἰσὶ δ᾽ οἳ σύνδυο καὶ σύντρεις καὶ ἔτι πλείους συνιόντες οἰκίαν κατεσκευάζοντο μίαν, ἑτέρων μὲν τὰ κατάγεια λαγχανόν- 20

των, ἑτέρων δὲ τὰ ὑπερῷα. ὁ μὲν οὖν ἐνιαυτὸς ἐκεῖνος εἰς τὰς κατασκευὰς τῶν οἰκήσεων ἐδαπανήθη.

XXXIII. Ὁ δὲ μετὰ τοῦτον, ἐν ᾧ τὴν ὕπατον ἀρχὴν παρειλήφεσαν Τίτος Ῥωμίλιος καὶ Γάιος Οὐετούριος, δήμαρχοι δ' ἦσαν οἱ περὶ Λεύκιον Ἰκίλλιον τὸ δεύτερον ἄρχειν ἑξῆς αἱρεθέντες, οὐχ ἁπλοῦς, ἀλλὰ ποικίλος τις ἐγένετο καὶ μεγάλων μεστὸς πραγμάτων. ἥ τε γὰρ πολιτικὴ στάσις ἤδη μεμαράνθαι δοκοῦσα ὑπὸ τῶν δημάρχων πάλιν ἀνεκινεῖτο, καὶ πόλεμοί τινες ἐκ τῶν ἀλλοεθνῶν ἀνέστησαν, οἳ κακὸν μὲν οὐθὲν διαθεῖναι τὴν πόλιν ἠδυνήθησαν, οὐ μικρὰν δὲ ὠφέλειαν, τὸ στασιάζον ἀνελόντες ἐξ αὐτῆς. ἐγκύκλιον γὰρ δὴ τοῦτο καὶ ἐν ἔθει ἦν ἤδη τῇ πόλει, πολεμουμένῃ μὲν ὁμονοεῖν, εἰρήνην δὲ ἀγούσῃ στασιάζειν. τοῦτο συνιδόντες ἅπαντες οἱ τὰς ὑπάτους
078 ἀρχὰς παραλαβόντες κατ' εὐχὰς μὲν εἴ τις ἔξωθεν ἐπανασταίη πόλεμος ἐλάμβανον· ἡσυχαζόντων δὲ τῶν ἀντιπάλων αὐτοὶ κατεσκεύαζον ἐγκλήματα καὶ προφάσεις πολέμων, ἅτε ὁρῶντες διὰ μὲν τοὺς πολέμους μεγάλην καὶ εὐδαίμονα γινομένην τὴν πόλιν, διὰ δὲ τὰς στάσεις ταπεινὴν καὶ ἀσθενῆ. οἷς ὅμοια γνόντες οἱ τότε ὕπατοι στρατιὰν ἐξάγειν ἔκριναν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, δεδοικότες μή τι διὰ τὴν εἰρήνην ἄρξωνται ταράττειν ἀργοὶ καὶ πένητες ἄνθρωποι, τοῦτο μὲν ὀρθῶς εἰδότες, ὅτι δεῖ περισπᾶσαι τὸν ὄχλον ἐπὶ τοὺς ἔξω πολέμους, τὸ δὲ μετὰ τοῦτο οὐκ ὀρθῶς. δέον γὰρ αὐτοὺς ὡς ἐν νοσούσῃ πόλει μετρίαις χρῆσθαι ταῖς στρατολογίαις, ἐπὶ τὸ βίᾳ προσαναγκάζειν τοὺς ἀπειθοῦντας ἐτράποντο, οὔτε παραίτησιν οὔτε συγγνώμην οὐδενὶ διδόντες οὐδεμίαν, ἀλλὰ ταῖς ἐκ τῶν νόμων τιμωρίαις εἴς τε τὰ σώματα καὶ τὰς οὐσίας αὐτῶν πικρῶς χρώμενοι. ταῦτα ποιούντων αὐτῶν

ἀφορμὴν αὖθις εἰλήφεσαν οἱ δήμαρχοι τοῦ δημαγω- 207
γεῖν τὰ πλήθη· καὶ συναγαγόντες εἰς ἐκκλησίαν τά τ' ἄλλα τῶν ὑπάτων κατεβόων, καὶ ὅτι πολλοὺς τῶν πολιτῶν ἐκέλευσαν εἰς τὸ δεσμωτήριον ἀπάγειν τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν ἐπικαλεσαμένους, τῆς τε στρατολογίας ἀπολύειν ἔφασαν αὐτοὶ δὴ μόνοι ἐξουσίαν ἐκ τῶν νόμων ἔχοντες. ὡς δ' οὐθὲν ἐπέραινον, ἀλλ' ἐπιστρεφεστέρας ἔτι τὰς καταγραφὰς ἑώρων γινομένας, ἔργοις κωλύειν ἐπεβάλλοντο. ἀμυνομένων δὲ τῶν ὑπάτων καὶ τῷ κράτει τῆς ἀρχῆς ...., ἐρεθισμοί τέ τινες ἐγίνοντο καὶ χειρῶν ἐπιβολαί. συνηγωνίζετο δὲ τοῖς μὲν ὑπάτοις ἡ τῶν πατρικίων νεότης, τοῖς δὲ δημάρχοις ὁ πένης καὶ ἀργὸς ὄχλος. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν 208
ἡμέραν παρὰ πολὺ κρείττους ἐγένοντο τῶν δημάρχων οἱ ὕπατοι· ταῖς δ' ἑξῆς ἡμέραις πλείονος ὄχλου συρρέοντος εἰς τὴν πόλιν ἐκ τῶν ἀγρῶν, δόξαντες οἱ δήμαρχοι προσειληφέναι χεῖρα ἀξιόμαχον ἐκκλησίας τε συνεχεῖς ἐποιοῦντο καὶ τοὺς ὑπηρέτας κακῶς διακειμένους ἐκ τῶν πληγῶν ἐπεδείκνυσαν καὶ τὴν ἀρχὴν ἔλεγον ἀποθήσεσθαι, εἰ μή τις αὐτοῖς ἔσται παρὰ τοῦ δήμου βοήθεια.

XXXIIII. Συναγανακτοῦντος δ' αὐτοῖς τοῦ πλήθους ἐκάλουν τοὺς ὑπάτους ἐπὶ τὸν δῆμον ὡς τῶν πεπραγμένων ὑφέξοντας λόγον. ὡς δ' οὐ προσεῖχον αὐτοῖς ἐκεῖνοι τὸν νοῦν, ἐπὶ τὴν βουλὴν παρῆσαν· ἔτυχον γὰρ ὑπὲρ αὐτῶν τούτων συνεδρεύοντες· καὶ παρελθόντες ἐδέοντο, μήθ' αὐτοὺς τὰ αἴσχιστα πεπονθότας ὑπεριδεῖν μήτε τὸν δῆμον ἀφαιρεθέντα τὴν ἐξ αὐτῶν βοήθειαν, διεξιόντες ὅσα ἦσαν πεπονθότες ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ τῆς περὶ αὐτοὺς συνω- 208
μοσίας οὐ μόνον εἰς τὴν ἐξουσίαν ἀλλὰ καὶ εἰς τὰ σώματα προπηλακισθέντες. ἠξίουν τε δυεῖν θάτερον

ποιεῖν τοὺς ὑπάτους· εἰ μὲν ἀρνοῦνται μηδὲν ὧν οἱ
νόμοι κεκωλύκασιν εἰς τὰ τῶν δημάρχων πλημμελῆ-
σαι σώματα, παραγενομένους εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἀπο-
μόσαι· εἰ δ' οὐχ ὑπομένουσι τὸν ὅρκον, ἥκειν ἐπὶ
τοὺς δημότας λόγον ὑφέξοντας· ἀναδώσειν γὰρ ὑπὲρ
αὐτῶν ταῖς φυλαῖς τὴν ψῆφον. οἱ δ' ὕπατοι πρὸς
ταῦτ' ἀπελογοῦντο, διδάσκοντες ὅτι τῆς γε ὕβρεως
οἱ δήμαρχοι ἄρξειαν αὐθαδείᾳ χρησάμενοι καὶ τολ-
μήσαντες εἰς ὑπάτων σώματα παρανομεῖν, τὸ μὲν
πρῶτον ὑπηρέταις τε καὶ ἀγορανόμοις ἐπιτάττοντες
ἄγειν εἰς τὸ δεσμωτήριον ἄρχοντας, οἷς τὸ πάντων
ἀποδέδοται κράτος, ἔπειτ' αὐτοὶ τολμήσαντες ὁμόσε
χωρεῖν σὺν τοῖς ἰταμωτάτοις τῶν δημοτικῶν· τάς τε
ἀρχὰς διδάσκοντες ὅσον ἀλλήλων διαφέρουσιν, ἡ μὲν
ὑπατικὴ τὸ τῶν βασιλέων ἔχουσα κράτος, ἡ δὲ δη-
32 μαρχικὴ τῆς βοηθείας ἕνεκα παρεληλυθυῖα τῶν κατ-
ισχυομένων, ἣ τοσούτου δεῖν ἐξεῖναι κατὰ τῶν ὑπά-
των τινὸς ψῆφον ἀναδιδόναι τοῖς ὄχλοις, ὥστε μηδὲ
κατὰ τῶν ἄλλων πατρικίων τοῦ φαυλοτάτου ταύτην
ἀποδεδόσθαι τὴν ἐξουσίαν, ἂν μὴ ἡ βουλὴ ψηφίση-
ται. ἠπείλουν τε, ὅταν ἐκεῖνοι ψῆφον ἀναδῶσι τοῖς
δημόταις, αὐτοὶ τὰ ὅπλα περιθήσειν τοῖς πατρικίοις.
τοιούτων δὴ ῥηθέντων λόγων δι' ὅλης ἡμέρας, οὐδὲν
ἐξήνεγκεν ἡ βουλὴ τέλος, ἵνα μήτε τὴν τῶν ὑπάτων
ἀρχὴν μειώσειε, μήτε τὴν τῶν δημάρχων, ἑκάτερον
ὁρῶσα μεγάλων κινδύνων αἴτιον ἐσόμενον.

XXXV. Ἐπεὶ δὲ κἀκεῖθεν ἀπηλάθησαν οἱ δήμ-
αρχοι βοήθειαν οὐδεμίαν εὑρόμενοι, ἐσκόπουν αὖ-
θις ὅ τι χρὴ ποιεῖν εἰς τὸν δῆμον ἀφικόμενοι. ἐνίοις
μὲν οὖν ἐδόκει, καὶ μάλιστα τοῖς ταραχωδεστάτοις,
ἀπιέναι πάλιν ἐκ τῆς πόλεως τοὺς δημοτικοὺς τὰ ὅπλα
33 ἀναλαμβάνοντας εἰς τὸ ἱερὸν ὄρος, ἔνθα καὶ τὸ πρῶτον

ἐστρατοπεδεύσαντο, καὶ τὸν πόλεμον ἐκεῖθεν ὁρμωμένους ποιεῖν πρὸς τοὺς πατρικίους, ἐπειδὴ τὰς συνθήκας ἔλυσαν ἐκεῖνοι τὰς γενομένας αὐτοῖς πρὸς τὸν δῆμον, καταλύοντες τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν ἐκ τοῦ φανεροῦ. τοῖς δὲ πλείοσιν ἐδόκει μὴ παραχωρεῖν τῆς πόλεως, μηδὲ κοινὰ πάντων ἐγκλήματα ποιεῖν ὑπὲρ ὧν ἰδίᾳ τινὲς εἰς τοὺς δημάρχους παρηνόμησαν, ἐὰν τὰ συγκεχωρημένα τοῖς νόμοις λαμβάνωσιν, οἳ κελεύουσι νηποινὶ τεθνᾶναι τοὺς ὑβρίσαντας τὰ τῶν δημάρχων σώματα. τοῖς δὲ χαριεστέροις οὐδέτερον τούτων ἐφαίνετο καλῶς ἔχειν, οὔτε τὴν πόλιν ἐκλιπεῖν οὔτε φόνον ἄκριτον ἐπιτελεῖν, καὶ ταῦτα ὑπάτων, οἷς ἡ μεγίστη ὑπέκειτο ἀρχή, ἀλλ' εἰς τοὺς συναγωνιζομένους 203 αὐτοῖς μεταφέρειν τὴν ὀργήν, καὶ τὰς ἐκ τῶν νόμων τιμωρίας παρ' ἐκείνων λαμβάνειν. εἰ μὲν οὖν ἐκείνην τὴν ἡμέραν θυμῷ φερόμενοι δρᾶσαί τι οἱ δήμαρχοι κατὰ τῶν ὑπάτων ἢ τῆς βουλῆς προήχθησαν, οὐθὲν ἂν ἦν τὸ κωλῦσον αὐτὴν ὑφ' αὑτῆς ἀπολωλέναι τὴν πόλιν· οὕτως ἕτοιμοι πάντες ἦσαν ἐπὶ τὰ ὅπλα καὶ τὸν κατ' ἀλλήλων πόλεμον. νῦν δ' ἀναβαλόμενοι τὰ πράγματα καὶ δόντες ἑαυτοῖς χρόνον εἰς ἀμείνω λογισμόν, αὐτοί τε μετριώτεροι ἐγένοντο καὶ τὰς τῶν πολλῶν ὀργὰς ἐπράυναν. ἔπειτα τῇ ἑξῆς ἡμέρᾳ τὴν τρίτην ἀπ' ἐκείνης ἐσομένην ἀγορὰν προειπόντες, ἐν ᾗ τὸν δῆμον συνάξουσι καὶ ζημίαν ἐπιβαλοῦσι τοῖς ὑπάτοις ἀργυρικήν, διέλυσαν τὴν ἐκκλησίαν. ἐπεὶ δὲ πλησίον ἦν ὁ χρόνος, ἀπέστησαν καὶ ταύτης τῆς ἐπιβολῆς τῇ δεήσει τῶν πρεσβυτάτων τε καὶ ἐντιμοτάτων τὴν χάριν ἀνατιθέναι λέγοντες. καὶ μετὰ ταῦτα συναγαγόντες τὸν δῆμον ἔλεγον, ὅτι τὰς μὲν εἰς ἑαυτοὺς ὕβρεις ἀφείκασι χαρισάμενοι πολλοῖς καὶ ἀγαθοῖς ἀνδράσι δεομένοις,

85 οἷς οὐκ ἦν ὅσιον ἀντιλέγειν· ὧν δὲ ὁ δῆμος ἠδίκητο κωλυταί τε καὶ τιμωροὶ ἔσεσθαι. προθήσειν γὰρ αὖθις τόν τε περὶ τῆς κληρουχίας νόμον ἔτη τριάκοντα παρειλκυσμένον, καὶ τὸν περὶ τῆς ἰσονομίας, ὃν οἱ πρὸ αὐτῶν δήμαρχοι προθέντες οὐκ ἐπεψήφισαν.

XXXVI. Ταῦθ' ὑποσχόμενοι καὶ ὀμόσαντες ἀπέδειξαν ἡμέρας, ἐν αἷς ἀγορὰν ποιήσονται τοῦ δήμου καὶ τὰς ψήφους ἀναδώσουσι περὶ τῶν νόμων· ἐπιστάντος δὲ τοῦ χρόνου πρῶτον εἰσέφερον τὸν χωρονομικὸν νόμον, καὶ πολλοὺς διελθόντες λόγους ἐκάλουν εἴ τις τῷ νόμῳ συναγορεύειν βούλεται τῶν δημοτικῶν. πολλῶν δὲ παριόντων καὶ τὰς ἑαυτῶν πράξεις, ἃς ἐν τοῖς πολέμοις ἀπεδείξαντο, προφερομένων καὶ ἀγανακτούντων ὅτι πολλὴν ἀφελόμενοι γῆν τοὺς πολεμίους αὐτοὶ μὲν οὐδεμίαν εἰλήφασι μοῖραν, τοὺς δὲ χρήμασι καὶ φίλοις δυνατοὺς ἐσφε-
86 τερισμένους ὁρῶσι τὰ κοινὰ καὶ καρπουμένους ἐκ τοῦ βιαιοτάτου, ἀξιούντων τε μὴ μόνον τοὺς κινδύνους εἶναι τῷ δήμῳ τοὺς ὑπὲρ τῶν κοινῶν ἀγαθῶν κοινούς, ἀλλὰ καὶ τὰς ἀπ' αὐτῶν ἡδονάς τε καὶ ὠφελείας, καὶ τοῦ πλήθους ἀσμένως ἀκούοντος τοὺς λόγους, ὁ μάλιστα ἐπιρρώσας τὸν δῆμον καὶ μηδὲ φωνὴν ὑπομένειν τῶν ἀντιλεγόντων διαπραξάμενος ἦν Λεύκιος Σίκκιος, Δεντάτος ἐπικαλούμενος, πολλὰς πάνυ καὶ μεγάλας ἑαυτοῦ πράξεις διεξελθών. ἦν δ' ὀφθῆναί τε θαυμαστὸς ὁ ἀνὴρ καὶ ἡλικίας ἐν τῷ κρατίστῳ δυεῖν δέοντα ἑξήκοντα γεγονὼς ἔτη, καὶ φρονῆσαι τὰ δέοντα ἱκανὸς εἰπεῖν τε ὡς στρατιώτης οὐκ ἀδύνατος. ἔφη δ' οὖν παρελθών· Ἐγώ, ὦ δημόται, καθ' ἕκαστον ἔργον τῶν ἐμοὶ πεπραγμένων εἰ βουλοίμην λέγειν ἐπιλίποι ἄν με ὁ τῆς ἡμέρας χρόνος. αὐτὰ δὲ τὰ κεφάλαια δι' ἐλαχίστων ὡς ἐμὴ

δύναμις ἐρῶ. τετταρακοστὸν μὲν ἔτος ἐστί μοι τοῦτο 20 ἐξ οὗ στρατεύομαι ὑπὲρ τῆς πατρίδος, τριακοστὸν δ' ἐξ οὗ στρατιωτικῆς ἀεί τινος ἡγεμονίας τυγχάνω, τοτὲ μὲν σπείρας ἡγούμενος, τοτὲ δ' ὅλου τάγματος, ἀρξάμενος ἀπὸ ὑπάτων Γαίου Ἀκυλλίου καὶ Τίτου Σικκίου, οἷς ἐψηφίσατο ἡ βουλὴ τὸν κατὰ Οὐολούσκων πόλεμον. ἤμην γὰρ τότε ἑπτακαιεικοσέτης, ἐταττόμην δ' ἔτι ὑπὸ λοχαγῷ. γενομένης δὲ μάχης καρτερᾶς καὶ τροπῆς, καὶ τοῦ μὲν ἡγεμόνος τῆς σπείρας πεπτωκότος, τῶν δὲ σημείων κρατουμένων ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν, μόνος ἐγὼ τὸν ὑπὲρ ἁπάντων κίνδυνον ἀράμενος τά τε σημεῖα διέσωσα τῆς σπείρας καὶ τοὺς πολεμίους ἀνέστειλα καὶ τοῦ μὴ περιπεσεῖν αἰσχύνῃ 208 τοὺς λοχαγοὺς αἰωνίῳ, δι' ἣν θανάτου κακίων ὁ λοιπὸς ἂν αὐτοῖς βίος ἦν, αἴτιος ἐγενόμην φανερῶς, ὡς αὐτοί τε ὡμολόγουν χρυσῷ με ἀναδήσαντες στεφάνῳ, καὶ ὁ ὕπατος Σίκκιος ἐμαρτύρησεν ἡγεμόνα τῆς σπείρας ἀποδείξας. ἑτέρου τε πάλιν ἡμῖν ἀγῶνος ἐνστάντος, ἐν ᾧ τόν τε στρατοπεδάρχην τοῦ τάγματος ἡμῶν συνέβη πεσεῖν καὶ τὸν ἀετὸν ὑπὸ τοῖς πολεμίοις γενέσθαι, τὸν αὐτὸν τρόπον ὑπὲρ ὅλου τοῦ τάγματος ἀγωνισάμενος τόν τ' ἀετὸν ἀνεκομισάμην καὶ τὸν στρατοπεδάρχην ἔσωσα· ὃς ἐμοὶ τῆς τότε βοηθείας χάριν ἀποδιδούς, τῆς ἡγεμονίας τοῦ τάγματος ἀφίστατό μοι καὶ τὸν ἀετὸν ἐδίδου· ἐγὼ δ' οὐκ ἔλαβον, οὐκ ἀξιῶν ᾧ τὸν βίον ἐχαρισάμην τούτου παρελέσθαι τὰς τιμὰς ἃς εἶχε καὶ τὰς ἐπὶ ταύταις εὐφροσύνας. ἐφ' οἷς ἀγασθείς με ὁ ὕπατος τοῦ πρώτου τάγματος ἀπέδωκε τὴν στρατοπεδαρχίαν ἀπολωλεκότος ἐν τῇ μάχῃ τὸν ἡγεμόνα.

XXXVII. Ταῦτ' ἐστίν, ὦ δημόται, τὰ φανερώσαντά με καὶ εἰς ἡγεμονίας προαγαγόντα γενναῖα 208 ἔργα. ἐπεὶ δ' ὀνόματος ἤδη λαμπροῦ τυγχάνων φα-

νερὸς ἤμην, ἅπαντας ὑπέμενον τοὺς λοιποὺς ἀγῶνας,
αἰδούμενος τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις ἔργοις τιμὰς καὶ
χάριτας ἀφανίσαι. καὶ διετέλεσα πάντα τὸν μεταξὺ
χρόνον στρατευόμενος καὶ ταλαιπωρῶν καὶ οὐδένα
κίνδυνον δεδιὼς οὐδὲ ὑπολογιζόμενος· ἐξ ὧν ἁπάν-
των ἀριστεῖα καὶ σκῦλα καὶ στεφάνους καὶ τὰς ἄλλας
τιμὰς παρὰ τῶν ὑπάτων ἔλαβον· ἵνα δὲ συνελὼν
εἴπω, μάχας μὲν ἐν τοῖς τετταράκοντα ἔτεσιν ἐν οἷς
διατελῶ στρατευόμενος ἀμφὶ τὰς ἑκατὸν εἴκοσι μεμά-
χημαι· τραύματα δὲ πέντε καὶ τετταράκοντα εἴληφα
καὶ πάντα ἐμπρόσθια, κατὰ νώτου δ' οὐθέν. καὶ τού-
των δώδεκά ἐστιν, ἃ συνέβη μοι λαβεῖν ἐν ἡμέρᾳ
μιᾷ, ὅτε Σαβῖνος Ἑρδώνιος τὴν ἄκραν καὶ τὸ Καπι-
τώλιον κατελάβετο. ἀριστεῖα δ' ἐκ τῶν ἀγώνων ἐξε-
νήνεγμαι τεσσαρεσκαίδεκα μὲν στεφάνους πολιτικούς,
οἷς ἀνέδησάν με οἱ σωθέντες ἐν ταῖς μάχαις ὑπ'
90 ἐμοῦ, τρεῖς δὲ πολιορκητικοὺς πρῶτος ἐπιβὰς πολε-
μίων τείχεσι καὶ κατασχών, ὀκτὼ δὲ τοὺς ἐκ παρα-
τάξεως, οἷς ὑπὸ τῶν αὐτοκρατόρων ἐτιμήθην· πρὸς
δὲ τούτοις ὀγδοήκοντα μὲν καὶ τρεῖς χρυσοῦς στρε-
πτοὺς περιαυχενίους, ἑξήκοντα δὲ καὶ ἑκατὸν περι-
βραχιόνια χρύσεα, δόρατα δ' ὀκτωκαίδεκα, φάλαρα
δ' ἐπίσημα πέντε πρὸς τοῖς εἴκοσιν, ὧν ἐννέα ἦσαν,
οὓς μονομαχῆσαί τινα ἡμῶν προκαλεσαμένους ἑκού-
σιος ὑποστὰς ἐνίκησα. οὗτος μέντοι Σίκκιος, ὦ πολῖ-
ται, ὁ τοσαῦτα μὲν ἔτη στρατευσάμενος ὑπὲρ ὑμῶν,
τοσαύτας δὲ μάχας ἀγωνισάμενος, τοσούτοις δὲ τετι-
μημένος ἀριστείοις, ὁ μηδένα κίνδυνον ὀκνήσας πώ-
ποτε, μηδ' ἀπειπάμενος, ἀλλὰ . . . καὶ ἐν παρατά-
ξεσι καὶ ἐν τειχομαχίαις καὶ ἐν πεζοῖς καὶ ἐν ἱπ-
πεῦσι καὶ μετὰ πάντων καὶ σὺν ὀλίγοις καὶ μόνος,
91 καὶ κατατετρωμένος ὅλον τὸ σῶμα, ὁ συγκατακτη-

σάμενος τῇ πατρίδι πολλὴν καὶ ἀγαθὴν γῆν, τοῦτο μὲν ἣν Τυρρηνούς τε καὶ Σαβίνους ἀφείλεσθε, τοῦτο δὲ ἣν Αἰκανῶν καὶ Οὐολούσκων καὶ Πωμεντίνων κρατήσαντες ἔσχετε [καὶ ἄλλων τινῶν], οὐδὲ τὴν ἐλαχίστην ἔχω μοῖραν ἐξ αὐτῆς λαβών, οὐδ' ὑμῶν, ὦ δημόται, τῶν τὰ ὅμοια ταλαιπωρησάντων οὐδείς· οἱ δὲ βιαιότατοι τῶν ἐν τῇ πόλει καὶ ἀναιδέστατοι τὴν καλλίστην κατέχουσιν ἐξ αὐτῆς καὶ πολλὰ ἔτη κεκάρπωνται, οὔτε δωρεὰν παρ' ὑμῶν λαβόντες οὔτε χρημάτων πριάμενοι οὔτε ἄλλην δικαίαν κτῆσιν οὐδεμίαν αὐτῆς ἀποδεῖξαι δυνάμενοι. καὶ εἰ μὲν ἴσα τοῖς ἄλλοις ἡμῖν ταλαιπωρήσαντες, ὅτ' αὐτὴν ἐκτώμεθα, πλεῖον ἠξίουν ἡμῶν ἔχειν, ἦν μὲν οὐδ' οὕτω δίκαιον οὐδὲ πολιτικὸν ὀλίγους σφετερίσασθαι τὰ κοινά, οὐ μὴν ἀλλ' εἶχέ γέ τινα λόγον ἡ πλεονεξία τῶν ἀνθρώπων· ὁπότε δ' οὐθὲν ἔχοντες ἐπιδείξασθαι μέγα καὶ 209 νεανικὸν ἔργον, ἀνθ' οὗ τὰ ἡμέτερα βίᾳ κατέσχον, ἀναισχυντοῦσι καὶ οὐδ' ἐξελεγχόμενοι μεθίενται αὐτῶν, τίς ἂν ἀνάσχοιτο;

XXXVIII. Ἐπεὶ φέρε πρὸς Διός, εἴ τι τούτων ἐγὼ ψεύδομαι, δειξάτω τις ὑμῖν τῶν σεμνῶν τούτων παρελθών, τίνας ἐπιφανεῖς καὶ καλὰς πράξεις προεχόμενος ἐμοῦ πλέον ἔχειν ἀξιοῖ· πότερον ἔτη πλείω στρατευσάμενος ἢ μάχας πλείους ἀγωνισάμενος ἢ τραύματα πλείω λαβὼν ἢ στεφάνοις καὶ φαλάροις καὶ σκύλοις καὶ τοῖς ἄλλοις ἐπινικίοις κόσμοις ὑπερβαλόμενος, δι' ὃν ἀσθενέστεροι μὲν οἱ πολέμιοι γεγόνασιν, ἐπιφανεστέρα δὲ καὶ μείζων ἡ πατρίς; μᾶλλον δὲ τὸ δέκατον ἐπιδειξάτω μέρος, ὧν ὑμῖν ὑπέδειξα ἐγώ. ἀλλὰ τούτων γ' οἱ πλείους οὐδ' ἂν πολλοστὴν ἔχοιεν προενέγκασθαι μοῖραν τῶν ἐμῶν· ἔνιοι δὲ οὐδ' ἂν τῷ φαυλοτάτῳ τῶν ἐκ τοῦ δήμου φανεῖεν τὰ ἴσα κακοπαθήσαντες. οὐ γάρ 209

ἐστιν αὐτῶν ἐν τοῖς ὅπλοις ἡ λαμπρότης, ἀλλ᾽ ἐν τοῖς λόγοις, οὐδὲ κατὰ τῶν ἐχθρῶν τὸ δυνάμενον, ἀλλὰ κατὰ τῶν φίλων· οὐδ᾽ ἡγοῦνται κοινὴν οἰκεῖν πόλιν, σφῶν δ᾽ αὐτῶν ἰδίαν, ὥσπερ οὐ συνελευθερωθέντες ἀπὸ τῆς τυραννίδος ὑφ᾽ ἡμῶν, ἀλλὰ κατὰ κληρονομίαν παρὰ τῶν τυράννων παραλαβόντες ἡμᾶς· οἵ γε — τὰ μὲν ἄλλα, ὅσα ὑβρίζοντες ἡμᾶς μικρὰ καὶ μείζω διατελοῦσιν, ὡς ἅπαντες ἐπίστασθε, σιωπῶ· ἀλλ᾽ εἰς τοῦτο προεληλύθασιν ὑπερηφανίας, ὥστ᾽ οὐδὲ φωνὴν ἀξιοῦσί τινα ἡμῶν ἀφιέναι περὶ τῆς πατρίδος ἐλευθέραν οὐδὲ διᾶραι τὸ στόμα, ἀλλὰ τὸν μὲν πρῶ-
94 τον εἰπόντα περὶ τῆς κληρουχίας Σπόριον Κάσσιον, τρισὶ μὲν ὑπατείαις κεκοσμημένον, δυσὶ δὲ θριάμβοις λαμπροτάτοις, τοσαύτην δὲ δεινότητα περί τε τὰς στρατηγικὰς πράξεις καὶ περὶ τὰ πολιτικὰ βουλεύματα ἀποδειξάμενον, ὅσην οὐδεὶς τῶν τότε γενομένων, τοῦτον τὸν ἄνδρα αἰτιασάμενοι τυραννίδι ἐπιχειρεῖν καὶ ψευδέσι καταγωνισάμενοι μαρτυρίαις δι᾽ οὐδὲν ἕτερον, ἀλλ᾽ ὅτι φιλόπολις ἦν καὶ φιλόδημος, ὤσαντες ἀπὸ τοῦ κρημνοῦ διέφθειραν. Γναῖον δὲ Γενύκιον δήμαρχον ὄντα ἡμέτερον, ἐπεὶ τὸ αὐτὸ τοῦτο πολίτευμα μετὰ ἔτος ἑνδέκατον ἀνενεοῦτο, καὶ τοὺς ὑπατεύσαντας ἐν τῷ πρότερον ἐνιαυτῷ κατέστησεν ὑπὸ δίκην ἀμελήσαντας τῶν ψηφισμάτων τῆς βουλῆς, ἃ περὶ τῶν γεωμόρων ἐψηφίσατο, ἐπεὶ φανερῶς οὐχ οἷοί τ᾽ ἦσαν ἀνελεῖν, μιᾷ πρότερον ἡμέρᾳ τῆς δίκης ἀφανῶς ἀνήρπασαν. τοιγάρτοι πολὺς ἐνέπεσε τοῖς
95 μετὰ ταῦτα φόβος, καὶ οὐδεὶς ἔτι τὸ κινδύνευμα τοῦτο ὑπέδυ, ἀλλὰ τριακοστὸν ἔτος τοῦτο ἀνεχόμεθα ὥσπερ ἐν τυραννίδι τὴν ἐξουσίαν ἀπολωλεκότες.

XXXVIIII. Ἐῶ τἆλλα· ἀλλ᾽ οἱ νῦν ἄρχοντες ὑμῶν, ὅτι τοῖς κατισχυομένοις τῶν δημοτικῶν ἠξίουν

βοηθεῖν, οὓς ὑμεῖς ἱεροὺς καὶ ἀσύλους ἐποιήσατε τῷ
νόμῳ, τί οὐ πεπόνθασι τῶν δεινῶν; οὐχὶ τυπτόμενοι
καὶ λακτιζόμενοι καὶ πᾶσαν αἰκίαν ὑπομείναντες ἀπη-
λάθησαν ἐκ τῆς ἀγορᾶς; καὶ ὑμεῖς ταῦτα πάσχοντες
ἀνέχεσθε καὶ οὐ ζητεῖτε, ὅπως παρ᾽ αὐτῶν λήψεσθε
δίκας, ταῖς γοῦν ψήφοις, ἐν αἷς μόναις ἔξεστιν ὑμῖν
ἀποδείξασθαι τὴν ἐλευθερίαν. ἀλλ᾽ ἔτι καὶ νῦν, ὦ
δημόται, φρόνημα λαβόντες ἐλεύθερον, καὶ τὸν γεω-
μορικὸν νόμον εἰσφερόντων τῶν δημάρχων ἐπικυρώ-
σατε, μηδὲ φωνὴν ἀνασχόμενοι τῶν τὰ ἐναντία ἀξι- 2096
ούντων. ὑμεῖς δ᾽, ὦ δήμαρχοι, παρακλήσεως μὲν
εἰς τοῦτο τὸ ἔργον οὐ δεῖσθε· καὶ γὰρ ἤρξατε αὐτοῦ
καὶ οὐχ ὑποκατακλίνεσθε, καλῶς ποιοῦντες· ἐὰν δ᾽
ἐκ τῶν νέων αὐθάδεια καὶ ἀναίδεια ὑμῖν ἐμποδὼν
γένηται τοὺς καδίσκους ἀνατρεπόντων ἢ τὰς ψήφους
ἁρπαζόντων ἢ ἄλλο τι περὶ τὴν ψηφοφορίαν ἀκοσμούν-
των, δείξατε αὐτοῖς ἣν ἔχει τὸ ἀρχεῖον ἰσχύν. καὶ
ἐπειδὴ οὐ τοὺς ὑπάτους ἔξεστι παῦσαι τῆς ἐξουσίας,
τοὺς ἰδιώτας οἷς πρὸς τὰ βίαια ὑπηρέταις ἐκεῖνοι
χρῶνται καταστήσαντες ὑπὸ δίκην, ἀνάδοτε τῷ δήμῳ
τὰς περὶ αὐτῶν ψήφους, αἰτιασάμενοι παρὰ τοὺς
ἱεροὺς νόμους βιάζεσθαι καὶ καταλύειν ὑμῶν τὴν
ἀρχήν.

XXXX. Τοιαῦτ᾽ εἰπόντος αὐτοῦ τὸ μὲν πλῆθος 2097
οὕτως οἰκείως διετέθη πρὸς τοὺς λόγους καὶ τοσαύ-
την ἀπεδείξατο ἀγανάκτησιν πρὸς τὸ ἀντίπαλον, ὥσθ᾽,
ὅπερ ἔφην καὶ κατ᾽ ἀρχάς, μηδὲ λόγον ἔτι βούλεσθαι
τῶν ἀντιλεξόντων ὑπομένειν. ὁ μέντοι δήμαρχος
Ἰκίλλιος ἀναστὰς τὰ μὲν ἄλλα ἔφη πάντα ὀρθῶς
εἰπεῖν Σίκκιον, καὶ μακρὸν ἔπαινον τοῦ ἀνδρὸς διεξ-
ῆλθε· τὸ δὲ μὴ μεταδιδόναι λόγου τοῖς ἀντιλέξαι
βουλομένοις οὔτε δίκαιον ἀπέφαινεν οὔτε πολιτικόν,

ἄλλως τε καὶ περὶ νόμου τῆς ζητήσεως γινομένης, ὃς ἔμελλε κρείττονα ποιήσειν τὴν δίκην τῆς βίας. ταύτῃ γὰρ ἀφορμῇ χρήσεσθαι τοὺς μηδὲν ἴσως καὶ δικαίως τοῖς πολλοῖς φρονοῦντας τοῦ ταράττειν πάλιν καὶ διιστάναι τὰ συμφέροντα τῆς πόλεως. ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὴν ἐπιοῦσαν ἀποδείξας ἡμέραν τοῖς κατηγόροις τοῦ νόμου διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν. οἱ δὲ ὕπατοι συναγαγόντες ἰδιωτικὸν συνέδριον πατρικίων τῶν ἀν-
98 δρειοτάτων τε καὶ μάλιστα ἐν τῇ πόλει τότ' ἀνθούντων, ἐδίδασκον αὐτοὺς ὡς κωλυτέος εἴη σφίσιν ὁ νόμος, λόγοις μὲν πρῶτον, ἐὰν δὲ μὴ πείθωσι τὸν δῆμον, ἔργοις. ἐκέλευόν τε ἅπασιν ἥκειν ἕωθεν εἰς τὴν ἀγορὰν ἅμα τοῖς ἑταίροις τε καὶ πελάταις ὅσοις ἂν ἕκαστοι πλείστοις δύνωνται. ἔπειτα τοὺς μὲν περὶ αὐτὸ τὸ βῆμα καὶ τὸ ἐκκλησιαστήριον ἑστῶτας ὑπομένειν, τοὺς δὲ κατὰ πολλὰ τῆς ἀγορᾶς μέρη συστρέψαντας ἑαυτοὺς διαστῆναι, ὥστε διειλῆφθαι τὸ δημοτικὸν διεσπασμένον καὶ κωλύεσθαι πρὸς αὐτῶν εἰς ἓν συνελθεῖν. ἐδόκει ταῦτα κράτιστα εἶναι, καὶ πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν γενέσθαι τὰ πολλὰ τῆς ἀγορᾶς κατείχετο ὑπὸ τῶν πατρικίων.

XXXXI. Μετὰ ταῦτα οἵ τε δήμαρχοι καὶ οἱ ὕπατοι παρῆσαν, καὶ λέγειν ὁ κῆρυξ ἐκέλευσε τὸν βουλόμενον τοῦ νόμου κατηγορεῖν. πολλῶν δὲ καὶ ἀγαθῶν ἀνδρῶν παριόντων, οὐδενὸς ἐξάκουστος ἦν ὁ λόγος ὑπὸ τοῦ θορύβου τε καὶ τῆς ἀκοσμίας τῶν ἐκκλησιαζόντων. οἱ μὲν γὰρ ἐπεκέλευόν τε καὶ ἐπεθάρρυνον τοὺς λέγοντας, οἱ δ' ἐξέβαλλόν τε καὶ κατε-
99 βόων. ἐκράτει δὲ οὔτε ὁ τῶν συλλαμβανόντων ἔπαινος, οὔτε ὁ τῶν ἀντιπραττόντων θόρυβος. ἀγανακτούντων δὲ τῶν ὑπάτων καὶ μαρτυραμένων, ὅτι τῆς βίας ὁ δῆμος ἄρχει λόγον οὐκ ἀξιῶν ὑπομένειν,

ἀπελογοῦντο οἱ δήμαρχοι πρὸς ταῦτα, ὅτι ἤδη πέμπτον ἔτος τῶν αὐτῶν ἀκούοντες λόγον οὐθὲν ποιοῦσι θαυμαστόν, εἰ μὴ ἀξιοῦσιν ὑπομένειν ἑώλους καὶ καθημαξευμένας ἀντιλογίας. ὡς δὲ τὸ πλεῖον τῆς ἡμέρας εἰς ταῦτα ἐδαπανήθη, καὶ ὁ δῆμος ἀπῄτει τὰς ψήφους, οὐκέτ' ἀνασχετὸν ἡγησάμενοι τὸ πρᾶγμα οἱ νεώτατοι τῶν πατρικίων διίστασθαί τε βουλομένοις κατὰ φυλὰς τοῖς δημόταις ἐμποδὼν ἐγίνοντο καὶ τὰ ἀγγεῖα τῶν ψήφων τοὺς ἔχοντας ἀφῃροῦντο καὶ τῶν ὑπηρετούντων τοὺς μὴ βουλομένους ταῦτα ἀφιέναι τύπτοντές τε καὶ ὠθοῦντες ἐξέβαλλον. κεκραγότων δὲ τῶν δημάρχων καὶ εἰς μέσους αὐτοὺς ὠθουμένων, ἐκείνοις μὲν ὑπεχώρουν καὶ παρεῖχον ὅποι βούλοιντο χωρεῖν ἀδεῶς, τοῦ δ' ἄλλου δήμου τοὺς ἑπομένους αὐτοῖς [καὶ 2100
τὸ κατ' ἄλλα καὶ ἄλλα μέρη τῆς ἀγορᾶς ὑπὸ θορύβου καὶ ἀταξίας κινούμενον ἐπ' αὐτοὺς] οὐ παρίεσαν, ὥστ' ἀνωφελὴς ἦν [τῷ δήμῳ] ἡ τῶν ἀρχόντων βοήθεια. τέλος δ' οὖν ἐπεκράτησαν οἱ πατρίκιοι, καὶ οὐκ εἴασαν ἐπικυρωθῆναι τὸν νόμον. οἱ δὲ προθυμότατα συλλαβέσθαι δόξαντες τοῖς ὑπάτοις ἐκ τριῶν οἰκιῶν ἦσαν, Ποστόμιοι καὶ Σεμπρώνιοι καὶ τρίτοι Κλοίλιοι, γένους τε ἀξιώσει λαμπρότατοι καὶ ἑταιρίαις μεγάλα δυνάμενοι πλούτῳ τε καὶ δόξῃ καὶ τοῖς κατὰ πόλεμον ἔργοις ἐπιφανεῖς· καὶ τοῦ μὴ κυρωθῆναι τὸν νόμον οὗτοι ὡμολογοῦντο αἰτιώτατοι γενέσθαι.

XXXXII. Τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ παραλαβόντες οἱ δήμαρχοι τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν δημοτικῶν ἐσκόπουν, ὅ τι χρήσονται τοῖς πράγμασι, κοινὸν μὲν τοῦτο καὶ παρὰ πάντων ὁμολογούμενον εἰληφότες, τὸ μὴ 2101
τοὺς ὑπάτους ἄγειν ὑπὸ τὴν δίκην, ἀλλὰ τοὺς ὑπηρετοῦντας αὐτοῖς ἰδιώτας· ὧν κολαζομένων ἔμελλε

τοῖς πολλοῖς τῶν πολιτῶν ἐλάττων ἔσεσθαι λόγος,
ὥσπερ ὁ Σίκκιος ὑπετίθετο· περὶ δὲ τοῦ πλήθους
τῶν ὑπὸ τὰς αἰτίας ἀχθησομένων ὅσον εἶναι χρή, καὶ
περὶ τοῦ ὀνόματος ὃ θήσονται τῇ δίκῃ, καὶ μάλιστα
περὶ τοῦ τιμήματος πηλίκον ἔσται τὸ μέγεθος, ἐπι-
μελῆ ποιούμενοι ζήτησιν. οἱ μὲν οὖν χαλεπώτεροι τὰς
φύσεις ἐπὶ τὸ μεῖζόν τε καὶ φοβερώτερον ἅπαντα
ταῦτα προάγειν παρῄνουν, οἱ δ' ἐπιεικέστεροι τοὐ-
ναντίον ἐπὶ τὸ μετριώτερον καὶ φιλανθρωπότερον· ὁ
δὲ ταύτης ἡγούμενος τῆς γνώμης καὶ πείσας αὐτοὺς
ἦν Σίκκιος, ὁ τοὺς ἐν τῷ δήμῳ περὶ τῆς κληρουχίας
διελθὼν λόγους. ἔδοξε δ' οὖν αὐτοῖς τὸ μὲν ἄλλο
πλῆθος τῶν πατρικίων ἐᾶσαι, Κλοιλίους δὲ καὶ
Ποστομίους καὶ Σεμπρωνίους ἐπὶ τὸν δῆμον ἄγειν,
ὧν ἔπραξαν ὑφέξοντας δίκας· ἐγκαλεῖν δ' αὐτοῖς,
102 ὅτι τῶν ἱερῶν νόμων, οὓς περὶ τῶν δημάρχων ἐκύ-
ρωσεν ἡ βουλὴ καὶ ὁ δῆμος, οὐθενὶ δεδωκότων ἐξου-
σίαν ἀναγκάζειν τοὺς δημάρχους ὑπομένειν τι τῶν
ἀβουλήτων ὥσπερ τοὺς ἄλλους πολίτας, ἐκεῖνοι κα-
τασχόντες αὐτοὺς ἐκώλυσαν ἐπὶ τέλος ἄγειν τὴν περὶ
τοῦ νόμου διάγνωσιν. τίμημα δ' ἐφάνη ταῖς δίκαις
ὁρίσαι μήτε θάνατον μήτε φυγὴν μήτ' ἄλλο ἐπίφθο-
νον μηδέν, ἵνα μὴ τοῦτ' αὐτοῖς γένηται σωτηρίας αἴ-
τιον, ἀλλὰ τὰς οὐσίας αὐτῶν ἱερὰς εἶναι Δήμητρος,
τὸ μετριώτατον ἐκλεξαμένοις τοῦ νόμου μέρος. ἐγί-
νετο ταῦτα, καὶ παρῆν ὁ χρόνος, ἐν ᾧ τὰς κατὰ τῶν
ἀνδρῶν ἔδει συντελεῖσθαι δίκας. τοῖς δ' ὑπάτοις
καὶ τῶν ἄλλων πατρικίων τοῖς παραληφθεῖσιν εἰς
τὸ συνέδριον· ἔτυχον δ' οἱ κράτιστοι παρακληθέν-
τες· ἐδόκει συγχωρεῖν τοῖς δημάρχοις ἐπιτελέσαι τὰς
103 δίκας, ἵνα μή τι μεῖζον κωλυθέντες ἐξεργάσωνται
κακόν, καὶ τοῖς δημόταις ἐπιτρέπειν ἀγριαινομένοις

εἰς τὰ χρήματα τῶν ἀνδρῶν ἐκχέαι τὴν χολήν, ἵνα τιθασώτεροι γένωνται τὸ λοιπόν, λαβόντες ὁποσηνοῦν παρὰ τῶν ἐχθρῶν δίκην, ἄλλως τε καὶ τῆς εἰς χρήματα ζημίας εὐδιόρθωτον ἐχούσης τοῖς πεπονθόσι τὴν συμφοράν· ὅπερ καὶ συνέβη. ἁλόντων γὰρ τῶν ἀνδρῶν ἐρήμους τὰς δίκας, ὅ τε δῆμος ἀγριαινόμενος ἐπαύσατο, καὶ τοῖς δημάρχοις ἐδόκει τις ἀποδεδόσθαι μετρία [γοῦν] καὶ πολιτικὴ [δύναμις καὶ] βοήθεια· τοῖς τε ἀνδράσι τὰς οὐσίας οἱ πατρίκιοι παρὰ τῶν ὠνησαμένων ἐκ τοῦ δημοσίου τῆς ἴσης λυσάμενοι τιμῆς ἀνέδοσαν. καὶ τὰ μὲν κατεπείγοντα δεινὰ τοῦτον τὸν τρόπον χρησαμένων τοῖς πράγμασιν αὐτῶν διελέλυτο.

XXXXIII. *Μετ' οὐ πολὺ δὲ πάλιν τῶν δημάρχων τὸν ὑπὲρ τοῦ νόμου εἰσφερόντων λόγον, αἰφνιδίως τις ἀγγελθεῖσα πολεμίων ἔφοδος ἐπὶ τὴν [τῶν] Τυ-* 210 *σκλάνων πόλιν, αἰτία κωλύσεως ἀποχρῶσα ἐγένετο. τῶν γὰρ Τυσκλάνων κατὰ πλῆθος εἰς τὴν Ῥώμην ἀφικομένων καὶ λεγόντων, ὅτι δυνάμει πολλῇ πάρεισιν ἐπ' αὐτοὺς Αἰκανοὶ καὶ τὴν μὲν χώραν αὐτῶν ἤδη διηρπάκασι, τὴν δὲ πόλιν ἐὰν μή τις γένηται ταχεῖα ἐπικουρία φθάσουσιν ἐντὸς ὀλίγων ἡμερῶν ἀράμενοι, ἡ μὲν [οὖν] βουλὴ τοὺς ὑπάτους αὐτοῖς ἐψηφίσατο βοηθεῖν ἀμφοτέρους· οἱ δ' ὕπατοι στρατολογίαν προθέντες ἐκάλουν τοὺς πολίτας ἅπαντας ἐπὶ τὰ ὅπλα. ἐγένετο μὲν οὖν τις καὶ τότε στάσις, ἐναντιουμένων τῇ καταγραφῇ τῶν δημάρχων καὶ τὰς ἐκ τῶν νόμων τιμωρίας οὐ συγχωρούντων ποιεῖσθαι κατὰ τῶν ἀπειθούντων· ἔπραξαν δ' οὐθέν. συνελθοῦσα γὰρ ἡ βουλὴ γνώμην ἀπεδείξατο, τοὺς πατρικίους ἐπὶ τὸν πόλεμον ἐξιέναι σὺν τοῖς ἑαυτῶν πελάταις, τῶν δ' ἄλλων πολιτῶν τοῖς μὲν βουλομένοις*

μετέχειν τῆς στρατείας ἐπὶ σωτηρίᾳ τῆς πατρίδος
γινομένης ὅσια εἶναι τὰ πρὸς θεούς, τοῖς δ' ἐγκατα-
105 λείπουσι τοὺς ὑπάτους τἀναντία. ὡς δ' ἀνεγνώσθη
τὸ δόγμα τῆς βουλῆς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, πολλοὶ καὶ τοῦ
δήμου τὸν ἀγῶνα ἑκόντες ὑπέμειναν· οἱ μὲν ἐπιει-
κέστατοι δι' αἰσχύνην, εἰ μηδὲν ἐπικουρήσουσι πόλει
συμμάχῳ διὰ τὴν πρὸς αὐτοὺς εὔνοιαν ἀεί τι πρὸς
τῶν ἐχθρῶν βλαπτομένῃ· ἐν οἷς ἦν καὶ ὁ Σίκκιος
ἐκεῖνος ὁ κατηγορήσας ἐν τῷ δήμῳ τῶν σφετερισα-
μένων τὴν δημοσίαν γῆν, σπεῖραν ἐπαγόμενος ὀκτα-
κοσίων ἀνδρῶν, οἳ στρατεύεσθαι μὲν οὐκέτι ὥραν
εἶχον, ὥσπερ οὐδ' ἐκεῖνος, οὐδ' ἔπιπτον ὑπὸ τὰς
ἀνάγκας τῶν νόμων, τιμῶντες δὲ τὸν ἄνδρα διὰ πολ-
λὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας, ἐξιόντος ἐπὶ τὸν πόλε-
μον οὐκ ἐδικαίωσαν ἀπολείπεσθαι. καὶ ἦν τοῦτο τὸ
μέρος τῆς ἐξελθούσης τότε δυνάμεως ἐμπειρίᾳ τε
ἀγώνων καὶ τῇ παρὰ τὰ δεινὰ εὐτολμίᾳ μακρῷ τοῦ
ἄλλου ἄμεινον. οἱ δὲ πολλοὶ χάριτι καὶ παρακλήσει
τῶν πρεσβυτάτων ὑπαχθέντες εἵποντο. ἦν δέ τι
106 μέρος, ὃ τῶν ὠφελειῶν ἕνεκα τῶν ἐν ταῖς στρατείαις
γινομένων πάντα κίνδυνον ἕτοιμον ἦν ὑπομένειν. καὶ
δι' ὀλίγου χρόνου δύναμις ἐξῆλθε πλήθει τε ἀποχρῶσα
καὶ παρασκευαῖς κεχρημένη λαμπροτάταις. οἱ μὲν οὖν
πολέμιοι προακούσαντες, ὅτι μέλλουσιν ἐπ' αὐτοὺς
ἐξάγειν Ῥωμαῖοι στρατιάν, ἀπῆγον ἐπ' οἴκου τὰς δυ-
νάμεις. οἱ δ' ὕπατοι κατὰ σπουδὴν ἐλαύνοντες κατα-
λαμβάνουσιν ἐστρατοπεδευκότας αὐτοὺς πόλεως Ἀν-
τίου πλησίον ἐν ὑψηλῷ καὶ ἀποτόμῳ χωρίῳ, καὶ
τίθενται τὴν παρεμβολὴν τῆς ἐκείνων οὐ πρόσω.
τέως μὲν οὖν ἐν ταῖς ἑαυτῶν ἐπέμενον ἀμφότεροι
παρεμβολαῖς· ἔπειτα καταφρονήσαντες τῶν Ῥωμαίων
Αἰκανοὶ τῆς οὐ προεπιχειρήσεως καὶ πλῆθος οὐχ

ἱκανοὺς εἶναι νομίσαντες ἀγορᾶς τ' αὐτῶν περιέκοπτον ἐξιόντες καὶ τοὺς ἐπὶ προνομὴν ἀποστελλομένους ἢ χόρτον ἵππεις ἀνεκρούοντο, καὶ τοῖς πρὸς ὑδρείαν καταβαίνουσιν αἰφνιδίως ἐπετίθεντο, προὐκαλοῦντό τ' αὐτοὺς πολλάκις εἰς μάχην. 21

XXXXIIII. Ταῦθ' ὁρῶσι τοῖς ὑπάτοις ἐδόκει μηκέτι διατρίβειν τὸν πόλεμον. ἦν δ' ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις ἡ τοῦ πολεμεῖν ἐξουσία Ῥωμιλίῳ προσήκουσα, καὶ ὁ τὸ σύνθημα διδοὺς καὶ εἰς τάξιν καθιστὰς τοῦ ἄρχειν τε καὶ παύεσθαι μάχης τὸν καιρὸν ταμιεύων ἐκεῖνος ἦν· ὃς ἐπειδὴ τὰ σημεῖα ἐκέλευσεν ἀρθῆναι [ἐκ] τῆς μάχης καὶ προῆγεν ἐκ τοῦ χάρακος τὸν στρατόν, τοὺς μὲν ἄλλους ἔτασσεν ἱππεῖς τε καὶ τοὺς πεζοὺς κατὰ σπείρας ἐν τοῖς ἐπιτηδείοις ἑκάστους τόποις, τὸν δὲ Σίκκιον καλέσας λέγει· Ἡμεῖς μέν, ὦ Σίκκιε, μαχούμεθα τοῖς πολεμίοις ἐνθάδε· σὺ δὲ ἐν ὅσῳ μέλλομεν ἔτι καὶ παρασκευαζόμεθα τὰ πρὸς τὸν ἀγῶνα ἀμφότεροι, χώρει τὴν πλαγίαν ἐκείνην ὁδὸν ἐπὶ τὸ ὄρος, ἔνθα ἡ τῶν πολεμίων ἐστὶ παρεμβολή, καὶ μάχην τίθεσο πρὸς τοὺς ἐν τῷ χάρακι, ἵν' ἢ περὶ τῷ φρουρίῳ δείσαντες οἱ πρὸς ἡμᾶς μαχόμενοι καὶ βοηθεῖν προθυμούμενοι νῶτά τε δείξωσι καὶ εὐκατέργαστοι γένωνται, καθάπερ εἰκός ἐν ἀναχωρήσει ταχείᾳ, καὶ εἰς μίαν ὁδὸν ἅπαντες βιαζόμενοι, ἢ μένοντες αὐτόθι τὸν χάρακα ἀποβάλωσιν. οὔτε γὰρ ἡ φυλάττουσα αὐτὸν δύναμις ἀξιόμαχός ἐστιν, ὡς εἰκάσειεν ἄν τις, ἐπὶ τῷ ἐρυμνῷ τοῦ τόπου δοκοῦσα εἶναι πᾶν τὸ ἀσφαλές· ἥ τε ἅμα σοι δύναμις ἀποχρῶσα γένοιτ' ἄν, ἄνδρες ὀκτακόσιοι πολλῶν ἀθληταὶ πολέμων, τεταραγμένους σκηνοφύλακας ἀπροσδόκητοι προσπεσόντες τῷ τολμηρῷ ἑλεῖν. καὶ ὁ Σίκκιος ἔφησεν· Ἀλλ' ἔγωγε ἅπαντα μὲν ἕτοιμος

210 (beside line 11)

2109 (beside line 26)

ὑπηρετεῖν· τὸ μέντοι ἔργον οὐ ῥᾴδιον ὥσπερ σοι
δοκεῖ. ὑψηλή τε γὰρ ἡ πέτρα καὶ ἀπότομος ἐφ᾽ ἧς ὁ
χάραξ, ὁδόν τε οὐδεμίαν ὁρῶ φέρουσαν ἐπ᾽ αὐτὴν
ἔξω τῆς μιᾶς, ᾗ καταβήσονται οἱ πολέμιοι πρὸς ἡμᾶς,
φυλακήν τ᾽ εἰκὸς ἀξιόμαχον εἶναι ἐν αὐτῇ· κἂν ὀλίγη
δὲ πάνυ καὶ φαύλη τις οὖσα τύχῃ, πρὸς πολλῷ
πλείονα ἢ τὴν σὺν ἐμοὶ δύναμιν ἀντέχειν οἵα τε
ἔσται, τό τε χωρίον αὐτὸ παρέξει τῇ φυλακῇ τοῦ μὴ
ἁλώσεσθαι τὸ ἀσφαλές. ἀλλὰ μάλιστα μὲν ἀνάθου
2110 τὴν γνώμην· ἡ πεῖρα γὰρ ἐπισφαλής· εἰ δὲ πάντως
ἔγνωσταί σοι δύο τίθεσθαι μάχας ἐν ἑνὶ καιρῷ, δύ-
ναμιν ἀξιόχρεων ἀνδρῶν ἐπιλέκτων τάξον ἀκολουθεῖν
μοι σὺν τοῖς πρεσβυτέροις. οὐ γὰρ κλέψοντες τὸ
χωρίον, ἀλλὰ βίᾳ καὶ φανερῶς ἐξελοῦντες ἄνιμεν.

XXXXV. Ἔτι δ᾽ αὐτοῦ βουλομένου λέγειν τἀκό-
λουθα ὑπολαβὼν ὁ ὕπατος εἶπεν· Οὐ πολλῶν δεῖ
λόγων· ἀλλ᾽ εἰ μὲν ὑπομένεις πράττειν τὰ προσταττ-
τόμενα, χώρει διὰ ταχέων καὶ μὴ παραστρατήγει· εἰ δὲ
ἀφίστασαι καὶ ἀποδιδράσκεις τὸν κίνδυνον, ἑτέροις
εἰς τὸ ἔργον χρήσομαι. σὺ δὲ τὰς ἑκατὸν εἴκοσι μάχας
ἀγωνισάμενος καὶ τὰ τετταράκοντα ἔτη στρατευσά-
μενος καὶ κατατετρωμένος ὅλον τὸ σῶμα, ἐπειδὴ
ἑκὼν ἦλθες, ἄπιθι μήτε ὁμιλήσας πολεμίοις μήτ᾽
ἰδών, καὶ ἀντὶ τῶν ὅπλων ἀκόνα πάλιν τοὺς λόγους,
οἷς χρήσῃ κατὰ τοῦ φθόνου τῶν πατρικίων. ποῦ νῦν
ἐκεῖνά σου τὰ πολλὰ ἀριστεῖα, οἱ στρεπτοὶ καὶ τὰ
ψέλλια καὶ τὰ δόρατα καὶ τὰ φάλαρα καὶ οἱ τῶν ὑπά-
2111 των στέφανοι καὶ τὰ ἐκ τῶν μονομαχιῶν λάφυρα καὶ
πᾶσα ἡ ἄλλη βαρύτης, ἣν τότ᾽ ἠνεσχόμεθά σου λέ-
γοντος; ἐν ἑνὶ γὰρ δὴ τῷδε τῷ ἔργῳ βασανιζόμενος,
ἔνθα κίνδυνος ἦν ἀληθινός, ἐξητάσθης οἷος ἦσθα, ὡς
ἀλαζὼν καὶ δόξῃ τὸ ἀνδρεῖον ἐπιτηδεύων, οὐκ ἀλη-

θείᾳ. καὶ ὁ Σίκκιος δυσανασχετῶν ἐπὶ τοῖς ὀνείδεσιν· Οἶδα, φησίν, ὦ Ῥωμίλιε, ὅτι δυεῖν πρόκειταί μοι θάτερον, ἢ ζῶντα διειργάσθαι καὶ τὸ μηδὲν † ἀποδοῦναι δόξαν αἰσχίστην ἐνεγκάμενον δειλίας, ἢ κακῶς καὶ ἀδήλως κατακοπέντα ὑπὸ τῶν πολεμίων ἀποθανεῖν, ἐπειδὴ κἀγώ τις ἔδοξα εἶναι τῶν ἀξιούντων ἐλεύθερα φρονεῖν, οὐ γὰρ εἰς ἄδηλον, ἀλλ' εἰς 2112
ἐγνωσμένον ἀποστέλλεις με θάνατον· πλὴν ὑπομενῶ καὶ τοῦτο τὸ ἔργον, καὶ πειράσομαι φανεὶς ψυχὴν οὐ κακός, ἢ κρατῆσαι τοῦ χάρακος, ἢ μὴ τυχὼν τῆς ἐλπίδος εὐγενῶς ἀποθανεῖν. ὑμᾶς δ', ὦ συστρατιῶται, μάρτυρας ἀξιῶ γενέσθαι μοι πρὸς τοὺς ἄλλους πολίτας, ἐὰν πύθησθε τὸν ἐμὸν μόρον, ὅτι με ἀπώλεσεν ἡ ἀρετὴ καὶ ἡ πολλὴ τῶν λόγων ἐλευθερία. Ταῦτα πρὸς τὸν ὕπατον ἀποκρινάμενος καὶ δακρύσας τούς τε συνήθεις ἅπαντας ἀσπασάμενος, ᾤχετο τοὺς ὀκτακοσίους ἄνδρας ἄγων κατηφεῖς καὶ δεδακρυμένους, ὡς τὴν ἐπὶ θανάτῳ πορευομένους· καὶ ἡ ἄλλη δὲ πᾶσα στρατιὰ δι' οἴκτου τὸ πρᾶγμα ἔλαβεν ὡς οὐκέτ' ὀψομένη τοὺς ἄνδρας.

XXXXVI. Ὁ δὲ Σίκκιος ἑτέραν ἀποστραφείς, οὐχ ἣν ὁ Ῥωμίλιος ὑπελάμβανε, παρὰ τὴν λαγόνα τοῦ ὄρους ἦγεν. ἔπειτα· ἦν γάρ τις δρυμὸς ὕλην βαθεῖαν ἔχων· εἰς τοῦτον ἄγων τοὺς ἄνδρας, ἵσταταί τε καί φησιν· Ὑπὸ μὲν τοῦ ἡγεμόνος ἀπεστάλμεθα, ὥσπερ ὁρᾶτε, ἀπολούμενοι. ἐδόκει γὰρ ἡμᾶς τὴν πλαγίαν 2113
χωρήσειν ὁδόν, ἣν ἀναβαίνοντας ἀμήχανον ἦν μὴ οὐ φανεροὺς τοῖς πολεμίοις γενέσθαι. ἐγὼ δ' ὑμᾶς ἄξω καὶ ἄδηλον τοῖς ἐχθροῖς ὁδόν, καὶ πολλὰς ἐλπίδας ἔχω τρίβων ἐπιλήψεσθαί τινων, αἳ κατὰ κορυφῆς ἄξουσιν ἡμᾶς ἐπὶ τὸν χάρακα· καὶ ἐλπίδας χρηστὰς ἔχετε. Ταῦτ' εἰπὼν ἦγε διὰ τοῦ δρυμοῦ, καὶ πολυν

ἤδη διεληλυθὼς τόπον εὑρίσκει κατὰ δαίμονα ἄνδρα ἐξ ἀγροῦ ποθὲν ἀπιόντα, ὃν τοῖς νεωτάτοις συλλαβεῖν κελεύσας ἡγεμόνα ποιεῖται τῆς ὁδοῦ. κἀκεῖνος αὐτοὺς ἄγων περὶ τὸ ὄρος σὺν πολλῷ χρόνῳ καθίστησιν ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον τῷ χάρακι λόφον, ὅθεν ἦν ταχεῖα καὶ εὐεπίφορος ἐπ' αὐτὸν ὁδός. ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐγίνετο χρόνῳ, συνῄεσαν αἵ τε τῶν Ῥωμαίων καὶ αἱ τῶν Αἰκανῶν δυνάμεις ὁμόσε καὶ καταστᾶσαι ἐμάχοντο, πλήθει τ' ἀγχώμαλοι οὖσαι καὶ ὁπλισμοῖς καὶ προθυμίαν παρεχόμεναι τὴν αὐτήν· καὶ διέμειναν ἐπὶ πολὺν χρόνον ἰσόρροποι, τοτὲ μὲν ἐπιβαίνοντες ἀλλήλοις, τοτὲ δ' ὑποχωροῦντες, ἱππεῖς τε ἱππεῦσι
2114 καὶ πεζοὶ πεζοῖς, καὶ ἔπεσον ἐξ ἑκατέρων ἄνδρες ἐπιφανεῖς. ἔπειτα κρίσιν λαμβάνει ὁ πόλεμος ἐπιτελῆ. ὁ γὰρ Σίκκιος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ, ἐπειδὴ πλησίον ἐγένοντο τῆς παρεμβολῆς τῶν Αἰκανῶν, ἀφύλακτον εὑρόντες ἐκεῖνο τὸ μέρος τοῦ χάρακος· ἐπὶ γὰρ θάτερα τὰ πρὸς τοὺς μαχομένους ἐστραμμένα μέρη πᾶσα ἡ φυλάττουσα αὐτὸν δύναμις ἐτράπετο κατὰ θέαν τοῦ ἀγῶνος· ἐπεισπεσόντες κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν κατὰ κορυφῆς γίνονται τῶν φυλάκων. ἔπειτα ἀλαλάξαντες ἔθεον ἐπ' αὐτούς· οἱ δ' ὑπὸ τοῦ παρ' ἐλπίδα δεινοῦ ἐκταραχθέντες καὶ οὐ τοσούτους εἶναι δόξαντες, ἀλλὰ τὸν ἕτερον ἥκειν ὕπατον ἄγοντα τὴν σὺν αὐτῷ δύναμιν, ἐρρίπτουν ἔξω τοῦ χάρακος ἑαυτούς, οὐδὲ τὰ ὅπλα οἱ πολλοὶ φυλάξαντες. οἱ δὲ περὶ τὸν Σίκκιον τοὺς καταλαμβανομένους αὐτῶν φονεύοντες καὶ τοῦ χάρακος κρατήσαντες ἐχώρουν ἐπὶ τοὺς ἐν τῷ πεδίῳ. οἱ δὲ Αἰκανοὶ τοῦ χάρακος τὴν ἅλωσιν ἀπό τε τῆς φυγῆς καὶ τῆς κραυγῆς τῶν σφετέρων αἰσθόμενοι, καὶ μετ' οὐ πολὺ κατὰ νώτου σφίσι τοὺς πολεμίους ἐπιόντας ὁρῶντες, οὐκέτι γενναῖον οὐδὲν ἀπεδείξαντο,

ἀλλὰ διασπάσαντες τὰς τάξεις ἔσωζον ἑαυτοὺς ἄλλοι 2115
κατ᾽ ἄλλας ὁδούς· ἔνθα ὁ πλεῖστος αὐτῶν ἐγίνετο φόνος. οὐ γὰρ ἀνίεσαν οἱ Ῥωμαῖοι μέχρι νυκτὸς διώκοντές τε καὶ κτείνοντες τοὺς ἁλισκομένους. ὁ δὲ πλείστους τ᾽ αὐτῶν διαφθείρας καὶ λαμπρότατα ἔργα ἀποδειξάμενος Σίκκιος ἦν, ὃς ἐπειδὴ τέλος ἑώρα τὰ τῶν πολεμίων ἔχοντα σκότους ὄντος ἤδη, τὴν σπεῖραν ἄγων ἐπὶ τὸν κρατηθέντα ὑπὸ σφῶν χάρακα ἀνέστρεφε, μεγάλης χαρᾶς καὶ πολλοῦ μεστὸς ὢν αὐχήματος. οἵ τε περὶ αὐτὸν ἀθῷοί καὶ ἀβλαβεῖς ἅπαντες, οὐ μόνον οὐδὲν παθόντες ὧν προσεδόκησαν, ἀλλὰ καὶ δόξαν ἐπιφανεστάτην ἐξενεγκάμενοι, πατέρα καὶ σωτῆρα καὶ θεὸν καὶ πάντα τὰ τιμιώτατα ὀνομάζοντες, ἀπλήστως εἶχον ἀσπασμῶν τε τοῦ ἀνδρὸς καὶ 2116
τῆς ἐκ τῶν ἄλλων φιλοφρονήσεων ἡδονῆς. ἐν δὲ τούτῳ καὶ ἡ ἄλλη τῶν Ῥωμαίων φάλαγξ ἅμα τοῖς ὑπάτοις ἀπὸ τῆς διώξεως ἀνέστρεφεν ἐπὶ τὸν ἑαυτῆς χάρακα.

XXXXVII. Μέσαι τ᾽ ἤδη νύκτες ἦσαν, καὶ ὁ Σίκκιος μνησικακῶν τοῖς ὑπάτοις τῆς ἐπὶ τὸν θάνατον ἀποστολῆς, εἰς νοῦν βάλλεται τὴν δόξαν ἀφελέσθαι τοῦ κατορθώματος. κοινωσάμενος δὲ τοῖς ἀμφ᾽ αὐτὸν ἣν εἶχε διάνοιαν, ἐπειδὴ πᾶσιν [ὀρθῶς] ἐφαίνετο, καὶ οὐθεὶς ἦν ὃς οὐκ ἐθαύμαζε τῆς τε φρονήσεως καὶ τῆς τόλμης τὸν ἄνδρα, λαβὼν τὰ ὅπλα καὶ τοὺς ἄλλους κελεύσας ἀναλαβεῖν, πρῶτον μὲν ἀνθρώπους ὅσους ἐν τῷ χάρακι κατέλαβε τῶν Αἰκανῶν καὶ ἵππους καὶ τἆλλα ὑποζύγια κατέκοψεν· ἔπειτα ὑφῆψε τὰς σκηνὰς ὅπλων τε καὶ σίτου καὶ ἐσθῆτος καὶ τῶν εἰς τὸν πόλεμον ἐπιτηδείων γεμούσας, τῶν τε ἄλλων χρημάτων, ὧν ἐκ τῆς Τυσκλάνων λείας ἐπήγοντο πολλῶν πάνυ ὄντων. ὡς δὲ πάντα ὑπὸ τοῦ πυρὸς ἠφάνιστο, περὶ τὸν ὄρθρον ἀπῄει φέρων οὐθὲν ὅτι

7 μὴ τὰ ὅπλα, καὶ διανύσας σπουδῇ τὴν ὁδὸν εἰς Ῥώμην παρῆν. ὡς δ' ὤφθησαν ἄνθρωποι καθωπλισμένοι παιανίζοντές τε καὶ σπουδῇ χωροῦντες καὶ αἵματι πολλῷ πεφυρμένοι, δρόμος ἐγίνετο καὶ πολλὴ προθυμία τῶν βουλομένων ἰδεῖν τ' αὐτοὺς καὶ τὰ πραχθέντα ἀκοῦσαι. οἱ δὲ μέχρις ἀγορᾶς ἐλθόντες ἐδήλωσαν τοῖς δημάρχοις τὰ γενόμενα, κἀκεῖνοι συναγαγόντες ἐκκλησίαν ἐκέλευον αὐτοὺς πρὸς ἅπαντας λέγειν. ὄχλου δὲ πολλοῦ συναχθέντος, παρελθὼν ὁ Σίκκιος τήν τε νίκην αὐτοῖς ἐδήλωσε, καὶ τὸν τρόπον τοῦ ἀγῶνος ἐνεφάνισε, καὶ ὅτι παρὰ τὴν ἰδίαν ἀρετὴν καὶ τῶν σὺν αὐτῷ πρεσβυτέρων ἀνδρῶν ὀκτακοσίων, οὓς ἀποθανουμένους ἀπέστειλαν οἱ ὕπατοι, ὅ τε χάραξ ὁ τῶν Αἰκανῶν ἐλήφθη καὶ ἡ δύναμις ἡ παραταξαμένη τοῖς ὑπάτοις ἠναγκάσθη φυγεῖν· ἠξίου τε αὐτοὺς μηδενὶ τῆς νίκης ἑτέρῳ τὴν χάριν εἰδέναι, καὶ τελευτῶν ἔτι προσέθηκεν ἐκεῖνον τὸν λόγον, ὅτι τὰς
18 ψυχὰς καὶ τὰ ὅπλα σῴζοντες ἥκομεν, ἄλλο δὲ οὐδὲν τῶν κεκρατημένων οὔτε μεῖζον οὔτ' ἔλαττον ἐξενεγκάμενοι. ὁ δὲ δῆμος ἀκούσας τὸν λόγον εἰς οἶκτόν τε καὶ δάκρυα προὔπεσεν, ὁρῶν μὲν τὰς ἡλικίας τῶν ἀνδρῶν, ἐνθυμούμενος δὲ τὰς ἀρετάς, ἀγανακτῶν δὲ καὶ νεμεσῶν τοῖς ἐπιβαλομένοις τοιούτων ἀνδρῶν ἐρημῶσαι τὴν πόλιν. ἐγεγόνει δέ, ὃ προὔλαβεν ὁ Σίκκιος, μῖσος εἰς τοὺς ὑπάτους ἐξ ἁπάντων τῶν πολιτῶν. οὐδὲ γὰρ ἡ βουλὴ τὸ πρᾶγμα μετρίως ἤνεγκεν, ἣ οὔτ' ἐψηφίσατο αὐτοῖς πομπὴν θριάμβων οὔτε ἄλλο τι τῶν ἐπὶ καλοῖς ἀγῶσι γινομένων. τὸν μέντοι Σίκκιον ὁ δῆμος, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων καιρός, δήμαρχον ἀπέδειξεν, ἧς κύριος ἦν τιμῆς ἀποδιδούς. καὶ τὰ μὲν ἐπιφανέστατα τῶν τότε πραχθέντων τοιάδ' ἦν.

XXXXVIII. Ἐν δὲ τῷ μετὰ τούτους τοὺς ὑπάτους ἔτει Σπόριος Ταρπήιος καὶ Αὖλος Τερμήνιος παραλαμβάνουσι τὴν ἀρχήν· οἵ τά τ' ἄλλα θεραπεύοντες τὸν δῆμον διετέλεσαν, καὶ τὸ περὶ τῶν δημ- 2119
άρχων δόγμα προεβούλευσαν, ἐπειδὴ πλέον μὲν οὐδὲν ἑώρων τοῖς πατρικίοις γινόμενον ἐκ τοῦ κωλύειν, ἀλλὰ καὶ φθόνον καὶ μῖσος, καὶ βλάβας δὲ ἰδίας καὶ συμφορὰς τοῖς προθυμότατα ὑπὲρ αὐτῶν ἀγωνιζομένοις. μάλιστα δ' αὐτοὺς εἰς δέος ἤγαγεν ἡ τῶν ὑπατευσάντων τὸν παρελθόντα ἐνιαυτὸν συμφορὰ νεωστὶ γενομένη, δεινὰ μὲν ὑπὸ τοῦ δήμου παθόντων, οὐδεμίαν δὲ παρὰ τῆς βουλῆς εὑρομένων βοήθειαν. Σίκκιος μὲν γὰρ ὁ τὸν Αἰκανῶν στρατὸν αὐτῷ χάρακι ἀράμενος δήμαρχος τότ' ἀποδειχθείς, ὥσπερ ἔφην, τῇ πρώτῃ τῆς ἀρχῆς ἡμέρᾳ θύσας σωτήρια κατὰ 2120
νόμον, πρὶν ὁτιοῦν ἄλλο διαπράξασθαι τῶν κοινῶν, προεῖπεν ἐν ἐκκλησίᾳ Τίτον Ῥωμίλιον ἥκειν ἀπολογησόμενον ἀδικήματος δημοσίου δίκην ἐπὶ δικαστῇ τῷ δήμῳ, τὸν χρόνον ἀποδείξας τοῦ ἀγῶνος. Λεύκιος δὲ τότ' ἀγορανομῶν, δήμαρχος δὲ τῷ παρελθόντι ἔτει γεγονώς, τὸν ἕτερον τῶν περυσινῶν ὑπάτων Γάιον Οὐετούριον εἰς ὁμοίαν δίκην προεκαλέσατο. πολλῆς δὲ γενομένης ἐν τῷ μεταξὺ τοῦ ἀγῶνος χρόνῳ σπουδῆς τε καὶ παρακλήσεως ἀμφοτέρων, οἱ μὲν ὑπόδικοι πολλὰς ἐλπίδας εἶχον ἐπὶ τῇ βουλῇ καὶ τὸ κινδύνευμα ἐν ἐλαφρῷ ἐποιοῦντο, ὑπισχνουμένων αὐτοῖς πρεσβυτέρων τε καὶ νέων οὐκ ἐάσειν τὸν ἀγῶνα ἐπιτελεσθῆναι. οἱ δὲ δήμαρχοι πάντα ἐκ πολλοῦ φυλαττόμενοι, καὶ οὔτε δεήσεις οὔτε ἀπειλὰς οὔτε κίνδυνον οὐδένα ὑπολογιζόμενοι, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ τοῦ ἀγῶνος καιρός, ἐκάλουν τὸν δῆμον· ἦν δὲ παλαίτερον ἔτι συνερρυηκὼς ἐκ τῶν ἀγρῶν ὁ χερνή- 2121

της καὶ αὐτουργὸς ὄχλος, καὶ προσνεμηθεὶς τῷ κατὰ πόλιν τήν τε ἀγορὰν ἐνέπλησε καὶ τοὺς φέροντας εἰς αὐτὴν στενωπούς.

XXXXVIIII. *Πρώτη μὲν οὖν εἰσῆλθεν ἡ κατὰ Ῥωμιλίου δίκη. καὶ παρελθὼν ὁ Σίκκιος τά τε ἄλλα κατηγόρει τοῦ ἀνδρός, ὅσα ὑπατεύων βίᾳ εἰς τοὺς δημάρχους ἔδοξε διαπράξασθαι, καὶ τελευτῶν τὴν ἐπιβουλὴν διεξῄει τὴν ἐφ᾽ ἑαυτῷ τε καὶ τῇ σπείρᾳ γενομένην ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ· καὶ παρείχετο αὐτῶν μάρτυρας τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν συστρατευσαμένων οὐ δημοτικοὺς ἀλλὰ καὶ πατρικίους· ἐν οἷς ἦν νεανίας οὐκ ἀφανὴς οὔτε κατὰ γένους ἀξίωσιν οὔτε κατὰ τὴν ἰδίαν ἀρετὴν καὶ τὰ πολέμια πάνυ ἀγαθός· Σπόριος Οὐεργίνιος ἦν ὄνομα αὐτῷ. οὗτος ἔφη, Μάρκον Ἰκίλλιον, ἑνὸς τῶν ἐκ τῆς Σικκίου σπείρας υἱόν, ἡλικιώτην αὐτοῦ καὶ φίλον ἀπολυθῆναι τῆς ἐξόδου βουληθείς, ὡς ἐπὶ θάνατον ἐξιόντα μετὰ τοῦ
122 πατρός, Αὖλον Οὐεργίνιον τὸν ἑαυτοῦ θεῖον, πρεσβευτὴν τότε συστρατευόμενον, παρακαλέσας ἐλθεῖν ἐπὶ τοὺς ὑπάτους, ἀξιῶν σφίσι ταύτην δοθῆναι τὴν χάριν· ἀντιλεγόντων δὲ τῶν ὑπάτων, ἑαυτῷ μὲν ἐπελθεῖν δάκρυα τὴν συμφορὰν τοῦ ἑταίρου προανακλαιομένῳ, τὸν δὲ νεανίαν, ὑπὲρ οὗ τὰς δεήσεις ἐποιεῖτο, πεπυσμένον ταῦτα ἐλθεῖν καὶ λόγον αἰτησάμενον εἰπεῖν, ὅτι τοῖς μὲν δεομένοις πολλὴν οἶδε χάριν, αὐτὸς δ᾽ οὐκ ἂν ἀγαπήσειεν τυχὼν χάριτος, ἥτις αὐτὸν ἀφελεῖται τὸ πρὸς τὸ γένος εὐσεβές, οὐδ᾽ ἂν ἀπολειφθείη τοῦ πατρός, τοσῷδε μᾶλλον, ὅσῳ γ᾽ ἀποθανούμενος οἴχεται, καὶ πάντες τοῦτο ἴσασιν· ἀλλὰ συνεξιὼν ἐπαμυνεῖται ὅσα δύναται, καὶ τῆς αὐτῆς ἐκείνῳ κοινωνὸς ἔσται τύχης. ταῦτα τοῦ μειρακίου μαρτυρήσαντος, οὐδεὶς ἦν ὃς οὐκ ἔπασχέ τι*

πρὸς τὴν τύχην τῶν ἀνθρώπων. ὡς δὲ καὶ αὐτοὶ κληθέντες ἐπὶ τὴν μαρτυρίαν παρῆλθον ὅ τε πατὴρ 2123
Ἰκίλλιος καὶ τὸ μειράκιον καὶ τὸ καθ' ἑαυτοὺς ἔλεξαν, οὐκέτι κατέχειν τὰ δάκρυα οἱ πλείους ἐδύναντο τῶν δημοτικῶν. ἀπολογηθέντος δὲ τοῦ Ῥωμιλίου, καὶ διελθόντος λόγον οὔτε θεραπευτικὸν οὔτε ἁρμόττοντα τοῖς καιροῖς, ἀλλ' ὑψηλόν, καὶ ἐπὶ τῷ ἀνυπευθύνῳ τῆς ἀρχῆς μέγα φρονοῦντος, διπλασίως ἔτι ἐπερρώσθησαν εἰς τὴν κατ' αὐτοῦ ὀργὴν οἱ πολῖται. καὶ γενόμενοι τῶν ψήφων κύριοι κατέγνωσαν ἀδικεῖν οὕτως, ὥστε πάσαις ταῖς ψήφοις τῶν φυλῶν ἁλῶναι τὸν ἄνδρα. ἦν δὲ τὸ τίμημα τῆς δίκης ἀργυρικόν, ἀσσάρια μυρία. καὶ τοῦτο οὐκ ἄνευ προνοίας τινὸς ὁ Σίκκιος ποιῆσαί μοι δοκεῖ, ἀλλ' ἵνα τοῖς τε πατρικίοις ἐλάττων ἡ περὶ τοῦ ἀνδρὸς σπουδὴ γένηται, καὶ μηδὲν ἐξαμάρτωσι περὶ τὴν ψηφοφορίαν ἐνθυμηθέντες, ὅτι εἰς ἀργύριον ζημιώσεται ὁ ἁλοὺς καὶ εἰς οὐδὲν ἕτερον, καὶ τοῖς δημοτικοῖς ἡ πρὸς τὴν τιμωρίαν ὁρμὴ προθυμοτέρα μήτε ψυχῆς ἄνδρα ὑπατικὸν μήτε πατρίδος ἀποστεροῦσιν. Ῥωμιλίου δὲ καταδικασθέντος οὐ πολλαῖς ὕστερον ἡμέραις καὶ Οὐετούριος ἑάλω· τίμημα δὲ καὶ ἐκείνῳ ἐπεγέ- 2124
γραπτο ἀργυρικόν, ἡμιόλιον θατέρου.

L. Ταῦτα δὴ λογιζομένοις τοῖς ἐν ἀρχῇ ὑπάτοις πολὺ παρέστη δέος καὶ τοῦ μὴ ταὐτὰ παθεῖν ὑπὸ τοῦ δήμου μετὰ τὴν ὑπατείαν πρόνοια, ὥστ' οὐκέτι ἀποκρυπτόμενοι τὰς γνώμας, ἀλλὰ φανερῶς τὰ τοῦ δήμου πολιτευόμενοι διετέλουν. πρῶτον μὲν οὖν ἐπὶ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας νόμον ἐκύρωσαν, ἵνα ταῖς ἀρχαῖς ἐξῇ πάσαις τοὺς ἀκοσμοῦντας ἢ παρανομοῦντας εἰς τὴν ἑαυτῶν ἐξουσίαν ζημιοῦν. τέως γὰρ οὐχ ἅπασιν ἐξῆν, ἀλλὰ τοῖς ὑπάτοις μόνοις. τὸ μέντοι

τίμημα οὐκ ἐπὶ τοῖς ζημιοῦσιν ὁπόσον εἶναι δεῖ κατέλιπον, ἀλλ᾽ αὐτοὶ τὴν ἀξίαν ὥρισαν, μέγιστον ἀποδείξαντες ὅρον ζημίας δύο βόας καὶ τριάκοντα
25 πρόβατα. καὶ οὗτος ὁ νόμος ἄχρι πολλοῦ διέμεινεν ὑπὸ Ῥωμαίων φυλαττόμενος. ἔπειτα περὶ τῶν νόμων, οὓς ἐσπούδαζον οἱ δήμαρχοι κοινοὺς ἐπὶ πᾶσι Ῥωμαίοις γραφῆναι καὶ εἰς ἅπαντα χρόνον φυλαχθησομένους, διάγνωσιν ἀπέδωκαν τῇ βουλῇ. ἐλέχθησαν μὲν οὖν πολλοί τε καὶ ὑπὸ τῶν κρατίστων ἀνδρῶν εἰς ἀμφότερα καὶ τὸ συγχωρεῖν καὶ τὸ κωλύειν φέροντες λόγοι, ἐνίκα δ᾽ ἡ τὰ δημοτικώτερα πρὸ τῶν ὀλιγαρχικῶν εἰσάγουσα Τίτου Ῥωμιλίου γνώμη, παρὰ τὴν ἁπάντων δόξαν τῶν τε πατρικίων καὶ τῶν δημοτικῶν γενομένη. οἱ μὲν γὰρ ὑπελάμβανον πάντα τὰ ἐναντία τοῖς δημοτικοῖς φρονήσειν τε καὶ λέξειν τὸν ἄνδρα νεωστὶ τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην ἑαλωκότα· ὁ δ᾽ ἀναστὰς ἐπειδὴ προσῆκεν αὐτῷ γνώμην ἐρωτηθέντι κατὰ τὴν ἑαυτοῦ τάξιν ἀποκρίνασθαι· ἦν δὲ ἐν τοῖς διὰ μέσου κατά τε ἀξίωσιν καὶ ἡλικίαν· ἔλεξεν·

LI. Ἃ μὲν ὑπὸ τοῦ δήμου πέπονθα, ὦ βουλή,
26 καὶ ὅτι οὐδὲν ἀδικῶν, ἀλλὰ τῆς πρὸς ὑμᾶς εὐνοίας ἕνεκα, φορτικὸς ἂν εἴην [ἔγωγε] ἐν εἰδόσιν ὑμῖν ἀκριβῶς λέγων· μνήμην δὲ αὐτῶν ποιοῦμαι τοῦ ἀναγκαίου ἕνεκεν, ἵν᾽ εἰδῆτε ὅτι οὐ κολακείᾳ τοῦ δημοτικοῦ ἐπιτρέψας ἐχθροῦ μοι ὄντος, ἀλλ᾽ ἀπὸ τοῦ βελτίστου τὰ συμφέροντα ἐρῶ. θαυμάσῃ δὲ μηθείς, εἰ πρότερόν τε πολλάκις καὶ ἡνίκα ὕπατος ἦν τῆς ἑτέρας προαιρέσεως γενόμενος, νῦν ἐξαίφνης μεταβέβλημαι· μηδὲ ὑπολάβητε δυεῖν θάτερον, ἢ τότε βεβουλεῦσθαί με κακῶς, ἢ νῦν ἀνατίθεσθαι τὰ δόξαντα οὐκ ὀρθῶς. ἐγὼ γάρ, ὦ βουλή, ὅσον μὲν χρόνον τὰ

ὑμέτερα ἰσχυρὰ ἡγούμην, ὥσπερ ἐχρῆν ἀριστοκρατίαν αὔξων περιεφρόνουν τὸ δημοτικόν· ἐπεὶ δὲ τοῖς ἐμαυτοῦ σωφρονισθεὶς κακοῖς μετὰ μεγάλων μισθῶν ἔμαθον, ὅτι ἔλαττον ὑμῶν ἐστι τοῦ βουλομένου τὸ δυνάμενον, καὶ πολλοὺς ἤδη τὸν ὑπὲρ ὑμῶν ἀγῶνα 21 αἱρουμένους περιείδετε ἀναρπασθέντας ὑπὸ τοῦ δήμου τοῖς ἀναγκαίοις εἴξαντες, οὐκέθ' ὅμοια ἔγνωκα. ἐβουλόμην δ' ἂν μάλιστα μήτ' ἐμαυτῷ συμβῆναι μήτε τῷ συνάρχοντί μου ταῦτα, ἐφ' οἷς ἅπαντες ἡμῖν συμπαθεῖτε. ἐπειδὴ δὲ τὰ μὲν καθ' ἡμᾶς τέλος ἔχει, τὰ δὲ λοιπὰ ἔξεστιν ἐπανορθώσασθαι καὶ τοῦ μὴ παθεῖν ταῦτα ἑτέρους προϊδέσθαι, καὶ κοινῇ καὶ καθ' ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ τὰ παρόντα εὖ τίθεσθαι παρακαλῶ. κράτιστα γὰρ οἰκεῖται πόλις ἡ πρὸς τὰ πράγματα μεθαρμοττομένη, καὶ συμβούλων ἄριστος ὁ μὴ πρὸς τὴν ἰδίαν ἔχθραν ἢ χάριν, ἀλλὰ πρὸς τὸ κοινῇ συμφέρον ἀποδεικνύμενος γνώμην· βουλεύονταί τ' ἄριστα περὶ τῶν μελλόντων οἱ παραδείγματα ποιούμενοι τὰ γεγονότα τῶν ἐσομένων. ὑμῖν δ', ὦ βουλή, ὁσάκις ἐνέστη τις ἀμφισβήτησις καὶ φιλονεικία πρὸς τὸν δῆμον, ἀεί τι μειονεκτεῖν ἐξεγένετο, καὶ εἰς ἀνδρῶν ἐπιφανῶν θανάτους τε καὶ ὕβρεις καὶ ἐκβολὰς ζημιωθῆναι. καίτοι τί γένοιτ' ἂν ἀτύ- 212 χημα πόλει μεῖζον ἢ τοὺς κρατίστους τῶν ἀνδρῶν περικόπτεσθαι, καὶ ταῦτα οὐ σὺν δίκῃ; ὧν ὑμῖν φείδεσθαι παραινῶ, καὶ μήτε τοὺς νῦν ἄρχοντας προβαλόντας εἰς κίνδυνον πρόδηλον, ἔπειτα ἐγκαταλιπόντας ἐν τοῖς δεινοῖς μετανοεῖν, μήτε τῶν ἄλλων τινά, οὗ τι καὶ μικρὸν ὄφελος τῷ κοινῷ. κεφάλαιον δ' ἐστὶν ὧν ὑμῖν παραινῶ, πρέσβεις ἑλέσθαι, τοὺς μὲν εἰς τὰς Ἑλληνίδας πόλεις τὰς ἐν Ἰταλίᾳ, τοὺς δ' εἰς Ἀθήνας· οἵτινες αἰτησάμενοι παρὰ τῶν Ἑλλήνων

τοὺς κρατίστους νόμους καὶ μάλιστα τοῖς ἡμετέροις ἁρμόττοντας βίοις οἴσουσι δεῦρο. ἀφικομένων δ' αὐτῶν τοὺς τότε ὑπάτους προθεῖναι τῇ βουλῇ σκοπεῖν, τίνας ἑλέσθαι δεήσει νομοθέτας καὶ ἥντινα ἕξοντας
29 ἀρχὴν καὶ χρόνον ὅσον καὶ τἆλλα, ὅπως ἂν αὐτῇ φαίνηται συνοίσειν· στασιάζειν δὲ μηκέτι πρὸς τὸ δημοτικόν, μηδ' ἄλλας ἐπ' ἄλλαις ἀναιρεῖσθαι συμφοράς, ἄλλως τε καὶ περὶ νόμων φιλονεικοῦντας, οἳ κἂν εἰ μηθὲν ἄλλο τήν γέ τοι δόξαν τῆς ἀξιώσεως ἔχουσιν εὐπρεπῆ.

LII. Τοιαῦτ' εἰπόντος τοῦ Ῥωμιλίου, οἵ τε ὕπατοι συνελαμβάνοντο τῆς γνώμης ἀμφότεροι πολλὰ καὶ ἐκ παρασκευῆς συγκείμενα διεξιόντες, καὶ τῶν ἄλλων βουλευτῶν συχνοί, καὶ ἐγένοντο πλείους οἱ ταύτῃ προστιθέμενοι τῇ γνώμῃ. μέλλοντος δὲ γράφεσθαι τοῦ προβουλεύματος, ἀναστὰς ὁ δήμαρχος Σίκκιος ὁ τῷ Ῥωμιλίῳ προθεὶς τὴν δίκην πολὺν ὑπὲρ τοῦ ἀνδρὸς διῆλθε λόγον, ἐπαινῶν τὴν μεταβολὴν τῆς γνώμης καὶ τὸ μὴ τὰ ἴδια ἔχθη κρείττονα ἡγεῖσθαι τῶν κοινῇ χρησίμων, ἀλλ' ἀπ' ὀρθῆς γνώμης τὰ συμφέροντα ἀποδείξασθαι· Ἀνθ' ὧν, ἔφη, ταύτην αὐτῷ
30 ἀποδίδωμι τιμὴν καὶ χάριν· ἀφίημι τῶν ἐκτισμάτων ἐπὶ τῇ δίκῃ καὶ εἰς τὸ λοιπὸν διαλλάττομαι· νικᾷ γὰρ ἡμᾶς χρηστὸς ὤν. τὸ δ' αὐτὸ καὶ οἱ ἄλλοι δήμαρχοι παριόντες ὡμολόγουν. οὐ μὴν ὅ γε Ῥωμίλιος ὑπέμεινε ταύτην λαβεῖν τὴν χάριν· ἀλλ' ἐπαινέσας τοὺς δημάρχους τῆς προθυμίας, ἀποδώσειν ἔφη τὴν καταδίκην. ἱερὰν γὰρ ἤδη τῶν θεῶν εἶναι, καὶ οὔτε δίκαια οὔτε ὅσια ποιεῖν ἀποστερῶν τοὺς θεοὺς ἃ δίδωσιν αὐτοῖς ὁ νόμος· καὶ ἐποίησεν οὕτως. γραφέντος δὲ τοῦ προβουλεύματος, καὶ μετὰ ταῦτ' ἐπικυρώσαντος τοῦ δήμου, πρέσβεις ἀπεδείχθησαν οἱ τοὺς

παρὰ τῶν Ἑλλήνων νόμους ληψόμενοι, Σπόριος Ποστόμιος καὶ Σερούιος Σολπίκιος καὶ Αὖλος Μάλλιος· οἷς τριήρεις τε παρεσκευάσθησαν ἐκ τοῦ δημο- 21 σίου καὶ ἄλλος κόσμος εἰς ἐπίδειξιν τῆς ἡγεμονίας ἀποχρῶν. καὶ τὸ ἔτος ἐτελεύτα.

LIII. Ἐπὶ δὲ τῆς ὀγδοηκοστῆς καὶ δευτέρας ὀλυμπιάδος, ἣν ἐνίκα στάδιον Λύκος Θεσσαλὸς ἀπὸ Λαρίσης, ἄρχοντος Ἀθήνησι Χαιρεφάνους, ἐτῶν τριακοσίων ἐκπεπληρωμένων ἀπὸ τοῦ Ῥώμης συνοικισμοῦ, Ποπλίου Ὁρατίου καὶ Σέξτου Κοιντιλίου διαδεδεγμένων τὴν ὕπατον ἀρχήν, λοιμικὴ νόσος εἰς τὴν Ῥώμην κατέσκηψε μεγίστη τῶν ἐκ τοῦ προτέρου χρόνου μνημονευομένων· ὑφ᾽ ἧς οἱ μὲν θεράποντες ὀλίγου ἐδέησαν ἅπαντες ἀπολέσθαι, τῶν δ᾽ ἄλλων πολιτῶν ἀμφὶ τοὺς ἡμίσεις μάλιστα διεφθάρησαν, οὔτε τῶν ἰατρῶν ἀρκούντων εἰς τὸ βοηθεῖν τοῖς καμάτοις, οὔτ᾽ οἰκείων ἢ φίλων τἀναγκαῖα ὑπηρετούντων. οἱ γὰρ ἐπικουρεῖν ταῖς ἑτέρων βουλόμενοι συμφοραῖς ἁπτόμενοί τε καματηρῶν σωμάτων καὶ συνδιαιτώμενοι τὰς αὐτὰς ἐκείνοις νόσους μετελάμβανον, ὥστε πολλὰς οἰκίας ἐξερημωθῆναι δι᾽ ἀπορίαν τῶν ἐπιμελησομένων. ἦν τε οὐκ ἐλάχιστον τῶν κακῶν τῇ πόλει καὶ τοῦ μὴ ταχέως λωφῆσαι τὴν 213 νόσον αἴτιον τὸ περὶ τὰς ἐκβολὰς τῶν νεκρῶν γινόμενον. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν γὰρ ὑπό τε αἰσχύνης καὶ εὐπορίας τῶν πρὸς τὰς ταφὰς ἐπιτηδείων ἔκαιόν τε καὶ γῇ παρεδίδοσαν τοὺς νεκρούς· τελευτῶντες δὲ οἱ μὲν ἀπ᾽ ὀλιγωρίας τοῦ καλοῦ, οἱ δὲ τἀπιτήδεια οὐκ ἔχοντες, πολλοὺς μὲν ἐν τοῖς ὑπονόμοις τῶν στενωπῶν φέροντες ἐρρίπτουν τῶν ἀπογενομένων, πολλῷ δ᾽ ἔτι πλείους εἰς τὸν ποταμὸν ἐνέβαλλον· ἀφ᾽ ὧν τὰ μέγιστα ἐκακοῦντο. πρὸς τὰς ἀκτὰς καὶ τὰς ἠϊόνας

ἐκκυμαινομένων γὰρ τῶν σωμάτων βαρεῖα καὶ δυσώδης προσπίπτουσα καὶ τοῖς ἔτι ἐρρωμένοις ἡ τοῦ πνεύματος ἀποφορὰ ταχείας ἔφερε τοῖς σώμασι τὰς τροπάς, πίνεσθαί τε οὐκέτι χρηστὸν ἦν τὸ ἐκ τοῦ
33 ποταμοῦ κομισθὲν ὕδωρ, τὰ μὲν ἀτοπίᾳ τῆς ὀσμῆς, τὰ δὲ τῷ πονηρὰς τὰς ἀναδόσεις ποιεῖν τῆς τροφῆς. καὶ οὐ μόνον ἐν τῇ πόλει τὰ δεινὰ ἦν, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῶν ἀγρῶν· καὶ οὐχ ἥκιστα ὁ γεωργὸς ἐπόνησεν ὄχλος ἀναπιμπλάμενος, καὶ προβάτων καὶ τῶν ἄλλων τετραπόδων ἅμα διαιτωμένων, τῆς νόσου. ὅσον μὲν οὖν χρόνον τοῖς πολλοῖς ἐλπίδος τι ὑπῆν ὡς τοῦ θεοῦ σφίσι ἐπικουρήσοντος, ἅπαντες ἐπί τε θυσίας καὶ καθαρμοὺς ἐτράποντο· καὶ πολλὰ ἐνεωτερίσθη Ῥωμαίοις οὐκ ὄντα ἐν ἔθει περὶ τὰς τιμὰς τῶν θεῶν ἐπιτηδεύματα οὐκ εὐπρεπῆ. ἐπεὶ δὲ ἐπέγνωσαν οὐδεμίαν αὐτῶν ἐπιστροφὴν ἐκ τοῦ δαιμονίου γινομένην οὐδ' ἔλεον, καὶ τῆς περὶ τὰ θεῖα λειτουργίας ἀπέστησαν. ἐν ταύτῃ τῇ συμφορᾷ τῶν τε ὑπάτων ἅτερος ἀποθνήσκει Σέξτος Κοιντίλιος, καὶ ὁ μετὰ τοῦτον ἀποδειχθεὶς ὕπατος Σπόριος Φούριος, καὶ
34 τῶν δημάρχων τέτταρες, τῶν τε βουλευτῶν πολλοὶ καὶ ἀγαθοί. ἐπεβάλοντο μὲν οὖν ἐν τῇ νόσῳ τῆς πόλεως οὔσης στρατὸν ἐξάγειν ἐπ' αὐτοὺς Αἰκανοί, καὶ διεπρεσβεύοντο πρὸς τὰ ἄλλα ἔθνη, ὅσα Ῥωμαίοις πολέμια ἦν, παρακαλοῦντες ἐπὶ τὸν πόλεμον. οὐ μὴν ἔφθασάν γε προαγαγεῖν τὴν δύναμιν ἐκ τῶν πόλεων. ἔτι γὰρ αὐτῶν παρασκευαζομένων ἡ αὐτὴ νόσος κατέσκηψεν εἰς τὰς πόλεις. διῆλθε δ' οὐ μόνον τὴν Αἰκανῶν, ἀλλὰ καὶ τὴν Οὐολούσκων καὶ τὴν Σαβίνων γῆν, καὶ σφόδρα ἐκάκωσε τοὺς ἀνθρώπους. ἐκ δὲ τούτου συνέβη καὶ τὴν χώραν ἀγεώργητον ἀφεθεῖσαν λιμὸν ἐπὶ τῷ λοιμῷ συνάψαι. ἐπὶ μὲν δὴ

τούτων τῶν ὑπάτων οὐδὲν ἐπράχθη Ῥωμαίοις διὰ τὰς νόσους οὔτε πολεμικὸν οὔτε πολιτικὸν εἰς ἱστορίας ἀφήγησιν ἐλθεῖν ἄξιον.

LIIII. *Εἰς δὲ τοὐπιὸν ἔτος ὕπατοι μὲν ἀπεδείχθησαν Λεύκιος Μενήνιος καὶ Πόπλιος Σήστιος· ἡ δὲ νόσος εἰς τέλος ἐλώφησε. καὶ μετὰ τοῦτο θυσίαι* 213 *τε χαριστήριοι θεοῖς ἐπετελοῦντο δημοσίᾳ, καὶ ἀγῶνες ἐπιφανεῖς λαμπραῖς πάνυ χορηγούμενοι δαπάναις, ἐν εὐπαθείαις τε καὶ θαλίαις ἡ πόλις ἦν ὥσπερ εἰκός· καὶ πᾶς ὁ χειμέριος χρόνος ἀμφὶ ταῦτα ἐδαπανήθη. ἀρχομένου δ' ἔαρος σῖτός τε πολὺς [καὶ] ἐκ πολλῶν κατήχθη χωρίων, ὁ μὲν πλείων δημοσίᾳ συνωνηθείς, ὁ δέ τις καὶ ὑπὸ ἰδιωτῶν ἐμπόρων κομιζόμενος. ἔκαμνε γὰρ οὐχ ἥκιστα ἐπὶ τῇ σπάνει τῆς τροφῆς ὁ λαός, χέρσου τῆς γῆς ἀφειμένης διὰ τὰς νόσους καὶ τὸν ὄλεθρον τῶν γεωργῶν. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ καιρῷ παρεγένοντο ἀπό τ' Ἀθηνῶν καὶ τῶν ἐν Ἰταλοῖς Ἑλληνίδων πόλεων οἱ πρέσβεις φέροντες τοὺς νόμους. καὶ μετὰ τοῦτο προσῄεσαν οἱ δήμαρχοι τοῖς ὑπάτοις, ἀξιοῦντες ἀποδεῖξαι κατὰ τὸ ψήφισμα τῆς βουλῆς τοὺς νομοθέτας. οἱ δ', οὐκ ἔχοντες, ὅτῳ ἂν αὐτοὺς ἀπαλλάξειαν τρόπῳ προσκαθημένους καὶ λιπαροῦντας, ἀχθόμενοι τῷ πράγματι καὶ οὐκ ἀξιοῦν-* 213 *τες ἐπὶ τῆς αὐτῶν ἀρχῆς καταλῦσαι τὴν ἀριστοκρατίαν, πρόφασιν εὐπρεπῆ προὐβάλοντο, λέγοντες ἐν χερσὶν εἶναι τὸν τῶν ἀρχαιρεσίων καιρόν, καὶ δεῖν αὐτοὺς ὑπάτους πρῶτον ἀποδεῖξαι· ποιήσειν δὲ τοῦτ' οὐκ εἰς μακράν. ἀποδειχθέντων δὲ τῶν ὑπάτων μετ' ἐκείνων ἔλεγον ἀνοίσειν τῷ συνεδρίῳ τὴν περὶ τῶν νομοθετῶν διάγνωσιν. συγχωρούντων δὲ τῶν δημάρχων, προθέντες ἀρχαιρέσια πολλῷ τάχιον ἢ τοῖς προτέροις ἔθος ἦν, ὑπάτους ἀπέδειξαν Ἄππιον Κλαύ-*

διον καὶ Τίτον Γενύκιον, καὶ μετὰ τοῦτο πᾶσαν ἀποθέμενοι τὴν περὶ τῶν κοινῶν φροντίδα, ὡς ἑτέρους ἤδη δέον ὑπὲρ αὐτῶν σκοπεῖν, οὐδὲν ἔτι τοῖς δημάρχοις προσεῖχον, ἀλλὰ διακλέψαι τὸν λοιπὸν χρόνον τῆς ὑπατείας διενοοῦντο. ἔτυχε δὲ τὸν ἕτερον 137 αὐτῶν Μενήνιον ἀρρωστία τις καταλαβοῦσα χρόνιος. ἤδη δέ τινες ἔφασαν ὑπὸ λύπης καὶ ἀθυμίας ἐμπεσοῦσαν τῷ ἀνδρὶ τηκεδόνα δυσαπάλλακτον ἐργάσασθαι νόσον. ταύτην δὲ προσλαβὼν τὴν πρόφασιν ὁ Σήστιος, ὡς οὐδὲν οἷός τ' ὢν πράττειν μόνος, ἀπεωθεῖτο τὰς τῶν δημάρχων δεήσεις καὶ πρὸς τοὺς νέους ἄρχοντας ἠξίου τρέπεσθαι. οἱ δ' οὐκ ἔχοντες ὅ τι πράττουσιν ἕτερον ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Ἄππιον οὔπω τὴν ἐξουσίαν παρειληφότας ἠναγκάζοντο καταφεύγειν, τὰ μὲν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις δεόμενοι, τὰ δὲ καταμόνας συντυγχάνοντες· καὶ τέλος ἐξειργάσαντο τοὺς ἄνδρας, μεγάλας ὑποτείνοντες ἐλπίδας αὐτοῖς εἰ τὰ τοῦ δήμου πράγματα ἕλοιντο τιμῆς καὶ δυναστείας. εἰσῆλθε γάρ τις τὸν Ἄππιον ἐπιθυμία ξένη νέαν ἀρχὴν περιβαλέσθαι, καὶ νόμους καταστήσασθαι τῇ πατρίδι ὁμονοίας τε καὶ εἰρήνης, καὶ τοῦ μίαν ἅπαντας ἡγεῖσθαι τὴν πόλιν ἄρξαι τοῖς συμπολιτευομένοις. οὐ μέν- 2138 τοι καὶ διέμεινέ γε χρηστὸς ἀρχῇ κοσμηθεὶς μεγάλῃ, ἀλλ' ἐξέπεσε τελευτῶν εἰς φιλαρχίαν ἀπαραχώρητον ὑπὸ μεγέθους ἐξουσίας διαφθαρείς, καὶ ὀλίγου ἐδέησεν ἐπὶ τυραννίδα ἐλάσαι. περὶ ὧν κατὰ τὸν οἰκεῖον διαλέξομαι καιρόν.

LV. Τότε δ' οὖν ἀπὸ τοῦ κρατίστου ταῦτα βουλευσάμενος καὶ τὸν συνάρχοντα πείσας, ἐπειδὴ πολλάκις αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν ἐκάλεσαν οἱ δήμαρχοι, παρελθὼν πολλοὺς καὶ φιλανθρώπους διεξῆλθε λόγους· κεφάλαια δ' αὐτοῦ τῆς δημηγορίας τοιάδε

ἦν, ὅτι τὸ μὲν ἀποδειχθῆναι τοὺς νόμους καὶ παύσασθαι στασιάζοντας τοὺς πολίτας ὑπὲρ τῶν ἴσων αὐτῷ τε καὶ τῷ συνάρχοντι παντὸς μάλιστα δοκεῖ, καὶ ἀποφαίνονται γνώμην φανεράν· τοῦ δ' ἀποδεῖξαι τοὺς νομοθέτας αὐτοὶ μὲν οὐδεμίαν ἔχουσιν ἐξουσίαν οὔπω παρειληφότες τὴν ἀρχήν, τοῖς δὲ περὶ Μενήνιον ὑπάτοις οὐχ ὅπως ἐναντιώσονται πράττουσι τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ, ἀλλὰ καὶ συνεργήσουσι καὶ πολλὴν εἴσονται χάριν. ἐὰν δ' ἀναδύωνται σκῆψιν προβαλλόμενοι τὴν νέαν ἀρχήν, ὡς οὐκ ἐξὸν αὐ- 2139
τοῖς ἑτέρους ἄρχοντας ὑπατικὴν ἐξουσίαν παραληψομένους ἀποδεικνύειν ἡμῶν ἤδη κεκυρωμένων ὑπάτων, οὐδὲν ἐμποδὼν αὐτοῖς τὸ καθ' ἑαυτοὺς ἔσεσθαι. ἑκόντες γὰρ ἀποστήσεσθαι τῆς ὑπατείας τοῖς ἀνθ' αὐτῶν αἱρεθησομένοις, ἐὰν καὶ τῇ βουλῇ ταῦτα δοκῇ. ἐπαινοῦντος δὲ τοῦ δήμου τὴν προθυμίαν τῶν ἀνδρῶν, καὶ πάντων κατὰ πλῆθος ἐπὶ τὸ συνέδριον ὠσαμένων, ἀναγκασθεὶς ὁ Σήστιος τὴν βουλὴν συναγαγεῖν μόνος, ἐπειδὴ ὁ Μενήνιος ἀδύνατος ἦν παρεῖναι διὰ τὴν νόσον, προὔθηκεν ὑπὲρ τῶν νόμων λέγειν. ἐλέχθησαν μὲν οὖν καὶ τότε πολλοὶ ὑπ' ἀμφοτέρων λόγοι, τῶν τε παραινούντων κατὰ νόμους πολιτεύεσθαι, καὶ τῶν ἀξιούντων τοὺς πατρίους φυλάττειν ἐθισμούς. ἐνίκα δὲ ἡ τῶν εἰς νέωτα μελλόντων ὑπατεύειν γνώμη, ἣν Ἄππιος Κλαύδιος πρῶτος ἐρωτηθεὶς ἀπεφήνατο, ἄνδρας 2140
αἱρεθῆναι δέκα τοὺς ἐπιφανεστάτους ἐκ τῆς βουλῆς. τούτους δ' ἄρχειν εἰς ἐνιαυτὸν ἀφ' ἧς ἂν ἀποδειχθῶσιν ἡμέρας, ἐξουσίαν ἔχοντας ὑπὲρ ἁπάντων τῶν κατὰ τὴν πόλιν ἣν εἶχον οἵ τε ὕπατοι καὶ ἔτι πρότερον οἱ βασιλεῖς, τάς τ' ἄλλας ἀρχὰς ἁπάσας καταλελύσθαι, ἕως ἂν οἱ δέκα τύχωσι τῆς ἀρχῆς. τούτους

δὲ τοὺς ἄνδρας ἔκ τε τῶν πατρίων ἐθῶν καὶ ἐκ τῶν Ἑλληνικῶν νόμων, οὓς ἐκόμισαν οἱ πρέσβεις, ἐκλεξαμένους τὰ κράτιστα καὶ τῇ Ῥωμαίων πόλει πρόσφορα νομοθετήσεσθαι. τὰ δὲ γραφέντα ὑπὸ τῶν δέκα ἀνδρῶν, ἐὰν ἥ τε βουλὴ δοκιμάσῃ καὶ ὁ δῆμος ἐπιψηφίσῃ, κύρια εἰς τὸν ἅπαντα εἶναι χρόνον, καὶ τὰς ἀρχάς, ὅσαι ἂν ὕστερον ἀποδειχθῶσι, κατὰ τούτους τοὺς νόμους τά τε ἰδιωτικὰ συμβόλαια διαιρεῖν καὶ τὰ δημόσια ἐπιτροπεύειν.

41 LVI. Τοῦτο τὸ δόγμα λαβόντες οἱ δήμαρχοι προῆλθον εἰς τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ἀναγνόντες ἐν τῷ δήμῳ πολλοὺς ἐπαίνους τῆς βουλῆς καὶ τοῦ προθέντος τὴν γνώμην Ἀππίου διεξῆλθον. ἐπεὶ δὲ κατέλαβεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων καιρός, ἐκκλησίαν συναγαγόντες οἱ δήμαρχοι τούς τ' ἀποδειχθέντας ὑπάτους ἥκειν ἠξίουν ἐμπεδώσοντας τῷ δήμῳ τὰς ὑποσχέσεις, κἀκεῖνοι παρελθόντες ἐξωμόσαντο τὰς ὑπατείας. τούτους ὁ δῆμος ἐπαινῶν τε καὶ θαυμάζων διετέλει, καὶ ἐπειδὴ τοὺς νομοθέτας ψηφοφορεῖν ἔδει πρώτους εἵλετο τῶν ἄλλων· καὶ ἀπεδείχθησαν ἐν ἀρχαιρεσίαις ὑπὸ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας Ἄππιος μὲν Κλαύδιος καὶ Τίτος Γενύκιος, οὓς ἔδει τοὐπιὸν ἄρχειν ἔτος, Πόπλιος δὲ Σήστιος ὁ τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον ὑπατεύων, τρεῖς δὲ οἱ κομίσαντες παρὰ τῶν Ἑλλήνων τοὺς νόμους, Σπόριος Ποστόμιος καὶ Σερούιος Σολπίκιος καὶ Αὖλος Μάλλιος, εἷς δὲ τῶν ὑπατευ-
142 σάντων τὸν παρελθόντα ἐνιαυτὸν Τίτος Ῥωμίλιος, ὁ τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην Σικκίου κατηγορήσαντος ἁλούς, ἐπειδὴ γνώμης ἐδόκει ἄρξαι δημοτικῆς· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων βουλευτῶν Γάιος Ἰούλιος καὶ Τίτος Οὐετούριος καὶ Πόπλιος Ὁράτιος, ἅπαντες ὑπατικοί· αἱ δὲ τῶν δημάρχων τε καὶ ἀγορανόμων καὶ ταμιῶν

καὶ εἴ τινες ἦσαν ἄλλαι πάτριοι Ῥωμαίοις ἀρχαὶ κατελύθησαν.

LVII. Τῷ δ' ἑξῆς ἔτει παραλαβόντες οἱ νομοθέται τὰ πράγματα πολιτείας κόσμον τοιόνδε τινὰ καθίστανται· εἷς μὲν αὐτῶν τάς τε ῥάβδους καὶ τὰ λοιπὰ παράσημα τῆς ὑπατικῆς εἶχεν ἐξουσίας, ὃς βουλήν τε συνεκάλει καὶ δόγματα ἐπεκύρου καὶ τἆλλα ἔπραττεν ὅσα ἡγεμόνι προσῆκεν· οἱ δ' ἄλλοι συστέλλοντες 2143 ἐπὶ τὸ δημοτικώτερον τὸ τῆς ἐξουσίας ἐπίφθονον ὀλίγῳ τινὶ διήλλαττον ὀφθῆναι τῶν πολλῶν· εἶτ' αὖθις ἕτερος αὐτῶν ἐπὶ τὴν ἐξουσίαν καθίστατο, καὶ τοῦτ' ἐκ περινομῆς ἐγίνετο παραλλάξ, ἑκάστου τὴν ἡγεμονίαν παραλαμβάνοντος εἰς συγκείμενόν τινα ἡμερῶν ἀριθμόν. ἅπαντες δ' ἐξ ἑωθινοῦ καθεζόμενοι διήτων τά τ' ἰδιωτικὰ συμβόλαια καὶ τὰ δημόσια, ὁπόσα πρός τε ὑπηκόους καὶ συμμάχους καὶ τοὺς ἐνδοιαστῶς ἀκροωμένους τῆς πόλεως ἐγκλήματα τυγχάνοι γινόμενα, μετὰ πάσης ἀνασκοποῦντες ἕκαστα ἐπιεικείας τε καὶ δικαιοσύνης. ἐδόκει δὲ ἄριστα τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον ἡ Ῥωμαίων πόλις ὑπὸ τῆς δεκαδαρχίας ἐπιτροπευθῆναι. μάλιστα δ' αὐτῶν ἐπῃνεῖτο 2144 ἡ τοῦ δημοτικοῦ πρόνοια καὶ πρὸς ἅπαν τὸ βίαιον ὑπὲρ τῶν ἀσθενεστέρων ἀντίταξις· ἐλέχθη τε ὑπὸ πολλῶν, ὡς οὐδὲν ἔτι δεήσοι δήμου προστατῶν οὐδὲ τῶν ἄλλων ἀρχείων τῇ πόλει, μιᾶς διοικούσης ἅπαντα ἡγεμονίας σωφρόνως, ἧς ἀρχηγὸς Ἄππιος εἶναι ἐδόκει. καὶ τὸν ὑπὲρ ὅλης τῆς δεκαδαρχίας ἔπαινον ἐκεῖνος ἐφέρετο παρὰ τοῦ δήμου. οὐ γὰρ μόνον ἃ μετὰ τῶν ἄλλων ἔπραττεν ἀπὸ τοῦ κρατίστου χρηστότητος ἔφερεν αὐτῷ δόκησιν, ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον ἃ κατ' ἰδίαν ἐπιτηδεύων διετέλει, κατά τ' ἀσπασμοὺς καὶ προσαγορεύσεις φιλανθρώπους καὶ τὰς ἄλλας

τῶν πενήτων φιλοφρονήσεις. οὗτοι οἱ δέκα ἄνδρες συγγράψαντες νόμους ἔκ τε τῶν Ἑλληνικῶν νόμων καὶ τῶν παρὰ σφίσιν αὐτοῖς ἀγράφων ἐθισμῶν προὔθηκαν ἐν δέκα δέλτοις τῷ βουλομένῳ σκοπεῖν, δεχόμενοι πᾶσαν ἐπανόρθωσιν ἰδιωτῶν καὶ πρὸς τὴν
2145 κοινὴν εὐαρέστησιν ἀπευθύνοντες τὰ γραφέντα. καὶ μέχρι πολλοῦ διετέλεσαν ἐν κοινῷ μετὰ τῶν ἀρίστων ἀνδρῶν συνεδρεύοντες καὶ τὴν ἀκριβεστάτην ποιούμενοι τῆς νομοθεσίας ἐξέτασιν. ἐπειδὴ δ᾽ ἀποχρώντως ἐφαίνετο αὐτοῖς τὰ γραφέντα ἔχειν, πρῶτον μὲν τὴν βουλὴν συναγαγόντες, οὐθενὸς ἔτι μεμφομένου τοῖς νόμοις, προβούλευμα περὶ αὐτῶν ἐκύρωσαν. ἔπειτα τὸν δῆμον καλέσαντες εἰς τὴν λοχῖτιν ἐκκλησίαν, ἱερομνημόνων τε καὶ οἰωνιστῶν καὶ τῶν ἄλλων ἱερέων παρόντων καὶ τὰ θεῖα ὡς νόμος ἐξηγησαμένων, ἀνέδωκαν τοῖς λόχοις τὰς ψήφους. ἐπικυρώσαντος δὲ καὶ τοῦ δήμου τοὺς νόμους, στήλαις χαλκαῖς ἐγχαράξαντες αὐτοὺς ἐφεξῆς ἔθεσαν ἐν ἀγορᾷ, τὸν ἐπιφανέστατον ἐκλεξάμενοι τόπον. καὶ ἐπειδὴ βραχὺς ὁ τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς χρόνος ὁ λειπόμενος ἦν, συναγαγόντες τοὺς βουλευτὰς προὔθεσαν ὑπὲρ ἀρχαιρεσίων οἷα χρὴ γενέσθαι σκοπεῖν.

2146 LVIII. Πολλῶν δὲ λεχθέντων ἐνίκησεν ἡ γνώμη τῶν παραινούντων δεκαδαρχίαν αὖθις ἀποδεῖξαι τῶν κοινῶν κυρίαν. ἀτελής τε γὰρ ἡ νομοθεσία ἐφαίνετο, ὡς ἂν ἐξ ὀλίγου συντεθεῖσα χρόνου, καὶ ἐπὶ τοῖς ἤδη κεκυρωμένοις, ἵνα ἑκόντες τε καὶ ἄκοντες ἐν αὐτοῖς μένοιεν, ἐδόκει δεῖν τινος ἀρχῆς αὐτοκράτορος. τὸ δὲ μάλιστα πεῖσαν αὐτοὺς προελέσθαι τὴν δεκαδαρχίαν ἦν ἡ τῶν δημάρχων κατάλυσις, ὃ παντὸς μάλιστα ἐβούλοντο. ταῦτα μὲν ἐν κοινῷ σκοπουμένοις αὐτοῖς ἐδόκει· ἰδίᾳ δὲ οἱ πρωτεύοντες τοῦ συνεδρίου

γνώμην ἐποιοῦντο μεταπορεύεσθαι τὴν ἀρχήν, δεδιότες μὴ ταραχώδεις τινὲς ἄνθρωποι τηλικαύτης ἐξουσίας λαβόμενοι κακόν τι μέγα ἐργάσωνται. ἀγαπητῶς δὲ τοῦ δήμου τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ δεξαμένου καὶ μετὰ πλείστης προθυμίας ἐπιψηφίσαντος, αὐτοὶ μὲν οἱ δέκα ἄνδρες προεῖπον τὸν τῶν ἀρχαιρεσίων καιρόν, μετῄεσαν δὲ τὴν ἀρχὴν οἵ ἐντιμότατοί τε καὶ πρεσβύτατοι τῶν πατρικίων. ἔνθα δὴ πολὺς ὑπὸ 2147 *πάντων ἐπαινούμενος ἦν ὁ τῆς τότε δεκαδαρχίας ἡγεμὼν Ἄππιος, καὶ πᾶς ὁ δημοτικὸς ὄχλος ἐκεῖνον ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ἠξίου κατέχειν, ὡς οὐκ ἄλλου τινὸς ἄμεινον ἡγησομένου. ὁ δ' ἀναίνεσθαι μὲν προσεποιεῖτο κατ' ἀρχάς, καὶ ἀπολύειν αὐτὸν ἠξίου λειτουργίας καὶ ὀχληρᾶς καὶ ἐπιφθόνου. τελευτῶν δ' ὡς ἐλιπάρουν αὐτὸν ἅπαντες αὐτός τε ὑπέμενε μετιέναι τὴν ἀρχήν, καὶ τῶν συμπαραγγελλόντων τοὺς ἀρίστους αἰτιασάμενος οὐχ ἡδέως πρὸς ἑαυτὸν ἔχειν διὰ τὸν φθόνον τοῖς ἑαυτοῦ φίλοις συνηγωνίζετο φανερῶς. ἀποδείκνυταί τε πάλιν ἐν ἀρχαιρεσίαις λοχίτισι νομοθέτης τὸ δεύτερον· σὺν δ' αὐτῷ Κόιντος μὲν Φάβιος ὁ καλούμενος Οὐιβολανὸς ὁ τρὶς ὑπατεύσας, ἀνὴρ ἀνεπίληπτος εἰς τόδε χρόνου γενόμενος περὶ πᾶσαν ἀρετήν· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων πατρικίων, οὓς ἐκεῖνος ἠσπάζετο, Μάρκος Κορνήλιος καὶ Μάρκος* 2148 *Σέργιος καὶ Λεύκιος Μηνύκιος καὶ Τίτος Ἀντώνιος καὶ Μάνιος Ῥαβολήιος, ἄνδρες οὐ πάνυ ἐπιφανεῖς· ἐκ δὲ τῶν δημοτικῶν Κόιντος Ποιτέλλιος καὶ Καίσων Δουέλλιος καὶ Σπόριος Ὄππιος· προσελήφθησαν γὰρ καὶ οὗτοι πρὸς τοῦ Ἀππίου κολακείας ἕνεκα τῶν δημοτικῶν, διδάσκοντος ὅτι δίκαιόν ἐστι, μιᾶς ἀρχῆς κατὰ πάντων ἀποδεικνυμένης, εἶναί τι καὶ τοῦ δήμου μέρος ἐν αὐτῇ. εὐδοκιμῶν δ' ἐφ' ἅπασι τού-*

τοις καὶ δοκῶν κράτιστος εἶναι βασιλέων τε καὶ τῶν
2149 κατ' ἐνιαυτὸν ἡγησαμένων τῆς πόλεως παραλαμβάνει
πάλιν τὴν ἀρχὴν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτόν. ταῦτα
κατ' ἐκείνην ἐπράχθη τὴν δεκαδαρχίαν ὑπὸ Ῥωμαίων,
ἄλλο δ' οὐδὲν ὅ τι καὶ λόγου ἄξιον.

LVIIII. Ἐν δὲ τῷ κατόπιν ἔτει παραλαβόντες
τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν οἱ σὺν Ἀππίῳ Κλαυδίῳ δέκα
ἄνδρες εἰδοῖς μαΐαις· ἦγον δὲ τοὺς μῆνας κατὰ σε-
λήνην, καὶ συνέπιπτεν εἰς τὰς εἰδοὺς ἡ πανσέληνος·
πρῶτα μὲν ὅρκια τεμόντες ἀπόρρητα τῷ πλήθει συν-
θήκας σφίσιν αὐτοῖς ἔθεντο περὶ μηδενὸς ἀλλήλοις
ἐναντιοῦσθαι, ὅ τι δ' ἂν εἷς ἐξ αὐτῶν δικαιώσῃ,
τοῦθ' ἅπαντες ἡγεῖσθαι κύριον, τήν τ' ἀρχὴν καθέ-
ξειν διὰ βίου καὶ μηδένα παρήσειν ἕτερον ἐπὶ τὰ
πράγματα, ἰσότιμοί τε ἅπαντες ἔσεσθαι καὶ τὴν αὐ-
τὴν ἕξειν δυναστείαν, βουλῆς μὲν ἢ δήμου ψηφίσμασι
2150 σπανίως καὶ εἰς αὐτὰ τἀναγκαῖα χρώμενοι, τὰ δὲ
πλεῖστα ἐπὶ τῆς ἑαυτῶν ἐξουσίας ποιοῦντες. ἐνστά-
σης δὲ τῆς ἡμέρας, ἐν ᾗ παραλαβεῖν αὐτοὺς ἔδει τὴν
ἀρχήν, τοῖς θεοῖς προθύσαντες ἃ νόμος· ἱερὰν δὲ
ταύτην ἄγουσι Ῥωμαῖοι τὴν ἡμέραν, καὶ παντὸς μά-
λιστα ὀττεύονται μήτ' ἀκοῦσαι μηδὲν ἀηδὲς ἐν αὐτῇ
μήτ' ἰδεῖν· ἕωθεν εὐθὺς ἐξῄεσαν οἱ δέκα τὰ παρά-
σημα τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας ἅπαντες ἐπαγόμενοι. ὁ
δὲ δῆμος, ὡς ἔμαθεν αὐτοὺς οὐκέτι φυλάττοντας τὸ
δημοτικὸν ἐκεῖνο καὶ μέτριον σχῆμα τῆς ἡγεμονίας,
οὐδὲ διαμειβομένους τὰ παράσημα τῆς βασιλικῆς ἀρ-
χῆς ὡς πρότερον, εἰς πολλὴν ἦλθε δυσθυμίαν καὶ
κατήφειαν. ἐφόβουν θ' οἱ προσηρτημένοι ταῖς δέ-
σμαις τῶν ῥάβδων πελέκεις, οὓς ἔφερον οἱ προηγού-
μενοι τῶν ἀνδρῶν ἑκάστου δώδεκα ὄντες ἀναστέλ-
λοντες ἐκ τῶν στενωπῶν πληγαῖς τὸν ὄχλον, ὃ καὶ

ἐπὶ των βασιλέων ἐγένετο πρότερον. κατελύθη γὰρ εὐθὺς τὸ ἔθος τοῦτο μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν μονάρχων ὑπ' ἀνδρὸς δημοτικοῦ Ποπλίου Οὐαλερίου τὴν ἐκείνων ἐξουσίαν μεταλαβόντος, ᾧ πάντες οἱ μετ' ἐκεῖνον ὕπατοι καλοῦ πράγματος δόξαντι ἄρξαι τὰ ὅμοια πράττοντες οὐκέτι ταῖς δέσμαις τῶν ῥάβδων προσήρτων τοὺς πελέκεις, ὅτι μὴ κατὰ τὰς στρατείας καὶ τὰς ἄλλας ἐξόδους τὰς ἐκ τῆς πόλεως. πόλεμον δ' ἐξάγοντες ὑπερόριον ἢ τῶν ὑπηκόων πράγματα ἐπισκεπτόμενοι, τότε καὶ τοὺς πελέκεις ταῖς ῥάβδοις προσελάμβανον, ἵνα τὸ τῆς ὄψεως φοβερόν, ὡς κατ' ἐχθρῶν ἢ δούλων γινόμενον, ἥκιστα γένηται τοῖς πολίταις ἐπαχθές.

LX. *Τοῦτο δὴ θεασαμένοις ἅπασιν, ὃ τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας σημεῖον ἐνομίζετο εἶναι, πολὺ παρειστήκει δέος, ὥσπερ ἔφην, ἀπολωλεκέναι νομίζουσι τὴν ἐλευθερίαν καὶ δέκα βασιλεῖς ἑλομένοις ἀνθ' ἑνός. τοῦτον δὲ τὸν τρόπον καταπληξάμενοι τοὺς* 2152 *ὄχλους οἱ δέκα ἄνδρες, καὶ γνόντες ὅτι δεῖ φόβῳ τὸ λοιπὸν αὐτῶν ἄρχειν, ἑταιρίαν ἕκαστοι συνῆγον ἐπιλεγόμενοι τοὺς θρασυτάτους τῶν νέων καὶ σφίσιν αὐτοῖς ἐπιτηδειοτάτους. τὸ μὲν οὖν ἐκ τῶν ἀπόρων καὶ τῶν ταπεινῶν ταῖς τύχαις τοὺς πλείους φανῆναι τυραννικῆς κόλακας ἐξουσίας, τοῦ κοινοῦ συμφέροντος ἀλλαξαμένους τὰς αὑτῶν ὠφελείας, οὔτε παράδοξον οὔτ' ἀνέλπιστον ἦν· τὸ δὲ καὶ ἐκ τῶν πατρικίων εὑρεθῆναι συχνοὺς ἔχοντάς τι καὶ ἐπὶ πλούτῳ καὶ ἐπ' εὐγενείᾳ μέγα φρονεῖν τοὺς ὑπομένοντας συγκαταλύειν τοῖς δεκαδάρχοις τὴν τῆς πατρίδος ἐλευθερίαν, τοῦτο θαυμαστὸν ἅπασιν εἶναι ἐδόκει· οὓς ἐκεῖνοι πάσαις κολακεύοντες ἡδοναῖς, ὁπόσαι πεφύκασιν ἀνθρώπων κρατεῖν, κατὰ πολλὴν ἄδειαν*

ἦρχον τῆς πόλεως, βουλὴν μὲν ἢ δῆμον ἐν οὐδεμιᾷ μερίδι τιθέμενοι, πάντων δὲ αὐτοὶ νομοθέται τε καὶ
53 δικασταὶ γινόμενοι, καὶ πολλοὺς μὲν ἀποκτιννύντες τῶν πολιτῶν, πολλοὺς δ' ἀφαιρούμενοι τὰς ο'σίας ἀδίκως. ἵνα δ' αὐτοῖς εὐπρεπῶς τὰ γινόμενα ἔχῃ παράνομα καὶ δεινὰ ὄντα, ὡς δὴ σὺν τῷ δικαίῳ πραττόμενα, δικαστήρια ἐφ' ἑκάστῳ χρήματι ἀπεδίδοσαν· ἦσαν δε οἵ τε κατήγοροι ὑπ' αὐτῶν ἐκείνων ἐκ τῶν συγκατασκευαζόντων τὴν τυραννίδα ὑποπεμπόμενοι, καὶ τὰ δικαστήρια ἐκ τῶν ἑταίρων ἀποδεικνύμενα, οἳ διημείβοντο ἀλλήλοις καταχαριζόμενοι τὰς δίκας. πολλὰ δὲ τῶν ἐγκλημάτων καὶ οὐ τὰ ἐλαχίστου ἄξια ἐφ' ἑαυτῶν οἱ δέκα ἔκρινον, ὥστ' ἠναγκάζοντο οἱ μειονεκτοῦντες τῷ δικαίῳ προσνέμειν ἑαυτοὺς ταῖς ἑταιρίαις, ἐπειδὴ τὸ ἀσφαλὲς οὐκ ἐνῆν ἄλλως αὐτοῖς ἔχειν, καὶ ἐγένετο σὺν χρόνῳ πλεῖον τοῦ ὑγιαίνοντος ἐν τῇ πόλει τὸ διεφθαρμένον καὶ νοσοῦν. οὐδὲ γὰρ ἠξίουν ἔτι μένειν ἐντὸς τείχους, οἷς
54 τὰ πραττόμενα ὑπὸ τῶν δεκαδάρχων ἀνιαρὰ ἦν, ἀλλὰ ἀνεχώρουν εἰς τοὺς ἀγροὺς τὸν τῶν ἀρχαιρεσίων σκοποῦντες χρόνον, ὡς ἀποθησομένων τῶν δέκα ἀνδρῶν τὰς δυναστείας, ὅταν τὸν ἐνιαύσιον ἐκτελέσωσι χρόνον, καὶ ἀποδειξόντων ἑτέρας ἀρχάς. οἱ δὲ περὶ τὸν Ἄππιον τοὺς λοιποὺς συγγράψαντες νόμους ἐν δέλτοις δυσί, καὶ ταύτας ταῖς πρότερον ἐξενεχθείσαις προσέθηκαν· ἐν αἷς καὶ ὅδε ὁ νόμος ἦν, μὴ ἐξεῖναι τοῖς πατρικίοις πρὸς τοὺς δημοτικοὺς ἐπιγαμίας συνάψαι· δι' οὐδὲν ὡς ἐμοὶ δοκεῖν ἕτερον, ἢ τὸ μὴ συνελθεῖν εἰς ὁμόνοιαν τὰ ἔθνη γάμων ἐπαλλαγαῖς καὶ οἰκειοτήτων κοινωνίαις συγκερασθέντα. ὡς δὲ καὶ ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπέστη χρόνος, πολλὰ χαίρειν φράσαντες τοῖς τε πατρίοις ἐθισμοῖς καὶ τοῖς

νεωστὶ γραφεῖσι νόμοις, οὔτε βουλῆς ψήφισμα ποιήσαντες οὔτε δήμου διέμειναν ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς.

[LXI. *Μετὰ δὲ τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ὀλυμπιὰς μὲν ἦν ὀγδοηκοστὴ καὶ τρίτη, ἣν ἐνίκα στάδιον Κρί-* 215 *σων Ἱμεραῖος, ἄρχοντος Ἀθήνησι Φιλίσκου, τὴν δὲ ὑπατικὴν ἐξουσίαν ἐν Ῥώμῃ κατεῖχεν Ἄππιος μὲν Κλαύδιος τρίτον ἔτος ἡγούμενος τῆς δεκαδαρχίας κατὰ τὸ ἑξῆς, οἱ δὲ σὺν αὐτῷ τὸν παρελθόντα ἐνιαυτὸν ἄρξαντες δεύτερον ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐξουσίας μένοντες.*]

ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΛΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΝΔΕΚΑΤΟΣ.

---

156 Ἐπὶ δὲ τῆς ὀγδοηκοστῆς καὶ τρίτης ὀλυμπιάδος, ἣν ἐνίκα στάδιον Κρίσων Ἱμεραῖος, ἄρχοντος Ἀθήνησι Φιλίσκου καταλύουσι Ῥωμαῖοι τὴν τῶν δέκα ἀρχὴν ἔτη τρία τῶν κοινῶν ἐπιμεληθεῖσαν. ὃν δὲ τρόπον ἐπεχείρησαν ἐρριζωμένην ἤδη τὴν δυναστείαν ἐξελεῖν, καὶ τίνων ἀνδρῶν ἡγησαμένων τῆς ἐλευθερίας, καὶ διὰ ποίας αἰτίας καὶ προφάσεις, ἐξ ἀρχῆς ἀναλαβὼν πειράσομαι διελθεῖν, ἀναγκαίας ὑπολαμβάνων εἶναι καὶ καλὰς τὰς τοιαύτας μαθήσεις ἅπασι μὲν ὡς εἰπεῖν ἀνθρώποις, μάλιστα δὲ ὅσοι περὶ τὴν φιλόσοφον θεωρίαν καὶ περὶ τὰς πολιτικὰς διατρίβουσι πράξεις. τοῖς τε γὰρ πολλοῖς οὐκ ἀπαρκεῖ
157 τοῦτο μόνον ἐκ τῆς ἱστορίας παραλαβεῖν, ὅτι τὸν Περσικὸν πόλεμον· ἵν᾽ ἐπὶ τούτου ποιήσωμαι τὸν λόγον· ἐνίκησαν Ἀθηναῖοί τε καὶ Λακεδαιμόνιοι δυσὶ ναυμαχίαις καὶ πεζομαχίᾳ μιᾷ καταγωνισάμενοι τὸν βάρβαρον τριακοσίας ἄγοντα μυριάδας αὐτοὶ σὺν τοῖς συμμάχοις οὐ πλείους ὄντες ἕνδεκα μυριάδων· ἀλλὰ καὶ τοὺς τόπους, ἐν οἷς αἱ πράξεις ἐγένοντο, βούλονται παρὰ τῆς ἱστορίας μαθεῖν, καὶ τὰς αἰτίας

ἀκοῦσαι, δι' ἃς τὰ θαυμαστὰ καὶ παράδοξα ἔργα ἐπετέλεσαν, καὶ τίνες ἦσαν οἱ τῶν στρατοπέδων ἡγεμόνες τῶν τε βαρβαρικῶν καὶ τῶν Ἑλληνικῶν ἱστορῆσαι, καὶ μηδενὸς ὡς εἰπεῖν ἀνήκοοι γενέσθαι τῶν συντελεσθέντων περὶ τοὺς ἀγῶνας. ἥδεται γὰρ ἡ διάνοια παντὸς ἀνθρώπου χειραγωγουμένη διὰ τῶν λόγων ἐπὶ τὰ ἔργα, καὶ μὴ μόνον ἀκούουσα τῶν λεγομένων, ἀλλὰ καὶ τὰ πραττόμενα ὁρῶσα. οὐδέ γε ὅταν πολιτικὰς ἀκούσωσι πράξεις ἀρκοῦνται τὸ κεφάλαιον αὐτὸ καὶ τὸ πέρας τῶν πραγμάτων μαθόντες, ὅτι συνεχώρησαν Ἀθηναῖοι Λακεδαιμονίοις τείχη τε 21 καθελεῖν τῆς πόλεως αὐτῶν καὶ ναῦς διατεμεῖν καὶ φρουρὰν εἰς τὴν ἀκρόπολιν εἰσαγαγεῖν, καὶ ἀντὶ τῆς πατρίου δημοκρατίας ὀλιγαρχίαν τῶν κοινῶν ἀποδεῖξαι κυρίαν . . . οὔτε πρὸς αὐτοὺς ἀγῶνα ἀράμενοι, ἀλλ' εὐθὺς ἀξιοῦσι καὶ τίνες ἦσαν αἱ κατασχοῦσαι τὴν πόλιν ἀνάγκαι, δι' ἃς ταῦτα τὰ δεινὰ καὶ σχέτλια ὑπέμεινε, καὶ τίνες οἱ πείσαντες αὐτοὺς λόγοι καὶ ὑπὸ τίνων ῥηθέντες ἀνδρῶν, καὶ πάντα ὅσα παρακολουθεῖ τοῖς πράγμασι, διδαχθῆναι. τοῖς δὲ πολιτικοῖς ἀνδράσιν, ἐν οἷς ἔγωγε τίθεμαι καὶ τοὺς φιλοσόφους, ὅσοι μὴ λόγων ἀλλ' ἔργων καλῶν ἄσκησιν ἡγοῦνται τὴν φιλοσοφίαν, τὸ μὲν ἥδεσθαι τῇ παντελεῖ θεωρίᾳ τῶν παρακολουθούντων τοῖς πράγμασι κοινὸν ὥσπερ καὶ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ὑπάρχει· χωρὶς δὲ τῆς ἡδονῆς περιγίγνεται τὸ περὶ τοὺς ἀναγκαίους καιροὺς μεγάλα τὰς πόλεις ἐκ τῆς τοιαύτης ἐμπειρίας ὠφελεῖν, καὶ ἄγειν αὐτὰς ἑκούσας ἐπὶ τὰ 215 συμφέροντα διὰ τοῦ λόγου. ῥᾷστα γὰρ οἱ ἄνθρωποι τά τε ὠφελοῦντα καὶ βλάπτοντα καταμανθάνουσιν, ὅταν ἐπὶ παραδειγμάτων ταῦτα πολλῶν ὁρῶσι, καὶ τοῖς ἐπὶ ταῦτα παρακαλοῦσιν αὐτοὺς φρόνησιν

μαρτυροῦσι καὶ πολλὴν σοφίαν. διὰ ταύτας δή μοι τὰς αἰτίας ἔδοξεν ἅπαντα ἀκριβῶς διελθεῖν τὰ γενόμενα περὶ τὴν κατάλυσιν τῆς ὀλιγαρχίας, ὅσα δὴ καὶ λόγου τυχεῖν ἄξια ἡγοῦμαι. ποιήσομαι δὲ τὸν περὶ αὐτῶν λόγον οὐκ ἀπὸ τῶν τελευταίων ἀρξάμενος, ἃ δοκεῖ τοῖς πολλοῖς αἴτια γενέσθαι μόνα τῆς ἐλευθερίας, λέγω δὲ τῶν περὶ τὴν παρθένον ἁμαρτηθέντων Ἀππίῳ διὰ τὸν ἔρωτα· προσθήκη γὰρ αὕτη γε καὶ τελευταία τῆς ὀργῆς τῶν δημοτῶν αἰτία, μυρίων ἄλλων προηγησαμένων· ἀλλ' ἀφ' ὧν ἤρξατο πρῶτον ἡ πόλις ὑπὸ τῆς δεκαδαρχίας ὑβρίζεσθαι. ταῦτα πρῶτον ἐρῶ καὶ διέξειμι πάσας ἐφεξῆς τὰς ἐν τῇ τότε καταστάσει γενηθείσας παρανομίας.

II. Πρώτη μὲν οὖν ἦν ἡ δόξασα γενέσθαι τοῦ κατὰ τῆς ὀλιγαρχίας μίσους πρόφασις, ὅτι συνύφηναν τὴν δευτέραν ἀρχὴν τῇ προτέρᾳ δήμου τε ὑπεριδόντες καὶ βουλῆς καταφρονήσαντες· ἔπειθ' ὅτι τοὺς χαριεστάτους Ῥωμαίων, οἷς οὐ κατὰ γνώμην τὰ πραττόμενα ὑπ' αὐτῶν ἦν, οὓς μὲν ἐξήλαυνον ἐκ τῆς πόλεως αἰτίας ἐπιφέροντες ψευδεῖς καὶ δεινάς, οὓς δὲ ἀπεκτίννυσαν, κατηγόρους τ' αὐτοῖς ὑποπέμποντες ἐκ τῶν ἰδίων ἑταίρων καὶ τὰς δίκας ταύτας αὐτοὶ δικάζοντες· μάλιστα δ' ὅτι τοῖς θρασυτάτοις τῶν νέων, οὓς εἶχον ἕκαστοι περὶ αὐτούς, ἐφῆκαν ἄγειν καὶ φέρειν τὰ τῶν ἐναντιουμένων τῇ πολιτείᾳ. οἱ δ' ὥσπερ ἁλούσης πολέμῳ κατὰ κράτος τῆς πατρίδος οὐ τὰ χρήματα μόνον ἀφῃροῦντο τοὺς νόμῳ κτησαμένους, ἀλλὰ καὶ εἰς τὰς γαμετὰς αὐτῶν τὰς εὐμόρφους παρηνόμουν, καὶ εἰς θυγατέρας ἐπιγάμους καθ-
1 ύβριζον, καὶ πληγὰς τοῖς ἀγανακτοῦσιν ὥσπερ ἀνδραπόδοις ἐδίδοσαν· καὶ παρεσκεύασαν ὅσοις ἀφόρητα εἶναι τὰ γινόμενα ἐδόκει καταλιπόντας τὴν πα-

τρίδα γυναιξὶν ὁμοῦ καὶ τέκνοις εἰς τὰς πλησίον ἐξοικίζεσθαι πόλεις, ὑποδεχομένων αὐτοὺς Λατίνων μὲν διὰ τὸ συγγενές, Ἑρνίκων δὲ διὰ τὴν ἔναγχος γενομένην αὐτοῖς ὑπὸ Ῥωμαίων ἰσοπολιτείαν. ὥσθ᾽, ὅπερ εἰκὸς ἦν, τελευτῶντες αὐτοὶ κατελείφθησαν οἱ φιλοτύραννοι, καὶ οἷς μηδεμία τῶν κοινῶν φροντὶς ἦν. οὔτε γὰρ οἵ γε πατρίκιοι διέμενον ἐν τῇ πόλει, θωπεύειν μὲν οὐκ ἀξιοῦντες τοὺς ἡγεμόνας, ἐναντιοῦσθαι δὲ τοῖς πραττομένοις ἀδυνατοῦντες· οὐθ᾽ οἱ καταγραφέντες εἰς τὸ βουλευτικὸν συνέδριον, οὓς ἐπάναγκες ἔδει παρεῖναι ταῖς ἀρχαῖς· ἀλλὰ καὶ τούτων οἱ πλείους ἀνασκευασάμενοι πανοικεσίᾳ καὶ τὰς οἰκίας ἐρήμους ἀφέντες ἐν τοῖς ἀγροῖς διέτριβον. τοῖς δὲ ὀλιγαρχικοῖς καθ᾽ ἡδονὴν αἱ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν ἐγίνοντο φυγαί, πολλῶν μὲν καὶ ἄλλων ἕνεκα, 216 μάλιστα δὲ ὅτι τοῖς ἀκολάστοις τῶν νέων πολὺ τὸ αὔθαδες προσεγίνετο μηδ᾽ ὄψει δυναμένοις ἰδεῖν, οὓς ἔμελλον ἀσελγές τι πράττοντες αἰσχύνεσθαι.

III. Ἐρημουμένης δὲ τοῦ κρείττονος ἔθνους τῆς πόλεως καὶ τὸ ἐλεύθερον ἅπαν ἀπολωλεκυίας, ἀφορμὴν κρατίστην ὑπολαβόντες Αἰκανοὶ πολέμῳ κρατηθέντες ὑπ᾽ αὐτῆς τάς τε ὕβρεις ἃς ὑβρίσθησαν ἀποτίσασθαι καὶ τὰ ἀπολωλότα ἀναλαβεῖν, ὡς νοσούσης διὰ τὴν ὀλιγαρχίαν τῆς πόλεως καὶ οὔτε συστῆναι οὔθ᾽ ὁμονοῆσαι οὔτ᾽ ἀντιλαβέσθαι τῶν κοινῶν ἔτι δυνησομένης, παρασκευασάμενοι τὰ πρὸς τὸν πόλεμον ἐλαύνουσιν ἐπ᾽ αὐτὴν στρατεύμασι μεγάλοις. καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον Σαβῖνοι ἐμβαλόντες εἰς τὴν ὁμοτέρμονα καὶ πολλῆς γενόμενοι λείας ἐγκρατεῖς φόνων τε πολὺν ἐργασάμενοι τοῦ γεωργικοῦ πλήθους, ἐν Ἠρήτῳ κατεστρατοπέδευσαν· διέστηκε δ᾽ ἀπὸ τῆς 216 Ῥώμης ἡ πόλις αὕτη τετταράκοντα καὶ ἑκατὸν στα-

δίους πλησίον οὖσα Τιβέρεως ποταμοῦ. Αἰκανοὶ δ' εἰς τὴν Τυσκλάνων γῆν ἐμβαλόντες ὅμορον οὖσαν σφίσι, καὶ πολλὰ δῃώσαντες αὐτῆς ἐν Ἀλγίδῳ πόλει τίθενται τὸν χάρακα. ὡς δ' ἤκουσαν οἱ δέκα τὴν τῶν πολεμίων ἔφοδον, τεταραγμένοι συνεκάλουν τὰς ἑταιρείας, καὶ μετὰ τούτων ὅ τι χρὴ πράττειν ἐσκόπουν. τὸ μὲν οὖν ὑπερόριον ἀποστέλλειν στρατιάν, καὶ μὴ περιμένειν ἕως ἐπ' αὐτὴν ἔλθωσι τὴν πόλιν αἱ τῶν πολεμίων δυνάμεις, ἅπασιν ἐδόκει· παρεῖχε δ' αὐτοῖς πολλὴν ἀπορίαν, πρῶτον μὲν εἰ πάντας Ῥωμαίους ἐπὶ τὰ ὅπλα ἀκτέον καὶ τοὺς ἀπεχθομένους τῇ πολιτείᾳ· ἔπειθ' ὁποίαν τινὰ δεήσει τὴν καταγραφὴν τῶν στρατιωτῶν ποιήσασθαι, πότερον αὐθάδη
1 καὶ μισοπόνηρον οἵας ἔθος ἦν ποιεῖσθαι τοῖς τε βασιλεῦσι καὶ τοῖς ὑπάτοις, ἢ φιλάνθρωπον καὶ μέτριον. ἐδόκει τ' αὐτοῖς οὐδ' ἐκεῖνο μικρᾶς εἶναι ζητήσεως ἄξιον, τί τὸ κυρῶσον ἔσται τὴν περὶ τοῦ πολέμου γνώμην καὶ τὴν στρατολογίαν ψηφιούμενον, πότερα τὸ συνέδριον τῆς βουλῆς, ἢ τὸ δημοτικὸν πλῆθος, ἢ τούτων μὲν οὐδέτερον, ἐπεὶ δι' ὑποψίας ἦν αὐτοῖς ἑκάτερον, αὐτοὶ δὲ σφίσιν αὐτοῖς οἱ δέκα. τέλος δ' οὖν πολλὰ βουλευσάμενοι τὴν βουλὴν ἔγνωσαν συγκαλεῖν, καὶ ποιεῖν ὅπως τόν τε πόλεμον αὐτοῖς ἐκείνη ψηφιεῖται καὶ τὴν τοῦ στρατοῦ καταγραφὴν ἐπιτρέψει ποιήσασθαι. εἰ γὰρ ὑπὸ τοῦ συνεδρίου κυρωθείη τούτων ἑκάτερον, πρῶτον μὲν εὐπειθεῖς ἔσεσθαι πάντας ὑπελάμβανον, ἄλλως τε καὶ τῆς δημαρχικῆς ἐξουσίας καταλελυμένης, ᾗ μόνῃ κατὰ νόμους ἐξῆν ἐναντιοῦσθαι τοῖς ὑπὸ τῶν δυναστῶν ἐπιταττομένοις· ἔπειτ' αὐτοὶ [εἴ τι] δόξειν ὑπηρετοῦντες τῇ βουλῇ, καὶ τὰ κυρωθέντα ὑπ' ἐκείνης πράττοντες κατὰ νόμους ἀνειληφέναι τὴν ἐξουσίαν τοῦ πολέμου.

IIII. *Ταῦτα βουλευσάμενοι, καὶ παρασκευάσαν-* 21[illegible] *τες ἐκ τῶν ἰδίων ἑταίρων καὶ συγγενῶν τοὺς ἀγορεύσοντας ἐν τῷ συνεδρίῳ τὰς συμφερούσας αὐτοῖς γνώμας καὶ τοῖς μὴ ταὐτὰ προαιρουμένοις ἐναντιωσομένους, προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν, καὶ παραστησάμενοι τὸν κήρυκα τοὺς βουλεύσοντας ἐξ ὀνόματος καλεῖν ἐκέλευον. ὑπήκουε δ' αὐτοῖς τῶν μετρίων οὐδείς. πολλάκις δὲ τοῦ κήρυκος βοῶντος καὶ παριόντος οὐδενός, εἰ μὴ τῶν κολακευόντων τὴν ὀλιγαρχίαν, ἐν οἷς ἦν τὸ κάκιστον τῆς ὀλιγαρχίας μέρος, οἱ μὲν τότ' ὄντες κατὰ τὴν ἀγορὰν ἐθαύμαζον, εἰ περὶ μηδενὸς πώποτε συγκαλέσαντες τὴν βουλήν, τότε πρῶτον ἔγνωσαν ὅτι καὶ συνέδριον ἦν τι παρὰ Ῥωμαίοις ἀγαθῶν ἀνδρῶν, οὓς ἔδει περὶ τῶν κοινῶν σκοπεῖν. οἱ δέκα δὲ ταῦθ' ὁρῶντες ἐπεχείρησαν μὲν ἐκ τῶν οἰκιῶν τοὺς βουλευτὰς ἄγειν· πυθόμενοι δὲ τὰς πλείους ἐρήμους ἀφειμένας εἰς τὴν ὑστεραίαν ἀνεβάλοντο. ἐν* 21[illegible] *δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ πέμποντες ἐπὶ τοὺς ἀγρούς, ἐκεῖθεν αὐτοὺς ἐκάλουν. πληρωθέντος δὲ τοῦ συνεδρίου προελθὼν Ἄππιος, ὁ τῆς δεκαδαρχίας ἡγεμών, ἀπήγγειλεν ὅτι διχόθεν ἀπό τε Αἰκανῶν καὶ Σαβίνων ἐπάγεται τῇ Ῥώμῃ πόλεμος· καὶ διεξῆλθε λόγον ἐκ πολλῆς συγκείμενον ἐπιμελείας, οὗ τέλος ἦν, ψηφίσασθαι στρατοῦ καταγραφὴν καὶ διὰ τάχους ποιῆσαι τὴν ἔξοδον, ὡς οὐ διδόντος ἀναστροφὴν τοῦ καιροῦ. ταῦτα δὲ αὐτοῦ λέγοντος ἀνίσταται Λεύκιος Οὐαλέριος ἐπωνυμίαν Ποτῖτος, ἀνὴρ μέγα φρονῶν ἐπὶ τοῖς προγόνοις· πατὴρ μὲν γὰρ αὐτῷ Οὐαλέριος ἦν ὁ τὸν Σαβῖνον Ἑρδώνιον ἐκπολιορκήσας κατέχοντα τὸ Καπετώλιον, καὶ τὸ μὲν φρούριον ἀνακτησάμενος, αὐτὸς δ' ἐκ τῆς μάχης ἀποθανών· πάππος δὲ πρὸς πατρὸς Ποπλικόλας ὁ τοὺς βασιλεῖς ἐκβαλὼν καὶ τὴν ἀριστο-*

κρατίαν καταστησάμενος. παριόντα δ' αὐτὸν ἔτι καταμαθὼν Ἄππιος καὶ καθ' ἑαυτόν τι λέξειν ἐλπί-
167 σας· Οὐχ οὗτος ὁ τόπος, εἶπεν, ὦ Οὐαλέριε, σός, οὐδὲ προσήκει σοι νῦν λέγειν· ἀλλ' ὅταν οἵδε οἱ πρεσβύτεροι καὶ τιμιώτεροί σου γνώμην ἀγορεύσωσι, τότε καὶ σὺ κληθεὶς ἐρεῖς ὅ τι σοι δοκεῖ· νῦν δὲ σιώπα καὶ κάθησο. Ἀλλ' οὐχ ὑπὲρ τούτων, ἔφησεν ὁ Οὐαλέριος, ἀνέστηκα ἐρῶν, ἀλλ' ὑπὲρ ἄλλων μειζόνων τε καὶ ἀναγκαιοτέρων, ὑπὲρ ὧν οἴομαι δεῖν πρῶτον ἀκοῦσαι τὴν βουλήν. εἴσονται δ' ἐξ ὧν ἂν ἀκούσωσιν οὗτοι, πότερα ταῦτ' ἐστὶν ἀναγκαιότερα τοῖς κοινοῖς, ὑπὲρ ὧν ὑμεῖς αὐτοὺς συγκεκλήκατε, ἢ τὰ ὑπ' ἐμοῦ λεχθησόμενα. ἀλλὰ μή μ' ἀποστέρει λόγου βουλευτὴν ὄντα καὶ Οὐαλέριον καὶ περὶ σωτηρίας τῆς πόλεως λέγειν βουλόμενον. ἐὰν δὲ φυλάττῃς τὴν συνήθη πρὸς ἅπαντας αὐθάδειαν, δημάρχους μὲν ποίους ἐπικαλέσομαι; καταλέλυται γὰρ ἡ τῶν κατισχυομένων πολιτῶν βοήθεια ὑφ' ὑμῶν. καίτοι τίνος ἔλαττον τοῦτο κακόν, ὅτι Οὐαλέριος ὢν Ποτῖτος ὡς εἷς τῶν ἐλαχίστων οὐκ ἔχω τὸ ἴσον, ἀλλὰ δημαρχι-
168 κῆς ἐξουσίας δέομαι; οὐ μὴν ἀλλ' ἐπεὶ τῆς ἀρχῆς ἐκείνης ἀπεστερήμεθα, ὑμᾶς τοὺς ἅμα τούτῳ παρειληφότας καὶ τὴν ἐκείνης ἐξουσίαν τῆς ἀρχῆς καὶ δυναστεύοντας τῆς πόλεως ἅπαντας καλῶ· καὶ οὐκ ἀγνοῶ μέν, ὅτι διὰ κενῆς τοῦτο ποιῶ, φανερὰν δὲ βούλομαι πᾶσι γενέσθαι τὴν συνωμοσίαν ὑμῶν, ὅτι συγκεχύκατε τὰ τῆς πόλεως καὶ μίαν ἅπαντες γνώμην ἔχετε· μᾶλλον δὲ σὲ μόνον ἐπικαλοῦμαι, Κόιντε Φάβιε Οὐιβολανέ, τὸν ἐπὶ ταῖς τρισὶν ὑπατείαις κοσμούμενον, εἰ τὸν αὐτὸν νοῦν ἔτι ἔχεις. ἀλλ' ἀνίστασο καὶ βοήθει τοῖς κατισχυομένοις· εἰς σὲ γὰρ ἀποβλέπει τὸ συνέδριον.

V. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπεν [Λεύκιος Οὐαλέριος,] ὁ Φάβιος ἐκάθητο ὑπ' αἰσχύνης οὐδὲν ἀποκρινόμενος, Ἄππιος δὲ καὶ οἱ λοιποὶ δέκα πάντες ἀναπηδήσαντες ἐκώλυον αὐτὸν λέγειν. θορύβου δὲ πολλοῦ κατασχόντος τὸ συνέδριον, καὶ τῶν μὲν πλείστων ἀγανα- 2169 κτούντων, τῶν δ' ἐκ τῆς ἑταιρείας αὐτοὺς λέγειν ὀρθῶς ἡγουμένων, ἀνίσταται Μάρκος Ὁράτιος ὁ Βαρβάτος ἐπικληθεὶς ἀπόγονος Ὁρατίου τοῦ συνυπατεύσαντος Ποπλίῳ Οὐαλερίῳ Ποπλικόλᾳ μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν βασιλέων, ἀνὴρ καὶ τὰ πολεμικὰ δεινὸς καὶ λέγειν οὐκ ἀδύνατος, Οὐαλερίῳ δ' ἐκ παλαιοῦ φίλος· ὃς οὐκέτι κατασχὼν τὴν χολὴν ἔφησε· Θᾶττόν μ' ἀναγκάσετε, Ἄππιε, τοὺς χαλινοὺς διαρρῆξαι, οὐκέτι μετριάζοντες, ἀλλὰ τὸν Ταρκύνιον ἐκεῖνον ἐνδυόμενοι, οἵ γ' οὐδὲ λόγου τυχεῖν ἐᾶτε τοὺς περὶ σωτηρίας τῶν κοινῶν βουλομένους λέγειν. πότερον ὑμῶν ἐξελήλυθεν ἐκ τῆς διανοίας, ὅτι σώζονται μὲν οἱ Οὐαλερίων ἀπόγονοι τῶν ἐξελασάντων τὴν τυραννίδα, λείπεται δὲ διαδοχὴ τῆς Ὁρατίων οἰκίας, οἷς πάτριόν ἐστιν ὁμόσε χωρεῖν τοῖς καταδουλουμένοις τὴν πατρίδα καὶ μετὰ τῶν ἄλλων καὶ μόνοις; ἢ τοσαύτην κατεγνώκατε καὶ ἡμῶν καὶ τῶν ἄλλων Ῥωμαίων 2170 ἀνανδρίαν, ὥστ' ἀγαπήσειν ἐάν τις ἐᾷ ζῆν ἡμᾶς ὁπωσδήποτε, ὑπὲρ ἐλευθερίας δὲ καὶ παρρησίας μήτ' ἐρεῖν μήτε πράξειν μηθέν; ἢ μεθύετε τῷ μεγέθει τῆς ἐξουσίας; ὑμεῖς Οὐαλερίου λόγον ἀφελεῖσθε ἢ τῶν ἄλλων τινὸς βουλευτῶν, τίνες ὄντες ἢ ποίαν ἀρχὴν ἔχοντες νόμιμον; οὐκ εἰς ἐνιαυτὸν ἀπεδείχθητε τῶν κοινῶν προστάται; οὐ παρῴχηκεν ὁ τῆς ἀρχῆς ὑμῶν χρόνος; οὐκ ἰδιῶται τῷ νόμῳ γεγόνατε; ταῦτ' εἰς τὸν δῆμον βουλεύεσθε ἐξενεγκεῖν. τί γὰρ δὴ καὶ τὸ κωλῦον ἔσται τὸν βουλόμενον ἡμῶν τὴν ἐκκλησίαν

συγκαλεῖν, καὶ τῆς ἐξουσίας ὑμῶν, ἣν παρὰ τοὺς νόμους ἔχετε, κατηγορεῖν; ἀνάδοτε τοῖς πολίταις ψῆφον ὑπὲρ αὐτοῦ τούτου, πότερα δεῖ μένειν τὴν δεκαδαρχίαν ὑμῶν, ἢ τὰς πατρίους πάλιν ἀποδείκνυσθαι ἀρχάς· [καὶ εἰ τοῦτο] μανεὶς ὁ δῆμος ὑπομείνῃ, πάλιν τὴν αὐτὴν κατάστασιν ἔχετε [καὶ εἰ] κωλύετε
2171 λέγειν, ὁπόσα βούλεταί τις ὑπὲρ τῆς πατρίδος, [καὶ εἰ δίκαια ταῦτα δόξωσιν]. ἄξιοι γὰρ ἂν εἴημεν καὶ ταῦτα καὶ ἔτι χείρονα τούτων πάσχειν ἐφ' ὑμῶν γενόμενοι καὶ ῥυπαίνοντες αἰσχρῷ βίῳ τὰς ἑαυτῶν τε καὶ τῶν προγόνων ἀρετάς.

VI. Ἔτι δ' αὐτοῦ λέγοντος οἱ δέκα περιίστανται κεκραγότες καὶ τὴν δημαρχικὴν ἐπανασείοντες ἐξουσίαν, καὶ ῥίψειν αὐτὸν ἀπειλοῦντες κατὰ τῆς πέτρας εἰ μὴ σιωπήσει. ἐφ' ᾧ πάντες ἀνέκραγον, ὡς καταλυομένης σφῶν τῆς ἐλευθερίας, καὶ μεστὸν ἦν ἀγανακτήσεώς τε καὶ θορύβου τὸ συνέδριον. τοῖς μέντοι δέκα μετέμελεν εὐθέως τῆς τε κωλύσεως τοῦ
2172 λέγειν καὶ τῆς ἀπειλῆς, ὡς ἠρεθισμένην εἶδον ἐπὶ τῷ πράγματι τὴν βουλήν· ἔπειτα προσελθὼν ἐξ αὐτῶν Ἄππιος καὶ δεηθεὶς τῶν θορυβούντων βραχὺν ἐπισχεῖν χρόνον, ἐπειδὴ κατέστειλε τὸ ταραττόμενον α'τῶν· Οὐδένα ὑμῶν, εἶπεν, ἀποστεροῦμεν, ὦ ἄνδρες βουλευταί, λόγου, ὃς ἂν ἐν τῷ προσήκοντι καιρῷ λέγῃ· τοὺς δ' ἐπιπολάζοντας καὶ πρὶν ἢ κληθῆναι προεξανισταμένους εἴργομεν. μηδὲν οὖν ἀγανακτεῖτε, καὶ γὰρ Ὁρατίῳ καὶ Οὐαλερίῳ καὶ παντὶ ἄλλῳ γνώμην ἀγορεύειν ἐν τῷ ἑαυτοῦ τόπῳ κατὰ τὸν ἀρχαῖον ἐθισμὸν καὶ κόσμον ἀποδώσομεν, ἐάν γε περὶ ὧν βουλευσόμενοι συνεληλύθατε, περὶ τούτων λέγωσι, καὶ μηδὲν ἔξω. ἐὰν δὲ δημαγωγῶσιν ὑμᾶς καὶ διαστασιάζωσι τὴν πόλιν, τὰ μὴ πρὸς τὸ πρᾶγμα

δημηγοροῦντες οὐδὲν .... τότε· τὴν δ' ἐξουσίαν τοῦ κωλύειν τοὺς ἀκοσμοῦντας, ὦ Μάρκε Ὁράτιε, παρὰ τοῦ δήμου λαβόντες ἔχομεν, ὅτε ἡμῖν καὶ τὴν τῶν ὑπάτων καὶ τὴν τῶν δημάρχων ἀρχὴν ἐψηφίσαντο, καὶ ὁ χρόνος αὐτῆς οὔπω παρελήλυθεν, ὥσπέρ σοι 2173 δοκεῖ. οὐ γὰρ εἰς ἐνιαυτὸν ἀπεδείχθημεν, οὐδ' εἰς ἄλλον τινὰ χρόνον ὡρισμένον, ἀλλ' ἕως ἂν καταστησώμεθα πᾶσαν τὴν νομοθεσίαν. συντελέσαντες οὖν ὅσα κατὰ νοῦν ἔχομεν, καὶ κυρώσαντες τοὺς λοιποὺς νόμους, τότ' ἀποθησόμεθα τὴν ἀρχὴν καὶ λόγον τῶν πεπραγμένων τοῖς βουλομένοις ὑμῶν ὑφέξομεν. τέως δ' οὐδὲν ἐλαττώσομεν οὐδὲ τῆς ὑπατικῆς ἐξουσίας οὐδὲ τῆς δημαρχικῆς. περὶ δὲ τοῦ πολέμου, τίνα χρὴ τρόπον ὡς τάχιστα καὶ κάλλιστα τοὺς ἐχθροὺς ἀμύνασθαι, γνώμας ἀξιῶ παριόντας ὑμᾶς λέγειν, πρώτους μέν, ὥσπερ ἐστὶ σύνηθες καὶ πρέπον ὑμῖν, τοὺς πρεσβυτέρους· ἔπειτα τοὺς μέσους, τελευταίους δὲ τοὺς νεωτάτους.

VII. Ταῦτ' εἰπὼν πρῶτον μὲν ἐκάλει τὸν ἑαυτοῦ θεῖον Γάιον Κλαύδιον. ὁ δ' ἀναστὰς τοιαύτην διέθετο δημηγορίαν· Ἐπειδή με πρῶτον γνώμην ἀποφαίνεσθαι ἀξιοῖ Ἄππιος, ὦ βουλή, τιμῶν διὰ τὸ συγγενές, ὥσπερ αὐτῷ προσήκει, καὶ δεῖ με ἃ φρονῶ περὶ τοῦ πολέμου τοῦ πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους εἰπεῖν, πρὶν ἀποδείξασθαι τὴν ἐμαυτοῦ διάνοιαν, 2174 ἐκεῖνο βουλοίμην ἂν ὑμᾶς ἐξετάσαι, τίσιν ἐπαρθέντες ἐλπίσιν Αἰκανοὶ καὶ Σαβῖνοι πόλεμον ἐπενεγκεῖν ἐτόλμησαν ἡμῖν καὶ τὴν χώραν ἐπιόντες λεηλατεῖν, οἱ τέως ἀγαπῶντες καὶ τοῖς θεοῖς πολλὴν χάριν εἰδότες, εἴ τις αὐτοὺς εἴα τὴν ἑαυτῶν ἔχειν ἀσφαλῶς. ἐὰν γὰρ τοῦτο μάθητε, καὶ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολέμου τοῦ πρὸς αὐτοὺς ἥτις ἔσται κρατίστη μαθήσεσθε.

*ἐκεῖνοι τοίνυν ἀκούσαντες, ὅτι σεσάλευται καὶ νοσεῖ
τὸ πάτριον ἡμῶν πολίτευμα ἐκ πολλοῦ, καὶ τοῖς
προεστηκόσι τῶν κοινῶν οὔτε ὁ δῆμος εὔνους ἐστὶν
οὔτε οἱ πατρίκιοι, καὶ οὐ μάτην ἀκούσαντες· τὸ γὰρ
ἀληθὲς οὕτως ἔχει, τὰς δ' αἰτίας ἐπισταμένοις ὑμῖν
οὐδὲν δέομαι λέγειν· ὑπέλαβον, εἴ τις ἔξωθεν ἡμᾶς
κατάσχοι πόλεμος ἅμα τοῖς ἐντὸς τείχους κακοῖς, καὶ
δόξειε ταῖς ἀρχαῖς δύναμιν ἐξάγειν τὴν προπολεμή-
σουσαν τῆς γῆς, οὔτε τοὺς πολίτας ἐπὶ τὸν στρατιω-
τικὸν ὅρκον ἅπαντας ἥξειν ἐκ προθυμίας ὡς πρότε-*
2175 *ρον, ἀπεχθῶς διακειμένους πρὸς τὰς ἀρχάς· οὔτε
τοὺς ἡγεμόνας ταῖς ἐκ τῶν νόμων τιμωρίαις χρήσε-
σθαι κατὰ τῶν μὴ παραγενομένων, δεδοικότας μή τι
μεῖζον ἐργάσωνται κακόν· τούς τε ὑπακούσαντας καὶ
τὰ ὅπλα λαβόντας ἢ καταλείψειν τὰ σημεῖα, ἢ παρα-
μένοντας ἐθελοκακήσειν ἐν τοῖς ἀγῶσιν. ὧν οὐδὲν
ἔξω τοῦ εἰκότος ἤλπισαν· ὅταν μὲν γὰρ ὁμονοοῦσα
πόλις ἅπτηται πολέμου, καὶ τὸ αὐτὸ συμφέρον ἅπασι
φαίνηται τοῖς τ' ἄρχουσι καὶ τοῖς ἀρχομένοις, μετὰ
προθυμίας ἅπαντες ἐπὶ τὰ δεινὰ χωροῦσι καὶ οὔτε
πόνον οὔτε κίνδυνον οὐδένα ὀκνοῦσιν. ὅταν δὲ νο-
σοῦσα ἐν αὐτῇ πρὶν ἢ τὰ ἔνδον καταστήσασθαι τοῖς
ὑπαιθρίοις ὁμόσε χωρῇ πολεμίοις, καὶ παραστῇ τῷ
μὲν πλήθει λογισμός, ὅτι οὐχ ὑπὲρ οἰκείων ἀγαθῶν
κακοπαθοῦσιν, ἀλλ' ἵνα βεβαιότερον αὐτῶν ἕτεροι
ἄρχωσι, τοῖς δ' ἡγεμόσιν, ὅτι πολέμιον ἔχουσιν οὐχ
ἧττον τοῦ ἀντιπάλου τὸ οἰκεῖον, νοσεῖ τὰ ὅλα καὶ
πᾶσα ἱκανὴ δύναμις τὰ τοιαῦτα στρατεύματα κατα-
γωνίσασθαι καὶ φθεῖραι.*

2176 VIII. *Ταῦτ' ἐστιν, ὦ βουλή, τὰ Σαβίνων τε καὶ
Αἰκανῶν ἐνθυμήματα, οἷς πεπιστευκότες ἐμβεβλή-
κασιν ἡμῶν εἰς τὴν γῆν. ἐὰν μὲν οὖν ἀγανακτήσαν-*

τες τῷ καταφρονεῖσθαι πρὸς αὐτῶν ἐπαρθέντων ὡς ἔχομεν ὀργῆς δύναμιν ἐξαγαγεῖν ἐπ' αὐτοὺς ψηφισώμεθα, δέδοικα μὴ ταῦθ' ἡμῖν ἃ προὔλαβον ἐκεῖνοι συμβῇ, μᾶλλον δ' εὖ οἶδα συμβησόμενα. ἐὰν δὲ τὰ πρῶτα καὶ ἀναγκαιότατα καταστησώμεθα· ταῦτα δ' ἐστὶν ἥ τ' εὐκοσμία τοῦ πλήθους καὶ τὸ πᾶσι ταὐτὰ συμφέροντα φαίνεσθαι· ἐξελάσαντες μὲν ἐκ τῆς πόλεως τὴν νῦν ἐπιχωριάζουσαν ὕβριν καὶ πλεονεξίαν, ἀποδόντες δὲ τὸ ἀρχαῖον σχῆμα τῇ πολιτείᾳ, πτήξαντες οἱ νῦν θρασεῖς καὶ τὰ ὅπλα ῥίψαντες ἐκ τῶν χειρῶν ἥξουσιν ὡς ἡμᾶς οὐκ εἰς μακράν, τάς τε βλάβας ἐπανορθούμενοι καὶ περὶ διαλλαγῶν διαλεγόμενοι, ὑπάρξει τε ἡμῖν ὃ πάντες ἂν εὔξαιντο οἱ νοῦν ἔχοντες, χωρὶς ὅπλων διαπεπολεμηκέναι τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον. ταῦτα δὴ λογισαμένους ἡμᾶς 2177 οἴομαι δεῖν τὴν μὲν ὑπὲρ τοῦ πολέμου βουλήν, ἐπειδὴ ταραχωδῶς ἡμῖν ἔχει τὰ ἐντὸς τείχους, ἐᾶσαι κατὰ τὸ παρόν, ὑπὲρ ὁμονοίας δὲ καὶ κόσμου πολιτικοῦ προθεῖναι τῷ βουλομένῳ λέγειν. οὐ γὰρ ἐξεγένετο ἡμῖν, πρὶν εἰς τοῦτον καταστῆναι τὸν πόλεμον, ὑπὸ τῆσδε τῆς ἀρχῆς κληθεῖσι [σκοπεῖν] περὶ τῶν ἐν τῇ πόλει πραγμάτων [οὕτως ἐχόντων, καὶ] εἴ τι μὴ καλῶς ἔχει τῶν γιγνομένων διαγνῶναι. πολλῆς γὰρ ἂν ἐπιτιμήσεως ἄξιος ἦν, εἴ τις τοῦτον ἀφεὶς τὸν καιρόν, ἐν ἐκείνῳ λέγειν ὑπὲρ αὐτῶν ἠξίου· οὐδ' ἂν ἔχοι τις εἰπεῖν βεβαίως, ὅτι τοῦτον ὑπερβαλόμενοι τὸν καιρὸν ὡς οὐκ ἐπιτήδειον ἑτέρου δυνησόμεθα τυχεῖν ἐπιτηδειοτέρου. εἰ γὰρ ἐκ τῶν γεγονότων τὰ μέλλοντα ἔσεσθαι βούλεταί τις εἰκάζειν, πολὺς ὁ μετὰ τοῦτον ἔσται χρόνος, ἐν ᾧ περὶ οὐδενὸς τῶν κοινῶν συνελευσόμεθα βουλευσόμενοι.

VIIII. Ἀξιῶ δ' ὑμᾶς, Ἄππιε, τοὺς προεστηκότας 2178

τῆς πόλεως, καὶ τὸ κοινὸν ἁπάντων συμφέρον, οὐχὶ
τὸ ὑμῖν αὐτοῖς ἰδίᾳ λυσιτελοῦν, ὀφείλοντας σκοπεῖν,
ἐάν τι τῶν ἀληθῶν μετὰ παρρησίας ἀλλὰ μὴ καθ'
ἡδονὰς τὰς ὑμετέρας λέγω, μή μοι διὰ τοῦτ' ἀπέ-
χθεσθαι, ἐνθυμουμένους, ὅτι οὐκ ἐπὶ λοιδορίᾳ καὶ
προπηλακισμῷ τῆς ἀρχῆς ὑμῶν ποιήσομαι τοὺς λό-
γους, ἀλλ' ἵνα δείξας ἐν οἵῳ κλύδωνι τὰ πράγματα
σαλεύει τῆς πόλεως τὴν σωτηρίαν καὶ ἐπανόρθωσιν
αὐτῶν ἥτις ἔσται φράσω. ἅπασι μὲν γὰρ ἴσως, ὅσοις
τῇ πατρίδι ..... δωσιν, ἀναγκαῖός ἐστιν ὁ περὶ τῶν
κοινῇ συμφερόντων λόγος, μάλιστα δ' ἐμοί. πρῶτον
μὲν γάρ, ὅτι γνώμης ἄρχειν ἠξίωμαι, διὰ τιμήν·
αἰσχύνη δὲ καὶ μωρία πολλὴ πρῶτον ἀναστάντα μὴ
οὐχ ἃ δεῖ πρῶτον ἐπανορθώσασθαι λέγειν. ἔπειθ'
ὅτι συμβέβηκεν ὄντι θείῳ πρὸς πατρὸς Ἀππίου τοῦ
2179 προεστηκότος τῆς δεκαδαρχίας ἥδεσθαί τε πάντων
μάλιστα, ὅταν εὖ τὰ κοινὰ ὑπ' αὐτῶν ἐπιτροπεύηται,
καὶ ἀνιᾶσθαι παντὸς ὁτουδήτινος μᾶλλον, ὅταν μὴ
καλῶς. πρὸς δὲ τούτοις, ὅτι τοιαύτην πολιτείας
διαδέδεγμαι προαίρεσιν ἐκ προγόνων, τὰ κοινὰ συμ-
φέροντα πρὸ τῶν οἰκείων λυσιτελῶν αἱρεῖσθαι, καὶ
μηδένα κίνδυνον ἴδιον ὑπολογίζεσθαι· ἣν οὐκ ἂν
προδοίην ἑκὼν εἶναι. ...... δέ μοι ταύτην τοῦ βίου
προαίρεσιν, καὶ οὐκ ἂν καταισχύναιμι τὰς ἐκείνων
τῶν ἀνδρῶν ἀρετάς. περὶ μὲν οὖν τῆς καθεστώ-
σης πολιτείας, ὅτι πονηρῶς ἡμῖν ἔχει, καὶ δυ-
σχεραίνουσιν ὀλίγου δεῖν πάντες οἱ τὰ κοινὰ διοι-
κοῦντες αὐτῇ, μέγιστον ὑμῖν γενέσθω τεκμήριον, ὃ
2180 μόνον οὐδ' ἀγνοεῖν ἔξεστιν ὑμῖν, ὅτι φεύγουσιν ἐκ
τῆς πόλεως ὁσημέραι καταλιπόντες τὰς πατρῴας
ἑστίας οἱ χαριέστατοι τῶν δημοτικῶν, οἱ μὲν εἰς
τὰς πλησιοχώρους πόλεις ἅμα γυναιξὶ καὶ τέκνοις

μετατιθέμενοι τὰς οἰκήσεις, οἱ δ' εἰς τοὺς πλεῖστον ἀπέχοντας τῆς πόλεως ἀγρούς· καὶ οὐδὲ τῶν πατρικίων πολλοὶ τὰς κατ' ἄστυ ποιοῦνται διατριβάς, ὡς πρότερον, ἀλλὰ καὶ τούτων οἱ πλείους τὸν βίον ἔχουσιν ἐν τοῖς ἀγροῖς. καὶ τί δεῖ περὶ τῶν ἄλλων λέγειν, ὅτε καὶ τῶν βουλευτῶν ὀλίγοι μέν τινες οἱ κατὰ συγγένειαν ἢ φιλίαν προσήκοντες ὑμῖν ὑπομένουσιν ἐντὸς τείχους, οἱ δ' ἄλλοι τὴν ἐρημίαν ποθεινοτέραν ἡγοῦνται τῆς πατρίδος; ὅτε γοῦν ἐδέησεν ὑμῖν καλέσαι τὴν βουλήν, ἐκ τῶν ἀγρῶν καθ' ἕνα καλούμενοι συνῆλθον, οἷς πάτριον ἦν ἅμα ταῖς ἀρχαῖς διὰ φυλακῆς ἔχειν τὴν πατρίδα, καὶ μηδενὸς ἀπολείπεσθαι τῶν κοινῶν. ἆρ' οὖν τἀγαθὰ φεύγοντας ὑπο- 2181
λαμβάνετε ἀνθρώπους καταλιπεῖν τὰς ἑαυτῶν πατρίδας, ἢ τὰ κακά; ἐγὼ μὲν γὰρ οἴομαι τὰ κακά. καίτοι τίνος ἔλαττον οἴεσθ' εἶναι κακοῦ πόλει, καὶ ταῦτα τῇ Ῥωμαίων, ᾗ πολλῶν οἰκείων δεῖ σωμάτων, εἰ μέλλει βεβαίως καθέξειν τὴν τῶν προσοίκων ἀρχήν, τὸ καταλείπεσθαι μὲν ὑπὸ τῶν δημοτικῶν, ἐρημοῦσθαι δ' ὑπὸ τῶν πατρικίων, οὔτε πολέμου κατασχόντος αὐτὴν οὔτε νόσου λοιμικῆς οὔτ' ἄλλης θεηλάτου συμφορᾶς οὐδεμιᾶς;

X. Βούλεσθε οὖν ἀκοῦσαι τίνες εἰσὶν αἱ βιαζόμεναι τοὺς ἀνθρώπους καταλιπεῖν αἰτίαι ἱερὰ καὶ τάφους προγόνων καὶ ἐξερημοῦν ἐφέστια καὶ κτήσεις πατέρων καὶ πᾶσαν ἡγεῖσθαι γῆν ἀναγκαιοτέραν τῆς πατρίδος; οὐ γὰρ ἄτερ αἰτίας ταῦθ' οὕτως ἔχει. ἐγὼ δὴ φράσω πρὸς ὑμᾶς καὶ οὐκ ἀποκρύψομαι. κατηγορίαι γίνονται τῆς ἀρχῆς ὑμῶν, Ἄππιε, πολλαὶ καὶ παρὰ πολλῶν· εἰ μὲν ἀληθεῖς ἢ ψευδεῖς οὐδὲν δέομαι ζητεῖν ἐν τῷ παρόντι, γίνονται δ' οὖν ὅμως. οὐδείς, ὡς εἰπεῖν, ἔξω τῶν ὑμετέρων ἑταίρων οἰκείως 2182

τοῖς παροῦσιν ἔχει πράγμασιν. οἱ μέν γ' ἀγαθοὶ καὶ ἐξ ἀγαθῶν, οἷς προσῆκεν ἱερᾶσθαί τε καὶ ἄρχειν καὶ τὰς ἄλλας καρποῦσθαι τιμάς, ἃς οἱ πατέρες αὐτῶν ἐκαρποῦντο, ἄχθονται τούτων ἀπελαυνόμενοι καὶ δι' ὑμᾶς τὰς προγονικὰς ἀξιώσεις ἀπολωλεκότες. οἱ δὲ τὴν διὰ μέσου τάξιν ἔχοντες ἐν τῇ πόλει καὶ τὴν ἀπράγμονα διώκοντες ἡσυχίαν, χρημάτων τ' ἀδίκους ἁρπαγὰς ἐγκαλοῦσιν ὑμῖν καὶ προπηλακισμοὺς εἰς γαμετὰς ὀδύρονται γυναῖκας καὶ παροινίας εἰς θυγατέρας ἐπιγάμους καὶ ἄλλας ὕβρεις πολλὰς καὶ χαλεπάς. τὸ δὲ πενέστατον τοῦ δημοτικοῦ μέρος οὔτ' ἀρχαιρεσιῶν ἔτι κύριον γινόμενον οὔτε ψηφοφοριῶν οὔτ' εἰς ἐκκλησίας καλούμενον οὔτ' ἄλλης πολιτικῆς
2183 φιλανθρωπίας μεταλαμβάνον οὐδεμιᾶς, διὰ ταῦτα πάνθ' ὑμᾶς μισεῖ καὶ τυραννίδα καλεῖ τὴν ἀρχήν.

XI. Πῶς οὖν ἐπανορθώσετε ταῦτα, καὶ παύσεσθε δι' αἰτίας παρὰ τοῖς πολίταις ὄντες; τοῦτο γάρ ἐσθ' ὑπόλοιπον εἰπεῖν. εἰ προβούλευμα τοῦ συνεδρίου ποιήσαντες ἀποδοίητε τῷ δήμῳ διαγνῶναι, πότερον αὐτῷ δοκεῖ πάλιν ὑπάτους τ' ἀποδεικνύναι καὶ δημάρχους καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς τὰς πατρίους, ἢ μένειν ἐπὶ τῆς αὐτῆς πολιτείας. ἐάν τε γὰρ ἀγαπῶσι Ῥωμαῖοι πάντες ὀλιγαρχούμενοι, καὶ μένειν ὑμᾶς ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐξουσίας ψηφίσωνται, κατὰ νόμον ἕξετε καὶ οὐ βίᾳ τὴν ἀρχήν· ἐάν τε ὑπάτους πάλιν αἱρεῖσθαι βουληθῶσι καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς ὡς πρότερον, ἀποθήσεσθε νόμῳ τὴν ἐξουσίαν, καὶ οὐ δόξετε ἀκόντων ἄρχειν τῶν ἴσων· τοῦτο μὲν γὰρ τυραννικόν, τὸ δὲ παρ' ἑκόντων τὰς ἀρχὰς λαμβάνειν ἀριστοκρατικόν. τοῦ δὲ πολιτεύματος τούτου πρῶτον οἴομαι δεῖν ἄρξαι σέ, καὶ παῦσαι τὴν ὑπὸ σοῦ κατασταθεῖσαν ὀλιγαρ-
2184 χίαν, Ἄππιε, λυσιτελῆ γέ ποθ' ἡμῖν γενομένην, νῦν

δ' ἐπαχθῇ. ἃ δ' ἐκ τοῦ πεισθῆναί μοι καὶ ἀποθέσθαι τὴν ἐπίφθονον ἐξουσίαν ταύτην κερδανεῖς ἄκουσον. ἐὰν μὲν ὅλον ὑμῶν τὸ ἀρχεῖον ἐπὶ τῆς αὐτῆς γένηται προαιρέσεως, διὰ σὲ πάντες ὑπολήψονται τὸν ἄρξαντα καὶ τούτους γεγενῆσθαι χρηστούς· ἐὰν δ' οὗτοι φιλοχωρῶσιν ἐπὶ τῇ παρανόμῳ δυναστείᾳ, σοὶ μὲν ἅπαντες εἴσονται τὴν χάριν, ὅτι μόνος ἐβουλήθης δίκαια ποιεῖν, τοὺς δὲ μὴ θέλοντας σὺν αἰσχύνῃ καὶ μεγάλῃ βλάβῃ παύσουσι τῆς ἀρχῆς. ὁμολογίας δὲ καὶ πίστεις ἀπορρήτους, εἴ τινας ἀλλήλοις δεδώκατε θεοὺς ἐγγυητὰς ποιησάμενοι· τάχα γάρ τι καὶ τοιοῦτον ὑμῖν πέπρακται· φυλαττομένας ἀνοσίους εἶναι νόμιζε, ὡς κατὰ πολιτῶν καὶ πατρίδος, καταλυομένας δ' εὐσεβεῖς. θεοὶ γὰρ ἐπὶ καλαῖς καὶ δικαίαις παραλαμβάνεσθαι φιλοῦσιν ὁμολογίαις, οὐκ ἐπ' αἰσχραῖς καὶ ἀδίκοις.

XII. *Εἰ δὲ* διὰ φόβον ἐχθρῶν ὀκνεῖς ἀποθέσθαι τὴν ἀρχήν, μή σοι κίνδυνοί τινες ἐξ αὐτῶν ἐπαχθῶσι, 218
καὶ δίκας ἀναγκασθῇς ὑπέχειν τῶν πεπραγμένων, οὐκ ὀρθῶς δέδοικας. οὐ γὰρ οὕτω μικρόθυμος οὐδ' ἀχάριστος ἔσται ὁ Ῥωμαίων δῆμος, ὥστε τῶν μὲν ἁμαρτημάτων σου μεμνῆσθαι, τῶν δ' εὐεργεσιῶν ἐπιλελῆσθαι, ἀλλ' ἀντιπαρεξετάζων τὰ νῦν ἀγαθὰ τοῖς πάλαι κακοῖς, ἐκεῖνα μὲν ἡγήσεται συγγνώμης ἄξια, ταῦτα δ' ἐπαίνων. ὑπάρξει δέ σοι καὶ τῶν πρὸ τῆς ὀλιγαρχίας ἔργων πολλῶν καὶ καλῶν ὄντων ὑπομιμνήσκειν τὸν δῆμον, καὶ τὴν ὑπὲρ ἐκείνων χάριν εἰς βοήθειαν καὶ σωτηρίαν ἀπαιτεῖν, ἀπολογίαις τε χρῆσθαι πρὸς τὰ κατηγορήματα πολλαῖς· τοῦτο μέν, ὡς οὐκ αὐτὸς ἥμαρτες, ἀλλὰ τῶν ἄλλων τις ἀγνοοῦντός σου· τοῦτο δ', ὡς οὐχ ἱκανὸς ἦσθα τὸν πράττοντα κωλύειν ἰσότιμον ὄντα· τοῦτο δ', ὡς

ἑτέρου τινὸς ἔργου χρησίμου χάριν ἠναγκάσθης ἀβούλητόν τι ὑπομεῖναι. πολὺς γὰρ ἂν εἴη ὁ λόγος, εἰ πάσας ἐξαριθμεῖσθαι βουλοίμην τὰς ἀπολογίας. καὶ οἷς μηδὲν ἀπολόγημα ὑπάρχει μήτε δίκαιον μήτ' ἐπιεικές, ὁμολογοῦντες καὶ παραιτούμενοι πραΰνουσι
2186 τὰς τῶν ἠδικημένων ὀργάς, οἱ μὲν εἰς ἄνοιαν ἡλικίας καταφεύγοντες, οἱ δ' εἰς πονηρῶν ἀνθρώπων ὁμιλίας, οἱ δ' εἰς μέγεθος ἀρχῆς, οἱ δ' εἰς τὴν ἅπαντας πλανῶσαν τοὺς ἀνθρωπίνους λογισμοὺς τύχην. ἐγώ σοι τῆς ἀρχῆς ἀποστάντι ὑπισχνοῦμαι πάντων ἀμνηστίαν ὑπάρξειν τῶν ἡμαρτημένων καὶ διαλλαγὰς πρὸς τὸν δῆμον ὡς ἐν κακοῖς εὐπρεπεῖς.

XIII. Ἀλλὰ δέδοικα, μὴ πρόφασις μὲν οὐκ ἀληθὴς ὁ κίνδυνος ᾖ τοῦ μὴ παραχωρεῖν τῆς ἀρχῆς· μυρίοις γοῦν ὑπῆρξε τυραννίδας ἀποθεμένοις, μηδὲν δεινὸν ὑπὸ τῶν πολιτῶν παθεῖν· αἱ δ' ἀληθεῖς ὦσιν αἰτίαι, φιλοτιμία κενὴ τὴν εἰκόνα τοῦ καλοῦ τῆς δόξης διώκουσα καὶ πόθος ἡδονῶν ὀλεθρίων, ἃς οἱ τυραννικοὶ φέρουσι βίοι. εἰ δὲ βούλει μὴ τὰ εἴδωλα
2187 καὶ τὰς σκιὰς τῶν τιμῶν καὶ τῶν εὐπαθειῶν διώκειν, ἀλλ' αὐτὰς καρποῦσθαι τὰς ἀληθεῖς τιμάς, ἀπόδος τὴν ἀριστοκρατίαν τῇ πατρίδι καὶ τιμὰς λάμβανε παρὰ τῶν ἴσων καὶ ζήλου τύγχανε παρὰ τῶν ἐπιγιγνομένων καὶ κλέος ἀθάνατον ἀντὶ τοῦ θνητοῦ σώματος κατάλιπε τοῖς ἐγγόνοις. αὗται γάρ εἰσι βέβαιοι καὶ ἀληθεῖς τιμαὶ καὶ ἀναφαίρετοι χάριτές τε καὶ ἀμεταμέλητοι. τρέφε τὴν ψυχὴν ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς τῆς πατρίδος ἡδόμενος, ὧν οὐκ ἐλαχίστη μοῖρα δόξεις γεγονέναι δυναστείαν βαρείαν αὐτῆς ἀφελόμενος. ποίησαι δὲ τούτων παραδείγματα τοὺς προγόνους, ἐνθυμηθείς, ὅτι τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων οὐδεὶς ἐπεθύμησεν ἐξουσίας δεσποτικῆς, οὐδὲ ταῖς ἐπονειδίστοις

τοῦ σώματος ἐδούλευσεν ἡδοναῖς. τοιγάρτοι καὶ ζῶσιν αὐτοῖς ὑπῆρχε τιμᾶσθαι, καὶ τελευτήσασιν ὑπὸ τῶν ἐπιγενομένων ἐπαινεῖσθαι. μαρτυρεῖταί γέ τοι παρὰ πάντων αὐτοῖς, ὅτι τῆς ἀριστοκρατίας, ἣν ἐκβαλοῦσα τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν ἡ πόλις κατεστήσατο, βεβαιότατοι φύλακες ἐγένοντο. καὶ μηδὲν τῶν σεαυ- 21 *τοῦ λαμπροτάτων λόγων τε καὶ πράξεων ἐπιλανθάνου. καλαὶ γὰρ αἱ πρῶταί σου τῶν πολιτικῶν ἔργων ὑποθέσεις ἐγένοντο, καὶ μεγάλας ὑπέγραψαν ἡμῖν ἀρετῆς ἐλπίδας· αἷς ἀκολούθως καὶ τὰ λοιπὰ πράττειν σε πάντες ἀξιοῦμεν. ἀναχώρει δὴ πάλιν εἰς τὴν σεαυτοῦ φύσιν, Ἄππιε τέκνον, καὶ γίνου τῇ προαιρέσει τῶν πολιτευμάτων μὴ τυραννικός, ἀλλ' ἀριστοκρατικός· καὶ φεῦγε τοὺς πρὸς ἡδονὴν ὁμιλοῦντας, δι' οὓς ἐξέβης τῶν χρηστῶν ἐπιτηδευμάτων καὶ παρεπλάγχθης τῆς ὀρθῆς ὁδοῦ. οὐ γὰρ ἔχει λόγον, ὑφ' ὧν ἂν γένηταί τις ἐξ ἀγαθοῦ κακός, ὑπὸ τούτων πάλιν αὐτὸν ἐκ πονηροῦ γενέσθαι χρηστόν.*

XIIII. *Ταῦτά σοι πολλάκις ἐβουλήθην ὑποθέσθαι* 218 *μόνῳ μόνος εἰς λόγους παραγενόμενος, καὶ τὰ μὲν ὡς ἀγνοοῦντα διδάξαι, τὰ δ' ὡς ἁμαρτάνοντα νουθετῆσαι· καὶ παρεγενόμην εἰς τὴν οἰκίαν οὐχ ἅπαξ, ἀπήλασαν δέ με οἱ σοὶ παῖδες ἀπὸ τῶν οἰκείων οὐ σχολὴν ἄγειν σε λέγοντες, ἀλλ' ἕτερά τινα πράττειν ἀναγκαιότερα, εἰ δή τί σοι τῆς πρὸς τὸ γένος εὐσεβείας ἀναγκαιότερον ἦν. τάχα δ' οὐχ ὑπὸ σοῦ κελευσθέντες οἱ παῖδες, ἀλλ' ἐφ' ἑαυτῶν γνόντες διέκλεισάν με τῆς εἰσόδου, καὶ βουλοίμην οὕτως τἀληθὲς ἔχειν. τὸ πρᾶγμα δή με ἠνάγκασε τοῦτο διαλεχθῆναι ἐν τῷ συνεδρίῳ πρὸς σὲ περὶ ὧν ἐβουλόμην, ἐπειδὴ μόνῳ πρὸς μόνον οὐκ ἐξεγένετο. καιρὸν δ' ἔχει πάντῃ λέγεσθαι τὰ καλὰ καὶ συμφέροντα*

2190 παρ' ἀνθρώποις μᾶλλον, Ἄππιε, ἢ μηδαμῇ. ἀποδεδωκὼς δή σοι τὰ τοῦ γένους ὀφειλήματα, μαρτύρομαι θεούς, ὧν ἱερὰ καὶ βωμοὺς κοιναῖς θυσίαις γεραίρομεν οἱ τῆς Ἀππίου γενεᾶς διάδοχοι, καὶ προγόνων δαίμονας, οἷς μετὰ θεοὺς δευτέρας τιμὰς καὶ χάριτας ἀποδίδομεν κοινάς, ὑπὲρ ἅπαντας δὲ τούτους γῆν, ἣ κατέχει τὸν σὸν μὲν πατέρα, ἐμὸν δ' ἀδελφόν, ὅτι σοι παρέσχημαι ψυχήν τε καὶ φωνὴν τὴν ἐμαυτοῦ τὰ κράτιστα βουλευομένην, καὶ ἐπανορθῶν τὰς ἀγνοίας σου κατὰ δύναμιν τὴν ἐμὴν ἀξιῶ σε μὴ τοῖς κακοῖς ἰᾶσθαι τὰ κακά, μηδὲ τῶν πλειόνων ὀρεγόμενον καὶ τὰ παρόντα ἀπολέσαι, μηδ' ἵνα τῶν ἴσων τε καὶ κρειττόνων ἄρχῃς ὑπὸ τῶν ἡττόνων τε καὶ κακιόνων ἄρχεσθαι. πολλὰ καὶ περὶ πολλῶν ἔτι σοι λέγειν βουλόμενος ὀκνῶ. εἰ μὲν γὰρ ἐπὶ τὰ κρείττω βουλεύματα ὁ θεὸς ἄγει σε, καὶ ταῦτα πλείω τῶν ἱκανῶν εἴρηκα· εἰ δ' ἐπὶ τὰ χείρω, διακενῆς καὶ τὰ λοιπὰ ἐρῶ. ἔχετε, ὦ βουλή, καὶ ὑμεῖς οἱ
2191 προεστηκότες τῆς πόλεως, τὴν ἐμὴν γνώμην καὶ περὶ τοῦ πολέμου τῆς καταλύσεως καὶ περὶ τῶν ἐν τῇ πόλει θορύβων τῆς ἐπανορθώσεως. εἰ δέ τις ἕτερα τούτων κρείττω ἐρεῖ, τὰ βέλτιστα νικάτω.

XV. Τοιαῦτ' εἰπόντος Κλαυδίου καὶ πολλὴν ἐλπίδα τῷ συνεδρίῳ παρασχόντος, ὡς ἀποθησομένων τῶν δέκα τὴν ἀρχήν, Ἄππιος μὲν πρὸς ταῦτα οὐδὲν ἠξίωσεν εἰπεῖν· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων ὀλιγαρχικῶν προελθὼν Κορνήλιος Μάρκος· Ἡμεῖς μέν, ἔφησεν, ὦ Κλαύδιε, περὶ τῶν ἰδίων συμφερόντων αὐτοὶ διαγνωσόμεθα τῆς σῆς οὐδὲν δεόμενοι βουλῆς. καὶ γὰρ ἡλικίας ἐν τῷ φρονιμωτάτῳ ἐσμέν, ὥστε μηδὲν τῶν διαφερόντων ἀγνοεῖν, καὶ φίλων οὐ σπανίζομεν, οἷς ἐάν τι δέῃ συμβούλοις χρησόμεθα. παῦσαι δὴ πρᾶγμα

ποιῶν ἄωρον, ἀνδράσι πρεσβυτέροις οὐ δεομένοις συμβουλῆς γνώμας ἀποδεικνύμενος. τῷ Ἀππίῳ δ' εἴ τι βούλει παραινεῖν ἢ λοιδορεῖσθαι· τοῦτο γὰρ ἀληθέστερον· ὅταν ἐξέλθῃς ἐκ τοῦ συνεδρίου λοιδο- 219
ρήσῃ. νῦν δ' ὑπὲρ τοῦ πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους πολέμου, περὶ οὗ κέκλησαι γνώμην ἀποδειξόμενος, ὅ τι σοι φαίνεται λέγε καὶ παῦσαι τὰ ἔξω τοῦ πράγματος φλυαρῶν. Μετὰ τοῦτον ἀνίσταται πάλιν ὁ Κλαύδιος κατηφὴς καὶ μεστοὺς ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς δακρύων καί φησιν· Ἄππιος μὲν οὐδ' ἀποκρίσεως ἄξιον ἡγεῖταί με, ὦ βουλή, τὸν ἑαυτοῦ θεῖον ἐναντίον ὑμῶν· ἀλλ' ὥσπερ τὴν οἰκίαν τὴν ἰδίαν ἀπέκλεισέ μοι, καὶ τουτὶ τὸ συνέδριον ἄβατον ὅσονπερ ἐφ' ἑαυτῷ ποιεῖ. εἰ δὲ χρὴ τἀληθὲς λέγειν καὶ ἐκ τῆς πόλεως ἐξελαύνομαι. οὐκέτι γὰρ αὐτὸν ὀρθοῖς ὄμμασι δυναίμην ὁρᾶν, ἀνάξιον γεγονότα τῶν προγόνων καὶ τυραννικὴν ἐξηλωκότα παρανομίαν, ἀλλ' ἀνασκευασάμενος ἅπαντα τὰ ἐμὰ καὶ τοὺς ἐμοὺς εἰς Σαβίνους ἄπειμι, πόλιν οἰκήσων Ῥήγιλλον, ἐξ ἧς τὸ 2193
γένος ἡμῶν ἐστι, καὶ μενῶ τὸν λοιπὸν ἐκεῖ χρόνον, ἕως ἂν οὗτοι κατέχωσι τὴν καλὴν ταύτην ἀρχήν. ἐπειδὰν δ' οἷα μαντεύομαι περὶ τὴν δεκαδαρχίαν γένηται· γενήσεται δ' οὐκ εἰς μακράν· τότε παρέσομαι. καὶ τὰ μὲν ὑπὲρ ἐμοῦ τοσαῦτα· περὶ δὲ τοῦ πολέμου ταύτην ὑμῖν, ὦ βουλή, γνώμην ἀποδείκνυμαι, μηδὲν ψηφίζεσθαι περὶ μηδενὸς πράγματος, ἕως [ἂν] ἀποδειχθῶσιν αἱ ἀρχαί. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ πολὺν ἐκ τοῦ συνεδρίου κινήσας ἔπαινον ἐπὶ τῷ γενναίῳ καὶ φιλελευθέρῳ τῆς γνώμης ἐκάθισε. μετὰ δὲ τοῦτον ἀναστὰς Λεύκιος Κοίντιος ὁ καλούμενος Κικιννάτος καὶ Τίτος Κοίντιος Καπετωλῖνος καὶ Λεύκιος Λουκρήτιος καὶ πάντες ἑξῆς οἱ πρωτεύοντες

δέκα τοῦ συνεδρίου τῇ Κλαυδίου γνώμῃ προσετίθεντο.

XVI. Ἐφ᾽ ᾧ διαταραχθέντες οἱ περὶ τὸν Ἄππιον ἐβουλεύσαντο μηκέτι καθ᾽ ἡλικίαν καὶ βουλῆς ἀξίωσιν συμβούλους καλεῖν, ἀλλὰ κατ᾽ οἰκειότητα καὶ τὴν
2194 πρὸς αὐτοὺς ἑταιρίαν. καὶ παρελθὼν Μάρκος Κορνήλιος ἀνίστησι Λεύκιον Κορνήλιον τὸν ἀδελφόν, ὃς Κοίντῳ Φαβίῳ Οὐιβουλανῷ συνυπάτευσε τὸ τρίτον ὑπατεύοντι, δραστήριον ἄνδρα καὶ πολιτικοὺς διεξελθεῖν λόγους οὐκ ἀδύνατον. οὗτος ἀναστὰς ἔλεξε τοιάδε· Θαυμαστὸν μὲν ἦν καὶ τοῦτ᾽, ὦ βουλή, εἰ ταύτην ἔχοντες ἄνθρωποι τὴν ἡλικίαν, οἵαν ἔχουσιν οἱ πρὸ ἐμοῦ γνώμην ἀποφηνάμενοι, καὶ πρωτεύειν ἀξιοῦντες τῶν συνέδρων, τὴν ἐκ τῶν πολιτικῶν προσκρουσμάτων ἀπέχθειαν ἀδιάλλακτον ἔχουσι πρὸς τοὺς προεστηκότας τῆς πόλεως, οὓς ἐχρῆν † οἷόν τε δεῖ φυλάττειν, καὶ τοῖς νέοις παραινεῖν ἀπὸ τοῦ κρατίστου ποιεῖσθαι τοὺς ὑπὲρ τῶν καλῶν ἀγῶνας, καὶ μὴ πολεμίους ἀλλὰ φίλους ἡγεῖσθαι τοὺς περὶ τῶν κοινῶν ἀγαθῶν ἀντιπάλους. πολλῷ δ᾽ ἔτι τούτου θαυμασιώτερόν ἐστιν, εἰ τὰς ἰδίας ἀπεχθείας ἐπὶ τὰ κοινὰ τῆς πόλεως πράγματα μεταφέρουσι, καὶ συναπολέσθαι τοῖς
2195 ἑαυτῶν ἐχθροῖς βούλονται μᾶλλον ἢ σωθῆναι μετὰ πάντων τῶν φίλων. ὑπερβολὴ γὰρ ἀνοίας τοῦτό γε καὶ οὐ πόρρω θεοβλαβείας πεποιήκασιν οἱ πρόεδροι τῆς βουλῆς ἡμῶν. οὗτοι γὰρ ἀγανακτοῦντες, ὅτι μετιόντας αὐτοὺς τὴν τῶν δέκα ἀρχήν, ἧς αὐτοὶ νῦν κατηγοροῦσιν, ἐνίκησαν ἐν ἀρχαιρεσίαις ἐπιτηδειότεροι φανέντες, ἀεὶ πολεμοῦσιν αὐτοῖς πόλεμον ἀδιάλλακτον, καὶ εἰς τοῦθ᾽ ἥκουσιν εὐηθείας, μᾶλλον δὲ μανίας, ὥσθ᾽ ἵνα τούτους διαβάλλωσι πρὸς ὑμᾶς, ὅλην ὑπομένουσιν ἀνατρέψαι τὴν πατρίδα· οἵ γ᾽

ὁρῶντες μὲν ἀνάστατον τὴν χώραν ἡμῶν ὑπὸ τῶν πολεμίων γενομένην, ὁρῶντες δὲ ὅσον οὔπω καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν αὐτοὺς ἐλεύσεσθαι· τὸ γὰρ διὰ μέσου χωρίον οὐ πολύ· ἀντὶ τοῦ παρακαλεῖν καὶ παρορμᾶν τοὺς νέους ἐπὶ τὸν ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνα, καὶ αὐτοὶ πάσῃ προθυμίᾳ καὶ σπουδῇ βοηθεῖν, ὅσῃ γοῦν ἐν τοῖς τηλικούτοις ἐστὶν ἰσχύς, περὶ πολιτείας κό- 2196 σμου νῦν ἀξιοῦσιν ὑμᾶς σκοπεῖν καὶ νέας ἀρχὰς ἀποδεικνύναι καὶ πάντα μᾶλλον ἢ τοὺς ἐχθροὺς κακῶς ποιεῖν· καὶ οὐδ᾽ αὐτὸ τοῦτο δύνανται συνιδεῖν, ὅτι γνώμας πονηρὰς εἰσφέρουσι, μᾶλλον δ᾽ εὐχὰς ἀδυνάτους λέγουσιν.

XVII. Σκοπεῖτε γὰρ οὑτωσί· προβούλευμα γενήσεται τῆς βουλῆς ὑπὲρ ἀρχαιρεσιῶν· ἔπειτ᾽ ἐξοίσουσιν οἱ δέκα τὰ βουλευθέντα εἰς τὸν δῆμον, ὁρίσαντες ἀγορὰν τὴν ἀπὸ ταύτης τρίτην. πῶς γὰρ ἂν ἄλλως γένοιτό τι τῶν ὑπὸ τοῦ δήμου ψηφιζομένων κύριον, ἐὰν μὴ κατὰ νόμους γένηται; ἔπειθ᾽ ὅταν αἱ φυλαὶ διενέγκωσι τὴν ψῆφον, τότε αἱ νέαι παραλήψονται τὴν πόλιν ἀρχαί, καὶ προθήσουσιν ὑμῖν ὑπὲρ πολέμου σκοπεῖν. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ τῶν ἀρχαιρεσιῶν χρόνοις τοσούτοις οὖσιν, ἐὰν ἐπὶ τὴν πόλιν ἡμῶν ἔλθωσιν οἱ πολέμιοι καὶ προσαγάγωσι τοῖς τείχεσι, τί ποιήσομεν, Κλαύδιε; ἐροῦμεν αὐτοῖς νὴ 2197 Δία· Μείναθ᾽, ἕως ἂν ἀποδείξωμεν ἑτέρας ἀρχάς. Κλαύδιος γὰρ ἡμᾶς ἔπεισε περὶ μηδενὸς ἄλλου πράγματος μήτε προβουλεύειν μήτ᾽ εἰς τὸν δῆμον ἐκφέρειν μήτε δυνάμεις καταγράφειν, ἐὰν μὴ τὰ περὶ τὰς ἀρχὰς καταστήσωμεν ὡς βουλόμεθα. ἄπιτ᾽ οὖν, καὶ ὅταν ἀκούσητε ὑπάτους καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς ἀποδειχθείσας ὑπὸ τῆς πόλεως, καὶ τὰ πρὸς τὸν ἀγῶνα πάντα γεγονότα ἡμῖν εὐτρεπῆ, τόθ᾽ ἥκετε

περὶ διαλλαγῶν ποιησόμενοι τοὺς λόγους, ἐπειδὴ κα-
κῶς ἤρξασθε ἡμᾶς ποιεῖν οὐδὲν προπεπονθότες ὑφ᾽
ἡμῶν· καὶ ὅσα ἡμᾶς ἐβλάψατε κατὰ τὰς ἐμβολὰς εἰς
χρημάτων λόγον, ἅπαντα ἐκ τοῦ δικαίου διαλύσατε.
τὸν δὲ τῶν γεωργῶν ὄλεθρον οὐχ ὑπολογιούμεθα
ὑμῖν, οὐδ᾽ εἴ τινα γύναια ἐλεύθερα ὕβρεως καὶ παρ-
οινίας ἐπειράθη στρατιωτικῆς οὐδ᾽ ἄλλο τῶν ἀνη-
κέστων οὐδέν. κἀκεῖνοι ταῦτα προκαλουμένων ἡμῶν
2198 μετριάσουσι, καὶ συγχωρήσαντες τῇ πόλει νέας ἀρ-
χὰς ἀποδεῖξαι καὶ τὰ πρὸς τὸν πόλεμον εὐτρεπῆ ποι-
ήσασθαι, τότε ἥξουσιν ἱκετηρίας φέροντες ἀντὶ τῶν
ὅπλων καὶ παραδιδόντες ἡμῖν ἑαυτούς.

XVIII. Ὦ πολλῆς μὲν εὐηθείας τούτων, οἷς ἐπὶ
νοῦν ἔρχεται τοιαῦτα ληρεῖν, πολλῆς δ᾽ ἀναλγησίας
ἡμῶν, εἰ τοιαῦτα λεγόντων αὐτῶν οὐκ ἀγανακτοῦ-
μεν, ἀλλ᾽ ὑπομένομεν ἀκούειν, ὥσπερ ὑπὲρ τῶν
πολεμίων ἀλλ᾽ οὐχ ὑπὲρ ἡμῶν αὐτῶν καὶ τῆς πατρί-
δος βουλευόμενοι. οὐκ ἀνελοῦμεν ἐκ μέσου τοὺς
φλυάρους; οὐ ταχεῖαν ψηφιούμεθα τῇ προνομευομένῃ
χώρᾳ τὴν βοήθειαν; οὐ καθοπλιοῦμεν ἅπασαν τὴν
ἀκμὴν τῆς πόλεως; οὐκ ἐπὶ τὰς ἐκείνων πόλεις αὐτοὶ
στρατευσόμεθα; ἀλλ᾽ οἴκοι μένοντες καὶ τοῖς δέκα
λοιδορούμενοι καὶ νέας ἀρχὰς καθιστάντες καὶ περὶ
κόσμου πολιτικοῦ σκοποῦντες, ὥσπερ ἐν εἰρήνῃ
πάντ᾽ ἐάσομεν ὑπὸ τοῖς πολεμίοις τὰ ἐν τῇ χώρᾳ γε-
νέσθαι, καὶ τελευτῶντες ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ κινδυ-
νεύσομεν καὶ κατασκαφῆς τῆς πόλεως, [ὡς] ἐάσαντες
τὸν πόλεμον τοῖς τείχεσι προσελθεῖν; οὐκ ἔστιν ὑγιαι-
2199 νόντων ἀνθρώπων τὰ τοιαῦτα βουλεύματα, ὦ πατέ-
ρες, οὐδὲ προνοίας πολιτικῆς τὰ κοινὰ συμφέροντα
τῶν ἰδίων ἀπεχθειῶν ἡγουμένης ἀναγκαιότερα, ἀλλὰ

φιλονεικίας ἀκαίρου καὶ δυσμενείας ἀβούλου καὶ
φθόνου κακοδαίμονος, ὃς οὐκ ἐᾷ τοὺς ἔχοντας αὐτὸν
σωφρονεῖν. ἀλλὰ τὰς μὲν τούτων φιλονεικίας ἐάσατε
χαίρειν· ἃ δὲ ψηφισάμενοι τῇ πόλει σωτήρια καὶ
ὑμῖν αὐτοῖς προσήκοντα ἔσεσθε βεβουλευμένοι καὶ
τοῖς ἐχθροῖς φοβερά, ἐγὼ πειράσομαι λέγειν. νῦν μὲν
τὸν πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους πόλεμον ἐπικυρώ-
σατε, καὶ τὰς δυνάμεις μετὰ πλείστης προθυμίας καὶ
σπουδῆς καταγράφετε τὰς ἐπ᾽ ἀμφοτέρους ἐξελευσο-
μένας. ὅταν δὲ τὰ τοῦ πολέμου τέλος ἡμῖν τὸ κρά-
τιστον λάβῃ, καὶ ἀναστρέψωσιν εἰς τὴν πόλιν αἱ δυ-
νάμεις εἰρήνης γενομένης, τότε καὶ περὶ τοῦ κόσμου
τῆς πολιτείας σκοπεῖτε, καὶ λόγον ἀπαιτεῖτε τοὺς
δέκα περὶ πάντων, ὧν ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ἔπραξαν, καὶ 2200
νέας ἀρχὰς ψηφοφορεῖτε καὶ δικαστήρια καθίζετε καὶ
τιμωρεῖσθε καὶ τιμᾶτε τοὺς ἑκατέρου τούτων ἀξίους,
ὅταν ἐφ᾽ ὑμῖν γένηται ταῦτ᾽ ἀμφότερα, μαθόντες
ὅτι οὐ τοῖς πράγμασιν οἱ καιροὶ δουλεύουσιν, ἀλλὰ
τοῖς καιροῖς τὰ πράγματα. Ταύτην ἀποδειξαμένου
Κορνηλίου τὴν γνώμην, οἱ μετ᾽ ἐκεῖνον ἀνιστάμενοι
χωρὶς ὀλίγων τῆς αὐτῆς ἐγένοντο προαιρέσεως· οἱ
μὲν ἀναγκαῖα καὶ τῷ παρόντι καιρῷ ταῦτα προσή-
κοντα ὑπολαμβάνοντες εἶναι, οἱ δ᾽ ὑποκατακλινό-
μενοι καὶ θεραπεύοντες τοὺς δέκα τῷ φόβῳ τῆς ἀρ-
χῆς. ἦν γάρ τι καὶ κατεπτηχὸς τὴν ἐξουσίαν οὐκ
ἐλάχιστον μέρος ἐκ τῶν συνέδρων.

XVIIII. Ὡς δ᾽ αἱ πλείους γνῶμαι διηγορεύθησαν,
καὶ παρὰ πολὺ κρατεῖν ἐδόκουν οἱ τὸν πόλεμον ἐπι-
κυροῦντες τῶν ἑτέρων, τότε Λεύκιον Οὐαλέριον ἐν
τοῖς ἐσχάτοις ἐκάλουν, ὃν ἔφην εὐθὺς ἐν ἀρχαῖς
βουλόμενόν τι λέγειν κεκωλῦσθαι πρὸς αὐτῶν. ὁ δὲ
ἀναστὰς τοιούτους διεξῆλθε λόγους· Τὴν μὲν ἐπι- 2201

βουλὴν τῶν δέκα ὁρᾶτε, ὦ πατέρες, οἳ κατ' ἀρχάς τ' οὐκ ἐπέτρεψάν μοι λέγειν ὅσα προῃρούμην πρὸς ὑμᾶς, καὶ νῦν ἐν τοῖς ὑστάτοις ἀποδεδώκασι λόγον, ἐνθυμηθέντες ὅπερ εἰκὸς ὅτι τῇ τε Κλαυδίου γνώμῃ προσθέμενος οὐδὲν ὠφελήσω τὸ κοινὸν ὀλίγων αὐτῇ συνειρηκότων· ἑτέραν τε γνώμην παρὰ τὰς εἰρημένας αὐτὸς ἀποφηνάμενος κἂν τὰ κράτιστα ὑποθῶμαι διακενῆς ἐρραψῳδηκὼς ἔσομαι. εὐαρίθμητοι γάρ τινές εἰσιν οἱ μετ' ἐμὲ ἀναστησόμενοι, οὓς ἐὰν ἅπαντας ὁμογνώμονας λάβω, τί γενήσεταί μοι πλέον οὐδὲ πολλοστὴν ἔξοντι μοῖραν τῶν Κορνηλίῳ συναγορευόντων; οὐ μὴν ἐγὼ ταῦθ' ὑφορώμενος ὀκνήσω τὴν ἐμαυτοῦ γνώμην εἰπεῖν. ὅταν γὰρ ἀκούσητε [τὰ] ἁπάντων, ἐφ' ὑμῖν ἔσται τὰ κράτιστα ἑλέσθαι. περὶ μὲν οὖν τῆς δεκαδαρχίας, ὃν τρόπον ἐπιμελεῖται τῶν κοινῶν, ὅσα Κλαύδιος ὁ βέλτιστος εἶπε καὶ ἐμοὶ νομίσατε εἰρῆσθαι, καὶ ὅτι δεῖ νέας ἀρχὰς ἀποδειχθῆ-
2202 ναι, πρὶν ἢ τὸ περὶ τοῦ πολέμου γενέσθαι ψήφισμα· καὶ γὰρ ταῦτα εἴρηται τῷ ἀνδρὶ κατὰ τὸ βέλτιστον. ἐπεὶ δὲ Κορνήλιος εἰς τὸ ἀδύνατον ἀπάγειν ἐπειρᾶτο τὴν γνώμην, πολλοὺς τοὺς μεταξὺ χρόνους ἀποφαίνων ταῖς πολιτικαῖς οἰκονομίαις γενησομένους ἐν χερσὶν ὄντος τοῦ πολέμου, καὶ χλευάζειν ἐπεχείρει πράγματα οὐκ ἐπιτήδεια χλευασμῶν, οἷς παρακρουσάμενος ὑμᾶς τοὺς πολλοὺς ᾤχετο φέρων, ἐγὼ καὶ περὶ τοῦ μὴ ἀδύνατον εἶναι τὴν Κλαυδίου γνώμην διαλέξομαι πρὸς ὑμᾶς· ὡς μὲν γὰρ ἀσύμφορος, οὐδὲ τῶν διασυράντων αὐτὴν οὐδεὶς ἐτόλμησεν εἰπεῖν· καὶ διδάξω πῶς ἂν ἥ τε χώρα δι' ἀσφαλείας γένοιτο, καὶ δίκην δοῖεν οἱ τολμήσαντες αὐτὴν κακῶς ποιεῖν, καὶ τὴν πάτριον ἀπολάβοιμεν ἀριστοκρατίαν, καὶ
2203 ταῦθ' ἅμα γένοιτο συναγωνιζομένων ἁπάντων τῶν

ἐν τῇ πόλει καὶ μηδενὸς τἀναντία πράττειν ἀξιοῦντος· σοφίαν οὐδεμίαν ἀποδεικνύμενος ὑμῖν, τὰ δὲ πραχθέντα ὑφ' ὑμῶν αὐτῶν παραδείγματα φέρων. ἔνθα γὰρ ἡ πεῖρα διδάσκει τὸ συμφέρον, τί δεῖ στοχασμῶν ἐκεῖ;

XX. Μέμνησθε, ὅτι ἀπὸ τῶν αὐτῶν τούτων ἐθνῶν ὥσπερ νῦν δυνάμεις ἐνέβαλον, αἱ μὲν εἰς τὴν ἡμετέραν γῆν, αἱ δ' εἰς τὴν τῶν συμμάχων ἡμῶν, κατὰ τὸν αὐτὸν ἀμφότεραι χρόνον Γαΐου Ναυτίου καὶ Λευκίου Μινυκίου τὴν ὑπατείαν ἐχόντων, ἔνατον ἢ δέκατον ἔτος οἶμαι τουτί. τότε τοίνυν ἀποστειλάντων ὑμῶν νεότητα πολλὴν καὶ ἀγαθὴν ἐπ' ἀμφότερα τὰ ἔθνη, τῷ μὲν ἑτέρῳ τῶν ὑπάτων εἰς δυσχωρίας ἀναγκασθέντι κατακλεῖσαι τὸ στρατόπεδον πρᾶξαι μὲν οὐδὲν ἐξεγένετο, πολιορκεῖσθαι δ' ἐν τῷ χάρακι καὶ κινδυνεύειν σπάνει τῶν ἐπιτηδείων ἁλῶ- 2204
ναι· Ναυτίῳ δ' ἀντικαθημένῳ Σαβίνοις μάχας ἀναγκαῖον εἶναι τίθεσθαι πρὸς τούτους συνεχεῖς καὶ μηδὲν οἵῳ τ' εἶναι τοῖς κάμνουσι τῶν σφετέρων βοηθεῖν. ἦν τ' οὐκ ἄδηλον, ὅτι τῆς ἐν Αἰκανοῖς στρατιᾶς ἀναρπασθείσης οὐδ' ἡ Σαβίνους πολεμοῦσα ἀνθέξει, συνελθόντων εἰς ταὐτὸ τῶν πολεμίων ἀμφοτέρων. τοιούτων δὴ κινδύνων τὴν πόλιν περιστάντων καὶ οὐδὲ τῶν ἐντὸς τείχους ὁμονοούντων, τίνα βοήθειαν εὕρεσθε ὑμεῖς, ἥπερ ὤνησεν ὁμολογουμένως πάντα τὰ πράγματα καὶ φερομένην τὴν πόλιν εἰς ἀτυχὲς πτῶμα ὤρθωσεν; περὶ μέσας νύκτας εἰς τὸ βουλευτήριον συνελθόντες ἀρχὴν ἀπεδείξατε μίαν αὐτοκράτορα πολέμου καὶ εἰρήνης, ἁπάσας τὰς ἄλλας καταλύσαντες ἀρχάς, καὶ πρὶν ἡμέραν γενέσθαι δικτάτωρ ἀπεδέδεικτο Λεύκιος Κοίντιος ὁ βέλτιστος, οὐδ' ἐν τῇ πόλει τότ' ὤν, ἀλλ' ἐν ἀγρῷ. τὰ 2205

μετὰ ταῦτα ἴστε δήπου τοῦ ἀνδρὸς ἔργα, ὅτι καὶ δυνάμεις ἀξιοχρέους παρεσκευάσατο καὶ τὸ κινδυνεῦον στρατόπεδον ἐρρύσατο καὶ τοὺς πολεμίους ἐτιμωρήσατο καὶ τὸν στρατηγὸν αὐτῶν αἰχμάλωτον ἔλαβε· καὶ ταῦτα ἐν ἡμέραις τεσσαρεσκαίδεκα μόναις ἅπαντα διαπραξάμενος, καὶ εἴτι [καὶ] ἄλλο σαθρὸν ἦν τῆς πολιτείας ἐπανορθωσάμενος, ἀπέθετο τὰς ῥάβδους· καὶ τὸ κωλῦον οὐδὲν ἐγένετο νέαν ἀρχὴν ἐν ἡμέρᾳ κυρωθῆναι μιᾷ βουλομένων ὑμῶν. τοῦτο δὴ τὸ παράδειγμα μιμησαμένους ἡμᾶς οἴομαι δεῖν, ἐπειδὴ οὐδὲν ἄλλο ποιεῖν δυνάμεθα, δικτάτορα ἑλέσθαι, πρὶν ἐντεῦθεν ἐξελθεῖν· ἐὰν γὰρ ὑπερβαλώμεθα τοῦτον τὸν καιρόν, οὐκέτι συνάξουσιν ἡμᾶς οἱ δέκα βουλευσομένους ὑπὲρ οὐδενός· ἵνα δὲ καὶ κατὰ νόμους ἡ τοῦ δικτάτορος ἀνάρρησις γένηται, τὴν μεσοβασίλειον ἀρχὴν ἑλέσθαι, τὸν ἐπιτηδειότατον ἐκλέξαντας τῶν πολιτῶν· ὃ ποιεῖν σύνηθές ἐστιν ὑμῖν, ὅταν μήτε βασιλεῖς ἔχητε μήτε ὑπάτους μήτ' ἄλλην νόμι-
2206 μον ἀρχὴν μηδεμίαν, ὥσπερ νῦν οὐκ ἔχετε. τοῖς γὰρ ἀνδράσι τούτοις παρελήλυθεν ὁ τῆς ἀρχῆς χρόνος, καὶ τὰς ῥάβδους αὐτῶν ὁ νόμος ἀφῄρηται. ταῦτ' ἔστιν ἃ παραινῶ πράττειν, ὦ πατέρες, ὑμῖν, καὶ συμφέροντα καὶ δυνατά. ἣν δὲ Κορνήλιος εἰσηγεῖται γνώμην κατάλυσις ὁμολογουμένη τῆς ἀριστοκρατίας ὑμῶν ἐστιν. ἐὰν γὰρ ἅπαξ ὅπλων οἱ δέκα γένωνται κύριοι τῇδε τῇ προφάσει τοῦ πολέμου, δέδοικα μὴ καθ' ἡμῶν αὐτοῖς χρήσωνται. οἱ γὰρ οὐκ ἀξιοῦντες ἀποθέσθαι τὰς ῥάβδους, ἦ που γε τὰ ὅπλα ἀποθήσονται; λογιζόμενοι δὴ ταῦτα φυλάττεσθε τοὺς ἀνθρώπους, καὶ πᾶσαν ἀπάτην αὐτῶν προβλέπετε. κρείττων γὰρ ἡ πρόνοια τῆς μεταμελείας καὶ τὸ μὴ πιστεύειν τοῖς πονηροῖς σωφρονέστερον τοῦ προπιστεύσαντας κατηγορεῖν.

XXI. *Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Οὐαλερίου κεχαρισμένην τοῖς πλείοσιν, ὡς ἐκ τῆς φωνῆς αὐτῶν εἰκάσαι ῥᾴδιον ἦν, καὶ τῶν μετ᾽ ἐκεῖνον ἀνισταμένων· ἦν δ᾽ αὐτῶν τὸ νέον τῆς βουλῆς μέρος τὸ λει-* 2207 *πόμενον· ταῦτα ἡγουμένων κράτιστα εἶναι πλὴν ὀλίγων, ἐπειδὴ πάντες ἀπεδείξαντο τὰς ἑαυτῶν γνώμας, καὶ τέλος ἔδει τὰ βουλεύματα λαβεῖν, Οὐαλέριος μὲν ἠξίου διαδικασίαν τοὺς δέκα προθεῖναι ταῖς γνώμαις, αὖθις ἐξ ἀρχῆς πάντας τοὺς βουλευτὰς καλοῦντας, καὶ πολλοῖς τῶν συνέδρων ἀναθέσθαι βουλομένοις τὰς προτέρας ἀποφάσεις ταῦτα λέγων πιθανὸς ἦν· Κορνήλιος δ᾽ ὁ συμβουλεύων τοῖς δέκα τὴν ἡγεμονίαν ἐπιτρέψαι τοῦ πολέμου κατὰ τὸ καρτερὸν ἀπεμάχετο, κεκρίσθαι τὸ πρᾶγμα ἤδη λέγων καὶ τέλος ἔχειν νόμιμον ἁπάντων ἐψηφικότων, ἠξίου τε διαριθμεῖν τὰς γνώμας, καὶ μηδὲν ἔτι καινουργεῖν. τούτων δὲ λεγομένων ὑφ᾽ ἑκατέρων μετὰ πολλῆς φιλοτιμίας τε καὶ κραυγῆς, καὶ τοῦ συνεδρίου διαστάντος πρὸς ἑκάτερον, τῶν μὲν ἐπανορθώσασθαι τὴν ἀκοσμίαν τοῦ πολιτεύματος βουλομένων τῷ Οὐαλερίῳ συλλαμ-* 2208 *βανόντων, τῶν δὲ τὰ χείρω προαιρουμένων καὶ ὅσοις κίνδυνός τις ὑπωπτεύετο ἐκ τῆς μεταβολῆς ἔσεσθαι τῷ Κορνηλίῳ συναγορευόντων· λαβόντες ἀφορμὴν οἱ δέκα τοῦ πράττειν ὅ τι δόξειεν αὐτοῖς τὴν τοῦ συνεδρίου ταραχήν, τῇ Κορνηλίου προστίθενται γνώμῃ. καὶ παρελθὼν εἷς ἐξ αὐτῶν, Ἄππιος, ἔφη· Περὶ τοῦ πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους πολέμου συνεκαλέσαμεν ὑμᾶς, ὦ βουλή, διαγνωσομένους, καὶ λόγον ἀπεδώκαμεν ἅπασι τοῖς βουλομένοις ἀπὸ τῶν πρώτων ἄχρι τῶν νεωτάτων ἐν τῷ προσήκοντι καλοῦντες ἕκαστον τόπῳ. τριῶν δ᾽ ἀποδειξαμένων γνώμας διαφόρους, Κλαυδίου τε καὶ Κορνηλίου καὶ Οὐαλερίου*

τελευταίου, διέγνωτε περὶ αὐτῶν ὑμεῖς οἱ λοιποί, καὶ παριὼν ἕκαστος ἀπεφήνατο πάντων ἀκουόντων ᾗ προσετίθετο γνώμῃ. ἁπάντων δὴ γεγονότων κατὰ
2209 νόμον, ἐπειδὴ τοῖς πλείοσιν ὑμῶν Κορνήλιος ἐδόκει τὰ κράτιστα ὑποθέσθαι, τοῦτον ἀπεφηνάμεθα νικᾶν καὶ τὴν ἀποδειχθεῖσαν ὑπὸ τούτου γνώμην γράψαντες ἐκφέρομεν. Οὐαλέριος δὲ καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ ἑστῶτες ὅταν αὐτοὶ τύχωσιν ἐξουσίας ὑπατικῆς, δίκας τ' ἤδη τέλος ἐχούσας ἀναδίκους ποιείτωσαν, ἐὰν αὐτοῖς φίλον ᾖ, καὶ βουλεύματα διεγνωσμένα ὑπὸ πάντων ὑμῶν ἄκυρα καθιστάτωσαν. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὸν γραμματέα κελεύσας ἀναγνῶναι τὸ προβούλευμα, ἐν ᾧ τὴν καταγραφὴν τοῦ στρατοῦ καὶ τὴν ἡγεμονίαν τοῦ πολέμου τοὺς δέκα παραλαβεῖν ἐτέτακτο, διέλυσε τὸν σύλλογον.

XXII. Μετὰ τοῦθ' οἱ μὲν τῆς ὀλιγαρχικῆς ἑταιρίας σοβαροὶ καὶ θρασεῖς περιῄεσαν, ὡς δὴ κρείττους τῶν ἑτέρων γεγονότες καὶ διαπεπραγμένοι μηκέτι καταλυθῆναι σφῶν τὴν δυναστείαν, ἐπειδὰν ἅπαξ ὅπλων καὶ στρατιᾶς γένωνται κύριοι· οἱ δὲ τὰ βέλτιστα τῷ κοινῷ φρονοῦντες ἀνιαρῶς διακείμενοι
2210 καὶ περιφόβως, ὡς οὐδενὸς τῶν κοινῶν ἔτι γενησόμενοι κύριοι· καὶ διέστησαν εἰς μέρη πολλά, τῶν μὲν ἀγεννεστέρων τὰς φύσεις ἅπαντα συγχωρεῖν τοῖς κρατοῦσιν ἀναγκαζομένων καὶ κατανέμειν ἑαυτοὺς εἰς τὰς ὀλιγαρχικὰς ἑταιρίας· τῶν δ' ἧττον ψοφοδεῶν ἀφισταμένων τῆς ὑπὲρ τῶν κοινῶν φροντίδος, καὶ τὸν ἀπράγμονα βίον μεθαρμοττομένων· ὅσοις δὲ πολὺ τὸ γενναῖον ἐν τοῖς τρόποις ἦν ἰδίας ἑταιρίας κατασκευαζομένων καὶ συμφρονούντων ἐπὶ φυλακῇ τε ἀλλήλων καὶ μεταστάσει τῆς πολιτείας. τούτων δὲ τῶν ἑταιριῶν ἡγεμόνες ἦσαν οἱ πρῶτοι τολμήσαντες

ἐν τῷ συνεδρίῳ περὶ καταλύσεως τῆς δεκαδαρχίας εἰπεῖν, Λεύκιος Οὐαλέριος καὶ Μάρκος Ὁράτιος, φραξάμενοί τε τὰς οἰκίας ὅπλοις καὶ φυλακὴν θεραπόντων καὶ πελατῶν καρτερὰν περὶ ἑαυτοὺς ἔχοντες, ὡς μήτε τι ἐκ τοῦ βιαίου παθεῖν μηθὲν μήτ' ἐκ τοῦ δολίου [μήτ' ἐκ τοῦ φανεροῦ δειλίαν καταγνωσθῆναι]. ὅσοις δ' οὔτε θεραπεύειν τὴν τῶν κρατούντων 2211 ἐξουσίαν βουλομένοις ἦν, οὔτε μηδενὸς ἐπιστρέφεσθαι τῶν κοινῶν, οὔτ' ἐν ἀπράκτῳ ζῆν ἡσυχίᾳ καλὸν ἐδόκει, πολεμεῖν τ' ἀνὰ κράτος ἀνόητον, ἐπεὶ καθαιρεθῆναι δυναστείαν τηλικαύτην οὐ ῥᾴδιον ἐφαίνετο εἶναι, κατέλιπον τὴν πόλιν. ἡγεμὼν δὲ τούτων ἀνὴρ ἦν ἐπιφανὴς Γάιος Κλαύδιος, ὁ τοῦ κορυφαιοτάτου τῆς δεκαδαρχίας Ἀππίου θεῖος, ἐμπεδῶν τὰς ὑποσχέσεις, ἃς ἐπὶ τῆς βουλῆς ἐποιήσατο πρὸς τὸν ἀδελφιδοῦν, ὅτ' αὐτὸν ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν ἀξιῶν οὐκ ἔπεισεν. ἠκολούθει δ' αὐτῷ πολὺς μὲν ἑταίρων ὄχλος, πολὺς δὲ πελατῶν. τούτου δ' ἀρξαμένου καὶ τὸ ἄλλο πολιτικὸν πλῆθος οὐκέτι λάθρα καὶ κατ' ὀλίγους, ἀλλ' ἐκ τοῦ φανεροῦ καὶ ἀθρόον ἐξέλιπε τὴν πατρίδα, τέκνα καὶ γυναῖκας ἐπαγόμενον. οἱ δὲ περὶ τὸν Ἄππιον ἀγανακτοῦντες τοῖς γινομένοις, ἐπεβάλοντο 2212 μὲν κωλύειν πύλας τ' ἀποκλείσαντες καὶ ἀνθρώπους τινὰς συναρπάσαντες, ἔπειτα· δέος γὰρ εἰςῆλθεν αὐτοῖς μὴ πρὸς ἀλκὴν οἱ κωλυόμενοι τράπωνται, καὶ λογισμὸς ὀρθὸς ὡς κρεῖττον εἴη σφίσιν ἐκποδῶν εἶναι τοὺς ἐχθροὺς ἢ μένοντας ἐνοχλεῖν· ἀνοίξαντες τὰς πύλας ἀφῆκαν τοὺς θέλοντας ἀπιέναι, οἰκίας δ' αὐτῶν καὶ κλήρους καὶ ὅσα ἄλλα ὑπελείπετο ἀδύνατα ὄντα ἐν φυγαῖς φέρεσθαι λειποστρατίαν ἐπενεγκόντες ἐδήμευσαν τῷ λόγῳ, τὸ δ' ἀληθὲς τοῖς ἑαυτῶν ἑταίροις ὡσανεὶ παρὰ τοῦ δήμου πριαμένοις

ἐχαρίσαντο. ταῦτα δὴ τὰ ἐγκλήματα προστεθέντα τοῖς προτέροις πολλῷ δυσμενεστέρους ἐποίησε πρὸς τὴν δεκαδαρχίαν τοὺς πατρικίους καὶ τοὺς δημοτικούς. εἰ μὲν οὖν μηδὲν ἐπεξήμαρτον ἔτι πρὸς τοῖς εἰρημένοις, δοκοῦσιν ἄν μοι πολὺν ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐξουσίας διαμεῖναι χρόνον· ἡ γὰρ φυλάττουσα τὴν
2213 δυναστείαν αὐτῶν στάσις ἔτι διέμενεν ἐν τῇ πόλει, διὰ πολλὰς αἰτίας καὶ ἐκ πολλῶν αὐξηθεῖσα χρόνων, δι' ἣν ἔχαιρον ἑκάτεροι τοῖς ἀλλήλων κακοῖς· οἱ μὲν δημοτικοὶ τὸ φρόνημα τῶν πατρικίων τεταπεινωμένον ὁρῶντες καὶ τὴν βουλὴν οὐδενὸς ἔτι τῶν κοινῶν οὖσαν κυρίαν· οἱ δὲ πατρίκιοι τὴν ἐλευθερίαν ἀπολωλεκότα τὸν δῆμον καὶ μηδὲ τὴν ἐλαχίστην ἔχοντα ἰσχύν, ἐξ οὗ τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν αὐτῶν οἱ δέκα ἀφείλοντο· αὐθαδείᾳ δὲ πολλῇ πρὸς ἄμφω τὰ μέρη χρώμενοι, καὶ οὔτ' ἐπὶ στρατοπέδου μετριάζοντες οὔτ' ἐν τῇ πόλει σωφρονοῦντες, ὁμονοῆσαι πάντας ἠνάγκασαν καὶ καταλῦσαι τὴν ἀρχὴν αὐτῶν, ὅπλων γενηθέντας κυρίους διὰ τὸν πόλεμον. τὰ δ' ἁμαρτήματα αὐτῶν τὰ τελευταῖα καὶ δι' ἃ κατελύθησαν ὑπὸ τοῦ δήμου· τοῦτον γὰρ δὴ μάλιστα προπηλακίζοντες ἐξηγρίωσαν· τοιάδ' ἦν.

XXIII. Ὅτε τὸ περὶ τοῦ πολέμου ψήφισμα ἐκύρωσαν, καταγράψαντες ἐν τάχει τὰς δυνάμεις καὶ
2214 τριχῇ νείμαντες, δύο μὲν τάγματα κατέλιπον ἐν τῇ πόλει φυλακῆς τῶν ἐντὸς τείχους ἕνεκεν· ἡγεῖτο δὲ τῶν δύο τούτων ταγμάτων Ἄππιος Κλαύδιος ὁ προεστηκὼς τῆς ὀλιγαρχίας, καὶ σὺν αὐτῷ Σπόριος Ὄππιος. τρία δὲ ἔχοντες ἐξῆγον ἐπὶ Σαβίνους Κόιντος Φάβιος καί Κόιντος Ποιτέλιος καὶ Μάνιος Ῥαβολήιος. πέντε δὲ τὰ λοιπὰ τάγματα παραλαβόντες Μάρκος τε Κορνήλιος καὶ Λεύκιος Μηνύ-

κιος καὶ Μάρκος Σέργιος καὶ Τίτος Ἀντώνιος καὶ τελευταῖος Καίσων Δουέλλιος ἐπὶ τὸν πρὸς Αἰκανοὺς πόλεμον ἀφίκοντο· συνεστρατεύετο δ' αὐτοῖς Λατίνων τε καὶ ἄλλων συμμάχων ἐπικουρικὸν οὐκ ἔλαττον τοῦ πολιτικοῦ πλήθους. ἀλλ' οὐδὲν αὐτοῖς ἐχώρει κατὰ νοῦν τοσαύτην μὲν οἰκείαν δύναμιν ἐπαγομένοις, τοσαύτην δὲ συμμαχίαν. οἱ γὰρ πολέμιοι καταφρονήσαντες αὐτῶν, ὅτι νεοσύλλεκτοι ἦσαν οἱ στρατευόμενοι, πλησίον ἀντεστρατοπεδεύσαντο καὶ τάς τ' ἀγορὰς ἀγομένας ἀφῃροῦντο λοχῶντες τὰς 2215 ὁδούς, καὶ ἐπὶ προνομὰς ἐξιοῦσιν ἐπετίθεντο, καὶ εἴ ποτε ἱππεῖς εἰς χεῖρας ἔλθοιεν ἱππεῦσι καὶ πεζοὶ πεζοῖς καὶ φάλαγξ πρὸς φάλαγγα μαχόμενοι πανταχῇ πλέον ἔχοντες ἀπῄεσαν, ἐθελοκακούντων οὐκ ὀλίγων ἐν ταῖς συμπλοκαῖς καὶ οὔτε τοῖς ἡγεμόσι πειθομένων οὔτε ὁμόσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις βουλομένων. οἱ μὲν οὖν ἐπὶ Σαβίνους στρατεύσαντες ἐν τοῖς ἐλάττοσι κακοῖς σωφρονισθέντες ἑκόντες ἔγνωσαν ἐκλιπεῖν τὸν χάρακα· καὶ περὶ μέσας νύκτας ἀναστήσαντες τὸν στρατὸν ἀπῆγον ἐκ τῆς πολεμίας εἰς τὴν ἑαυτῶν φυγῇ παραπλησίαν ποιούμενοι τὴν ἀνάζευξιν, ἕως ἐπὶ πόλιν Κρουστομέρειαν, ἥ ἐστιν οὐ πρόσω τῆς Ῥώμης, ἀφίκοντο. οἱ δ' ἐν Ἀλγιδῷ τῆς Αἰκανῶν χώρας θέμενοι τὴν παρεμβολὴν πολλὰς καὶ αὐτοὶ λαμβάνοντες παρὰ τῶν πολεμίων πληγὰς καὶ παρὰ τὰ δεινὰ μένειν ἀξιοῦντες ὡς ἐπανορθωσόμενοι τὰς ἐλαττώσεις οἴκτιστα πράγματα ἔπαθον. ὠσάμενοι γὰρ ἐπ' αὐτοὺς οἱ πολέμιοι καὶ τοὺς ὑποστάντας τοῦ 2216 χάρακος καταβαλόντες ἐπέβησαν τῶν ἐρυμάτων· καὶ καταλαβόμενοι τὸ στρατόπεδον ὀλίγους μέν τινας ἀμυνομένους ἀπέκτειναν, τοὺς δὲ πλείους ἐν τῷ διωγμῷ διέφθειραν. οἱ δὲ διασωθέντες ἐκ τῆς φυγῆς τραυ-

ματίαι τε οἱ πλείους καὶ τὰ ὅπλα μικροῦ δεῖν πάντες ἀπολωλεκότες εἰς πόλιν Τύσκλον ἀφικνοῦντο· σκηνὰς δ' αὐτῶν καὶ ὑποζύγια καὶ χρήματα καὶ θεράποντας καὶ τὴν ἄλλην τοῦ πολέμου παρασκευὴν οἱ πολέμιοι διήρπασαν. ὡς δ' ἀπηγγέλη ταῦτα τοῖς κατὰ τὴν πόλιν, ὅσοιπερ ἦσαν ἐχθροὶ τῆς ὀλιγαρχίας καὶ οἱ τέως ἀποκρυπτόμενοι τὸ μῖσος φανεροὺς ἐποίουν ἑαυτοὺς τότε χαίροντες ἐπὶ ταῖς κακοπραγίαις τῶν στρατηγῶν· καὶ ἦν ἤδη καρτερὰ χεὶρ περὶ τὸν Ὁράτιόν τε καὶ τὸν Οὐαλέριον, οὓς ἔφην ἡγεμόνας εἶναι τῶν ἀριστοκρατικῶν ἑταιρειῶν.

XXIIII. *Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἄππιον τοῖς μὲν ἐπὶ στρατοπέδου συνάρχουσιν ὅπλα τε καὶ χρήματα καὶ σῖτον καὶ τἆλλα ὧν ἐδέοντο ἐπεχορήγουν, τά τε δη-*
2217 *μόσια καὶ ἰδιωτικὰ διὰ πολλῆς ὑποψίας λαμβάνοντες, καὶ ἀντὶ τῶν ἀπολωλότων ἀνδρῶν στρατολογήσαντες ἐξ ἁπάσης φυλῆς τοὺς ὅπλα φέρειν δυναμένους ἀπέστειλαν, ὥστ' ἐκπληρωθῆναι τοὺς λόχους· τῶν τε κατὰ πόλιν ἐπιμελῆ φυλακὴν ἐποιοῦντο φρουραῖς τοὺς ἐπικαιροτάτους καταλαμβανόμενοι τόπους, μή τι λάθωσι παρακινήσαντες οἱ μετὰ τοῦ Οὐαλερίου συνεστῶτες. ἐπέσκηπτόν τε δι' ἀπορρήτων τοῖς ἐπὶ τῶν στρατοπέδων συνάρχουσι τοὺς ἐναντιουμένους σφίσι διαφθείρειν· τοὺς μὲν ἐπιφανεῖς ἀδήλως, ὧν δ' ἐλάττων ὁ λόγος ἦν καὶ ἀπὸ τοῦ φανεροῦ, προφάσεις ἀεί τινας ἐπιφέροντας, ἵνα δικαίως δόξωσιν ἀποθανεῖν. καὶ ἐγίνετο ταῦτα· οἱ μὲν γὰρ ἐπὶ προνομὰς ἀποστελλόμενοι ὑπ' αὐτῶν, οἱ δ' ἀγορὰν παραπέμψαι κομιζομένην, οἱ δ' ἄλλας τινὰς ἐπιτελέσασθαι πολε-*
218 *μικὰς χρείας, ἔξω γενόμενοι τοῦ χάρακος οὐδαμοῦ ἔτι ὤφθησαν. οἱ δὲ ταπεινότατοι φυγῆς ἄρχειν κατηγορηθέντες ἢ τὰ ἀπόρρητα πρὸς τοὺς πολεμίους ἐκ-*

φέρειν ἢ τάξιν μὴ φυλάττειν, ἐν τῷ φανερῷ καταπλήξεως ἕνεκα τῶν ἄλλων ἀπώλλυντο. ἐγίνετο δὲ διχόθεν τῶν στρατιωτῶν ὄλεθρος, τῶν μὲν οἰκείων τῆς ὀλιγαρχίας ἐν ταῖς πρὸς τοὺς πολεμίους συμπλοκαῖς διαφθειρομένων, τῶν δὲ τὴν ἀριστοκρατικὴν ποθούντων κατάστασιν ὑπὸ τῶν στρατηγῶν ἀπολλυμένων.

XXV. *Πολλὰ δὲ τοιαῦτα καὶ κατὰ τὴν πόλιν ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἄππιον ἐγίνετο. τῶν μὲν οὖν ἄλλων καίτοι συχνῶν ἀναιρουμένων ἐλάττων τοῖς πλήθεσι λόγος ἦν· ἑνὸς δ' ἀνδρὸς ἐπιφανεστάτου τῶν δημοτικῶν καὶ πλείστας ἀρετὰς ἐν τοῖς κατὰ πόλεμον ἔργοις ἀποδειξαμένου θάνατος ὠμὸς καὶ ἀνόσιος, ἐπιτελεσθεὶς ἐν θατέρῳ τῶν στρατοπέδων, ἔνθα οἱ τρεῖς ἡγεμόνες ἦσαν, ἅπαντας ἑτοίμους ἐποίησε πρὸς τὴν ἀπόστασιν τοὺς ἐκεῖ. ἦν δὲ ὁ φονευθεὶς Σίκκιος, ὁ τὰς ἑκατὸν εἴκοσι μάχας ἀγωνισάμενος καὶ ἐξ ἁπασῶν τἀριστεῖα λαβών, ὃν ἔφην ἀπολελυμένον ἤδη στρατείας διὰ τὸν χρόνον ἑκούσιον τοῦ πρὸς Αἰκα- 22
νοὺς συνάρασθαι πολέμου, σπεῖραν ἀνδρῶν ὀκτακοσίων ἐκπεπληρωκότων ἤδη τὰς κατὰ νόμον στρατείας εὐνοίᾳ τῇ πρὸς αὐτὸν ἐπαγόμενον· μεθ' ὧν ἀποσταλεὶς ὑπὸ θατέρου τῶν ὑπάτων ἐπὶ τὸ στρατόπεδον τῶν πολεμίων, εἰς πρόδηλον ὄλεθρον ὡς πᾶσιν ἐδόκει, τοῦ τε χάρακος ἐκράτησε καὶ τῆς ὁλοσχεροῦς νίκης αἴτιος ἐγένετο τοῖς ὑπάτοις. τοῦτον δὴ τὸν ἄνδρα πολλοὺς ἐν τῇ πόλει διεξιόντα λόγους κατὰ τῶν ἐπὶ στρατοπέδου στρατηγῶν, ὡς ἀνάνδρων τε καὶ ἀπείρων πολέμου, ἐκποδῶν ποιῆσαι σπεύδοντες οἱ περὶ τὸν Ἄππιον, εἰς ὁμιλίας προὐκαλοῦντο φιλανθρώπους καὶ συνδιαπορεῖν σφίσιν ἠξίουν ὑπὲρ τῶν ἐπὶ στρατοπέδου, καὶ πῶς ἐπανορθωθείη τὰ τῶν*

στρατηγῶν ἁμαρτήματα λέγειν παρεκάλουν, καὶ τελευτῶντες ἔπεισαν ἐξελθεῖν ἐπὶ τὸν ἐν Κρουστομερείᾳ χάρακα αὐτὸν ἐξουσίαν ἔχοντα πρεσβευτικήν. 2220 ἔστι δὲ πάντων ἱερώτατόν τε καὶ τιμιώτατον ὁ πρεσβευτὴς παρὰ Ῥωμαίοις, ἐξουσίαν μὲν ἄρχοντος ἔχων καὶ δύναμιν, ἀσυλίαν δὲ καὶ σεβασμὸν ἱερέως. ὡς δ' ἀφίκετο, φιλοφρονουμένων αὐτὸν ἐκεῖ τῶν ἡγεμόνων καὶ δεομένων συστρατηγεῖν μένοντα, καί τινας καὶ δωρεὰς τὰς μὲν διδόντων ἤδη, τὰς δ' ὑπισχνουμένων, ἐξαπατηθεὶς ὑπ' ἀνθρώπων πονηρῶν καὶ τὴν γοητείαν τῶν λόγων οὐ συνειδὼς ὡς ἐξ ἐπιβουλῆς ἐγένετο, στρατιωτικὸς ἀνὴρ καὶ τὸν τρόπον ἁπλοῦς, τά τ' ἄλλα ὑπέθετο αὐτοῖς, ὅσα συμφέρειν ὑπελάμβανε, καὶ πρῶτον ἁπάντων παρῄνει μετάγειν τὴν παρεμβολὴν εἰς τὴν πολεμίαν ἐκ τῆς σφετέρας· τάς τε βλάβας διεξιὼν τὰς τότε γινομένας, καὶ τὰς ὠφελείας ἐπιλογιζόμενος ὅσας ἔμελλον ἕξειν μεταστρατοπεδευσάμενοι.

XXVI. Οἱ δ' ἀσμένως δέχεσθαι τὰς παραινέσεις σκηψάμενοι· Τί οὖν, ἔφασαν, οὐκ αὐτὸς ἡγεμὼν 2221 γίνῃ τῆς ἀναζεύξεως, τόπον ἐπιτήδειον προκατασκεψάμενος; ἐμπειρίαν δ' ἱκανὴν ἔχεις τῶν τόπων διὰ τὰς πολλὰς στρατείας. λόχον δέ σοι δώσομεν ἐπιλέκτων νέων, εὐζώνῳ ἐσταλμένων ὁπλίσει· σοὶ δὲ ἵππος τε διὰ τὴν ἡλικίαν παρέστω, καὶ ὁπλισμὸς ὁ τοῖς τηλικούτοις πρέπων. ὑποδεξαμένου δὲ τοῦ Σικκίου καὶ ψιλοὺς αἰτήσαντος ἑκατὸν ἐπιλέκτους, οὐδένα χρόνον ἐπισχόντες ἐκπέμπουσιν αὐτὸν ἔτι νυκτὸς οὔσης καὶ σὺν αὐτῷ τοὺς ἑκατὸν ἄνδρας, ἐκ τῶν ἰδίων ἑταίρων τοὺς ἰταμωτάτους ἐπιλεξάμενοι, οἷς ἐπέσκηψαν ἀποκτεῖναι τὸν ἄνδρα μεγάλους μισθοὺς τῆς ἀνδροφονίας ὑποσχόμενοι. ἐπεὶ δὲ πολὺ

προελθόντες ἀπὸ τοῦ χάρακος εἰς χωρίον ἦλθον ὀχθηρὸν καὶ στενόπορον καὶ χαλεπὸν ἵππῳ διεξελθεῖν, ὅτι μὴ βάδην ἀνιόντι, διὰ τὴν τραχύτητα τῶν ὄχθων, σύνθημα δόντες ἀλλήλοις στίφος ἐποίουν, ὡς ἅμα 2222 χωρήσοντες ἐπ' αὐτὸν ἀθρόοι. θεράπων δέ τις ὑπασπιστὴς τοῦ Σικκίου τὰ πολεμικὰ ἀγαθὸς εἰκάσας τὴν διάνοιαν αὐτῶν μηνυτὴς γίνεται τῷ δεσπότῃ. κἀκεῖνος ὡς ἔγνω κατακλειόμενον αὐτὸν εἰς δυσχωρίας, ἔνθα οὐκ ἦν δυνατὸν ἀνὰ κράτος ἐλάσαι τὸν ἵππον, καθάλλεταί τε καὶ στὰς ἐπὶ τὸν ὄχθον, ἵνα μὴ κυκλωθείη πρὸς αὐτῶν, τὸν ὑπασπιστὴν μόνον ἔχων τοὺς ἐπιόντας ὑπέμεινεν. ὁρμησάντων δὲ ἅμα πάντων πολλῶν ὄντων ἐπ' αὐτόν, ἀποκτείνει μὲν περὶ πεντεκαίδεκα, τραυματίζει δὲ καὶ διπλασίους. ἐδόκει δ' ἂν καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας διαφθεῖραι μαχόμενος, εἰ συνήεσαν ὁμόσε. οἱ δ' ἄρα συμφρονήσαντες, ὡς ἄμαχον [τι] εἴη χρῆμα, καὶ οὐκ ἂν ἕλοιεν αὐτὸν συστάδην, τῆς μὲν ἐκ χειρὸς ἀπείχοντο μάχης, προσωτέρω δ' ἀποστάντες ἔβαλλον οἱ μὲν σαυνίοις, οἱ δὲ χερμάσιν, οἱ δὲ ξύλοις· τινὲς δ' αὐτῶν προσελθόντες ἐκ τῶν πλαγίων τὸν ὄχθον καὶ γενόμενοι κατὰ κεφαλῆς κατεκύλιον ὑπερμεγέθεις ἄνωθεν πέτρας, ἕως 2223 ὑπὸ πλήθους τῶν ἐξ ἐναντίας βαλλομένων καὶ βάρους τῶν ἄνωθεν ἐπικαταραττομένων διέφθειραν αὐτόν. Σίκκιος μὲν δὴ τοιαύτης καταστροφῆς ἔτυχεν.

XXVII. Οἱ δὲ διαπραξάμενοι τὸν φόνον ἧκον ἐπὶ τὸ στρατόπεδον ἄγοντες τοὺς τραυματίας, καὶ διέσπειραν λόγον, ὡς ἐπιφανεὶς αὐτοῖς πολεμίων λόχος τόν τε Σίκκιον ἀποκτείνειε καὶ τοὺς ἄλλους ἄνδρας, οἷς πρώτοις ἐνέτυχεν, αὐτοί τε πολλὰ τραύματα λαβόντες μόλις αὐτοὺς ἀποφύγοιεν. καὶ ἐδόκουν ἅπασι πιστὰ λέγειν. οὐ μὴν ἔλαθέ γ' αὐτῶν τὸ ἔργον,

ἀλλὰ καίπερ ἐν ἐρημίᾳ τοῦ φόνου γεγονότος καὶ μηδένα μηνυτὴν ἔχοντος, ὑπὸ τοῦ χρεὼν αὐτοῦ καὶ τῆς ἅπαντα ἐπισκοπούσης τὰ θνητὰ πράγματα δίκης ἐξηλέγχθησαν τεκμηρίοις ἀναμφισβητήτοις. οἱ γὰρ ἐν τῷ στρατοπέδῳ ταφῆς τε δημοσίας ἄξιον ἡγούμενοι τὸν ἄνδρα καὶ τιμῆς παρὰ τοὺς ἄλλους διαφόρου, διὰ πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα, μάλιστα δ' ὅτι πρεσβύτης 2224 ὢν καὶ ὑπὸ τῆς ἡλικίας πολεμικῶν ἀγώνων ἀπολυόμενος εἰς κίνδυνον ἑκούσιον ἔδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ τοῦ κοινῇ συμφέροντος, ψηφίζονται συνελθόντες εἰς ἓν ἀπὸ τῶν τριῶν ταγμάτων ἐξελθεῖν ἐπὶ τὴν ἀνεύρεσιν τοῦ σώματος, ἵνα μετὰ πολλῆς ἀσφαλείας τε καὶ τιμῆς ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν παρακομισθείη. συγχωρησάντων δὲ τῶν ἡγεμόνων δι' εὐλάβειαν, μή τινα παράσχοιεν αὐτοῖς ὑποψίαν περὶ τὸ πρᾶγμα ἐπιβουλῆς καλῷ καὶ προσήκοντι ἔργῳ ἐνιστάμενοι, λαβόντες τὰ ὅπλα ἐξῇεσαν. ἐλθόντες δ' ἐπὶ τὸν τόπον, ὡς εἶδόν [τε οὐδαμοῦ] οὔτε δρυμοὺς οὔτε φάραγγας οὔτ' ἄλλο χωρίον, ἔνθα ὑποκαθίζειν ἐστὶ λόχοις ἔθος, ἀλλὰ ψιλὸν καὶ περιφανῆ καὶ στενόπορον ὄχθον, δι' ὑποψίας ἔλαβον εὐθέως τὸ πραχθέν· ἔπειτα τοῖς νεκροῖς προσελθόντες, ὡς ἐθεάσαντο τόν τε Σίκκιον αὐτὸν ἀσκύλευτον ἐρριμμένον καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας, ἐν 2225 θαύματι ἦσαν, εἰ πολέμιοι κρατήσαντες ἐχθρῶν μήτε ὅπλα περιείλοντο μήτ' ἐσθῆτα περιέδυσαν. διερευνώμενοί τε τὰ πέριξ ἅπαντα, ὡς οὔτε στίβον ἵππων οὔτ' ἴχνος ἀνθρώπων οὐδὲν εὕρισκον, ἔξω τῶν διὰ τῆς ὁδοῦ, πρᾶγμα ἀμήχανον ὑπελάμβανον εἶναι πολεμίους ἐπιφανῆναι τοῖς σφετέροις ἀφανεῖς, ὥσπερ πτηνούς τινας ἢ διοπετεῖς. ὑπὲρ ἅπαντα δὲ ταῦτα καὶ τὰ ἄλλα μέγιστον αὐτοῖς ἐφάνη τεκμήριον τοῦ μὴ πρὸς ἐχθρῶν, ἀλλ' ὑπὸ φίλων τὸν ἄνδρα ἀπολω-

λέναι, τὸ μηδένα τῶν πολεμίων εὑρεθῆναι νεκρόν.
οὐ γὰρ ἀκονιτί γ᾽ ἂν ἐδόκουν ἀποθανεῖν Σίκκιον,
ἄνδρα καὶ ῥώμην καὶ ψυχὴν ἀνυπόστατον, οὐδὲ τὸν
ὑπασπιστήν, οὐδὲ τοὺς ἄλλους τοὺς σὺν αὐτῷ πεσόν-
τας, ἄλλως τε καὶ ἐκ χειρὸς γενομένης τῆς μάχης.
ἐτεκμήραντο δὲ τοῦτο ἐκ τῶν τραυμάτων. αὐτός τε
γὰρ ὁ Σίκκιος πολλὰς εἶχε πληγάς, τὰς μὲν ὑπὸ χερ-
μάδων, τὰς δ᾽ ὑπὸ σαυνίων, τὰς δ᾽ ὑπὸ μαχαιρῶν,
καὶ ὁ ὑπασπιστής· οἱ δ᾽ ὑπ᾽ ἐκείνων ἀνῃρημένοι
πάντες μαχαιρῶν ἢ χερμάδων ἢ σαυνίων, βέλους δὲ 2226
οὐδεμίαν. ἀγανάκτησις δὴ μετὰ τοῦτ᾽ ἐγίνετο πάν-
των καὶ βοὴ καὶ πολὺς ὀδυρμός· ὡς δὲ κατωλοφύ-
ραντο τὴν συμφοράν, ἀράμενοι καὶ κομίσαντες τὸν
νεκρὸν ἐπὶ τὸν χάρακα, πολλὰ τῶν στρατηγῶν κατε-
βόων, καὶ μάλιστα μὲν ἠξίουν κατὰ τὸν στρατιωτικὸν
ἀποκτεῖναι νόμον τοὺς ἀνδροφόνους· εἰ δὲ μή, δι-
καστήριον αὐτοῖς ἀποδοῦναι παραχρῆμα. καὶ πολλοὶ
ἦσαν οἱ κατηγορεῖν μέλλοντες αὐτῶν. ὡς δ᾽ οὐδὲν
αὐτῶν εἰσήκουον ἐκεῖνοι, ἀλλὰ τούς τ᾽ ἄνδρας ἀπε-
κρύψαντο καὶ τὰς δίκας ἀνεβάλλοντο, φήσαντες ἐν
Ῥώμῃ λόγον ἀποδώσειν τοῖς βουλομένοις αὐτῶν κατ-
ηγορεῖν, μαθόντες ὅτι τῶν στρατηγῶν τὸ ἐπιβού-
λευμα ἦν, τὸν μὲν Σίκκιον ἔθαπτον, ἐκκομιδήν τε
ποιησάμενοι λαμπροτάτην καὶ πυρὰν νήσαντες ὑπερ-
μεγέθη καὶ τῶν ἄλλων ἀπαρχόμενοι κατὰ δύναμιν,
ὧν νόμος ἐπ᾽ ἀνδράσιν ἀγαθοῖς εἰς τὴν τελευταίαν
τιμὴν φέρεσθαι· πρὸς δὲ τὴν δεκαδαρχίαν ἠλλο- 2227
τριοῦντο πάντες καὶ γνώμην εἶχον ὡς ἀποστησόμε-
νοι. τὸ μὲν δὴ περὶ Κρουστομέρειαν καὶ Φιδήνην
στράτευμα διὰ τὸν Σικκίου τοῦ πρεσβευτοῦ θάνατον
ἐχθρὸν τοῖς προεστηκόσι τῶν πραγμάτων ἦν.

XXVIII. Τὸ δ᾽ ἐν Ἀλγιδῷ τῆς Αἰκανῶν χώρας

καθιδρυμένον καὶ τὸ ἐν τῇ πόλει πλῆθος ἅπαν διὰ ταύτας ἐξεπολεμώθη τὰς αἰτίας πρὸς αὐτούς. ἀνὴρ ἐκ τῶν δημοτικῶν, Λεύκιος Οὐεργίνιος, οὐδενὸς χείρων τὰ πολεμικά, λόχου τινὸς ἡγεμονίαν ἔχων ἐν τοῖς πέντε τάγμασιν ἐτάχθη τοῖς ἐπ᾽ Αἰκανοὺς στρατευσαμένοις. τούτῳ θυγάτηρ ἔτυχεν οὖσα καλλίστη τῶν ἐν Ῥώμῃ παρθένων, τὸ πατρῷον ὄνομα φέρουσα, ἣν ἐνεγγυήσατο Λεύκιος εἷς ἐκ τῶν δεδημαρχηκότων
2228 υἱὸς Ἰκιλίου τοῦ πρώτου τε καταστησαμένου τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν καὶ πρώτου λαβόντος. ταύτην τὴν κόρην ἐπίγαμον οὖσαν ἤδη θεασάμενος Ἄππιος Κλαύδιος ὁ τῆς δεκαδαρχίας ἡγεμὼν ἀναγινώσκουσαν ἐν γραμματιστοῦ· ἦν δὲ τὰ διδασκαλεῖα τότε τῶν παίδων περὶ τὴν ἀγοράν· εὐθύς τε ὑπὸ τοῦ κάλλους τῆς παιδὸς ἑάλω, καὶ ἔτι μᾶλλον ἔξω τῶν φρενῶν ἐγένετο πολλάκις ἀναγκαζόμενος παριέναι τὸ διδασκαλεῖον ἤδη κρατούμενος ὑπὸ τοῦ πάθους. ὡς δ᾽ οὐκ ἠδύνατο πρὸς γάμον αὐτὴν λαβεῖν, ἐκείνην τε ὁρῶν ἐγγεγυημένην ἑτέρῳ καὶ αὐτὸς ἔχων γυναῖκα γαμετήν, καὶ ἅμα οὐδ᾽ ἀξιῶν ἐκ δημοτικοῦ γένους ἁρμόσασθαι γάμον, δι᾽ ὑπεροψίαν τῆς τύχης
2229 καὶ παρὰ τὸν νόμον, ὃν αὐτὸς ἐν ταῖς δώδεκα δέλτοις ἀνέγραψε, τὸ μὲν πρῶτον ἐπειράθη διαφθεῖραι χρήμασι τὴν κόρην, καὶ προσέπεμπέ τινας ἀεὶ πρὸς τὰς τροφοὺς αὐτῆς γυναῖκας· ἦν γὰρ ὀρφανὴ μητρὸς ἡ παῖς· διδούς τε πολλὰ καὶ ἔτι πλείονα τῶν δεδομένων ὑπισχνούμενος. παρήγγελτο δὲ τοῖς πειρωμένοις τὰς τροφοὺς μὴ λέγειν, τίς ὁ τῆς κόρης ἐστὶν ἐρῶν, ἀλλ᾽ ὅτι τῶν δυναμένων τις εὖ ποιεῖν οὓς βουληθείη καὶ κακῶς. ὡς δ᾽ οὐκ ἔπειθον αὐτάς, ἀλλὰ καὶ φυλακῆς ἑώρα τὴν κόρην κρείττονος ἢ πρότερον ἀξιουμένην, φλεγόμενος ὑπὸ τοῦ πάθους τὴν

ἰταμωτέραν ἔγνω βαδίζειν ὁδόν. μεταπεμψάμενος
δή τινα τῶν ἑαυτοῦ πελατῶν, Μάρκον Κλαύδιον,
ἄνδρα τολμηρὸν καὶ πρὸς πᾶσαν ὑπηρεσίαν ἕτοιμον,
τό τε πάθος αὐτῷ διηγεῖται καὶ διδάξας, ὅσα ποιεῖν
αὐτὸν ἐβούλετο καὶ λέγειν, ἀποστέλλει συχνοὺς τῶν
ἀναιδεστάτων ἐπαγόμενον. ὁ δὲ παραγενόμενος ἐπὶ
τὸ διδασκαλεῖον ἐπιλαμβάνεται τῆς παρθένου καὶ 2230
φανερῶς ἄγειν ἐβούλετο δι' ἀγορᾶς. κραυγῆς δὲ γε-
νομένης καὶ πολλοῦ συνδραμόντος ὄχλου, κωλυόμε-
νος ὅποι προῃρεῖτο τὴν κόρην ἄγειν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν
παραγίνεται. ἐκάθητο δ' ἐπὶ τοῦ βήματος τηνικαῦτα
μόνος Ἄππιος χρηματίζων τε καὶ δικάζων τοῖς δεο-
μένοις. βουλομένου δ' αὐτοῦ λέγειν, κραυγή τε καὶ
ἀγανάκτησις ἦν ἐκ τοῦ περιεστῶτος ὄχλου, πάντων
ἀξιούντων περιμένειν, ἕως ἔλθωσιν οἱ συγγενεῖς τῆς
κόρης· καὶ ὁ Ἄππιος οὕτως ἐκέλευσε ποιεῖν. ὡς δ'
ὀλίγος ὁ μεταξὺ χρόνος ἐγεγόνει, [καὶ] παρῆν ὁ πρὸς
μητρὸς θεῖος τῆς παρθένου Πόπλιος Νομιτώριος,
φίλους τε πολλοὺς ἐπαγόμενος καὶ συγγενεῖς, ἀνὴρ
ἐκ τῶν δημοτικῶν ἐμφανής, καὶ μετ' οὐ πολὺ Λεύ-
κιος, ὁ παρὰ τοῦ πατρὸς ἐνεγγυησάμενος τὴν κόρην,
χεῖρα περὶ αὐτὸν ἔχων νέων δημοτικῶν καρτεράν.
ὡς δὲ τῷ βήματι προσῆλθεν, ἀσθμαίνων ἔτι καὶ μετέω- 2231
ρος τ' πνεῦμα λέγειν ἠξίου, τίς ἐστιν ὁ τολμήσας
ἅψασθαι παιδὸς ἀστῆς καὶ τί βουλόμενος.

XXVIIII. Σιωπῆς δὲ γενομένης Μάρκος Κλαύ-
διος ὁ τῆς παιδὸς ἐπιλαβόμενος τοιοῦτον διεξῆλθε
λόγον· Οὐδὲν οὔτε προπετὲς οὔτε βίαιον πέπρακταί
μοι περὶ τὴν κόρην, Ἄππιε Κλαύδιε· κύριος δ' αὐ-
τῆς ὢν κατὰ τοὺς νόμους ἄγω. ὃν δὲ τρόπον ἐστὶν
ἐμή, μάθε. ἔστι μοι θεράπαινα πατρικὴ πολλοὺς
πάνυ δουλεύουσα χρόνους. ταύτην κύουσαν ἡ Οὐερ-

γινίου γυνὴ συνήθη καὶ εἰσοδίαν οὖσαν ἔπεισεν ἐὰν τέκῃ, δοῦναι τὸ παιδίον αὐτῇ. κἀκείνη φυλάττουσα τὰς ὑποσχέσεις, γενομένης αὐτῇ ταύτης θυγατρός, πρὸς μὲν ἡμᾶς ἐσκήψατο νεκρὸν τεκεῖν, τῇ δὲ Νομιτωρίᾳ δίδωσι τὸ παιδίον· ἡ δὲ λαβοῦσα ὑποβάλλεται καὶ τρέφει, παίδων οὔτ' ἀρρένων οὔτε θηλειῶν οὖσα μήτηρ. πρότερον οὖν ἐλάνθανέ με ταῦτα· νῦν δὲ
2232 διὰ μηνύσεως ἐπιγνοὺς καὶ μάρτυρας ἔχων πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς καὶ τὴν θεράπαιναν ἐξητακὼς ἐπὶ τὸν κοινὸν ἁπάντων καταφεύγω νόμον, ὃς οὐ τῶν ὑποβαλλομένων, ἀλλὰ τῶν μητέρων εἶναι τὰ ἔκγονα δικαιοῖ, ἐλευθέρων μὲν οὐσῶν ἐλεύθερα, δούλων δὲ δοῦλα, τοὺς αὐτοὺς ἔχοντα κυρίους οὓς ἂν καὶ αἱ μητέρες αὐτῶν ἔχωσι. κατὰ τοῦτον τὸν νόμον ἀξιῶ τὴν θυγατέρα τῆς ἐμῆς θεραπαίνης ἄγειν, καὶ δίκας ὑπέχειν βουλόμενος, ἐὰν ἀντιποιῆταί τις, ἐγγυητὰς καταστήσειν ἀξιόχρεως, ἄξειν αὐτὴν ἐπὶ τὴν δίκην· εἰ δὲ ταχεῖαν βούλεταί τις γενέσθαι τὴν διάγνωσιν, ἕτοιμος ἐπὶ σοῦ λέγειν τὴν δίκην αὐτίκα μάλα, καὶ μὴ διεγγυᾶν τὸ σῶμα μηδ' ἀναβολὰς τῷ πράγματι προσάγειν· ὁποτέραν δ' ἂν οὗτοι βουληθῶσι τῶν αἱρέσεων ἑλέσθωσαν.

XXX. Τοιαῦτ' εἰπόντος Κλαυδίου καὶ πολλὴν
2233 προσθέντος δέησιν ὑπὲρ τοῦ μηδὲν ἐλαττωθῆναι τῶν ἀντιδίκων, ὅτι πελάτης ἦν καὶ ταπεινός, παραλαβὼν τὸν λόγον ὁ τῆς κόρης θεῖος ὀλίγα καὶ αὐτὰ τὰ πρὸς τὸν ἄρχοντα εἰρῆσθαι προσήκοντα εἶπε· πατέρα μὲν †οὖν ἦν εἶναι τῆς κόρης λέγων Οὐεργίνιον ἐκ τῶν δημοτικῶν, ὃν ἀποδημεῖν στρατευόμενον ὑπὲρ τῆς πόλεως· μητέρα δὲ γενέσθαι Νομιτωρίαν τὴν ἀδελφὴν τὴν ἑαυτοῦ, σώφρονα καὶ ἀγαθὴν γυναῖκα, ἣν οὐ πολλοῖς πρότερον ἐνιαυτοῖς ἀποθανεῖν· τραφεῖσαν δὲ τὴν παρ-

θένον, ὡς ἐλευθέρᾳ καὶ ἀστῇ προσῆκεν, ἁρμοσθῆναι κατὰ νόμον Ἰκιλίῳ, καὶ τέλος ἂν ἐσχηκέναι τὸν γάμον, εἰ μὴ θᾶττον ὁ πρὸς Αἰκανοὺς συνέστη πόλεμος. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ χρόνοις οὐκ ἐλαττόνων ἢ πεντεκαίδεκα διεληλυθότων ἐτῶν οὐδὲν τοιοῦτον ἐπιχειρήσαντα πρὸς αὐτοὺς εἰπεῖν Κλαύδιον, ἐπειδὴ δὲ γάμων ἡ παῖς ἔσχεν ὥραν καὶ διαφέρειν δοκεῖ τὴν ὄψιν, ἐρῶντα ἥκειν ἀναίσχυντον συκοφάντημα πλάσαντα, οὐκ ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γνώμης, ἀλλὰ κατεσκευασμένον 2234
ὑπ᾽ ἀνδρὸς ἁπάσαις οἰομένου δεῖν ταῖς ἐπιθυμίαις ἐκ παντὸς τρόπου χαρίζεσθαι. τὴν μὲν οὖν δίκην αὐτὸν ἔφη τὸν πατέρα περὶ τῆς θυγατρὸς ἀπολογήσεσθαι παραγενόμενον ἀπὸ τῆς στρατιᾶς· τὴν δὲ τοῦ σώματος ἀντιποίησιν, ἣν ἔδει γενέσθαι κατὰ τοὺς νόμους, αὐτὸς ποιεῖσθαι θεῖος ὢν τῆς κόρης καὶ τὰ δίκαια ὑπέχειν, οὐδὲν ἀξιῶν οὔτε ξένον οὔτε ὃ μὴ καὶ τοῖς ἄλλοις ἀποδέδοται Ῥωμαίοις δίκαιον, εἰ καὶ μὴ πᾶσιν ἀνθρώποις, σώματος εἰς δουλείαν ἐξ ἐλευθερίας ἀγομένου μὴ τὸν ἀφαιρούμενον τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλὰ τὸν φυλάττοντα κύριον εἶναι μέχρι δίκης. ἔφη τε διὰ πολλὰς αἰτίας προσήκειν τῷ Ἀππίῳ φυλάττειν τοῦτο τὸ δίκαιον· πρῶτον μὲν ὅτι τὸν νόμον τοῦτον ἅμα τοῖς ἄλλοις ἐν ταῖς δώδεκα 2235
δέλτοις ἀνέγραψεν· ἔπειθ᾽ ὅτι τῆς δεκαδαρχίας ἡγεμών· πρὸς δὲ τούτοις ὅτι μετὰ τῆς ὑπατικῆς ἐξουσίας καὶ τὴν δημαρχίαν προσειλήφει, ἧς εἶναι κράτιστον ἔργον τοῖς ἀσθενέσι καὶ ἐρήμοις τῶν πολιτῶν βοηθεῖν. ἠξίου τε τὴν καταπεφευγυῖαν ἐπ᾽ αὐτὸν ἐλεῆσαι παρθένον, μητρὸς μὲν ὀρφανὴν οὖσαν ἔτι πάλαι, πατρὸς δ᾽ ἔρημον ἐν τῷ τότε χρόνῳ, κινδυνεύουσαν οὐ χρημάτων ἀποστερηθῆναι προγονικῶν, ἀλλὰ καὶ ἀνδρὸς καὶ πατρίδος καὶ ὃ πάντων μέγι-

στον εἶναι δοκεῖ τῶν ἀνθρωπίνων ἀγαθῶν, τῆς τοῦ σώματος ἐλευθερίας. ἀνακλαυσάμενος δὲ τὴν ὕβριν, εἰς ἣν ἔμελλεν ἡ παῖς παραδοθήσεσθαι, καὶ πολὺν ἐκ τῶν παρόντων κινήσας ἔλεον περὶ τοῦ χρόνου τῆς δίκης ἔφη τελευτῶν· Ἐπειδὴ ταχεῖαν αὐτῆς βούλεται γενέσθαι τὴν κρίσιν Κλαύδιος, ὁ μηδὲν ἠδικῆσθαι φάμενος ἐν τοῖς πεντεκαίδεκα ἔτεσιν, ἕτερος
2236 μὲν ἄν τις ὑπὲρ τηλικούτων ἀγωνιζόμενος δεινὰ πάσχειν ἔλεξε καὶ ἠγανάκτει κατὰ τὸ εἰκός, ὅταν εἰρήνη γένηται καὶ πάντες ἔλθωσιν οἱ νῦν ὄντες ἐπὶ στρατοπέδου, τότε τὴν δίκην ἀξιῶν ἀπολογεῖσθαι, ὅτε καὶ μαρτύρων εὐπορία καὶ φίλων καὶ δικαστῶν ἀμφοτέροις ἔσται τοῖς δικαζομένοις, πολιτικὰ καὶ μέτρια πράγματα προφέρων καὶ τῇ Ῥωμαίων συνήθη πολιτείᾳ· ἡμεῖς δ', ἔφη, λόγων οὐδὲν δεόμεθα οὔτ' εἰρήνης οὔτ' ὄχλου φίλων καὶ δικαστῶν οὔτ' εἰς τοὺς δικασίμους χρόνους τὸ πρᾶγμα ἀναβαλλόμεθα, ἀλλὰ καὶ ἐν πολέμῳ καὶ ἐν σπάνει φίλων καὶ οὐκ ἐν ἴσοις δικασταῖς καὶ παραχρῆμα ὑπομένομεν ἀπολογεῖσθαι, τοσοῦτον αἰτησάμενοι παρὰ σοῦ χρόνον, Ἄππιε, ὅσος ἱκανὸς ἔσται τῷ πατρὶ τῆς κόρης ἀπὸ στρατοπέδου παραγενηθέντι τὰς ἰδίας ἀποδύρασθαι τύχας, καὶ δι' ἑαυτοῦ τὴν δίκην ἀπολογήσασθαι.

XXXI. Τοιαῦτα τοῦ Νομιτωρίου λέξαντος, καὶ
2237 τοῦ περιεστηκότος ὄχλου μεγάλῃ βοῇ διασημήναντος ὡς δίκαια ἀξιοῖ, μικρὸν ἐπισχὼν χρόνον Ἄππιος· Ἐγὼ τὸν μὲν νόμον, εἶπεν, οὐκ ἀγνοῶ τὸν ὑπὲρ τῆς ἐγγυήσεως τῶν εἰς δουλείαν ἀγομένων κείμενον, ὃς οὐκ ἐᾷ παρὰ τοῖς ἀφαιρουμένοις εἶναι τὸ σῶμα μέχρι δίκης, οὐδὲ καταλύσαιμι ἂν ὃν αὐτὸς ἔγραψα ἑκών· ἐκεῖνο μέντοι δίκαιον ἡγοῦμαι, δυεῖν ὄντων τῶν ἀντιποιουμένων, κυρίου καὶ πατρός, εἰ μὲν ἀμφότεροι

παρῆσαν, τὸν πατέρα κρατεῖν τοῦ σώματος μέχρι δίκης. ἐπεὶ δ᾽ ἐκεῖνος ἄπεστι, τὸν κύριον ἀπαγαγεῖν ἐγγυητὰς ἀξιόχρεως δόντα καταστήσειν ἐπὶ τὴν ἀρχήν, ὅταν ὁ πατὴρ αὐτῆς παραγένηται. περὶ δὲ τῶν ἐγγυητῶν καὶ τοῦ τιμήματος καὶ τοῦ μηδὲν ὑμᾶς ἐλαττωθῆναι περὶ τὴν δίκην, πολλὴν ποιήσομαι πρόνοιαν, ὦ Νομιτώριε. νῦν δὲ παράδος τὴν κόρην.
Τοῦτο τὸ τέλος ἐξενέγκαντος Ἀππίου, πολὺς μὲν ὀδυρμὸς ὑπὸ τῆς παρθένου καὶ τῶν περὶ αὐτὴν γυ- 2238
ναικῶν ἐγίνετο καὶ κοπετός, πολλὴ δὲ κραυγὴ καὶ ἀγανάκτησις ἐκ τοῦ περιεστηκότος ὄχλου τὸ βῆμα. ὁ δὲ μέλλων ἄγεσθαι τὴν κόρην Ἰκίλιος ἐμφύεταί τε αὐτῆς καί φησιν· Οὐκ ἐμοῦ γε ζῶντος, Ἄππιε, ταύτην ἀπάξεταί τις. ἀλλ᾽ εἴ σοι δέδοκται τοὺς νόμους καταλύειν, τὰ δὲ δίκαια συγχεῖν καὶ τὴν ἐλευθερίαν ἡμῶν ἀφαιρεῖσθαι, μηκέτι τὴν ὀνειδιζομένην ὑμῖν ἀρνοῦ τυραννίδα, ἀλλὰ τὸν ἐμὸν κέλευε ἀποκόψαι τράχηλον ταύτην τε ἀπαγαγεῖν, ὅπου σοι δοκεῖ, καὶ τὰς ἄλλας παρθένους καὶ γυναῖκας· ἵνα δὴ μάθωσιν ἤδη ποτὲ Ῥωμαῖοι δοῦλοι γεγονότες ἀντ᾽ ἐλευθέρων, καὶ μηδὲν ἔτι μεῖζον φρονῶσι τῆς τύχης. τί οὖν ἔτι μέλλεις, ἀλλ᾽ οὐ τοὐμὸν ἐκχεῖς αἷμα πρὸ τοῦ βήματος ἐν τοῖς ἁπάντων ὀφθαλμοῖς; ἴσθι μέντοι σαφῶς, 2239
ἤτοι μεγάλων κακῶν ἄρξει Ῥωμαίοις ὁ θάνατος ὁ ἐμός, ἢ μεγάλων ἀγαθῶν.

XXXII. Ἔτι δ᾽ αὐτοῦ βουλομένου λέγειν, οἱ μὲν ῥαβδοῦχοι κελευσθέντες ὑπὸ τῆς ἐξουσίας ἀνεῖργον αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ βήματος καὶ πειθαρχεῖν τοῖς κεκριμένοις ἐκέλευον· ὁ δὲ Κλαύδιος ἐπιλαβόμενος τῆς παιδὸς ἀπάγειν ἐβούλετο τοῦ θείου καὶ τοῦ μνηστῆρος ἀντεχομένην. ἰδόντες δὲ πάθος ἐλεεινὸν οἱ περὶ τὸ βῆμα πάντες ἀνέκραγον ἅμα, καὶ παρ᾽ οὐδὲν ἡγη-

σάμενοι τὴν τοῦ κρατοῦντος ἐξουσίαν ὠθοῦνται τοῖς βιαζομένοις ὁμόσε, ὥστε δείσαντα τὴν ἐπιφορὰν αὐτῶν τὸν Κλαύδιον τήν τε κόρην ἀφεῖναι καὶ ὑπὸ τοὺς πόδας τοῦ στρατηγοῦ καταφυγεῖν. ὁ δ' Ἄππιος καταρχὰς μὲν εἰς πολλὴν ταραχὴν κατέστη ἠγριωμένους ἅπαντας ὁρῶν, καὶ πολὺν ἠπόρει χρόνον ὅ τι χρὴ ποιεῖν· ἔπειτα τὸν Κλαύδιον καλέσας ἐπὶ τὸ βῆμα, καὶ μικρὰ διαλεχθεὶς πρὸς αὐτὸν ὡς ἐδόκει, τοῖς τε περιεστῶσι διασημήνας ἡσυχίαν παρασχεῖν,
2240 λέγει τοιάδε· Ἐγὼ τὸ μὲν ἀκριβές, ὦ δημόται, περὶ τῆς διεγγυήσεως τοῦ σώματος, ἐπειδὴ τραχυνομένους ὑμᾶς πρὸς τὴν ἀπόφασιν ὁρῶ, παρίημι· χαρίζεσθαι δ' ὑμῖν βουλόμενος πέπεικα τὸν ἐμαυτοῦ πελάτην ἐᾶσαι μὲν τοῖς συγγενέσι τῆς παρθένου δοῦναι τὴν διεγγύησιν, ἕως ὁ πατὴρ αὐτῆς παραγένηται. ἀπάγεσθε οὖν, ὦ Νομιτώριε, τὴν κόρην, καὶ τὴν ἐγγύην ὁμολογεῖτε περὶ αὐτῆς εἰς τὴν αὔριον ἡμέραν. ἀπόχρη γὰρ ὁ χρόνος ὑμῖν οὗτος ἀπαγγεῖλαί τε Οὐεργινίῳ τήμερον, καὶ τριῶν ἢ τεττάρων ὡρῶν αὐτὸν ἐκ τοῦ χάρακος δεῦρο ἀγαγεῖν. πλείονα δ' αὐτῶν χρόνον αἰτουμένων, οὐδὲν ἔτι ἀποκρινάμενος ἀνέστη καὶ τὸν δίφρον ἐκέλευσεν ἆραι.

XXXIII. Ὡς δ' ἀπῆλθεν ἐκ τῆς ἀγορᾶς ἀδημονῶν καὶ μαινόμενος ὑπὸ τοῦ πάθους, ἔγνω μηκέτι μεθέσθαι τῆς παρθένου τοῖς συγγενέσιν, ἀλλ' ὅταν
2241 ἐπὶ τὴν ἐγγύην προαχθῇ, μετὰ βίας αὐτὴν ἀπάγειν, ἑαυτῷ τε πλείονα φυλακὴν περιστησάμενος, ὡς μηδὲν ὑπὸ τῶν ὄχλων βιασθείη, καὶ τὰ πέριξ τοῦ βήματος ἑταίρων τε καὶ πελατῶν ὄχλῳ προκαταλαβών. ἵνα δὲ σὺν εὐσχήμονι δοκῇ τοῦτο πράττειν προφάσει, μὴ παραγενηθέντος ἐπὶ τὴν ἐγγύην τοῦ πατρός, ἐπιστολὰς δοὺς τοῖς πιστοτάτοις ἱππεῦσιν ἔπεμψεν ἐπὶ τὸν

χάρακα καὶ πρὸς Ἀντώνιον τὸν ἡγεμόνα τοῦ τάγματος,
ὑφ᾽ οὗ ἦν Οὐεργίνιος, ἀξιῶν αὐτὸν κατέχειν τὸν
ἄνδρα ἐν ἐπιμελεῖ φυλακῇ, μὴ λάθῃ πυθόμενος τὰ
περὶ τὴν θυγατέρα καὶ διαδρὰς ἐκ τοῦ χάρακος.
ἔφθησαν δ᾽ αὐτὸν οἱ τῇ κόρῃ προσήκοντες, Νομιτω-
ρίου τε υἱὸς καὶ ἀδελφὸς Ἰκιλίου, προαποσταλέντες
ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀρχομένης ἔτι τῆς καταστάσεως, νεα-
νίαι λήματος πλήρεις ἀπὸ ῥυτῆρος καὶ μετὰ μάστι-
γος ἐλαθεῖσι τοῖς ἵπποις πρότερον διανύσαντες τὴν
ὁδὸν καὶ τῷ Οὐεργινίῳ τὰ πεπραγμένα διασαφηνί-
σαντες. ὁ δὲ τὴν μὲν ἀληθῆ πρὸς Ἀντώνιον αἰτίαν
ἀποκρυψάμενος, ἀναγκαίου δέ τινος συγγενοῦς σκη- 2242
ψάμενος πεπύσθαι θάνατον, οὗ τὴν ἐκκομιδήν τε
καὶ ταφὴν αὐτὸν ἔδει ποιήσασθαι κατὰ τὸν νόμον,
ἀφίεται καὶ περὶ λύχνων ἁφὰς ἤλαυνε μετὰ τῶν
μειρακίων κατ᾽ ἄλλας ὁδούς, διωγμὸν ἔκ τε τοῦ στρα-
τοπέδου καὶ ἀπὸ τῆς πόλεως δεδοικώς· ὅπερ καὶ συν-
έβη. ὅ τε γὰρ Ἀντώνιος τὰς ἐπιστολὰς δεξάμενος
περὶ πρώτην μάλιστα φυλακήν, ἴλην ἀπέστειλεν ἱπ-
πέων ἐπ᾽ αὐτόν, ἔκ τε τῆς πόλεως ἕτεροι πεμφθέντες
ἱππεῖς δι᾽ ὅλης νυκτὸς ἐφρούρουν τὴν ἀπὸ στρατο-
πέδου φέρουσαν ὁδόν. ὡς δὲ ἀπήγγειλεν Ἀππίῳ τις
τὸν Οὐεργίνιον ἐληλυθότα παρὰ τὴν ὑπόληψιν, ἔξω
τῶν φρενῶν γενόμενος παρῆν μετὰ πολλοῦ στίφους
ἐπὶ τὸ βῆμα, καὶ προσάγειν ἐκέλευσε τοὺς τῆς κόρης
συγγενεῖς. προσελθόντων δ᾽ αὐτῶν, ὁ μὲν Κλαύδιος
τοὺς αὐτοὺς πάλιν διεξελθὼν λόγους ἠξίου τὸν Ἄππιον
γενέσθαι δικαστὴν τοῦ πράγματος μηδεμίαν ἀναβο-
λὴν ποιησάμενον, τόν τε μηνυτὴν παρεῖναι λέγων
καὶ τοὺς μάρτυρας καὶ τὴν θεράπαιναν αὐτὴν παρα-
δούς· ἐφ᾽ οἷς ἅπασι πολὺς ὁ προσποιητὸς σχετλι- 2243
ασμὸς ἦν, εἰ μὴ τεύξεται τῶν ἴσων τοῖς ἄλλοις, ὡς

πρότερον, ὅτι πελάτης ἦν αὐτοῦ· καὶ παράκλησις, [ἵνα] μὴ τοῖς ἐλεεινότερα λέγουσιν, ἀλλὰ τοῖς δικαιότερα ἀξιοῦσι βοηθεῖν.

XXXIIII. Ὁ δὲ τῆς κόρης πατὴρ καὶ οἱ λοιποὶ συγγενεῖς ἀπελογοῦντο περὶ τῆς ὑποβολῆς, πολλὰ καὶ δίκαια καὶ ἀληθῆ λέγοντες, ὡς οὔτ' αἰτίαν οὐδεμίαν εἶχεν ὑποβολῆς εὔλογον ἡ Νομιτωρίου μὲν ἀδελφή, Οὐεργινίου δὲ γυνή, παρθένος γαμηθεῖσα νέῳ ἀνδρὶ καὶ οὐ μετὰ πολλοὺς τοῦ γάμου τεκοῦσα χρόνους· οὔτ' εἰ τὰ μάλιστα ἐβούλετο γένος ἀλλότριον εἰς τὸν ἴδιον οἶκον εἰσαγαγεῖν, δούλης ἀλλοτρίας ἂν ἐλάμβανε παιδίον μᾶλλον, ἢ οὐ γυναικὸς ἐλευθέρας κατὰ γένος ἢ φιλίαν αὐτῇ προσηκούσης, παρ' ἧς πιστῶς τε ἅμα καὶ βεβαίως ἕξει τὸ ληφθέν. ἐξουσίαν τε ἔχουσαν ὁποῖον ἐβούλετο λαβεῖν, ἄρρεν ἂν ἑλέσθαι
2244 παιδίον μᾶλλον ἢ θῆλυ. τεκοῦσαν μὲν γὰρ ἀνάγκην τῶν τέκνων δεομένην στέργειν καὶ τρέφειν, ὅ τι ἂν ἡ φύσις ἐξενέγκῃ· ὑποβαλλομένην δὲ τὸ κρεῖττον ἀντὶ τοῦ χείρονος εἰκὸς εἶναι λαβεῖν. πρός τε τὸν μηνυτὴν καὶ τοὺς μάρτυρας, οὓς ὁ Κλαύδιος ἔφη πολλοὺς καὶ ἀξιόχρεως παρέξεσθαι, τὸν ἐκ τῶν εἰκότων παρείχοντο λόγον, ὡς οὐκ ἄν ποτε ἡ Νομιτωρία πρᾶγμα σιγῆς δεόμενον καὶ δι' ἑνὸς ὑπηρετηθῆναι προσώπου δυνάμενον, φανερῶς ἔπραττε καὶ μετὰ μαρτύρων ἐλευθέρων, ἵν' ἐκτραφεῖσαν τὴν κόρην ὑπὸ τῶν κυρίων τῆς μητρὸς ἀφαιρεθείη. τόν τε χρόνον οὐ μικρὸν ἔλεγον εἶναι τεκμήριον τοῦ μηδὲν ὑγιὲς λέγειν τὸν κατήγορον· οὔτε γὰρ ἂν τὸν μηνυτὴν οὔτε τοὺς μάρτυρας κατασχεῖν ἐν πεντεκαίδεκα ἔτεσιν ἀπόρρητον τὴν ὑποβολήν, ἀλλ' ἔτι πρότερον εἰπεῖν. διαβάλλοντες δὲ τὰς τῶν κατηγόρων πίστεις, ὡς οὔτ' ἀληθεῖς οὔτε πιθανάς, ἀντιπαρεξετάξειν ταύ-

ταις ἠξίουν τὰς ἑαυτῶν, πολλὰς καὶ οὐκ ἀσήμους γυ- 2245
ναῖκας ὀνομάζοντες, ἃς ἔφασαν εἰδέναι Νομιτωρίαν
ἐγκύμονα γενομένην ἐκ τοῦ περὶ τὴν γαστέρα ὄγκου.
χωρὶς δὲ τούτων τὰς ἐπὶ τοῦ τόκου καὶ τῆς λοχείας
παραγενομένας διὰ τὸ συγγενὲς καὶ τικτόμενον τὸ
παιδίον ἰδούσας ἐπεδείκνυντο καὶ ἀνακρίνειν ἠξίουν.
ὃ δὲ πάντων τεκμήριον ἦν περιφανέστατον, ἔκ τε τῶν
ἀνδρῶν πολλοῖς καὶ γυναικῶν μαρτυρούμενον οὐ
μόνον ἐλευθέρων, ἀλλὰ καὶ δούλων, τοῦτ᾽ ἔλεγον
τελευτῶντες, ὅτι τῷ γάλακτι τῆς μητρὸς ἐτράφη τὸ
παιδίον· ἀμήχανον δ᾽ εἶναι γάλακτος πληρωθῆναι
μαστοὺς γυναικὶ μὴ τεκούσῃ.

XXXV. Ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια παρ-
εχομένων αὐτῶν ἰσχυρὰ καὶ οὐδένα λόγον ἐναντίον
δέξασθαι δυνάμενα, καὶ πολὺν ἐπὶ ταῖς συμφοραῖς
τῆς κόρης ἔλεον καταχεομένων, οἱ μὲν ἄλλοι πάντες,
ὅσοι συνήκουον τῶν λόγων, τῆς τε μορφῆς οἶκτον
ἐλάμβανον, ὁπότ᾽ εἰς τὴν παρθένον ἴδοιεν· καὶ γὰρ 2246
ἐν ἐσθῆτι οὖσα πιναρᾷ καὶ κατηφὲς ὁρῶσα καὶ τὸ
καλὸν τῶν ὀμμάτων ἐκτήκουσα τὰς ἁπάντων ἥρπα-
ζεν ὄψεις, οὕτως ὑπεράνθρωπός τις ὥρα περὶ αὐτὴν
καὶ χάρις ἦν· καὶ τὸ τῆς τύχης ἀνεκλαίοντο παρά-
λογον, εἰς οἵας ὕβρεις καὶ προπηλακισμοὺς ἐλεύσοιτο
ἐξ οἵων ἀγαθῶν. εἰσῄει τ᾽ αὐτοὺς λογισμός, ὅτι τοῦ
περὶ τῆς ἐλευθερίας νόμου καταλυθέντος οὐδὲν ἔσται
τὸ κωλῦον καὶ τὰς αὐτῶν γυναῖκας καὶ θυγατέρας
τὰ αὐτὰ ἐκείνῃ παθεῖν. ταῦτά τε δὴ καὶ πολλὰ τού-
τοις ὅμοια ἐπιλογιζόμενοι καὶ πρὸς ἀλλήλους διαλα-
λοῦντες ἔκλαιον. ὁ δὲ Ἄππιος, οἷα δὴ φύσιν τε οὐ
φρενήρης ἀνὴρ καὶ ὑπὸ μεγέθους ἐξουσίας διεφθαρ-
μένος, οἰδῶν τε τὴν ψυχὴν καὶ ζέων τὰ σπλάγχνα
διὰ τὸν ἔρωτα τῆς παιδός, οὔτε τοῖς λόγοις τῶν ἀπο-

2247 λογουμένων προσεῖχεν οὔτε τοῖς δάκρυσιν αὐτῆς ἐπεκλᾶτο τῆς κόρης, τήν τε συμπάθειαν τῶν παρόντων δι' ὀργῆς ἐλάμβανεν, ὡς αὐτὸς δὴ πλείονος ὢν ἄξιος ἐλέου καὶ δεινότερα ὑπὸ τῆς δεδουλωμένης αὐτὸν εὐμορφίας πεπονθώς. διὰ δὴ ταῦτα πάντα οἰστρῶν λόγον τε ὑπέμεινεν εἰπεῖν ἀναίσχυντον, ἐξ οὗ καταφανὲς ἐγένετο τοῖς ὑπονοοῦσιν, ὅτι τὸ συκοφάντημα κατὰ τῆς κόρης αὐτὸς ἔρραψε, καὶ ἔργον ἐτόλμησε τυραννικὸν πρᾶξαι καὶ ὠμόν.

XXXVI. Ἔτι γὰρ αὐτῶν λεγόντων ἡσυχίαν γενέσθαι κελεύσας, ἐπειδὴ σιωπή τ' ἐγένετο, καὶ πᾶς ὁ κατὰ τὴν ἀγορὰν ὄχλος τὴν ὁρμὴν ἐπελάμβανεν ἐπιθυμίᾳ γνώσεως τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεχθησομένων προαχθείς, πολλάκις ἐπιστρέψας τὸ πρόσωπον
2248 τῇδε καὶ τῇδε καὶ τὰ στίφη τῶν ἑταίρων οἷς διειλήφει τὴν ἀγορὰν τοῖς ὄμμασι διαριθμησάμενος τοιάδ' εἶπεν· Ἐγὼ δὲ περὶ τοῦδε τοῦ πράγματος, ὦ Οὐεργίνιε, καὶ ὑμεῖς οἱ σὺν τούτῳ παρόντες, οὐ νῦν πρῶτον ἀκήκοα, ἀλλὰ παλαίτερον ἔτι πρὶν ἢ τήνδε τὴν ἀρχὴν παραλαβεῖν. ὃν τρόπον δ' ἔγνων, ἀκούσατε. ὁ πατὴρ ὁ Μάρκου Κλαυδίου τουδὶ τελευτῶν τὸν βίον ἠξίωσέ με τὸν υἱὸν αὐτοῦ νήπιον καταλειπόμενον ἐπιτροπεῦσαι· πελάται δ' εἰσὶ τῆς οἰκίας ἡμῶν ἐκ προγόνων. ἐν δὲ τῷ χρόνῳ τῆς ἐπιτροπείας μήνυσις ἐγένετό μοι περὶ τῆς παιδός, ὡς ὑποβάλοιτο αὐτὴν Νομιτωρία λαβοῦσα παρὰ τῆς Κλαυδίου δούλης, καὶ τὸ πρᾶγμα ἐξετάσας ἔμαθον οὕτως ἔχον. ἐφάπτεσθαι μὲν οὖν ἐμαυτὸν οὐ προσῆκέ μοι· βέλτιον δὲ ἡγησάμην τούτῳ τὴν ἐξουσίαν καταλιπεῖν, ὁπότε γένοιτο ἀνήρ, εἴτε βουληθείη τὴν παιδίσκην ἀπάγειν, εἴτε διαλύσασθαι πρὸς τοὺς τρέφοντας αὐ-
2249 τὴν χρήμασι πεισθεὶς ἢ χαρισάμενος. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ

χρόνοις ἐγὼ μὲν εἰς τὰς πολιτικὰς πράξεις ἐγκυλισθεὶς οὐδὲν ἔτι τῶν Κλαυδίου πραγμάτων εἶχον ἐν φροντίδι. τούτῳ δ', ὡς ἔοικε, τὸν ἴδιον ἐξετάζοντι βίον καὶ περὶ τῆς παιδίσκης ἡ μήνυσις ἀπεδόθη καθάπερ ἐμοὶ πρότερον, καὶ οὐδὲν ἄδικον ἀξιοῖ τὴν ἐκ τῆς ἑαυτοῦ θεραπαίνης γεγονυῖαν ἀπάγειν βουλόμενος. εἰ μὲν οὖν ἀλλήλους ἔπεισαν αὐτοί, καλῶς ἂν εἶχεν· ἐπεὶ δ' εἰς ἀμφισβήτησιν ἦλθε τὸ πρᾶγμα, μαρτυρῶ τ' αὐτῷ ταῦτα καὶ κρίνω εἶναι τοῦτον τῆς παιδίσκης κύριον.

XXXVII. Ὡς δὲ ταῦτ' ἤκουσαν, ὅσοι μὲν ἦσαν ἀκέραιοί τε καὶ τῶν τὰ δίκαια λεγόντων παράκλητοι τὰς χεῖρας ἄραντες εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνέκραγον ὀδυρμῷ καὶ ἀγανακτήσει μεμιγμένην κραυγήν· οἱ δὲ τῆς ὀλιγαρχίας κόλακες τὴν ἐπικελεύουσάν τε καὶ θάρσος ἐμποιῆσαι δυναμένην τοῖς κρατοῦσι φωνήν. ἠρεθισμένης δὲ τῆς ἀγορᾶς καὶ παντοδαπῶν γεμούσης λόγων τε καὶ παθῶν, σιωπὴν γενέσθαι κελεύσας Ἄππιος ἔλεξεν· Εἰ μὴ παύσεσθε διαστασιάζοντες τὴν πόλιν καὶ ἀντιστρατηγοῦντες ἡμῖν οἱ ταραχώδεις, μηδαμῇ χρήσιμοι μήτ' ἐν εἰρήνῃ μήτε κατὰ πολέμους, ὑπὸ τῆς ἀνάγκης σωφρονισθέντες εἴξετε. μὴ τούτους οἴεσθε τοὺς ἐπὶ τοῦ Καπετωλίου καὶ τῆς ἄκρας φρουροὺς ἐπὶ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους ἡμῖν παρεσκευάσθαι μόνον, ὑμᾶς δὲ τοὺς ἔνδον ὑποκαθημένους καὶ πάντα σήποντας τὰ τῆς πόλεως πράγματα ἐάσειν. γνώμην δὴ λαβόντες κρείττονα ἧς ἔχετε νῦν ἄπιτε, οἷς μή τι πρᾶγμα, καὶ πράσσετε τὰ ἑαυτῶν, εἰ σωφρονεῖτε· σὺ δ' ἄγου τὴν παιδίσκην ἔχων, Κλαύδιε, μηδένα δεδοικὼς δι' ἀγορᾶς· οἱ γὰρ Ἀππίου σε προπέμψουσι δώδεκα πελέκεις. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπεν, οἱ μὲν ἄλλοι στένοντες καὶ τὰ μέτωπα

παίοντες καὶ τὰ δάκρυα κατέχειν οὐ δυνάμενοι, παρεχώρουν ἐκ τῆς ἀγορᾶς· ὁ δὲ Κλαύδιος ἀπῆγε τὴν παῖδα τῷ πατρὶ περιπεπλεγμένην καὶ καταφιλοῦσαν
2251 καὶ ταῖς ἡδίσταις φωναῖς ἀνακαλοῦσαν. ἐν τοιούτοις δὴ κακοῖς Οὐεργίνιος ὢν ἔργον εἰς νοῦν βάλλεται πατρὶ μὲν ταλαίπωρον καὶ πικρόν, ἐλευθέρῳ δ' ἀνδρὶ καὶ μεγαλόφρονι πρέπον. αἰτησάμενος γὰρ ἐξουσίαν ἀσπάσασθαι τὴν θυγατέρα τοὺς τελευταίους ἀσπασμοὺς ἐπ' ἐξουσίας καὶ διαλεχθῆναι μόνῃ μόνος ὁπόσα βούλεται, πρὶν ἐκ τῆς ἀγορᾶς αὐτὴν ἀπαχθῆναι, συγχωρήσαντος τοῦ στρατηγοῦ καὶ τῶν ἐχθρῶν μικρὸν ἀναχωρησάντων, ὑπολαβὼν αὐτὴν ἐκλυομένην τε καὶ καταρρέουσαν καὶ κατέχων, τέως μὲν ἀνεκαλεῖτό τε καὶ κατεφίλει καὶ τὰς λιβάδας ἐξέματτε τῶν δακρύων· ἔπειτα κατὰ μικρὸν ὑπάγων, ὡς ἦν ἐγγὺς ἐργαστηρίου μαγειρικοῦ, μάχαιραν ἐξαρπάσας ἀπὸ τῆς τραπέζης παίει τὴν θυγατέρα διὰ τῶν σπλάγχνων τοσοῦτον εἰπών· Ἐλευθέραν σε καὶ εὐσχήμονα,
2252 τέκνον, ἀποστέλλω τοῖς κατὰ γῆς προγόνοις· ζῶσα γὰρ ταῦτα οὐχὶ ἐξῆν ἔχειν ἀμφότερα διὰ τὸν τύραννον. κραυγῆς δὲ γενομένης, ᾑμαγμένην ἔχων τὴν σφαγίδα καὶ οὕτως ἀνάμεστος αἵματος γενόμενος, ᾧ προσέφυρεν αὐτὸν ἡ σφαγὴ τῆς κόρης, ἔθει διὰ τῆς πόλεως ἐμμανὴς ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν τοὺς πολίτας καλῶν. διεκπαισάμενος δὲ τὰς πύλας ἀνέβη τὸν ἵππον, ὃς ἦν παρεσκευασμένος αὐτῷ, καὶ συνέτεινεν ἐπὶ τὸ στρατόπεδον, Ἰκιλίου τε καὶ Νομιτωρίου τῶν ἀγαγόντων αὐτὸν ἐκ τοῦ χάρακος νεανίσκων καὶ τότε συμπροπεμπόντων. ἠκολούθει δ' αὐτοῖς καὶ ἄλλος ὄχλος δημοτῶν οὐκ ὀλίγος, ὥστε τοὺς σύμπαντας ἀμφὶ τετρακοσίους γενέσθαι.

XXXVIII. Ὁ δὲ Ἄππιος, ὡς τὸ περὶ τὴν κόρην

ἐπέγνω πάθος ἀναπηδᾷ τε ἀπὸ τοῦ δίφρου, καὶ διώκειν τὸν Οὐεργίνιον ἐβούλετο πολλὰ καὶ λέγων 2253 *καὶ πράττων ἄκοσμα. περιστάντων δ' αὐτὸν τῶν φίλων καὶ μηδὲν ἐξαμαρτάνειν ἀξιούντων, ἀπῄει πρὸς ἅπαντας ἀγανακτῶν. ἤδη δ' αὐτῷ κατ' οἰκίαν ὄντι προσαγγέλλουσι τῶν ἑταίρων τινές, ὅτι περὶ τὸ πτῶμα τῆς κόρης Ἰκίλιός τε ὁ κηδεστὴς καὶ Νομιτώριος ὁ θεῖος σὺν τοῖς ἄλλοις ἑταίροις τε καὶ συγγενέσιν ἑστῶτες ῥητὰ καὶ ἄρρητα κατ' αὐτοῦ λέγουσι, καὶ καλοῦσι τὸν δῆμον ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν. ὁ δ' ὑπ' ὀργῆς ὡς εἶχε τάχους πέμπει τῶν ῥαβδούχων τινάς, κελεύσας ἀπάγειν εἰς τὸ δεσμωτήριον τοὺς κεκραγότας καὶ τὸ πτῶμα μεταφέρειν ἐκ τῆς ἀγορᾶς· ἀφρονέστατον πρᾶγμα ποιῶν καὶ τοῖς τότε καιροῖς ἥκιστα ἁρμόττον. δέον γὰρ ἀποθεραπεύειν τὸν ὄχλον ὀργῆς εἰληφότα δικαίαν πρόφασιν, εἴξαντα μὲν ἐν τῷ παραχρῆμα χρόνῳ, ὕστερον δὲ τὰ μὲν ἀπολογούμενον, τὰ δὲ παραιτούμενον, τὰ δ' ἑτέραις τισὶν εὐεργεσίαις ἀναλαβόντα, ἐπὶ τὸ βιαιότερον ἐνεχθεὶς εἰς ἀπόνοιαν αὐτοὺς ἠνάγκασε τραπέσθαι. οὐ γὰρ ἀνέσχοντο τῶν* 2254 *ἐπιβαλλομένων ἕλκειν τὴν νεκρὰν ἢ τοὺς ἄνδρας εἰς τὸ δεσμωτήριον ἀπάγειν, ἀλλ' ἐμβοήσαντες ἑαυτοῖς σὺν ὠθισμῷ τε καὶ πληγαῖς τῶν βιαζομένων, ἐξέβαλον αὐτοὺς ἐκ τῆς ἀγορᾶς. ὥστ' ἠναγκάσθη ἀκούσας ταῦτα ὁ Ἄππιος ἅμα συχνοῖς ἑταίροις καὶ πελάταις εἰς τὴν ἀγορὰν πορεύεσθαι, παίειν κελεύων καὶ ἀνείργειν ἐκποδῶν τοὺς ἐν τοῖς στενωποῖς. πυθόμενοι δὲ τὴν διάνοιαν αὐτοῦ τῆς ἐξόδου Οὐαλέριός τε καὶ Ὁράτιος, οὓς ἔφην ἡγεμονικωτάτους εἶναι τῶν ἀντιποιουμένων τῆς ἐλευθερίας, πολλὴν καὶ ἀγαθὴν νεότητα περὶ αὐτοὺς ἄγοντες ἵστανται πρὸ τοῦ νεκροῦ· καὶ ἐπειδὴ πλησίον αὐτῶν οἱ περὶ τὸν Ἄππιον ἐγέ-*

νοντο, πρῶτον μὲν εἰς λόγους ἐπαχθεῖς καὶ προπηλακισμοὺς κατὰ τῆς ἐξουσίας αὐτῶν ἐχώρουν, ἔπειτα καὶ τὰ ἔργα ὅμοια τοῖς λόγοις παρείχοντο παίοντές τε καὶ ἀνατρέποντες τοὺς ὁμόσε χωροῦντας.

XXXVIIII. Ὁ δ' Ἄππιος ἀδημονῶν ἐπὶ τῷ παρ'
2255 ἐλπίδα τῆς κωλύσεως, καὶ οὐκ ἔχων ὅ τι χρήσεται τοῖς ἀνδράσι, τὴν ὀλεθριωτάτην ἔγνω βαδίζειν ὁδόν. Ὡς γὰρ ἔτι τοῦ πλήθους αὐτῷ διαμένοντος οἰκείου, ἀναβὰς ἐπὶ τοῦ Ἡφαίστου τὸ ἱερὸν ἐκάλει τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν, καὶ κατηγορεῖν ἐπειρᾶτο τῶν ἀνδρῶν παρανομίαν τε καὶ ὕβριν, ἐξουσίᾳ δημαρχικῇ καὶ ἐλπίδι κούφῃ ἐπαιρόμενος, ὅτι συναγανακτήσας ὁ δῆμος αὐτῷ παρήσει ῥίψαι τοὺς ἄνδρας κατὰ τῆς πέτρας. οἱ δὲ περὶ τὸν Οὐαλέριον ἕτερον τόπον τῆς ἀγορᾶς καταλαβόμενοι, καὶ τὸ πτῶμα τῆς παρθένου θέντες ὅθεν ὑπὸ πάντων ὀφθήσεσθαι ἔμελλεν, ἑτέραν συνῆγον ἐκκλησίαν, καὶ πολλὴν ἐποιοῦντο τοῦ τ' Ἀππίου καὶ τῶν ἄλλων ὀλιγαρχικῶν κατηγορίαν. ἔμελλέ τε, ὅπερ εἰκὸς ἦν, οὓς μὲν τὸ ἀξίωμα τῶν ἀνδρῶν, οὓς δ' ὁ τῆς κόρης ἔλεος δεινὰ καὶ πέρα
2256 δεινῶν διὰ τὸ ἀτυχὲς κάλλος παθούσης, οὓς δ' αὐτὸς ὁ τῆς ἀρχαίας καταστάσεως πόθος εἰς ταύτην τὴν ἐκκλησίαν παρακαλῶν, πλείους τῶν ἑτέρων συνάξειν, ὥστ' ὀλίγους τινὰς ὑπολειφθῆναι περὶ τὸν Ἄππιον, αὐτοὺς τοὺς ὀλιγαρχικούς, ἐν οἷς ἦσάν τινες οὐκέτι τῆς ὀλιγαρχίας αὐτῶν ἀκροώμενοι, διὰ πολλὰς προφάσεις, ἀλλ', εἰ γένοιτ' ἰσχυρὰ τὰ τῶν ἐναντίων, ἄσμενοι χωρήσειν ἐπ' ἐκείνους. ἐρημούμενον δὴ θεωρῶν ἑαυτὸν ὁ Ἄππιος ἠναγκάσθη μεταγνῶναι καὶ ἀπελθεῖν ἐκ τῆς ἀγορᾶς· ὃ καὶ μάλιστ' ὤνησεν αὐτόν. βαλλόμενος γὰρ ὑπὸ τοῦ δημοτικοῦ πλήθους καλὰς ἔτισεν ἂν αὐτῷ τὰς δίκας. μετὰ τοῦτ' ἐξουσίας

ὅσης ἐβούλοντο τυχόντες οἱ περὶ τὸν Οὐαλέριον,
ἐνεφοροῦντο τῶν κατὰ τῆς ὀλιγαρχίας λόγων καὶ τοὺς
ἔτι ἐνδοιάζοντας ἐξεδημαγώγουν. ἔτι δὲ μᾶλλον
ἐξηλλοτρίωσαν τὸν πολιτικὸν ὄχλον οἱ τῆς κόρης 2257
συγγενεῖς κλίνην τε κομίσαντες εἰς τὴν ἀγορὰν καὶ
τὸν ἄλλον κόσμον τὸν ἐπιτάφιον οἷον ἐδύναντο πολυ-
τελέστατον παρασκευάσαντες, καὶ τὴν ἐκφορὰν τοῦ
σώματος διὰ τῶν ἐπιφανεστάτων τῆς πόλεως ποιη-
σάμενοι στενωπῶν, ὅθεν ὑπὸ πλείστων ὀφθήσε-
σθαι ἔμελλεν. ἐξεπήδων γὰρ ἐκ τῶν οἰκιῶν γυναῖκές
τε καὶ παρθένοι τὸ πάθος ἀποδυρόμεναι, αἱ μὲν
ἄνθη καὶ στεφάνους βάλλουσαι κατὰ τῆς κλίνης. αἱ
δὲ τελαμῶνας ἢ μίτρας, αἱ δὲ ἀθύρματα κομίζουσαι
παρθενικά, καί που τινὲς καὶ πλοκάμων ἀποκειρά-
μεναι βοστρύχους. ἄνδρες τε συχνοὶ λαμβάνοντες
ἐκ τῶν πλησίον ἐργαστηρίων τὰ μὲν ὠνῇ, τὰ δὲ
χάριτι, συνεπεκόσμουν τοῖς προσφόροις δωρήμασι
τὴν ἐκκομιδήν, ὥστε περιβόητον ἀνὰ τὴν πόλιν γε-
νέσθαι τὸ κῆδος, καὶ προθυμίαν ἅπαντας καταλαβεῖν
τῆς τῶν ὀλιγαρχικῶν καταλύσεως. ἀλλ' οἱ φρονοῦν- 2258
τες τὰ τῆς ὀλιγαρχίας ὅπλα ἔχοντες μέγα παρεῖχον
αὐτοῖς δέος, οἵ τε περὶ τὸν Οὐαλέριον οὐκ ἠξίουν
αἵματι πολιτικῷ τὸ νεῖκος διαιρεῖν.

XXXX. Τὰ μὲν δὴ κατὰ πόλιν ἐν τοιαύταις
ἦν ταραχαῖς. Οὐεργίνιος δ', ὃν ἔφην αὐτόχειρα
γενέσθαι τῆς ἑαυτοῦ θυγατρός, ἀπὸ ῥυτῆρος ἐλαύ-
νων τὸν ἵππον ἀφικνεῖται περὶ λύχνων ἁφὰς ἐπὶ τὸν
πρὸς Ἀλγιδῷ χάρακα, τοιοῦτος οἷος ἐκ τῆς πόλεως
ἐξέδραμεν, αἵματι πεφυρμένος ἅπας καὶ τὴν μαγει-
ρικὴν σφαγίδα διὰ χειρὸς ἔχων. ἰδόντες δ' αὐτὸν
οἱ πρὸ τοῦ στρατοπέδου τὰς φυλακὰς φυλάττοντες
ἐν ἀπόρῳ τ' ἦσαν ὅ τι πέπονθεν εἰκάσαι, καὶ παρη-

κολούθουν ὡς ἀκουσόμενοι μέγα πρᾶγμα καὶ δεινόν.
ὁ δὲ τέως μὲν ἐπορεύετο κλαίων καὶ διασημαίνων
τοῖς ὁμόσε χωροῦσιν ἀκολουθεῖν· ἐξέτρεχον δ' ἐκ
2259 τῶν σκηνῶν ἃς διεπορεύετο μεταξὺ δειπνοῦντες
ἅπαντες ἀθρόοι, φανοὺς ἔχοντες καὶ λαμπάδας, ἀγω-
νίας πλήρεις καὶ θορύβῳ περιχεύμενοι περὶ αὐτὸν
ἠκολούθουν. ἐπεὶ δ' εἰς τὸν ἀναπεπταμένον τοῦ
στρατοπέδου τόπον ἦλθεν, ἐπὶ μετεώρου τινὸς στὰς,
ὥσθ' ὑπὸ πάντων ὁρᾶσθαι, διηγεῖτο τὰς καταλαβού-
σας αὐτὸν συμφορὰς, μάρτυρας τῶν λόγων παρεχό-
μενος τοὺς σὺν αὐτῷ παρόντας ἐκ τῆς πόλεως. ὡς
δὲ κατέμαθεν ὀλοφυρομένους τε πολλοὺς καὶ δακρύ-
οντας, εἰς ἱκεσίας καὶ δεήσεις αὐτῶν ἐτράπετο, μὴ
περιιδεῖν μήτ' αὐτὸν ἀτιμώρητον γενόμενον μήτε
τὴν πατρίδα προπηλακιζομένην. λέγοντι δ' αὐτῷ
ταῦτα πολὺ τὸ βουλόμενον ἐξ ἁπάντων ἀκούειν καὶ
ἐπικελευόμενον λέγειν ἐγίνετο. τοιγάρτοι καὶ θρασύ-
τερον ἤδη καθήπτετο τῆς ὀλιγαρχίας διεξιὼν, ὡς πολ-
λῶν μὲν ἀφείλοντο τὰς οὐσίας οἱ δέκα, πολλῶν δὲ
πληγαῖς ᾐκίσαντο τὰ σώματα, παμπόλλους δὲ φυγεῖν
ἠνάγκασαν ἐκ τῆς πατρίδος οὐδὲν ἀδικήσαντας, γυ-
2260 ναικῶν τε ὕβρεις καὶ παρθένων ἐπιγάμων ἁρπαγὰς
καὶ παίδων ἐλευθέρων προπηλακισμοὺς καὶ τὰς ἄλλας
αὐτῶν παρανομίας τε καὶ ὠμότητας ἐπικλογιζόμενος·
Καὶ ταῦτ', ἔφη, προπηλακίζουσιν ἡμᾶς οἱ μὴ νό-
μῳ τὴν ἐξουσίαν ἔχοντες μήτε ψηφίσματι βουλῆς ἢ
δήμου συγχωρήματι λαβόντες· ὁ γὰρ ἐνιαύσιος αὐ-
τοῖς τῆς ἀρχῆς χρόνος, ὃν ἐχρῆν αὐτοὺς ἄρξαντας
ἑτέροις παραδοῦναι τὰ κοινά, παρελήλυθεν· ἀλλ' ἐκ
τοῦ βιαιοτάτου τῶν τρόπων, πολλὴν δειλίαν καὶ μα-
λακίαν καταγνόντες ἡμῶν ὥσπερ γυναικῶν. εἰσελ-
θέτω δὴ λογισμὸς ἕκαστον ὑμῶν ὧν τ' αὐτὸς πέ-

πονθε καὶ ὧν οἶδεν ἑτέρους παθόντας· καὶ εἴ τις
ὑμῶν δελεαζόμενος ὑπ' αὐτῶν ἡδοναῖς τισιν ἢ χά-
ρισιν οὐ πεφόβηται τὴν ὀλιγαρχίαν, οὐδὲ δέδοικε μὴ
καὶ ἐπ' αὐτὸν ἔλθοι ποτὲ σὺν χρόνῳ τὰ δεινά, μα-
θὼν ὅτι τυράννοις οὐδέν ἐστι πιστόν, οὐδ' ἀπ'
εὐνοίας αἱ τῶν κρατούντων δίδονταί τισι χάριτες,
καὶ πάντα τὰ ὅμοια τούτοις, μεταγνώτω· καὶ μιᾷ
διανοίᾳ χρησάμενοι πάντες ἐλευθεροῦτε ἀπὸ τῶν τυ- 2261
ράννων τὴν πατρίδα, ἐν ᾗ θεῶν τε ὑμῖν ἱερὰ ἵδρυται
καὶ θῆκαι προγόνων εἰσίν, οὓς ὑμεῖς τιμᾶτε μετὰ
θεούς, καὶ γηραιοὶ πατέρες τροφεῖα πολλὰ καὶ ἄξια
τῶν πόνων ἀπαιτοῦντες, γυναῖκές τε κατὰ νόμους
ἐγγυηθεῖσαι καὶ θυγατέρες ἐπίγαμοι φροντίδος οὐ
μικρᾶς δεόμεναι τοῖς ἔχουσι καὶ γοναὶ παίδων ἀρ-
ρένων, οἷς ὀφείλεται δίκαια φύσεως καὶ προγόνων.
οἰκίας γὰρ δὴ καὶ κλήρους καὶ χρήματα σὺν πολλοῖς
κτηθέντα πόνοις ὑπὸ πατέρων καὶ ὑμῶν αὐτῶν σιω-
πῶ· ὧν οὐδὲν ὑμῖν ἔξεστι βεβαίως ἔχειν, ἕως ἂν
ὑπὸ τῶν δέκα τυραννῆσθε.

XXXXI. Οὔτε σωφρόνων οὔτε γενναίων ἐστὶν
ἀνθρώπων τὰ μὲν ἀλλότρια κτᾶσθαι δι' ἀνδραγα-
θίαν, τὰ δ' οἰκεῖα περιορᾶν ἀπολλύμενα διὰ μαλα-
κίαν οὐδὲ πρὸς μὲν Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους καὶ
Σαβίνους καὶ τοὺς ἄλλους περιοίκους ἅπαντας πολε-
μεῖν μακροὺς καὶ ἀδιαλείπτους πολέμους ὑπὲρ ἀρχῆς 2262
καὶ δυναστείας, πρὸς δὲ τοὺς παρὰ νόμον ἄρχοντας
ὑμῶν μὴ θέλειν ἄρασθαι τὰ ὅπλα ὑπὲρ ἀσφαλείας
τε καὶ ἐλευθερίας. οὐκ ἀναλήψεσθε τὸ φρόνημα τῆς
πατρίδος; οὐ παραστήσεται λογισμὸς ὑμῖν τῆς ἀρετῆς
τῶν γονέων ἄξιος, οἳ διὰ μιᾶς γυναικὸς ὕβριν ὑφ'
ἑνὸς τῶν Ταρκυνίου παίδων ὑβρισθείσης, καὶ διὰ
τὴν συμφορὰν ταύτην ἑαυτὴν διαχρησαμένης, οὕτως

ἠγανάκτησαν ἐπὶ τῷ πάθει καὶ παρωξύνθησαν καὶ κοινὴν ἁπάντων ἡγήσαντο τὴν ὕβριν, ὥστ᾽ οὐ μόνον Ταρκύνιον ἐξέβαλον ἐκ τῆς πόλεως, ἀλλὰ καὶ τὸ βασιλικὸν πολίτευμα κατέλυσαν, καὶ τὸ λοιπὸν ἀπεῖπαν μηδένα Ῥωμαίων ἄρχειν διὰ βίου τὴν ἀνυπεύθυνον ἀρχήν, αὐτοί τε τοὺς μεγίστους ὀμόσαντες ὅρκους, καὶ κατὰ τῶν ἐγγόνων ἀρὰς ἐάν τι παρὰ ταῦτα ποιῶσι καταρασάμενοι; ἔπειτ᾽ ἐκεῖνοι μὲν ἑνὸς οὐκ ἤνεγκαν ἀκολάστου μειρακίου τυραννικὴν ὕβριν εἰς
7 ἓν σῶμα ἐλεύθερον γενομένην, ὑμεῖς δὲ πολυκέφαλον
2263 τυραννίδα πάσῃ παρανομίᾳ τε καὶ ἀσελγείᾳ χρωμένην καὶ ἔτι μᾶλλον χρησομένην, ἐὰν νῦν ἀνάσχησθε, ὑπομενεῖτε; οὐκ ἐμοὶ μόνῳ θυγάτηρ ἐγένετο διαφέρουσα τὴν ὄψιν ἑτέρων, ἣν ἀπὸ τοῦ φανεροῦ βιάζεσθαι καὶ προπηλακίζειν Ἄππιος ἐπεβάλετο, ἀλλὰ καὶ ὑμῶν εἰσι πολλοῖς τοῖς μὲν θυγατέρες, τοῖς δὲ γαμεταί, τοῖς δὲ νεανίαι παῖδες εὐπρεπεῖς, οὓς τί κωλύσει πρὸς ἄλλου τινὸς τῶν δέκα τυράννων ἢ καὶ πρὸς αὐτοῦ τοῦ Ἀππίου ταὐτὰ παθεῖν; εἰ μή τις ἄρα θεῶν ἐστιν ἐγγυητής, ὡς ἐὰν τὰς ἐμὰς ταύτας συμφορὰς ἀτιμωρήτους ἐάσητε οὐκ ἐφ᾽ ὑμῶν πολλοὺς τὰ ὅμοια δεινὰ ἥξει, ἀλλὰ μέχρι τῆς ἐμῆς θυγατρὸς ὁ τυραννικὸς ἔρως προελθὼν στήσεται, καὶ περὶ τὰ λοιπὰ σώματα παίδων τε καὶ παρθένων σωφρονήσει. πολλῆς μέντοι μωρίας καὶ σκαιότητος, σαφῶς ἴστε,
2264 τὰ ὑπονοούμενα ταῦθ᾽ ὡς οὐκ ἔσται λέγειν. ἀόριστοι γὰρ αἱ τῶν τυράννων ἐπιθυμίαι κατὰ τὸ εἰκός, οἷα δὴ μήτε νόμον ἔχουσαι κωλυτὴν μήτε φόβον. ἐμοί τε δὴ πράττοντες τιμωρίαν δικαίαν, καὶ ὑμῖν αὐτοῖς ἀσφάλειαν ἵνα μὴ ταὐτὰ πάθητε παρασκευαζόμενοι, διαρρήξατε ἤδη ποτὲ τοὺς χαλινούς, ὦ σχέτλιοι· ἀναβλέψατε ὀρθοῖς ὄμμασι πρὸς τὴν ἐλευ-

θερίαν. ἐπὶ τίνι γὰρ ἑτέρᾳ προφάσει μᾶλλον ἀγανακτήσετε ἢ ταύτῃ, ὅτι τὰς τῶν πολιτῶν θυγατέρας ὡς δούλας ἀπάγουσιν οἱ τύραννοι καὶ μετὰ μαστίγων νυμφαγωγοῦσιν; ἐν ποίῳ δὲ τὸ ἐλεύθερον φρόνημα ἀναλήψεσθε καιρῷ τὸν νῦν παρέντες, ἐν ᾧ τὰ ὅπλα περὶ τοῖς σώμασιν ἔχετε;

XXXXII. Ἔτι δ᾽ αὐτοῦ λέγοντος ἀνεβόησαν οἱ πολλοὶ τιμωρήσειν ὑπισχνούμενοι, καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῶν λόχων ἐξ ὀνόματος ἐκάλουν ἀξιοῦντες ἔργου ἔχεσθαι, καὶ ἐκ τοῦ φανεροῦ πολλοὶ παριόντες ἐθάρ- 22(
ρουν λέγειν, εἴ τι δεινὸν ἦσαν πεπονθότες. μαθόντες δὲ τὰ γινόμενα οἱ πέντε ἄνδρες, οὓς ἔφην ἡγεῖσθαι τῶν ταγμάτων, δείσαντες μή τις ἐπ᾽ αὐτοὺς τῶν ὄχλων ὁρμὴ γένηται, συνέδραμον εἰς τὸ στρατήγιον ἅπαντες καὶ μετὰ τῶν φίλων ἐσκόπουν, ὅπως παύσουσι τὴν ταραχὴν, τὰ οἰκεῖα ὅπλα περιστησάμενοι. ὡς δ᾽ ἐπύθοντο ἀπεληλυθότας ἐπὶ τὰς σκηνάς, λήξαντά τε καὶ παυσάμενον τὸν θόρυβον, ἀγνοοῦντες ὅτι τῶν ἑκατοντάρχων τοῖς πλείοσι δεδογμένον ἦν δι᾽ ἀπορρήτων συνωμοσιῶν ἀπόστασιν πράττειν καὶ συνελευθεροῦν τὴν πατρίδα, ἔκριναν, ἐπειδὰν ἡμέρα τάχιστα γένηται, τὸν μὲν ἐκταράττοντα τοὺς ὄχλους Οὐεργίνιον συλλαβόντας ἔχειν ἐν φυλακῇ, τὰς δὲ δυνάμεις ἀναστήσαντας ἐκ τοῦ χάρακος ἄγειν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, καὶ τὴν κρατίστην αὐτῶν τῆς χώρας ἐγκαθημένους δῃοῦν, περὶ τῶν ἐν τῇ πόλει πραττομένων μηδὲν τοὺς σφετέρους ἔτι ἐῶντας πολυπραγμονεῖν, τὰ μὲν διὰ τὰς ὠφελείας, τὰ δὲ διὰ τοὺς ἐσομένους ὑπὲρ αὐτῶν ἑκάστοτε ἀγῶνας. ἐγί- 22(
νετο δ᾽ αὐτοῖς οὐδὲν τῶν ἐκ διαλογισμοῦ· οὐδὲ γὰρ τὸν Οὐεργίνιον εἴασαν οἱ λοχαγοὶ καλούμενον εἰς τὸ στρατήγιον ἀπελθεῖν, ὑποπτεύ[οντες, μή τι πάθοι

δεινόν, ἀλλὰ καὶ τὸν] διαληφθέντ[α λόγον, ὡς] ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἀγαγεῖν τοὺς λόχους ἐβούλοντο, [κατωνείδιζον] λέγοντες· Ὡς καλῶς ἡμῶν ἐστρατηγήκατε καὶ πρότερον, ἵνα καὶ νῦν λαβόντες ἐλπίδας ἀκολουθῶμεν ὑμῖν, οἵτινες ὅσην οὔπω πρότερον ἕτεροι Ῥωμαίων ἡγεμόνες ἔκ τ' αὐτῆς ἄγοντες τῆς πόλεως στρατιὰν καὶ ἀπὸ τῶν συμμάχων ἀγείραντες, οὔτε [τινὰ νίκην ἢ βλάβην ἐποιήσατε κατὰ] τῶν ἐχθρῶν, ἀλλὰ δ' ἀνανδρίαν τε καὶ ἀπειρίαν [ἀπεδείξασθε, κακῶς] στρατοπεδευσάμενοι, καὶ τὴν ἑαυτῶν
2267 *χώραν ὡς ὑπὸ τῶν πολεμίων [καταδῃωθεῖσαν] πτωχοὺς καὶ ἀπόρους ἡμᾶς ἐποιήσατε ἁπάντων, ὅσοι κ[ρατοῦντες τοῖς ὅπλοις τῶν ἐναντίων] ἐνικῶμεν ταῖς μάχαις, ὅτε ὑμῶν κρείττους ἦσαν στρατηγοί· τρόπαιά τε καθ' ἡμῶν ἀνιστᾶσι καὶ σκηνὰς καὶ ἀνδράποδα καὶ ὅπλα καὶ χρήματα διηρπακότες ἔχουσι τὰ ἡμέτερα.*

XXXXIII. *Ὁ δὲ Οὐεργίνιος ὑπό τ' ὀργῆς καὶ ἐκ τοῦ μηδὲν ἔτι δεδοικέναι τοὺς ἡγεμόνας αὐθαδέστερον αὐτῶν καθήπτετο, λυμεῶνας τε καὶ ὀλέθρους τῆς πατρίδος ἀποκαλῶν, καὶ παραινῶν τοῖς λοχαγοῖς ἅπασιν ἀραμένους τὰ σημεῖα οἴκαδε ἀπάγειν τὴν στρατιάν. ὀρρωδούντων δ' ἔτι τῶν πολλῶν τὰ ἱερὰ σημεῖα κινεῖν, ἔπειτα τοὺς ἡγεμόνας καὶ τοὺς στρατηγοὺς καταλιπεῖν οὔτε ὅσιον οὔτ' ἀσφαλὲς εἶναι πᾶσι νομιζόντων· ὅ τε γὰρ ὅρκος ὁ στρατιωτι-*
2268 *κός, ὃν ἁπάντων μάλιστα ἐμπεδοῦσι Ῥωμαῖοι, τοῖς στρατηγοῖς ἀκολουθεῖν κελεύει τοὺς στρατευομένους ὅποι ποτ' ἂν ἄγωσιν, ὅ τε νόμος ἀποκτείνειν ἔδωκε τοῖς ἡγεμόσιν ἐξουσίαν τοὺς ἀπειθοῦντας ἢ τὰ σημεῖα καταλιπόντας ἀκρίτως· ταῦτα δὴ δι' εὐλαβείας αὐτοὺς ἔχοντας ὁρῶν Οὐεργίνιος ἐδίδασκεν,*

ὅτι λέλυκεν αὐτῶν τὸν ὅρκον ὁ νόμος, ἐπειδὴ νόμῳ μὲν ἀποδειχθέντα δεῖ τὸν στρατηγὸν ἄρχειν τῶν δυνάμεων, ἡ δὲ τῶν δέκα ἀνδρῶν ἐξουσία παράνομος ἦν ὑπερβαλοῦσα τὸν ἐνιαύσιον χρόνον εἰς ὃν ἀπεδείχθη. τὸ δὲ τοῖς μὴ κατὰ νόμον ἄρχουσι ποιεῖν τὸ κελευόμενον οὐκ εὐπείθειαν εἶναι καὶ εὐσέβειαν, ἀλλ' ἄνοιαν καὶ μανίαν. ταῦτ' ἀκούσαντες ὀρθῶς λέγεσθαι ἡγούμενοι, καὶ παρακελευόμενοί τε ἀλλήλοις καί τι καὶ θάρσος ἐκ τοῦ δαιμονίου λαβόντες, αἴρονται τὰ σημεῖα καὶ προῆγον ἐκ τοῦ χάρακος. ἔμελλον δ', ὅπερ εἰκὸς ἐν ποικίλοις τ' ἤθεσι καὶ οὐχ ἅπασι τὰ κράτιστα διανοουμένοις, ἔσεσθαί τινες οἱ μένοντες ἅμα τοῖς ὀλιγάρχαις καὶ στρατιῶται καὶ λοχαγοί, πλὴν οὐ τοσοῦτοι τὸ πλῆθος, ἀλλ' ἐλάττους παρὰ πολὺ τῶν ἑτέρων. οἱ δ' ἐξελθόντες ἐκ τοῦ στρατο- 226
πέδου δι' ὅλης ἡμέρας ἐπιπορευθέντες ἑσπέρας καταλαβούσης παρῆσαν εἰς τὴν πόλιν, οὐδενὸς ἐξαγγείλαντος αὐτῶν τὴν ἔφοδον, καὶ συνετάραξαν τοὺς ἔνδον οὐ μετρίως πολέμιον οἰομένους στρατὸν εἰσεληλυθέναι· κραυγή τε καὶ δρόμος ἄτακτος ἀνὰ τὴν πόλιν ἦν. οὐ μὴν ἐπὶ πολύν γε διέμεινεν ἡ ταραχὴ χρόνον, ὥστε κακόν τι γενέσθαι δι' αὐτήν. διεξιόντες γὰρ τοὺς στενωποὺς ἐβόων, ὅτι φίλοι τ' εἰσὶ καὶ ἐπ' ἀγαθῷ τῆς πόλεως εἰσεληλύθασι, καὶ τὰ ἔργα ὅμοια παρείχοντο τοῖς λόγοις ἀδικοῦντες οὐδένα. ἀφικόμενοι δ' εἰς τὸν καλούμενον Ἀουεντῖνον· ἔστι δὲ τῶν ἐμπεριεχομένων ἐν τῇ Ῥώμῃ λόφων οὗτος ἐπιτηδειότατος ἐνστρατοπεδεύεσθαι· περί τε τὸ τῆς Ἀρτέμιδος ἱερὸν τίθενται τὰ ὅπλα, τῇ θ' ἑξῆς ἡμέρᾳ κρατυνάμενοι τὸν χάρακα καὶ χιλιάρχους δέκα τῶν κοινῶν ἀποδείξαντες κυρίους, ὧν ἡγεμὼν ἦν Μάρκος Ὄππιος, ἔμενον ἐφ' ἡσυχίας.

2270 XXXXIIII. Ἧκον δ' αὐτοῖς ἐπίκουροι μετ' οὐ πολὺ καὶ ἀπὸ τῆς ἐν Φιδήνῃ στρατιᾶς οἱ κράτιστοι τῶν τριῶν ταγμάτων λοχαγοὶ πολλὴν δύναμιν ἐπαγόμενοι, ἀλλοτρίως μὲν ἔτι πάλαι διακείμενοι πρὸς τοὺς ἐκεῖ στρατηγούς, ἐξ οὗ Σίκκιον τὸν πρεσβευτὴν ἀπέκτειναν, ὥσπερ ἔφην, δεδιότες δ' ἄρξαι τῆς ἀποστάσεως πρότεροι, ὡς οἰκείων ὄντων τῇ δεκαδαρχίᾳ τῶν ἐν Ἀλγιδῷ πέντε ταγμάτων, τότε δ', ἐπειδὴ τὴν ἐκείνων ἀπόστασιν ἐπέγνωσαν, ἀγαπητῶς τὸ συμβὰν ἀπὸ τῆς τύχης δεξάμενοι. ἡγεμόνες δὲ καὶ τούτων τῶν ταγμάτων ἦσαν δέκα χιλίαρχοι καθ' ὁδὸν ἀποδειχθέντες, ὧν ἐπιφανέστατος Σέξτος Μάλιος ἦν. ἐπεὶ δὲ συνέμιξαν ἀλλήλοις, θέμενοι τὰ ὅπλα τοῖς εἴκοσι χιλιάρχοις ἐπέτρεψαν ἅπαντα ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ λέγειν τε καὶ πράττειν. ἐκ δὲ τῶν εἴκοσι τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀπέδειξαν δ΄ο προβούλους, Μάρκον Ὄππιον καὶ Σέξτον Μάλιον· οὗτοι βουλευτήριον ἐξ ἁπάντων καταστησάμενοι τῶν λοχαγῶν,
2271 μετ' ἐκείνων ἅπαντα διετέλουν πραγματευόμενοι. ἀδήλου δ' ἔτι τοῖς πολλοῖς τῆς διανοίας αὐτῶν οὔσης, Ἄππιος μέν, οἷα δὴ συγγινώσκων ἑαυτῷ τῆς παρούσης ταραχῆς αἰτίῳ γεγονότι καὶ τῶν προσδοκωμένων δι' αὐτὴν ἔσεσθαι κακῶν, οὐκέτι τῶν κοινῶν οὐδὲν ἠξίου πράττειν, ἀλλὰ κατ' οἶκον ἔμενεν· ὁ δὲ σὺν αὐτῷ τεταγμένος ἐπὶ τῆς πόλεως Σπόριος Ὄππιος, διαταραχθεὶς κατ' ἀρχὰς καὶ αὐτός, ὡς αὐτίκα μάλα τῶν ἐχθρῶν σφίσιν ἐπιθησομένων καὶ ἐπὶ τούτῳ ἡκόντων, ἐπειδὴ κατέμαθεν οὐδὲν νεωτερίσαντας αὐτούς, ὑφέμενος τοῦ δέους ἐκάλει τὴν βουλὴν εἰς τὸ συνέδριον ἐκ τῶν οἰκιῶν κατ' ἄνδρα μεταπεμπόμενος. ἔτι δ' αὐτῶν συλλεγομένων ἧκον οἱ ἐκ τῆς ἐν Φιδήνῃ στρατιᾶς ἡγεμόνες, ἀγανακτοῦν-

τες ἐπὶ τῷ καταλελεῖφθαι τοὺς χάρακας ὑπὸ τῶν
στρατιωτῶν ἀμφοτέρους, καὶ τὴν βουλὴν πείθοντες
ἀξίαν τοῦ πράγματος ὀργὴν κατ᾽ αὐτῶν λαβεῖν. ἐπεὶ
δ᾽ ἀγορεύειν γνώμην ἕκαστον ἔδει, Λεύκιος μὲν
Κορνήλιος ἔφη δεῖν ἀπιέναι τοὺς κατέχοντας τὸν 2272
Ἀουεντινὸν αὐθημερὸν ἐπὶ τοὺς ἑαυτῶν χάρακας,
καὶ τὰ κελευόμενα ὑπὸ τῶν στρατηγῶν ἐπιτελεῖν
μηδενὸς ὄντας τῶν γεγονότων ὑποδίκους, πλὴν τῶν
αἰτίων τῆς ἀποστάσεως μόνων· τούτοις δὲ προσθεῖναι
δίκας τοὺς στρατηγούς. ἐὰν δὲ μὴ ποιῶσι ταῦτα,
βουλεύειν περὶ αὐτῶν τὸ συνέδριον ὡς ἐκλελοιπό-
των τὴν τάξιν, ἐφ᾽ ἣν ἐτάχθησαν ὑπὸ τῶν ἡγεμό-
νων, καὶ περὶ τὸν στρατιωτικὸν ἠσεβηκότων ὅρκον.
Λεύκιος δὲ Οὐαλέριος * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * * * *

ἀλλ᾽ ὑπὲρ τῶν Ῥωμαϊκῶν νόμων, οὓς ἐν ταῖς
δώδεκα δέλτοις ἀναγεγραμμένους εὕρομεν, οὔτε μη-
δένα ποιήσασθαι λόγον ἥρμοττεν, οὕτω σεμνῶν ὄν-
των καὶ τοσαύτην ἐχόντων διαφορὰν παρὰ τὰς Ἑλλη- 2273
νικὰς νομοθεσίας, οὔτε περαιτέρω τοῦ δέοντος προ-
βαίνειν ἐκμηκύναντας τὴν περὶ αὐτῶν ἱστορίαν.

XXXXV. Οἱ δὲ μετὰ τὴν κατάλυσιν τῆς δεκαδ-
αρχίας τὴν ὕπατον ἀρχὴν πρῶτοι παρὰ τοῦ δήμου
λαβόντες ἐπὶ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας, ὥσπερ ἔφην,
Λεύκιος Οὐαλέριος Ποτῖτος καὶ Μάρκος Ὁράτιος
Βαρβάτος, αὐτοί τε δημοτικοὶ τὰς φύσεις ὄντες καὶ
παρὰ τῶν προγόνων ταύτην διαδεδεγμένοι τὴν πολι-
τείαν, τὰς ὑποσχέσεις φυλάττοντες, ἃς ἐποιήσαντο
πρὸς τοὺς δημοτικούς, ὅτ᾽ ἀποθέσθαι τὰ ὅπλα συνέ-
πειθον αὐτούς, ὡς πάντα τὰ συμφέροντα τῷ δήμῳ
πολιτευσόμενοι, νόμους ἐκύρωσαν ἐν ἐκκλησίαις λο-
χίτισι, δυσχεραινόντων μὲν τῶν πατρικίων, αἰδου-

μένων δ' ἀντιλέγειν, ἄλλους τέ τινας, οὓς οὐ δέομαι γράφειν, καὶ τὸν κελεύοντα τοὺς ὑπὸ τοῦ δήμου τεθέντας ἐν ταῖς φυλετικαῖς ἐκκλησίαις νόμους ἅπασι κεῖσθαι Ῥωμαίοις ἐξ ἴσου, τὴν αὐτὴν ἔχοντας δύναμιν τοῖς ἐν ταῖς λοχίτισιν ἐκκλησίαις τεθησομένοις. τιμωρίαι δὲ προσέκειντο τοῖς καταλύουσιν ἢ παραβαί-
2274 νουσι τὸν νόμον, ἐὰν ἁλῶσι, θάνατος καὶ δήμευσις τῆς οὐσίας. οὗτος ὁ νόμος ἐξέβαλε τὰς ἀμφισβητήσεις τῶν πατρικίων, ἃς ἐποιοῦντο πρὸς τοὺς δημοτικοὺς πρότερον, οὐκ ἀξιοῦντες τοῖς ὑπ' ἐκείνων τεθεῖσι νόμοις πειθαρχεῖν, οὐδ' ὅλως τὰ ἐν ταῖς φυλετικαῖς ἐκκλησίαις ἐπικυρούμενα κοινὰ τῆς πόλεως ἁπάσης δόγματα νομίζοντες, ἀλλ' αὐτοῖς μόνοις ἐκείνοις ἴδια· ὅ τι δ' ἂν ἡ λοχῖτις ἐκκλησία γνῷ, τοῦθ' ἡγούμενοι σφίσι τ' αὐτοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις πολίταις τετάχθαι. εἴρηται δὲ καὶ πρότερον, ὅτι ἐν μὲν ταῖς φυλετικαῖς ἐκκλησίαις οἱ δημοτικοὶ καὶ πένητες ἐκράτουν τῶν πατρικίων, ἐν δὲ ταῖς λοχίτισιν ἐκκλησίαις οἱ πατρίκιοι παρὰ πολὺ τῶν ἄλλων ἐλάττους ὄντες περιῆσαν τῶν δημοτικῶν.

XXXXVI. Τούτου κυρωθέντος ὑπὸ τῶν ὑπάτων τοῦ νόμου σὺν ἄλλοις τισὶν ὥσπερ ἔφην δημοτικοῖς, εὐθὺς οἱ δήμαρχοι καιρὸν ἐπιτήδειον ἥκειν νομίζοντες, ἐν ᾧ τιμωρήσονται τοὺς περὶ τὸν Ἄππιον,
2275 εἰσαγγελίας ᾤοντο δεῖν ποιήσασθαι κατ' αὐτῶν, οὐχ ἅμα πάντας ὑπάγοντες ἐπὶ τὴν δίκην, ἵνα μηδὲν ἀλλήλους ὠφελῶσιν, ἀλλὰ καθ' ἕνα· ῥᾷον γὰρ οὕτως ὑπελάμβανον εὐμεταχειρίστους ἔσεσθαι. σκοπούμενοι δ' ἀπὸ τίνος ἂν ἄρξαιντο ἐπιτηδειοτάτου, τὸν Ἄππιον πρῶτον ἔγνωσαν εὐθύνειν, τῶν τ' ἄλλων ἀδικημάτων ἕνεκα μισούμενον ὑπὸ τοῦ δήμου, καὶ τῶν νεωστὶ περὶ τὴν παρθένον γενομένων παρα-

*νομιῶν. ἑλόντες μὲν γὰρ τοῦτον εὐπετῶς ἐδόκουν
καὶ τῶν ἄλλων κρατήσειν· εἰ δ' ἀπὸ τῶν ταπεινοτέ-
ρων ἄρξαιντο, μαλακωτέρας ὑπελάμβανον τὰς ὀργὰς
τῶν πολιτῶν πρὸς τοὺς ἐπιφανεστάτους καὶ τελευ-
ταίους κρινομένους ἔσεσθαι, συντονωτέρας οὔσας
ἐπὶ τοῖς προτέροις ἀγῶσιν, ὃ πολλάκις ἤδη συνέβη.
ταῦτα βουλευσάμενοι συνέσχον τοὺς ἄνδρας, Ἀππίου
δὲ Οὐεργίνιον ἔταξαν ἄνευ κλήρου κατηγορεῖν. εἰσ-
αγγέλλεται δὴ μετὰ τοῦτο εἰς τὸν δῆμον Ἄππιος
ὑπὸ τοῦ Οὐεργινίου κατηγορηθεὶς ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας,
καὶ αἰτεῖται χρόνον εἰς ἀπολογίαν. ἀπαχθεὶς δ' εἰς
τὸ δεσμωτήριον, ἵνα φυλάττηται μέχρι δίκης· οὐ* 227
*γὰρ ἐδόθη ἐγγύησις αὐτῷ· πρὶν ἐπιστῆναι τὴν ἀπο-
δειχθεῖσαν ἡμέραν τῆς κρίσεως ἐν τοῖς δεσμοῖς ἀπο-
θνήσκει, ὡς μὲν ἡ τῶν πολλῶν ὑπόληψις ἦν ἐξ ἐπι-
ταγῆς τῶν δημάρχων· ὡς δ' οἱ τὴν αἰτίαν ἀπολύσα-
σθαι βουλόμενοι διεφήμιζον, αὐτὸς ἑαυτὸν ἀναρτη-
σάμενος βρόχῳ. μετ' ἐκεῖνον Σπόριος Ὄππιος εἰσ-
αχθεὶς εἰς τὸν δῆμον ὑφ' ἑτέρου τῶν δημάρχων
Ποπλίου Νομιτωρίου καὶ τυχὼν ἀπολογίας ἁπά-
σαις ἁλίσκεται ταῖς ψήφοις, καὶ παραδοθεὶς εἰς τὸ
δεσμωτήριον αὐθημερὸν ἀποθνήσκει. οἱ δὲ λοιποὶ
τῶν δέκα πρὶν εἰσαγγελθῆναι φυγαῖς αὑτοὺς ἐζη-
μίωσαν. τὰς δ' οὐσίας τῶν ἀνῃρημένων καὶ τῶν
ἀποφυγόντων οἱ ταμίαι τῆς πόλεως ἀνέλαβον εἰς τὸ
δημόσιον. εἰσαγγέλλεται δὲ καὶ Μάρκος Κλαύδιος
ὁ τὴν παρθένον ἐπιβαλόμενος ὡς δούλην ἀπάγειν
ὑπὸ τοῦ μνηστῆρος αὐτῆς Ἰκιλίου· καὶ τὴν αἰτίαν
εἰς τὸν ἐπιτάξαντα παρανομεῖν Ἄππιον ἀναφέρων* 227
*θανάτου μὲν ἀπολύεται, φυγῇ δ' ἀιδίῳ ζημιοῦται,
τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπηρετησάντων τι παράνομον
τοῖς ὀλιγάρχαις οὐδεὶς ἔσχεν ἀγῶνα δημόσιον, ἀλλὰ*

πᾶσιν ἄδεια ἐδόθη. ὁ δὲ τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰση-
γησάμενος ἦν Μάρκος Δοέλλιος ὁ δήμαρχος, ἀχθο-
μένων ἤδη τῶν πολλῶν, καὶ τῶν πολεμίων . . . . .
γενέσθαι προσδοκώντων.

XXXXVII. Ἐπεὶ δ' αἱ κατὰ πόλιν ἐπαύσαντο
ταραχαί, συναγαγόντες τὴν βουλὴν οἱ ὕπατοι δόγμα
κυροῦσιν ἐξάγειν τὸν στρατὸν ἐπὶ τοὺς πολεμίους διὰ
ταχέων. ἐπικυρώσαντος δὲ τοῦ δήμου τὰ ψηφισθέντα
ὑπὸ τῆς βουλῆς, Οὐαλέριος μὲν ἅτερος τῶν ὑπάτων,
τὴν ἡμίσειαν ἔχων τοῦ στρατοῦ μοῖραν ἐξῆγεν ἐπί τ'
Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους· συνῆλθε γὰρ ἀμφότερα
τὰ ἔθνη. ἐπιστάμενος δὲ τοὺς Αἰκανοὺς ἐκ τῶν
προτέρων κατορθωμάτων αὔχημα προσειληφότας
2278 καὶ εἰς πολλὴν καταφρόνησιν τῆς Ῥωμαίων δυνά-
μεως ἐπαρθέντας, ἔτι μᾶλλον ἐβούλετο ἐπᾶραι καὶ
θρασυτέρους ποιῆσαι, δόξαν οὐκ ἀληθῆ παρασχών,
ὡς ὀρρωδῶν εἰς χεῖρας ἰέναι πρὸς αὐτούς, καὶ πάντα
δεδιότος ἐποίει. χωρίον τε γὰρ εἰς στρατοπεδείαν
ὑψηλὸν καὶ δυσπρόσιτον ἐξελέξατο τάφρον τε βα-
θεῖαν περιεβάλετο καὶ χάρακας ἤγειρεν ὑψηλούς.
προκαλουμένων δὲ τῶν πολεμίων αὐτὸν εἰς μάχην
πολλάκις καὶ κακιζόντων τὴν ἀνανδρίαν ἠνείχετο
μένων ἐφ' ἡσυχίας. ἐπεὶ δ' ἔγνω τὴν κρατίστην τῶν
πολεμίων δύναμιν ἐπὶ προνομὴν τῆς Ἑρνίκων τε
καὶ Λατίνων γῆς ἐξεληλυθυῖαν, ἐν δὲ τῷ χάρακι
φυλακὴν οὔτε πολλὴν καταλειπομένην οὔτ' ἀγαθήν,
τοῦτον εἶναι νομίσας τὸν καιρὸν ἐπιτήδειον ἐξῆγε
κεκοσμημένην τὴν στρατιὰν καὶ παρέταξεν ὡς εἰς
μάχην. οὐδενός τ' ἀντεπιόντος ἐκείνην μὲν τὴν ἡμέ-
2279 ραν ἐπεῖχε, τῇ δ' ἑξῆς ἐπὶ τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν
ἦγεν οὐ σφόδρα ὀχυρὰν οὖσαν. μαθόντες δὲ πολιορ-
κούμενον τὸν χάρακα οἱ προεξεληλυθότες ἐπὶ τὰς

προνομὰς ταχέως ἧκον, πλὴν οὐχ ἅμα καὶ ἐν κόσμῳ, σποράδες δὲ καὶ κατ' ὀλίγους ὡς ἕκαστοι εἶχον ἐπιφαινόμενοι· οἵ τ' ἐκ τοῦ χάρακος, ἐπεὶ τοὺς σφετέρους προσιόντας ἐθεάσαντο, θρασύτεροι γεγονότες ἐξῆλθον ἀθρόοι. καὶ γίνεται μέγας ἀγὼν καὶ φόνος ἐξ ἀμφοτέρων πολύς, ἐν ᾧ νικήσαντες οἱ Ῥωμαῖοι τούς τε συστάδην μαχομένους ἐτρέψαντο, καὶ τοὺς φεύγοντας ἐπιδιώκοντες, οὓς μὲν ἀπέκτειναν, οὓς δ' αἰχμαλώτους ἔλαβον, τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν κρατήσαντες χρήματα πολλὰ καὶ λείαν ἄφθονον περιεβάλοντο. Οὐαλέριος μὲν δὴ ταῦτα διαπραξάμενος ἀδεῶς ἤδη τὴν γῆν τῶν πολεμίων ἐπιὼν ἐδῄου.

XXXXVIII. Μάρκος δ' Ὁράτιος ἐπὶ τὸν κατὰ Χαβίνων πόλεμον προαγαγών, ἐπειδὴ τὰ κατὰ τὸν συνάρχοντα ἔγνω, καὶ αὐτὸς ἐκ τοῦ χάρακος τὰς δυνάμεις ἀντεπῆγε θᾶττον ὅλῃ δυνάμει πρὸς οὐκ ἐλάττους ἀριθμὸν τοὺς Σαβίνους καὶ τὰ πολέμια 2280
[ἐμπειροτάτους· ἐνεδείξαντο γὰρ] φρόνημά τε καὶ τόλμαν ἐκ τῶν προτέρων κατορθωμάτων πολλὴν πρὸς τοὺς ἀντιμαχομένους, καὶ κοινῶς ἅπαντες καὶ ἰδίως ὁ τούτων προηγούμενος· ἦν γὰρ οὐ μόνον στρατηγὸς ἀγαθός, ἀλλὰ καὶ πολεμιστὴς κατὰ χεῖρα γενναῖος· καὶ τῶν ἱππέων μεγάλην προθυμίαν παρασχομένων νίκην ἀναιρεῖται λαμπροτάτην, πολλοὺς μὲν ἀποκτείνας τῶν πολεμίων, πολλῷ δ' ἔτι πλειόνων αἰχμαλώτων τετυχηκώς, τοῦ τε χάρακος αὐτῶν ἐρήμου κρατήσας, ἐν ᾧ τήν τ' ἀποσκευὴν τῶν πολεμίων πολλὴν εὗρε καὶ τὴν λείαν ἅπασαν, ἣν ἐκ τῆς Ῥωμαίων γῆς ἐληίσαντο, αἰχμαλώτους τε πάνυ πολλοὺς τῶν σφετέρων ἀνεσώσατο. οὐ γὰρ ἔφθασαν ἀνασκευασάμενοι τὰς ὠφελείας οἱ Σαβῖνοι διὰ καταφρόνησιν. τὰ μὲν οὖν τῶν πολεμίων χρήματα τοῖς στρατιώταις

ὠφέλειαν ἐφῆκε ποιεῖσθαι, προεξελόμενος ἐκ τῶν λαφύρων ὅσα τοῖς θεοῖς καθιερώσειν ἔμελλε· τὴν δὲ
2281 λείαν τοῖς ἀφαιρεθεῖσιν ἀπέδωκε.

XXXXVIIII. Ταῦτα διαπραξάμενος ἀπῆγεν εἰς Ῥώμην τὰς δυνάμεις, καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον Οὐαλέριος ἧκεν, ἦν τ' ἀμφοτέροις μέγα φρονοῦσιν ἐπὶ ταῖς νίκαις [καὶ] ἐλπὶς ἐπιφανεῖς κατάξειν θριάμβους. οὐ μὴν ἐχώρησέ γ' αὐτοῖς κατ' ἐλπίδα τὸ ἔργον. συναχθεῖσα γὰρ κατ' αὐτῶν ἡ βουλὴ κατεστρατοπεδευκότων ἔξω τῆς πόλεως εἰς τὸ καλούμενον Ἄρειον πεδίον, καὶ τὰ πραχθέντα ὑπ' ἀμφοτέρων μαθοῦσα τὴν ἐπινίκιον οὐκ ἐπέτρεψε ποιήσασθαι θυσίαν, πολλῶν μὲν καὶ ἄλλων ἐναντιωθέντων αὐτοῖς ἐκ τοῦ φανεροῦ, μάλιστα δὲ Κλαυδίου Γαΐου· θεῖος δ' ἦν οὗτος, ὥσπερ ἔφην, Ἀππίῳ τῷ καταστησαμένῳ τὴν ὀλιγαρχίαν καὶ νεωστὶ ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀναιρεθέντι· τούς τε κυρωθέντας ὑπ' αὐτῶν νόμους προβαλλομένου, δι' ὧν ἠλάττωσαν τὸ τῆς βουλῆς κράτος, καὶ τἆλλα πολιτεύματα, ὅσα οὗτοι * * * πολιτευόμενοι διετέλεσαν· τελευταίαν δὲ τὴν τῶν
2282 δέκα ἀνδρῶν, οὓς προὔδωκαν τοῖς δημάρχοις, τῶν μὲν ἀπώλειαν, τῶν δὲ δήμευσιν, ὡς παρὰ τοὺς ὅρκους καὶ τὰς συνθήκας, διεξιόντος. τὰ γὰρ ἐπὶ τῶν ἱερῶν συνομολογηθέντα τοῖς πατρικίοις πρὸς τοὺς δημοτικοὺς ἐπ' ἀδείᾳ τε πάντων γενέσθαι καὶ ἀμνηστίᾳ τῶν προτέρων· τόν τ' Ἀππίου θάνατον οὐκ αὐτοχειρίᾳ γενέσθαι λέγοντος, ἀλλ' ἐπιβούλως ὑπὸ τῶν δημάρχων πρὸ δίκης, ἵνα μήτε λόγου τύχῃ κρινόμενος μήτ' ἐλέους, ὡς, εἰ κατέστη γοῦν εἰς κρίσιν ἀνήρ, γένους ἀξίωμα παρεχόμενος καὶ πολλὰ τὸ κοινὸν εὖ πεποιηκὼς ὅρκους τε καὶ πίστεις ἐπιβοώμενος, αἷς ἄνθρωποι πιστεύοντες εἰς διαλλαγὰς

συνέρχονται, τέκνα τε καὶ συγγένειαν καὶ αὐτὸ τὸ ταπεινὸν σχῆμα καὶ τἆλλα πολλὰ [φέρων] εἰς οἶκτον ἐφελκόμενα τὸ πλῆθος. ταῦτα δὴ πάντα κατηγορήματα 2283 τῶν ὑπάτων [κατ' αὐτῶν ἐκχέαντος Κλαυδίου Γαΐου, καὶ πάντων] τῶν παρόντων, ἔδοξεν ἀγαπᾶν αὐτοὺς εἰ μὴ δώσουσι δίκας· θριάμβων δὲ καταγωγῆς ἢ τιμῶν τοιούτων συγχωρήσεως οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἀξίους εἶναι τυγχάνειν.

L. Ἀποψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς τὸν θρίαμβον, ἀγανακτοῦντες οἱ περὶ τὸν Οὐαλέριον καὶ δεινὴν ὕβριν ὑπολαμβάνοντες ὑβρίζεσθαι συνεκάλεσαν εἰς ἐκκλησίαν τὸ πλῆθος· καὶ πολλὰ τῆς βουλῆς κατηγορήσαντες, συναγορευσάντων αὐτοῖς τῶν δημάρχων καὶ νόμον εἰσηγησαμένων, παρὰ τοῦ δήμου λαμβάνουσι τὴν καταγωγὴν τοῦ θριάμβου, πρῶτοι Ῥωμαίων ἁπάντων τοῦτο εἰσηγησάμενοι τὸ ἔθος. ἐκ δὲ τούτου πάλιν εἰς ἐγκλήματα καὶ διαφορὰς οἱ δημοτικοὶ καθίσταντο πρὸς τοὺς πατρικίους· παρώξυνον δ' αὐτοὺς οἱ δήμαρχοι καθ' ἡμέραν ἐκκλησιάζοντες καὶ πολλὰ κατὰ τῆς βουλῆς λέγοντες. ἦν δ' ἡ μάλιστα ἐρεθίζουσα τοὺς πολλοὺς ὑπόληψις, ἣν ἐκεῖνοι 2284 παρεσκεύασαν ἰσχυρὰν γενέσθαι, φήμαις τ' ἀδεσπότοις καὶ εἰκασμοῖς αὐξηθεῖσα οὐκ ἀλόγοις, ὡς καταλυσόντων τῶν πατρικίων τοὺς νόμους, οὓς ἐκύρωσαν οἱ περὶ Οὐαλέριον ὕπατοι· δόξα τ' ἰσχυρὰ καὶ οὐ πολὺ ἀπέχουσα τοῦ πίστις εἶναι τοὺς πολλοὺς κατεῖχε. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ τούτων πραχθέντα τῶν ὑπάτων ταῦτ' ἦν.

LI. Οἱ δὲ τὸν ἑξῆς ὑπατεύσαντες ἐνιαυτὸν Λάρος Ἑρμίνιος καὶ Τίτος Οὐεργίνιος· καὶ οἱ παρὰ τούτων τὴν ἀρχὴν παραλαβόντες, Μάρκος Γεγάνιος

* * * * * * * * * * * * * * * * * 2285

* * * * * * * * * * * * * * * * *

LII. *Μηδὲν δ' αὐτῶν ἀποκρινομένων, ἀλλ' ἀγανακτούντων, παρελθὼν αὖθις Σκάπτιος ἐπὶ τὸ βῆμα· Ἔχετ', ἔφη, παρακεχωρημένον, ἄνδρες πολῖται, παρ' αὐτῶν τῶν διαφερομένων, ὅτι τῆς ἡμετέρας χώρας ἑαυτοῖς μηδὲν προσηκούσης ἀντιποιοῦνται· πρὸς ταῦτα ὁρῶντες τὰ δίκαια καὶ τὰ εὔορκα ψηφίσασθε. Ταῦτα τοῦ Σκαπτίου λέγοντος αἰδὼς εἰσήει τοὺς ὑπάτους ἐνθυμουμένους, ὡς οὔτε δίκαιον οὔτ' εὐπρεπὲς ἡ δίκη λήψεται τέλος, ἄν τινα ἀμφισβητουμένην ὑφ' ἑτέρων χώραν δικαστὴς αἱρε-
2286 θεὶς ὁ Ῥωμαίων δῆμος μηδέποτ' αὐτῆς ἀντιποιησάμενος ἑαυτῷ προσδικάσῃ τοὺς ἀμφισβητοῦντας ἀφελόμενος· καὶ πολλοὶ σφόδρα ἐλέχθησαν εἰς ἀποτροπὴν τοῦ πράγματος ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ τῶν ἡγουμένων τῆς βουλῆς λόγοι διακενῆς. οἱ γὰρ ἀνειληφότες τὰς ψήφους πολλὴν μωρίαν εἶναι λέγοντες ἑτέρους περιορᾶν τὰ σφέτερα κατέχοντας, καὶ οὐκ εὐσεβὲς ἐξοίσειν τέλος ὑπολαμβάνοντες, ἐὰν Ἀρικηνοὺς ἢ Ἀρδεάτας κυρίους ἀποδείξωσι τῆς ἀμφισβητουμένης γῆς ὀμωμοκότες ὧν ἂν εὕρωσιν αὐτὴν οὖσαν τούτων ἐπικρίνειν· τοῖς τε δικαζομένοις ὀργὴν ἔχοντες, ὅτι τοὺς ἀποστερουμένους αὐτῆς δικαστὰς ἠξίωσαν λαβεῖν, ἵνα μηδ' ὕστερον ἔτι σφίσιν ἐγγένηται τὴν ἑαυτῶν ἀνακομίσασθαι κτῆσιν, ἣν αὐτοὶ μεθ' ὅρκου
2287 δικάσαντες ἑτέρων ἐπέγνωσαν εἶναι. ταῦτα δὴ λογιζόμενοι καὶ ἀγανακτοῦντες τρίτον ἐκέλευσαν τεθῆναι καδίσκον ὑπὲρ τῆς πόλεως Ῥωμαίων καθ' ἑκάστην φυλήν, εἰς ὃν ἀποθήσονται τὰς ψήφους· καὶ γίνεται πάσαις ταῖς ψήφοις ὁ Ῥωμαίων δῆμος τῆς ἀμφιλόγου χώρας κύριος. ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτων τῶν ὑπάτων ἐπράχθη.*

LIII. *Μάρκου δὲ Γενυκίου καὶ Γαΐου Κοιντίου τὴν ἀρχὴν παρειληφότων αἱ πολιτικαὶ πάλιν ἀνί-*

σταντο διαφοραί, τῶν δημοτικῶν ἀξιούντων ἅπασι
Ῥωμαίοις ἐξεῖναι τὴν ὕπατον ἀρχὴν λαμβάνειν· τέως
γὰρ οἱ πατρίκιοι μόνοι μετῆεσαν αὐτὴν ἐν ταῖς λοχί-
τισιν ἐκκλησίαις ἀποδεικνύμενοι· νόμον τε συγγρά-
ψαντες ὑπὲρ τῶν ὑπατικῶν ἀρχαιρεσιῶν εἰσέφερον
οἱ τότε δημαρχοῦντες ἐκτὸς ἑνὸς Γαΐου Φουρνίου
πάντες οἱ λοιποὶ συμφρονήσαντες, ἐν ᾧ τὸν δῆμον 2288
ἐποιοῦντο κύριον τῆς διαγνώσεως καθ' ἕνα ἕκαστον
ἐνιαυτόν, εἴτε πατρικίους βούλοιτο μετιέναι τὴν ὑπα-
τείαν εἴτε δημοτικούς. ἐφ' οἷς ἠγανάκτουν οἱ τοῦ
βουλευτικοῦ μετέχοντες συνεδρίου, καταλυομένην
τὴν ἑαυτῶν δυναστείαν ὁρῶντες, καὶ πάντα ὑπομέ-
νειν ᾤοντο δεῖν πρότερον ἢ τὸν νόμον κύριον ἐᾶσαι
γενέσθαι· ὀργαί τε καὶ κατηγορίαι καὶ ἀντιπράξεις
ἐγίνοντο συνεχεῖς ἐν ἰδίοις τε συλλόγοις καὶ κατὰ
τὰς κοινὰς συνόδους, ἁπάντων τῶν πατρικίων πρὸς
ἅπαντας ἠλλοτριωμένων τοὺς δημοτικούς. καὶ λόγοι
πολλοὶ μὲν ἐν τῷ συνεδρίῳ, πολλοὶ δὲ κατὰ τὰς ἐκ-
κλησίας ὑπὸ τῶν προϊσταμένων τῆς ἀριστοκρατίας
ἐλέχθησαν, ἐπιεικέστεροι μὲν ὑπὸ τῶν οἰομένων
ἀγνοίᾳ τοῦ συμφέροντος ἁμαρτάνειν τοὺς δημοτικούς,
τραχύτεροι δ' ὑπὸ τῶν νομιζόντων ἐξ ἐπιβουλῆς καὶ
φθόνου τοῦ πρὸς αὐτοὺς τὸ πρᾶγμα συγκεῖσθαι.

LIIII. Ἑλκομένου δὲ τοῦ χρόνου διακενῆς, ἧκον
εἰς τὴν πόλιν ἀπὸ τῶν συμμάχων ἄγγελοι λέγοντες,
ὅτι πολλῇ στρατιᾷ μέλλουσιν ἐλαύνειν ἐπ' αὐτοὺς 2289
Αἰκανοί τε καὶ Οὐολοῦσκοι, καὶ δεόμενοι βοήθειαν
ἀποστεῖλαι σφίσι διὰ ταχέων ὡς ἐν τρίβῳ τοῦ πολέ-
μου κειμένοις. ἐλέγοντο δὲ καὶ Τυρρηνῶν οἱ καλού-
μενοι Οὐιεντανοὶ παρασκευάζεσθαι πρὸς ἀπόστα-
σιν, Ἀρδεᾶται τ' αὐτῶν οὐκέτ' ἦσαν ὑπήκοοι τῆς
ἀμφιλόγου χώρας ὀργὴν ἔχοντες, ἣν ὁ Ῥωμαίων

δῆμος αἱρεθεὶς δικαστὴς αὐτῷ προσεδίκασεν ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ. ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα ψηφίζεται στρατιὰν καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξάγειν δυνάμεις. ἀντέπραττον δὲ τοῖς γνωσθεῖσιν ὑπὸ τῶν ὑπάτων οἱ τὸν νόμον εἰσφέροντες [ἔχουσι δ' ἐξουσίαν ἐναντιοῦσθαι δήμαρχοι τοῖς ὑπάτοις] ἀφαιρούμενοί τε τοὺς ἀγομένους ὑπ' αὐτῶν ἐπὶ τὸν στρατιωτικὸν ὅρκον, καὶ τιμωρίαν οὐδεμίαν ἐῶντες λαμβάνειν παρὰ τῶν ἀπειθούντων. πολλὰ δὲ τῆς βουλῆς ἀξιούσης ἐν μὲν τῷ παρόντι χρόνῳ τὴν φιλονεικίαν καταβαλεῖν, ὅταν δὲ τέλος οἱ πόλεμοι λάβωσι, τότε προτιθέναι τὸν περὶ τῶν ἀρχαιρεσιῶν
2290 νόμον, οἱ δήμαρχοι τοσούτου ἐδέησαν εἶξαι τοῖς καιροῖς, ὥστε καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἐναντιώσεσθαι τοῖς δόγμασι τῆς βουλῆς ἔλεγον, καὶ οὐδὲν ἐάσειν δόγμα περὶ οὐδενὸς κυρωθῆναι πράγματος, ἐὰν μὴ τὸν ὑπ' αὐτῶν εἰσφερόμενον προβουλεύσῃ νόμον. καὶ οὐ μόνον ἐν τῷ συνεδρίῳ πρὸς τοὺς ὑπάτους ταῦτ' ἀπειλῆσαι προήχθησαν, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας ὅρκους, οἵπερ εἰσὶ μέγιστοι παρ' αὐτοῖς, κατὰ τῆς ἑαυτῶν πίστεως διωμόσαντο, ἵνα μηδὲν τῶν ἐγνωσμένων αὐτοῖς πεισθεῖσιν ἐξῇ καταλύειν.

LV. Πρὸς δὴ τὰς ἀπειλὰς ταύτας ἐσκόπουν ὅ
2291 τι χρὴ ποιεῖν οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ κορυφαιότατοι τῶν προεστηκότων τῆς ἀριστοκρατίας, συναχθέντες εἰς τὸν ἰδιωτικὸν σύλλογον ὑπὸ τῶν ὑπάτων αὐτοὶ καθ' ἑαυτούς. Γάιος μὲν οὖν Κλαύδιος ἥκιστα δημοτικὸς ὢν καὶ ταύτην διαδεδεγμένος ἐκ προγόνων τὴν αἵρεσιν τῆς πολιτείας αὐθαδεστέραν γνώμην εἰσέφερε, μήτε ὑπατείας μήτ' ἄλλης ἀρχῆς τῷ δήμῳ παραχωρεῖν μηδεμιᾶς· τοὺς δὲ τἀναντία πράττειν ἐπιχειροῦντας ὅπλοις κωλύειν, ἐὰν μὴ πείθωνται

τοῖς λόγοις, φειδὼ μηδεμίαν ποιουμένους μήτ' ἰδιώ-
του μήτ' ἄρχοντος. ἅπαντας γὰρ τοὺς ἐπιχειροῦντας
τὰ πάτρια κινεῖν ἔθη καὶ τὸν κόσμον τοῦ πολιτεύμα-
τος τὸν ἀρχαῖον διαφθείρειν ἀλλοτρίους καὶ πολε-
μίους εἶναι τῆς πόλεως. Τίτος δὲ Κοίντιος οὐκ εἴα
τῇ βίᾳ κατείργειν τὸ ἀντίπαλον, οὐδὲ δι' ὅπλων καὶ
δι' αἵματος ἐμφυλίου χωρεῖν πρὸς τὸ δημοτικόν, ἄλ-
λως τε καὶ δημάρχων σφίσιν ἐναντιωσομένων, οὓς
ἱεροὺς εἶναι καὶ παναγεῖς ἐψηφίσαντο οἱ πατέρες
ἡμῶν θεοὺς καὶ δαίμονας ἐγγυητὰς ποιησάμενοι τῶν
ὁμολογιῶν, καὶ τοὺς μεγίστους ὅρκους κατ' ἐξωλείας 2292
αὐτῶν τε καὶ τῶν ἐγγόνων, ἐάν τι παραβαίνωσι τῶν
συγκειμένων, κατομοσάμενοι.

LVI. Ταύτῃ προσθεμένων τῇ γνώμῃ καὶ τῶν
ἄλλων τῶν παρακληθέντων εἰς τὸ συνέδριον, παρα-
λαβὼν τὸν λόγον ὁ Κλαύδιος· Οὐκ ἀγνοῶ μέν, ἔφη-
σεν, ἡλίκων κρηπὶς καταβληθήσεται συμφορῶν ἅπα-
σιν ἡμῖν, ἐὰν ἐπιτρέψωμεν τῷ δήμῳ περὶ τοῦ νόμου
ψῆφον λαβεῖν· οὐκ ἔχων δ' ὅ τι χρὴ ποιεῖν, οὐδὲ
δυνάμενος τοσούτοις οὖσιν μόνος ἀντιλέγειν, εἴκω τοῖς
βουλεύμασι τοῖς ὑμετέροις. δίκαιον γάρ, ἀποφαίνε-
σθαι μὲν ἕκαστον ἃ δοκεῖ τῷ κοινῷ συνοίσειν, πεί-
θεσθαι δὲ τοῖς ὑπὸ τῶν πλειόνων κριθεῖσιν. ἐκεῖνο
μέντοι παραινεῖν ὑμῖν ὡς ἐν χαλεποῖς καὶ ἀβουλήτοις
πράγμασιν ἔχω, τῆς μὲν ὑπατείας μήτε νῦν μήθ'
ὕστερον παραχωρεῖν μηδενὶ πλὴν τῶν πατρικίων,
οἷς μόνοις ὅσιόν τε καὶ θεμιτόν ἐστι τυγχάνειν· ὅταν
δ' εἰς ἀνάγκην κατακλεισθῆτε, ὥσπερ νῦν, μεταδι-
δόναι καὶ τοῖς ἄλλοις πολίταις τῆς μεγίστης ἐξουσίας
τε καὶ ἀρχῆς, χιλιάρχους τε ἀντὶ τῶν ὑπάτων ἀπο- 2293
δείκνυτε, ἀριθμὸν αὐτῶν ὁρίσαντες ὅσον δή τινα·
ἐμοὶ μὲν γὰρ ὀκτὼ ἢ ἓξ ἀποχρῆν δοκεῖ· ἔν τε τού-

τοις τοῖς ἀνδράσι μὴ ἐλάττονες ἀριθμὸν ἔστωσαν οἱ πατρίκιοι τῶν δημοτικῶν. ταῦτα γὰρ ποιοῦντες οὔτε τὴν τῶν ὑπάτων ἀρχὴν εἰς ταπεινοὺς καὶ ἀναξίους καταβαλεῖτε, οὔτε δυναστείας ἀδίκους ἑαυτοῖς κατασκευάζεσθαι δόξετε μηδεμιᾶς ἀρχῆς μεταδιδόντες τοῖς δημοτικοῖς. Ἐπαινεσάντων δ' ἁπάντων τὴν γνώμην καὶ οὐδενὸς τἀναντία λέγοντος· Ἀκούσατ', ἔφη, ἃ καὶ τοῖς ὑπάτοις ὑμῖν ἔχω παραινεῖν. ἡμέραν προειπόντες, ἐν ᾗ τὸ προβούλευμα ἐπικυρώσετε καὶ τὰ κριθέντα ὑπὸ τῆς βουλῆς, λόγον ἀπόδοτε τοῖς ἀπολογουμένοις ὑπὲρ τοῦ νόμου καὶ τοῖς κατηγοροῦσι· ῥηθέντων δὲ τῶν λόγων, ὅταν καθήκῃ τὰς γνώμας ἐρωτᾶν, μήτ' ἀπ' ἐμοῦ ἄρξασθε μήτ' ἀπὸ Κοιντίου
2294 τουδὶ μήτ' ἀπ' ἄλλου τῶν πρεσβυτέρων μηδενός, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ φιλοδημοτάτου τῶν βουλευτῶν Λευκίου Οὐαλερίου, καὶ μετὰ τοῦτον ἀξιοῦτε Ὁράτιον εἴ τι βούλεται λέγειν. ὅταν δὲ τὰς παρ' ἐκείνων γνώμας ἐξετάσητε, τότε τοὺς πρεσβυτέρους ἡμᾶς κελεύετε λέγειν. ἐγὼ μὲν οὖν τὴν ἐναντιουμένην γνώμην τοῖς δημάρχοις ἀποδείξομαι πάσῃ τῇ παρρησίᾳ χρώμενος· τουτὶ γὰρ τῷ κοινῷ συμφέρει· τὸ δὲ περὶ τῶν χιλιάρχων πολίτευμα, εἰ βουλομένοις ἐστίν, εἰσηγείσθω Τίτος Γενύκιος οὗτος· πρεπωδεστάτη γὰρ ἡ γνώμη καὶ ὑποψίαν ἥκιστα παρέξουσα γένοιτ' ἄν, ἐὰν οὗτος αὐτὴν ὁ σὸς ἀδελφός, ὦ Μάρκε Γενύκιε, λέγῃ. Ἐδόκει καὶ ταῦτα ὀρθῶς ὑποτίθεσθαι, καὶ οἱ μὲν ἀπῄεσαν ἐκ τοῦ συλλόγου· τοῖς δὲ δημάρχοις δέος ἐνέπιπτε πρὸς τὴν ἀπόρρητον τῶν ἀνδρῶν συνουσίαν, ὡς ἐπὶ κακῷ τινι τοῦ δήμου μεγάλῳ γενομένην,
2295 ἐπειδὴ κατ' οἰκίαν τε συνήδρευσαν, ἀλλ' οὐκ ἐν τῷ φανερῷ, καὶ οὐδένα τῶν προεστηκότων τοῦ δήμου κοινωνὸν τῶν βουλευμάτων παρέλαβον, καὶ μετὰ

τοῦτο συνέδριον αὐτοὶ πάλιν ἐκ τῶν φιλοδημοτάτων συναγαγόντες ἀλεξήματα καὶ φυλακὰς ἀντεμηχανῶντο πρὸς τὰς ἐπιβουλάς, ἃς ἐκ τῶν πατρικίων ἔσεσθαι σφίσιν ὑπώπτευον.

LVII. Ὡς δὲ καθῆκεν ὁ χρόνος, ἐν ᾧ τὸ προβούλευμα ἔδει γενέσθαι, συγκαλέσαντες οἱ ὕπατοι τὴν βουλὴν καὶ πολλὰς ὑπὲρ ὁμονοίας καὶ εὐκοσμίας ποιησάμενοι παρακλήσεις, πρώτοις ἀπέδωκαν λέγειν τοῖς εἰσηγησαμένοις δημάρχοις τὸν νόμον. καὶ παρελθὼν εἷς ἐξ αὐτῶν Γάιος Κανολήιος περὶ μὲν τοῦ δίκαιον ἢ συμφέροντα εἶναι τὸν νόμον οὔτ' ἐδίδασκεν οὔτ' ἐμέμνητο· θαυμάζειν δ' ἔφη τῶν ὑπάτων, ὅτι βεβουλευμένοι τε καὶ κεκρικότες ἤδη κατὰ σφᾶς αὐτοὺς ἃ δεῖ πράττειν, ὥσπερ ἀδοκίμαστον πρᾶγμα καὶ βουλῆς δεόμενον εἰς τὸ συνέδριον ἐπεχείρησαν εἰσφέρειν, καὶ λόγον ἀπέδωκαν ὑπὲρ αὐτοῦ τοῖς 229 προαιρουμένοις, εἰρωνείαν εἰσάγοντες οὔτε ταῖς ἑαυτῶν ἡλικίαις ἁρμόττουσαν, οὔτε τῷ μεγέθει τῆς ἀρχῆς προσήκουσαν. πονηρῶν τ' ἀρχὰς ἔφη πολιτευμάτων αὐτοὺς εἰσάγειν, ἀπόρρητα βουλευτήρια συνάγοντας ἐν ἰδίαις οἰκίαις, καὶ οὐδ' ἅπαντας τοὺς βουλευτὰς εἰς ταῦτα παρακαλοῦντας, ἀλλὰ τοὺς σφίσιν αὐτοῖς ἐπιτηδειοτάτους. τῶν μὲν οὖν ἄλλων συνέδρων τῶν ἀπελαθέντων τῆς κατοικιδίου βουλῆς ἧττον ἔφη θαυμάζειν· Μάρκου δὲ Ὁρατίου καὶ Λευκίου Οὐαλερίου τῶν καταλυσάντων τὴν ὀλιγαρχίαν, ὑπατικῶν ἀνδρῶν καὶ οὐδενὸς ἧττον ἐπιτηδείων τὰ κοινὰ βουλεύειν, τὴν ἀπαξίωσιν τῆς εἰς τὸ συνέδριον παρακλήσεως ἐκπεπλῆχθαι, καὶ οὐ δύνασθαι συμβάλλειν ἐπὶ τίνι λόγῳ δικαίῳ, εἰκάζειν δὲ μίαν αἰτίαν, ὅτι πονηρὰς καὶ ἀσυμφόρους γνώμας εἰσηγεῖσθαι μέλλοντες κατὰ τῶν δημοτικῶν οὐκ ἐβούλοντο

παρακαλεῖν εἰς ταῦτα τὰ συνέδρια τοὺς φιλοδημοτάτους, ἀγανακτήσοντας δηλονότι καὶ οὐ περιοψομένους οὐδὲν ἄδικον πολίτευμα κατὰ τοῦ δήμου γινόμενον.

2297 LVIII. Τοιαῦτα τοῦ Κανοληίου μετὰ πολλοῦ σχετλιασμοῦ λέγοντος, καὶ τῶν μὴ παραληφθέντων εἰς τὸ συνέδριον βουλευτῶν πρὸς ὀργὴν δεξαμένων τὸ πρᾶγμα, παρελθὼν ἅτερος τῶν ὑπάτων Γενύκιος ἀπολογεῖσθαι καὶ πραΰνειν τὰς ὀργὰς αὐτῶν ἐπειρᾶτο, διδάσκων, ὅτι τοὺς μὲν φίλους παραλάβοιεν, οὐχ ἵνα τι κατὰ τοῦ δήμου διαπράξαιντο, ἀλλ' ἵνα μετὰ τῶν ἀναγκαιοτάτων βουλεύσαιντο, τί πράττοντες οὐδ' ὁποτέραν δόξουσιν ἐλαττοῦν τῶν αἱρέσεων, πότερον ταχεῖαν ἀποδιδόντες τῇ βουλῇ περὶ τοῦ νόμου διάγνωσιν, ἢ χρονιωτέραν. Ὁράτιον δὲ καὶ Οὐαλέριον οὐκ ἄλλης τινὸς χάριν αἰτίας μὴ παραλαβεῖν εἰς τὸ συνέδριον, ἀλλ' ἵνα μή τις ὑποψία περὶ αὐτῶν παρ' ἀξίαν ᾖ τοῖς δημοτικοῖς, ὡς μεταβεβλημένων τὴν προαίρεσιν τῆς πολιτείας, ἐὰν ἄρα ἐπὶ τῆς ἑτέρας γένωνται γνώμης, τῆς ἀξιούσης ἀναβαλέσθαι τὴν ὑπὲρ τοῦ νόμου διάγνωσιν εἰς ἕτερον καιρὸν ἐπι-
2298 τηδειότερον. ἐπειδὴ δ' ἅπασι τοῖς παραληφθεῖσιν ἡ συντομωτέρα διάγνωσις ἀμείνων ἔδοξεν εἶναι τῆς βραδυτέρας, πράττειν ὡς ἐκείνοις ἐφάνη. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ θεοὺς ἐπομοσάμενος ἦ μὴν τἀληθῆ λέγειν καὶ τοὺς παρακληθέντας ἐκ τῶν βουλευτῶν, ἔφη, πᾶσαν ἀπολύσεσθαι διαβολήν, οὐ λόγοις, ἀλλ' ἔργοις. ὅταν γὰρ οἱ βουλόμενοι κατηγορεῖν καὶ ἀπολογεῖσθαι περὶ τοῦ νόμου διεξέλθωσι τὰ δίκαια, πρώτους ἐπὶ τὴν ἐρώτησιν τῆς γνώμης κατάγειν οὐχὶ τοὺς πρεσβυτάτους καὶ τιμιωτάτους τῶν βουλευτῶν, οἷς ἐκ τῶν πατρίων ἐθισμῶν καὶ τοῦτ' ἀποδεδόσθαι τὸ γέρας, οὐδὲ τοὺς δι' ὑποψίας ὄντας παρὰ τοῖς δημοτικοῖς,

ὡς οὐδὲν ὑπὲρ αὐτῶν χρηστὸν οὔτε λέγοντας οὔτε 229 φρονοῦντας, ἀλλ' ἐκ τῶν νεωτέρων τοὺς δοκοῦντας εἶναι φιλοδημοτάτους.

LVIIII. Ὑποσχόμενος δὲ ταῦτα καὶ δοὺς ἐξουσίαν τοῖς βουλομένοις λέγειν, ἐπειδὴ οὔτε κατηγορήσων οὔτ' ἀπολογησόμενος οὐδεὶς ὑπὲρ τοῦ νόμου παρῄει, παρελθὼν αὖθις ἐρωτᾷ πρῶτον Οὐαλέριον, τί τῷ κοινῷ συμφέρει, καὶ τί προβουλεῦσαι τοῖς συνέδροις παραινεῖ. ὁ δ' ἀναστὰς καὶ πολλοὺς διεξελθὼν ὑπὲρ αὑτοῦ τε καὶ τῶν προγόνων λόγους, ὡς ἐπὶ τῷ συμφέροντι τῆς πόλεως τοῦ δημοτικοῦ μέρους προϊσταμένων, καὶ καταριθμησάμενος ἅπαντας ἐξ ἀρχῆς τοὺς κατασχόντας τὴν πόλιν κινδύνους ἐκ τῶν τἀναντία πολιτευομένων, τοῖς τ' ἀπεχθῶς ἐσχηκόσι πρὸς τὸ δημοτικὸν ἅπασιν ἀλυσιτελὲς γενόμενον ἀποδείξας τὸ μισόδημον, ἐπαίνους τε πολλοὺς περὶ τοῦ δήμου ποιησάμενος, ὡς αἰτιωτάτου τῇ πόλει γεγονότος οὐ μόνον τῆς ἐλευθερίας, ἀλλὰ καὶ τῆς ἡγεμονίας. ἐπεὶ ταῦτα καὶ παραπλήσια τούτοις διεξῆλθε, 230 τελευτῶν ἔφη μὴ δύνασθαι πόλιν ἐλευθέραν εἶναι, ἐξ ἧς ἄν τις τὴν ἰσότητ' ἀνέλῃ· ἔφη τε δοκεῖν ἑαυτῷ τὸν μὲν νόμον δίκαιον εἶναι, τὸν ἀξιοῦντα πᾶσι μετεῖναι Ῥωμαίοις τῆς ὑπατικῆς ἀρχῆς, τοῖς γε δὴ βίον ἀνεπίληπτον ἐσχηκόσι καὶ πράξεις ἀποδεδειγμένοις τῆς τιμῆς ταύτης ἀξίας, τὸν δὲ καιρὸν οὐκ ἐπιτήδειον εἰς τὴν ὑπὲρ αὐτοῦ διάγνωσιν ἐν πολεμικαῖς ὑπαρχούσης ταραχαῖς τῆς πόλεως· συνεβούλευέ τε τοῖς μὲν δημάρχοις ἐᾶν τὴν καταγραφὴν γενέσθαι τῶν στρατιωτῶν καὶ τὴν ἔξοδον μὴ κωλύειν τῶν καταγραφέντων, τοῖς δ' ὑπάτοις, ὅταν τὸ κράτιστον τέλος ἐπιθῶσι τῷ πολέμῳ, πρῶτον ἁπάντων τὸ περὶ τοῦ νόμου προβούλευμα εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν.

2301 ταῦτα δὲ γραφῆναί τ' ἤδη καὶ διομολογηθῆναι πρὸς ἀμφοτέρων. Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Οὐαλερίου, καὶ μετὰ τοῦτον Ὁρατίου· δευτέρῳ γὰρ τούτῳ λόγον ἀπέδωκαν οἱ ὕπατοι· ταὐτὸ πάθος ἅπασι τοῖς παροῦσι συνέβη. οἱ μὲν γὰρ ἀνελεῖν τὸν νόμον βουλόμενοι τὴν ἀναβολὴν τῆς περὶ αὐτοῦ διαγνώσεως ἀγαπητῶς ἀκούσαντες, τὸ μετὰ τὸν πόλεμον ἐπάναγκες εἶναι σφίσι προβουλεῦσαι περὶ αὐτοῦ χαλεπῶς ἀπεδέξαντο· οἱ δὲ κύριον ὑπὸ τοῦ συνεδρίου κριθῆναι προαιρούμενοι, τὸ μὲν ὡμολογημένον δίκαιον εἶναι τὸν νόμον ἀσμένως ἤκουον, τὸ δ' εἰς ἑτέρους ἐκπίπτειν χρόνους τὸ προβούλευμα πρὸς ὀργὴν ἐλάμβανον.

LX. Θορύβου δέ, ὅπερ εἰκός, ἐπὶ τῇ γνώμῃ γενομένου διὰ τὸ μὴ πᾶσι τοῖς μέρεσιν αὐτῆς εὐαρεστεῖν 2302 ἀμφοτέρους, παρελθὼν ὁ ὕπατος τρίτον ἠρώτα Γάιον Κλαύδιον, ὃς ἐδόκει τῶν προεστηκότων τῆς ἑτέρας τάξεως τῆς ἐναντιουμένης τοῖς δημοτικοῖς αὐθαδέστατος εἶναι καὶ δυνατώτατος. οὗτος ἐκ παρασκευῆς διεξῆλθε λόγον κατὰ τῶν δημοτικῶν, πάνθ' ὅσα ἔδοξε πώποτε ἐναντία τοῖς καλοῖς καὶ πατρίοις ἐθισμοῖς ὑπομιμνήσκων, οὗ κεφάλαιον ἦν, εἰς ὃ κατέσκηπτεν ἡ γνώμη, μηδεμίαν ἀποδιδόναι τῇ βουλῇ διάγνωσιν ὑπὲρ τοῦ νόμου τοὺς ὑπάτους, μήτ' ἐν τῷ παρόντι χρόνῳ μήθ' ὕστερον, ὡς ἐπὶ καταλύσει τῆς ἀριστοκρατίας εἰσφερομένου καὶ συγχεῖν μέλλοντος ἅπαντα τὸν κόσμον τῆς πολιτείας. γενομένου δὲ πρὸς τὴν γνώμην ἔτι πλείονος θορύβου, τέταρτος ἀνίσταται κληθεὶς Τίτος Γενύκιος, ἀδελφὸς θατέρου τῶν ὑπάτων· ὃς ὀλίγα διαλεχθεὶς ὑπὲρ τῶν κατεχόντων καιρῶν τὴν πόλιν, ὅτι δυεῖν ἀνάγκη τῶν χαλεπωτάτων θάτερον αὐτῇ συμπεσεῖν, ἢ διὰ

τὰς πολιτικὰς ἔριδας καὶ φιλοτιμίας ἰσχυρὰ τὰ τῶν
ἐχθρῶν ποιῆσαι πράγματα, ἢ τοὺς ἔξωθεν ἐπιφερο- 2303
μένους ἀποτρέψασθαι βουλομένη κακῶς τὸν οἰκεῖον
καὶ πολιτικὸν διαλύσασθαι πόλεμον· ἔφησε, δυεῖν
ὄντων κακῶν, ὧν ἀνάγκη θάτερον ἄκοντας ὑπομεῖ-
ναι, τοῦτ᾽ αὐτῷ δοκεῖν εἶναι λυσιτελέστερον, τὸ
συγχωρῆσαι τῷ δήμῳ τὴν βουλὴν παρασπᾶσαί τι τοῦ
κόσμου τῆς πατρίου πολιτείας μᾶλλον, ἢ τοῖς ἀλλοφύ-
λοις τε καὶ πολεμίοις καταγέλαστον ποιῆσαι τὴν πόλιν.
Ταῦτ᾽ εἰπὼν τὴν δοκιμασθεῖσαν ὑπὸ τῶν παραγε-
νηθέντων ἐν τῷ κατ᾽ οἰκίαν συνεδρίῳ γνώμην εἰσέ-
φερεν, ἣν εἰσηγήσατο Κλαύδιος, ὥσπερ ἔφην, ἀντὶ
τῶν ὑπάτων χιλιάρχους ἀποδειχθῆναι, τρεῖς μὲν ἐκ
τῶν πατρικίων, τρεῖς δ᾽ ἐκ τῶν δημοτικῶν, ἐξουσίαν
ἔχοντας ὑπατικήν· ὅταν δὲ τελῶσιν οὗτοι τὴν ἀρχὴν
καὶ καθήκῃ νέας ἀρχὰς ἀποδείκνυσθαι, τὴν βουλὴν
καὶ τὸν δῆμον αὖθις συνελθόντας διαγνῶναι, πότε-
ρον ὑπάτους ἢ χιλιάρχους βούλονται παραλαβεῖν
τὴν ἀρχήν. ὅ τι δ᾽ ἂν ἅπασι δόξῃ ψῆφον ἐπενέγκασι,
τοῦτ᾽ εἶναι κύριον. ἐπιτελεῖσθαι δὲ τὸ προβούλευμα
καθ᾽ ἕκαστον ἐνιαυτόν.

LXI. Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Γε- 2304
νυκίου πολὺς ἐξ ἁπάντων ἔπαινος ἐγίνετο· καὶ οἱ
μετ᾽ ἐκεῖνον ἀνιστάμενοι μικροῦ δεῖν πάντες ταῦτα
συνεχώρουν κράτιστα εἶναι. γράφεται δὴ τὸ προ-
βούλευμα ὑπὸ τῶν ὑπάτων, καὶ λαβόντες αὐτὸ μετὰ
πολλῆς χαρᾶς οἱ δήμαρχοι προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν.
ἔπειτα καλέσαντες τὸ πλῆθος εἰς τὴν ἐκκλησίαν,
πολλοὺς διέθεντο τῆς βουλῆς ἐπαίνους, καὶ παραγ-
γέλλειν τὴν ἀρχὴν ἐκέλευον τοῖς ἐθέλουσι τῶν δημο-
τικῶν ἅμα τοῖς πατρικίοις. οὕτω δ᾽ ἄρα κοῦφόν τι
πρᾶγμά ἐστιν ἐπιθυμία δίχα λόγου γινομένη καὶ

ταχὺ μεταπίπτον ἐπὶ θάτερα μέρη, μάλιστα δὲ ἡ
τῶν ὄχλων, ὥσθ' οἱ περὶ παντὸς ποιούμενοι τέως
τῆς ἀρχῆς μεταλαβεῖν, καὶ εἰ μὴ δοθείη τοῦτ' αὐτοῖς
ὑπὸ τῶν πατρικίων ἢ καταλείψοντες τὴν πόλιν ὡς
πρότερον, ἢ διὰ τῶν ὅπλων αὐτὸ ληψόμενοι, ἐπειδὴ
τὸ συγχώρημα ἔλαβον, ἀπέστησαν εὐθὺς τῆς ἐπιθυ-
μίας καὶ τὰς σπουδὰς ἐπὶ θάτερον μετέβαλον. πολ-
2305 λῶν γέ τοι δημοτικῶν παραγγελλόντων τὴν χιλιαρ-
χίαν καὶ κατεσπουδασμένας ποιουμένων τὰς δεήσεις,
οὐδένα τῆς τιμῆς ταύτης ἄξιον εἶναι ὑπέλαβον· ἀλλὰ
γενόμενοι τῆς ψήφου κύριοι τοὺς ἐκ τῶν πατρικίων
μετιόντας αὐτὴν ἄνδρας ἐπιφανεῖς χιλιάρχους ἀποδει-
κνύουσιν, Αὖλον Σεμπρώνιον Ἀτρατῖνον, καὶ Λεύ-
κιον Ἀτίλιον Λοῦσκον καὶ Τίτον Κλύλιον Σικελόν.
LXII. Οὗτοι παραλαμβάνουσι πρῶτοι τὴν ἀνθ-
ύπατον ἀρχὴν κατὰ τὸν τρίτον ἐνιαυτὸν τῆς ὀγδοη-
κοστῆς καὶ τετάρτης ὀλυμπιάδος, ἄρχοντος Ἀθήνησι
Διφίλου. κατασχόντες δ' αὐτὴν ἑβδομήκοντα καὶ
τρεῖς μόνον ἡμέρας ἀποτίθενται κατὰ τὸν ἀρχαῖον
ἐθισμὸν ἑκούσιοι, θεοπέμπτων τινῶν σημείων κωλυ-
τηρίων αὐτοῖς τοῦ πράττειν τὰ κοινὰ γενομένων.
τούτων δὲ τὴν ἐξουσίαν ἀπειπαμένων, ἡ βουλὴ συν-
ελθοῦσα μεσοβασιλεῖς ἀποδείκνυσι. καὶ ἐκεῖνοι
προειπόντες ἀρχαιρέσια καὶ τῷ δήμῳ τὴν διάγνωσιν
2306 ἀποδιδόντες, εἴτε βούλεται χιλιάρχους εἴτε ὑπάτους
ἀποδεῖξαι, κρίναντος αὐτοῦ μένειν ἐπὶ τοῖς ἐξ ἀρχῆς
ἐθισμοῖς, ἀπέδοσαν τοῖς βουλομένοις τῶν πατρικίων
μετιέναι τὴν ὕπατον ἀρχήν· καὶ γίνονται πάλιν ἐκ
τῶν πατρικίων ὕπατοι Λεύκιος Παπίριος Μογιλλά-
νος καὶ Λεύκιος Σεμπρώνιος Ἀτρατῖνος, ἑνὸς τῶν
ἀποθεμένων τὴν χιλιαρχίαν ἀδελφός. αὗται δύο
κατὰ τὸν αὐτὸν ἐνιαυτὸν ἀρχαὶ Ῥωμαίων αἱ τὸ μέ-

γιστον ἔχουσαι κράτος ἐγένοντο. πλὴν οὐκ ἐν ἁπά-
σαις ταῖς Ῥωμαικαῖς χρονογραφίαις ἀμφότεραι φέρον-
ται, ἀλλ᾽ ἐν αἷς μὲν οἱ χιλίαρχοι μόνον, ἐν αἷς δ᾽
οἱ ὕπατοι, ἐν οὐ πολλαῖς δ᾽ ἀμφότεροι, αἷς ἡμεῖς
οὐκ ἄνευ λογισμοῦ συγκατατιθέμεθα, πιστεύοντες
δὲ ταῖς ἐκ τῶν ἱερῶν τε καὶ ἀποθέτων βίβλων μαρ-
τυρίαις. ἄλλο μὲν οὖν οὐδὲν ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς οὔτε 2307
πολεμικὸν οὔτε πολιτικὸν ἔργον ἱστορίας ἄξιον ἐπράχθη,
συνθῆκαι δὲ πρὸς τὴν Ἀρδεατῶν πόλιν ἐγένοντο περὶ
φιλίας τε καὶ συμμαχίας· ἐπρεσβεύσαντο γὰρ ἀποτιθέ-
μενοι τὰ περὶ τῆς χώρας ἐγκλήματα, παρακαλοῦντες
φίλοι Ῥωμαίων γενέσθαι καὶ σύμμαχοι. ταύτας τὰς
συνθήκας τὸ τῶν ὑπάτων ἀρχεῖον ἐπεκύρωσε.

LXIII. Τῷ δ᾽ ἑξῆς ἐνιαυτῷ πάλιν ὑπάτους ψη-
φισαμένου τοῦ δήμου κατασταθῆναι, παραλαμβά-
νουσι τὴν ὕπατον ἀρχὴν τῇ διχομήνιδι τοῦ Δεκεμ-
βρίου μηνὸς Μάρκος Γεγάνιος Μακερῖνος τὸ δεύ-
τερον καὶ Τίτος Κοίντιος Καπετωλῖνος τὸ πέμπτον.
οὗτοι διδάξαντες τὴν βουλήν, ὅτι πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα
πράγματα διὰ τὰς συνεχεῖς τῶν ὑπάτων στρατείας
ἠμελημένα παρεῖται, πάντων δ᾽ ἀναγκαιότατον τὸ
περὶ τὰς τιμήσεις τῶν βίων νόμιμον, ἐξ ὧν ὅ τ᾽ ἀρι- 2308
θμὸς τῶν ἐχόντων τὴν στρατεύσιμον ἡλικίαν ἐγινώ-
σκετο καὶ τῶν χρημάτων τὸ πλῆθος, ἀφ᾽ ὧν ἔδει τὰς
εἰς τὸν πόλεμον εἰσφορὰς ἕκαστον τελεῖν, οὐδεμιᾶς
τιμήσεως ἐντὸς ἑπτακαίδεκα ἐτῶν γενομένης ἀπὸ τῆς
Λευκίου Κορνηλίου καὶ Κοίντου Φαβίου [ὑπατείας·
ὥστε] *** καταλιπεῖν οἱ πονηρότατοί τε καὶ ἀσελ-
γέστατοι Ῥωμαίων, ἀλλὰ τόπον μεταλαμβάνειν, ἐν ᾧ
περίεστι ζῆν αὐτοῖς, ὡς προῄρηνται.

EXCERPTA

EX

LIBRO XII.

I. Ὅτι λιμοῦ κατὰ τὴν Ῥώμην γενομένου ἰσχυροῦ ἀνήρ τις οἴκου τε οὐκ ἀφανοῦς καὶ χρήμασιν ἐν τοῖς μάλιστα δυνατός, Σπόριος Μαίλιος Εὐδαίμων ἐπίκλησιν ἐπὶ τῆς πολλῆς εὐπορίας, νεωστὶ μὲν παρειληφὼς τὸν οἶκον τοῦ πατρός, ἡλικίαν δὲ καὶ τάξιν ἔχων ἱππικήν, οἵα μήτε ἀρχὰς παραλαμβάνειν μήτε ἄλλην κοινὴν ἐπιμέλειαν μηδεμίαν, λαμπρὸς εἴ καί τις ἄλλος τὰ πολέμια καὶ πολλοῖς κεκοσμημένος ἀριστείοις, κράτιστον ὑπολαβὼν καιρὸν ἐπιθέσει τυραννίδος, ἐπὶ δημαγωγίαν τοῦ πλήθους ἐτράπετο, τὴν ῥάστην τῶν ἐπὶ τυραννίδα φερουσῶν ὁδῶν. ἔχων δὲ πολλοὺς ἑταίρους καὶ πελάτας, ἄλλους ἄλλῃ διέπεμψε χρήματα δοὺς ἐκ τῶν ἰδίων εἰς συναγυρμοὺς τροφῆς, καὶ αὐτὸς εἰς Τυρρηνίαν ᾤχετο. ἐν βραχεῖ δὲ χρόνῳ δι' ἑαυτοῦ τε καὶ τῶν ἑταίρων πολλὴν κατακομίσας ἀγορὰν διεμέτρει τοῖς πολίταις, ἀντὶ δώδεκα δραχμῶν διδράχμου ἀπομετρῶν τὸν μόδιον· ὅσους δὲ αἴσθοιτο παντάπασιν ἀδυνάτους καὶ μηδ' ὑπὲρ τῆς ἐφημέρου τροφῆς ἔχοντας προέσθαι τὸ διάφορον ἄνευ τιμῆς χαριζόμενος. ταύτῃ τῇ φιλ-

ανθρωπίᾳ τὸν δῆμον ἀναλαβὼν καὶ θαυμαστὴν ὅσην δόξαν ἀπενεγκάμενος, ᾤχετο πάλιν ἐμπορευσόμενος ἑτέρας ἀγοράς· καὶ παρῆν οὐ διὰ μακροῦ ποταμηγοὺς ἄγων σκάφας πολλὰς πάνυ μεστὰς τροφῆς, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον τοῖς πολίταις ἐμέτρει. οἱ δὲ πατρίκιοι ταῦτα πράττοντα ὁρῶντες αὐτὸν ὑποψίας τε ἐλάμβανον τῆς ἄγαν φιλοτιμίας τοῦ ἀνδρὸς οὐδενὸς ἀγαθοῦ ἀπολαύσειν οἰόμενοι, καὶ συνιστάμενοι κατὰ τὴν ἀγορὰν ἐσκόπουν ὅντινα χρὴ τρόπον εὐπρεπέστερον ἄνευ κινδύνου παῦσαι τούτων αὐτὸν τῶν πολιτευμάτων· κρύφα μὲν τὸ πρῶτον καὶ κατ' ὀλίγους συνιόντες καὶ διαλεγόμενοι πρὸς ἀλλήλους, ἔπειτα καὶ ἐκ τοῦ φανεροῦ καταβοῶντες, ἐπειδὴ βαρύς τε καὶ ἀφόρητος ἦν ἔργα τε πράττων ὑπερηφανίας μεστὰ καὶ λόγους διεξιὼν αὐθάδεις ὑπὲρ ἑαυτοῦ· ὅς γε πρῶτον μὲν καθεζόμενος ἐπὶ βήματος περιφανοῦς, ὥσπερ ἔθος ἦν τοῖς τὰς ἀρχὰς ἔχουσιν, ἐχρημάτιζε τοῖς προσιοῦσι δι' ἡμέρας περὶ τὴν σιτοδοσίαν, ἐκβαλὼν τῆς τιμῆς ταύτης τὸν ἀποδειχθέντα ἔπαρχον ὑπὸ τῆς βουλῆς· ἔπειτα συνεχεῖς ποιούμενος ἐκκλησίας, οὐκ ὂν ἐν ἔθει Ῥωμαίοις ἰδιώτην ἐκκλησίαν συνάγειν, πολλὰ μὲν τοῦ Μηνυκίου κατηγόρει πρὸς τὸν δῆμον, ὡς ὄνομα φέροντος ἀρχῆς μόνον, ἔργον δὲ οὐδὲν ἀποδειξαμένου τοῖς πένησιν ὠφέλιμον, πολλὰ δὲ τοὺς πατρικίους διέβαλλε πρὸς τὸν δῆμον, ὡς ταῦτα πράττοντας ἐξ ὧν ὀλίγος τε καὶ οὐδενὸς ἄξιος ὁ δῆμος ἔσται καὶ οὐδ' ἐπὶ σιτοδείᾳ φροντίδα τῶν ἀπόρων ἔχοντας οὐδεμίαν, οὔτε κοινῇ πάντας οὔτε ἰδίᾳ τοὺς δυνατούς, παντὸς μάλιστα δέον αὐτοὺς χρήμασί τε καὶ σώμασιν ὥσπερ αὐτὸς δὴ κακοπαθεῖν καὶ πάντοθεν ἐπεισάγειν τῇ πόλει τὰς ἀγοράς. ἠξίου τε πρὸς τὰ τῶν ἄλλων ἔργα πατρι-

κίων τὰ ὑφ' ἑαυτοῦ πραττόμενα ἐξετάζειν, ὡς πολὺ καὶ τὸ πᾶν ἀλλήλων διαφέροντα. ἐκείνους μὲν γὰρ οὐδὲν ἐκ τῶν ἰδίων εἰς τὸ κοινὸν ἀναλίσκοντας ἔτι καὶ τὴν δημοσίαν γῆν σφετερισαμένους πολὺν ἤδη καρποῦσθαι χρόνον, ἑαυτὸν δὲ τῶν δημοσίων οὐδὲν ἔχοντα ἔτι καὶ τὴν πατρῴαν καταχορηγεῖν οὐσίαν εἰς βοήθειαν τῶν ἀπόρων καί, ἐπειδὰν τὰ ὄντα καταναλώσῃ, δανείσματα ποιεῖσθαι παρὰ φίλων οὐδὲν ἀντικαταλλαττόμενον τῆς τοιαύτης φιλοτιμίας ὅτι μὴ τὴν πολιτικὴν εὔνοιαν, ἧς οὐδὲ τὸν ἐξάνθρωπον πλοῦτον ἡγεῖσθαι τιμιώτερον. οἱ δὲ περὶ αὐτὸν συνεστῶτες ἀεὶ σωτῆρα καὶ πατέρα καὶ κτίστην ἀπεκάλουν τῆς πατρίδος, καὶ τὴν μὲν ὑπατικὴν ἐξουσίαν ἐλάττονα χάριν ἢ κατὰ τὸ μέγεθος τῶν ἔργων αὐτοῦ γενήσεσθαι δοθεῖσαν ἀπέφαινον, ἄλλῃ δέ τινι μείζονι καὶ λαμπροτέρᾳ τιμῇ κοσμεῖν ἠξίουν αὐτόν, ἣν καὶ γένος ἕξει τὸ ἐξ ἐκείνου. ὡς δὲ καὶ τὴν τρίτην ἔξοδον ποιησάμενος ἐπὶ τὰ παραθαλάττια τῆς Ἰταλίας, ἔκ τε Κύμης καὶ τῶν περὶ Μισηνὸν λιμένων σιτηγοὺς ὁλκάδας ἄγων πολλὰς κατέπλευσεν εἰς Ὠστίαν, ὃ τῆς Ῥώμης ἐστὶν ἐπίνειον, καὶ κατέκλυσε ταῖς τροφαῖς τὴν πόλιν, ὡς μηδὲν ἔτι τῆς ἀρχαίας εὐετηρίας διαφέρειν, ἅπας ὁ δῆμος ἕτοιμος ἦν, εἰ γένοιτο τῆς ψήφου κύριος ἐν ἀρχαιρεσίαις, εἴτε ὑπατείαν εἴτε ἄλλην τινὰ τιμὴν μετίοι, μηδενὸς ἐπιστρεφόμενος μήτε νόμου κωλύοντος μήτ' ἀνδρὸς ἐναντιουμένου χαρίζεσθαι. ταῦτα ὁρῶντες οἱ προεστηκότες τῆς ἀριστοκρατίας καὶ οὔτε ἐπιτρέπειν ἀξιοῦντες οὔτε κωλύειν δύναμιν ἔχοντες ἐν πολλῇ πάντες ἦσαν ἀθυμίᾳ· καὶ ἔτι μᾶλλον διεταράχθησαν, ἐπειδὴ κωλυόντων ἐκκλησίας συνάγειν αὐτὸν καὶ δημηγορεῖν τῶν τε δημάρχων καὶ ὑπάτων, συστραφεὶς

ὁ δῆμος ἐκείνους μὲν ἐξέβαλεν ἐκ τῆς ἀγορᾶς, τῷ δὲ Μαιλίῳ πολλὴν ἄδειαν καὶ ῥώμην παρέσχεν. ἐν τοιαύτῃ δὴ καταστάσει τῆς πόλεως ὑπαρχούσης, ὁ τῆς ἀγορᾶς ἀποδειχθεὶς ἔπαρχος, ἀχθόμενος μὲν ἐπὶ τοῖς προπηλακισμοῖς τῶν λόγων, οἷς αὐτὸν ὑβρίζων ὁ Μαίλιος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις διετέλει, δεδοικὼς δὲ τὸν ἄνδρα μάλιστα τῶν ἄλλων, εἴ τινος ἐπιλάβοιτο ἀρχῆς, μὴ πρότερον τῆς ἀριστοκρατίας αὐτὸν ποιήσηται, ἢ τὸν δῆμον ἐξερεθίσας πρὸς αὐτὸν ποιήσηται διὰ τὴν ἐκ τῆς ἑταιρείας ἐπιβουλήν τινα κατ' αὐτοῦ μηχανησάμενος, ἀγανακτῶν τε δι' ἀμφότερα ταῦτα καὶ ἀπηλλάχθαι προθυμούμενος ἐκείνου μείζονα ἢ κατ' ἰδιώτην ἰσχὺν ἔχοντος, ἐπιμελῆ ζήτησιν ἐποιεῖτο τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεγομένων τε καὶ πραττομένων. πολλῶν δὲ ὄντων οἷς ὁ ἀνὴρ συνεργοῖς ἐχρῆτο τῶν ἀπορρήτων, καὶ οὔτε τὰς φύσεις ὁμοίων οὔτε τὰς γνώμας παραπλησίων, ἔμελλέ τις ὅπερ εἰκὸς οὐ βεβαίως αὐτῷ ἔσεσθαι φίλος, ἢ διὰ φόβον ἢ διὰ κέρδος ἴδιον· ᾧ τὰ πιστὰ δοὺς ὁ Μηνύκιος ὑπὲρ τοῦ μηδενὶ φράσειν ὅστις ἦν, ἅπασαν ἔγνω τήν τε διάνοιαν τοῦ Μαιλίου καὶ τὴν παρασκευήν. ὡς δὲ καὶ τεκμήριον ἔλαβεν ἀναμφίλεκτον καὶ τὴν πρᾶξιν ἐν χερσὶν οὖσαν ἔγνω, λέγει πρὸς τοὺς ὑπάτους· ἐκεῖνοι δ' οὐκ ἀξιοῦντες ἐφ' ἑαυτοῖς ποιῆσαι μόνοις ἐπιχειρήσεως τηλικαύτης ἐξέτασιν εἰς τὴν βουλὴν ᾤοντο δεῖν τὸ πρᾶγμα εἰσφέρειν, καὶ συνεκάλουν τὸ συνέδριον εὐθὺς ὡς περὶ πολέμου δή τινος ὑπερορίου βουλευσόμενοι. πληρωθέντος δὲ τοῦ συνεδρίου διὰ ταχέων, παρελθὼν ἅτερος αὐτῶν ἔλεξεν, ὅτι πρᾶξις αὐτοῖς μεμήνυται συσκευαζομένη κατὰ τῆς πόλεως πολλῆς πάνυ καὶ ταχείας φυλακῆς δεομένη διὰ τὸ τοῦ κινδύνου μέγεθος· ταύτης δ' ἔφη μηνυτὴν οὐ

τῶν ἐπιτυχόντων εἶναί τινα πολιτῶν, ἀλλ᾽ ὃν αὐτοὶ δι᾽ ἀρετὴν ἐπὶ τῆς μεγίστης τε καὶ ἀναγκαιοτάτης τῷ κοινῷ χρείας ἔταξαν, δοκιμάσαντες αὐτοῦ τήν τε πίστιν καὶ τὴν πρὸς τὰ κοινὰ φιλοτιμίαν ἐκ τῶν παρὰ πάντα τὸν βίον ἐπιτηδευομένων. μετεώρου δὲ τῆς βουλῆς ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ γενομένης ἐκάλει τὸν Μηνύκιον, κἀκεῖνος ἔλεξεν· [ζήτει ἐν τῷ περὶ δημηγοριῶν] Esc.

II. Ὡς δ᾽ ἐμηνύθη τῇ βουλῇ, δικτάτορα προχειρίζονται, ὁ δὲ τὸν ἱππάρχην *** ἐκέλευσεν ἔχοντι τοὺς ἱππεῖς ἥκειν ὡς αὐτὸν περὶ μέσας νύκτας, τοῖς δὲ βουλευταῖς εἰς τὸ Καπιτώλιον ἕωθεν ἔτι συλλέγεσθαι, τῷ δὲ Μηνυκίῳ τόν τε μηνυτὴν ἄγοντι καὶ τὰς ἄλλας ἀποδείξεις κομίζοντι πρὸς τὸ βῆμα παρεῖναι, ἅπασι δὲ φυλάττειν ἀπόρρητα πρὸς τοὺς ἔξω τοῦ συνεδρίου τὰ βουλεύματα· μίαν εἶναι λέγων ἀσφάλειαν, εἰ μηδὲν ὁ Μήλιος ἀκούσειε τῶν περὶ αὐτοῦ λεγομένων τε καὶ πραττομένων. διατάξας δὲ τἆλλα ὅσων ἐδεῖτο, μέχρι δύσεως ἡλίου πάντας ἐν τῷ βουλευτηρίῳ κατασχών, σκότους ὄντος ἤδη διέλυσε τὸν σύλλογον· ὡς δὲ μέση νὰξ γένετο προελθὼν ἐκ τῆς οἰκίας . . . . ἐξῄει περὶ τὸν ὄρθρον τοὺς ἐπιλέκτους ὑπ᾽ ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων ἐπαγόμενος καὶ αὐτοὺς τοὺς ὑπάτους. οὗτοι μὲν οὖν τὸ Καπιτώλιον ἅμα τοῖς βουλευταῖς ἕωθεν κατειληφότες ἐφρούρουν· ὁ δὲ Μαίλιος οὐδὲν ἀκηκοὼς τούτων ἡμέρας γενομένης προελθὼν εἰς τὴν ἀγοράν, ἐχρημάτιζε τοῖς δεομένοις ἐπὶ τοῦ βήματος καθεζόμενος· καὶ μετ᾽ οὐ πολὺ παρῆν ὁ ἵππαρχος Σερουίλιος πρὸς αὐτόν, ἄγων τοὺς ἀκμαιοτάτους τῶν ἱππέων ἔχοντας ὑπὸ τοῖς ἱματίοις ξίφη, καὶ στὰς πλησίον αὐτοῦ λέγει· ὁ δικτάτωρ σε κελεύει, Μαίλιε, πρὸς αὐτὸν ἥκειν· κά-

κεῖνος ὑποτυχών, ποῖος, ἔφη, κελεύει με, Σερουίλιε, δικτάτωρ πρὸς αὐτὸν ἐλθεῖν, ὁ ποῦ καὶ πότε γενόμενος; καὶ ἅμα διαταραχθεὶς περιέβλεψεν εἰς τοὺς περὶ τὸ βῆμα. ἀφασίας δὲ ἅπαντας κατασχούσης διὰ τὸ μηδένα γιγνώσκειν τὰ πραχθέντα ὑπὸ τῆς βουλῆς, λέγει πάλιν ὁ Σερουίλιος· εἰσηγγέλθης χθὲς εἰς τὴν βουλήν, ὦ Μαίλιε, νεωτέροις ἐπιχειρεῖν πράγμασιν, ἴσως οὐκ ἀληθῶς· οὐδενὸς γὰρ ἄξιον ἀπὸ τῆς αἰτίας προκαταγιγνώσκειν. ταύτην ἐξετάσαι τὴν μήνυσιν ἡ βουλὴ προελομένη δικτάτορος ἔφησε δεῖν τοῖς πράγμασιν, ὡς οὐ τὸν ἐλάχιστον τῶν κινδύνων τρέχουσα, καὶ ἀπέδειξε τῆς ἐξουσίας ταύτης κύριον Λεύκιον Κοίντιον Κικιννάτον, ὃν οἶσθα δήπου καὶ σὺ κράτιστον ὄντα τῶν πατρικίων καὶ δὶς ἤδη ταύτην ἀνεπιλήπτως τετελεκότα τὴν ἀρχήν. οὗτος ὁ ἀνὴρ δικαστήριόν σοι καθίσαι καὶ λόγον ἀποδοῦναι βουλόμενος ἀπέσταλκεν ἡμᾶς, ἐμὲ τὸν ἵππαρχον ἅμα τοῖσδε τοῖς ἀνδράσι, ἄξοντας σε ἀσφαλῶς ἐπὶ τὴν ἀπολογίαν. εἰ δὲ μηδὲν ἀδικεῖν πέποιθας, ἴθι καὶ λέγε τὰ δίκαια περὶ σαυτοῦ πρὸς ἄνδρα φιλόπολιν, ὃς οὔτε διὰ τὸν κοινὸν φθόνον οὔτε δι' ἄλλην ἄδικον πρόφασιν οὐδεμίαν ἐκποδῶν ποιῆσαί σε βουλήσεται. ὁ δ' ὡς ἤκουσεν ἀναπηδᾷ τε καὶ μεγάλα ἀναβοήσας, ἄνδρες, ἔφη, δημοτικοί, βοηθεῖτέ μοι συναρπαζομένῳ διὰ τὴν πρὸς ὑμᾶς εὔνοιαν ὑπὸ τῶν δυνατῶν· οὐ γὰρ ἐπὶ δίκην [καλοῦμαι] πρὸς αὐτῶν, ἀλλ' ἐπὶ θάνατον καλοῦμαι. βοῆς δὲ γενομένης καὶ θορύβου πολλοῦ περὶ τὸ βῆμα, συγγνοὺς ὅτι πλείους εἰσὶ τῶν βοηθούντων οἱ συλλαμβάνειν μέλλοντες αὐτόν, καὶ οὐ μακρὰν ἑτέρους ὑποκαθῆσθαι ἐν ὅπλοις, καταπηδᾷ ταχέως ἀπὸ τοῦ βήματος καὶ διὰ τῆς ἀγορᾶς ἐχώρει δρόμῳ σπεύδων εἰς τὴν οἰκίαν καταφυγεῖν.

καταλαμβανόμενος δ' ὑπὸ τῶν ἱππέων εἰς ἐργαστήριον εἰστρέχει μαγειρικόν, καὶ κοπίδα τῶν κρεοκόπων ἁρπάσας παίει τὸν πρῶτον αὐτῷ προσελθόντα. ἔπειτα πολλῶν ἐπιπεσόντων ἀθρόων ἀμυνόμενος καὶ βραχὺν ἀντισχὼν χρόνον, ἀπεκόπη ὑπό τινος τὸν βραχίονα καὶ πίπτει καὶ κατακοπεὶς ὥσπερ θηρίον ἀποθνήσκει. Μαίλιος μὲν δὴ μεγάλων ὀρεχθεὶς πραγμάτων καὶ μικροῦ πάνυ δεήσας τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν κατασχεῖν, οὕτως ἀζήλου καὶ πικρᾶς καταστροφῆς ἔτυχεν. ἐξενεχθέντος δὲ εἰς τὴν ἀγορὰν τοῦ νεκροῦ καὶ γενηθέντος πᾶσι φανεροῦ, δρόμος ἦν καὶ βοὴ καὶ θόρυβος ἁπάντων τῶν κατὰ τὴν ἀγοράν, τῶν μὲν οἰκτειρόντων, τῶν δὲ ἀγανακτούντων, τῶν δὲ ὁμόσε τοῖς δεδρακόσι χωρεῖν ἐσπουδακότων. τοιαύτης δὲ ταραχῆς γενομένης μαθὼν ὁ δικτάτωρ, ὅτι διαπέπρακται τοῖς ἱππεῦσι τὸ προσταχθὲν ἔργον, κατέβαινεν ἀπὸ τῆς ἄκρας εἰς τὴν ἀγοράν, τούς τε βουλευτὰς ἐπαγόμενος ἅπαντας καὶ τοὺς ἱππεῖς περὶ ἑαυτὸν ἔχων γυμνὰ φαίνοντας ξίφη· καὶ δημηγορήσας ἐπ' ἐκκλησίας ἀπέλυσε τὸν ὄχλον. *Esc.*

III. (1) . . . . . ἔχων περὶ ἑαυτὸν ἀνθρώπους ἐξ ἁπάσης συνειλεγμένους κακίας, οὓς ἐσίτιζεν ὥσπερ θηρία κατὰ τῆς πατρίδος. εἰ μὲν οὖν ὑπήκουσέ μοι καὶ παρέσχεν ἑαυτὸν ἐν τοῖς νόμοις μένοντα, μεγίστην ἂν τοῦτ' αὐτῷ παρέσχε ῥοπὴν εἰς τὴν ἀπολογίαν, καὶ τεκμήριον οὐκ ἐλάχιστον ἦν τοῦ μηδὲν βεβουλεῦσθαι κατὰ τῆς πατρίδος· νῦν δ' ὑπὸ τῆς συνειδήσεως ἐλαυνόμενος, ὃ πάσχουσιν ἅπαντες οἱ τὰς ἀνοσίους βουλὰς κατὰ τῶν ἀναγκαιοτάτων σφίσι ποιησάμενοι, τοῦτο ἔπαθε· φυγεῖν τὸν ἔλεγχον ἔγνω, καὶ τοὺς ἥκοντας ἐπ' αὐτὸν ἱππεῖς μαγειρικῇ κοπίδι παίων ἀπήλαυνεν . . . *Ambr.*

IIII. Τῶν δὲ δημοτικῶν οἱ μὲν οὐ συμβουλεύσαντες ἐπὶ τῇ καταλύσει τῆς πολιτείας ἠγανάκτουν καὶ δι' ὀργῆς τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ ἀνδρὸς ἐλάμβανον· οἱ δὲ κοινωνήσαντες τῆς συνωμοσίας ἀφειμένοι τοῦ φόβου χαίρειν τε προσεποιοῦντο καὶ τὸ συνέδριον τῶν βουλευμάτων ἐπῄνουν· ὀλίγοι δέ τινες ἐξ αὐτῶν οἱ πονηρότατοι λογοποιεῖν ἐτόλμων ἐν ταῖς ἑξῆς ἡμέραις, ὡς ἀνηρπασμένου πρὸς τῶν δυνατῶν τοῦ Μαιλίου, καὶ διαστασιάζειν τὸν δῆμον ἐπεχείρουν· οὓς ἀφανεῖ θανάτῳ διαχρησάμενος ὁ δικτάτωρ, ἐπειδὴ κατέπαυσε τὸν θόρυβον, τὴν ἀρχὴν ἀποτίθεται.

Οἱ μὲν δὴ τὰ πιθανώτατά μοι δοκοῦντες γράφειν περὶ τῆς Μαιλίου τελευτῆς οὕτω παραδεδώκασι· λεγέσθω δὲ καὶ ὁ δοκῶν ἧττον εἶναί μοι πιθανὸς λόγος, ᾧ κέχρηνται Κίγκιος καὶ Καλπούρνιος ἐπιχώριοι συγγραφεῖς, οἵ φασιν οὔτε δικτάτορα ὑπὸ τῆς βουλῆς ἀποδειχθῆναι τὸν Κοίντιον οὔτε ἱππάρχην ὑπὸ τοῦ Κοιντίου τὸν Σερουίλιον. γενομένης δὲ μηνύσεως ὑπὸ τοῦ Μηνυκίου τοὺς παρόντας ἐν τῷ συνεδρίῳ πιστεύσαντας ἀληθῆ τὰ λεγόμενα εἶναι, καὶ γνώμην ἀποδειξαμένου τῶν πρεσβυτέρων τινὸς ἄκριτον ἦ μὴν ἀποκτεῖναι τὸν ἄνδρα παραχρῆμα πεισθέντας, [καὶ] οὕτω τὸν Σερουίλιον ἐπὶ τοῦτο τάξαι τὸ ἔργον, νέον ὄντα καὶ κατὰ χεῖρα γενναῖον. τοῦτον δέ φασι λαβόντα τὸ ξιφίδιον ὑπὸ μάλης ἐλθεῖν πρὸς τὸν Μαίλιον πορευόμενον ἐκ τῆς ἀγορᾶς, καὶ προσελθόντα εἰπεῖν, ὅτι βούλεται περὶ πράγματος ἀπορρήτου καὶ μεγάλου διαλεχθῆναι πρὸς αὐτόν. κελεύσαντος δὲ τοῦ Μαιλίου μικρὸν ἀποχωρῆσαι τοὺς ἐγγὺς αὐτῷ παρόντας, ἐπειδὴ μονωθέντα τῆς φυλακῆς ἔλαβε, γυμνώσαντα τὸ ξίφος βάψαι κατὰ τῆς σφαγῆς· τοῦτο δὲ πράξαντα

δρόμῳ χωρεῖν εἰς τὸ βουλευτήριον, ἔτι συγκαθημένων τῶν συνέδρων, ἔχοντα τὸ ξίφος ᾑμαγμένον καὶ κεκραγότα πρὸς τοὺς διώκοντας, ὅτι κελευσθεὶς ὑπὸ τῆς βουλῆς ἀνῄρηκε τὸν τύραννον. ἀκούσαντας δὲ τὸ τῆς βουλῆς ὄνομα τοὺς ὡρμηκότας παίειν τε καὶ βάλλειν αὐτὸν ἀποτραπέσθαι καὶ μηδὲν εἰς αὐτὸν παρανομῆσαι. ἐκ τούτου καὶ τὴν ἐπωνυμίαν τὸν Ἄλαν αὐτῷ τεθῆναι λέγουσιν, ὅτι τὸ ξίφος ἔχων ὑπὸ μάλης ἦλθεν ἐπὶ τὸν ἄνδρα· ἄλας γὰρ καλοῦσι Ῥωμαῖοι τὰς μάλας.

Ἀναιρεθέντος δὲ τοῦ ἀνδρὸς καθ' ἑκάτερον τρόπον, συνελθοῦσα ἡ βουλὴ τήν τε οὐσίαν αὐτοῦ εἶναι δημοσίαν ἐψηφίσατο καὶ τὴν οἰκίαν ἕως ἐδάφους κατασκαφῆναι. οὗτος ὁ τόπος ἔτι καὶ εἰς ἐμὲ ἦν ἐν πολλαῖς ταῖς πέριξ οἰκίαις μόνος ἀνειμένος ἔρημος, καλούμενος ὑπὸ Ῥωμαίων Αἰκυμήλιον· ὡς ἂν ἡμεῖς εἴποιμεν ἰσόπεδον Μήλιον, αἶκον γὰρ ὑπὸ Ῥωμαίων τὸ μηδεμίαν ἔχον ἐξοχὴν καλεῖται· τόπον οὖν τινα Αἶκον Μήλιον ἐξ ἀρχῆς κληθέντα, ὕστερον συμφθαρέντων [δὲ] ἀλλήλοις κατὰ τὴν μίαν ἐκφορὰν τῶν ὀνομάτων Αἰκυμήλιον ἐκάλεσαν. τῷ δὲ τὴν κατὰ τοῦ Μαιλίου μήνυσιν ἀποδόντι Μηνυκίῳ στάσιν ἀνδριάντος ἐψηφίσατο ἡ βουλή. *Esc. et pag.* 179, 17—21 *Ambr.*

V. (2) Τυρρηνῶν καὶ Φειδηναίων καὶ Οὐιενтανῶν πολεμούντων Ῥωμαίοις, καὶ Λάρου Τολουμνίου τοῦ βασιλέως Τυρρηνῶν πανδεινὰ ποιοῦντος κατ' αὐτῶν, χιλίαρχός τις Ῥωμαῖος, Αὖλος Κορνήλιος Κόσσος ἐπίκλησιν, ἐλαύνει τὸν ἵππον κατὰ τοῦ Τολουμνίου· καὶ ἐπειδὴ ἀγχοῦ ἐγένετο, φέρουσι κατ' ἀλλήλων τὰ δόρατα. ὁ μὲν οὖν Τολούμνιος τὸν ἵππον αὐτοῦ παίει διὰ τοῦ στήθους, ὃς ἀναχαιτίσας

ῥιπτεῖ τὸν ἐπιβάτην· ὁ δὲ Κορνήλιος διὰ θυρεοῦ τε καὶ θώρακος ἐλάσας τὴν αἰχμὴν εἰς τὰ πλευρὰ περιτρέπει τὸν Τολούμνιον ἀπὸ τοῦ ἵππου, καὶ ἔτι διανισταμένου φέρει διὰ τοῦ βουβῶνος τὸ ξίφος. ἀποκτείνας δὲ αὐτὸν καὶ τὰ σκῦλα ἀφελόμενος, οὐ μόνον τοὺς ὁμόσε χωροῦντας ἱππεῖς τε καὶ πεζοὺς ἀνέστειλεν, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν κεράτων ἀμφοτέρων ἀντέχοντας εἰς ἀθυμίαν καὶ δέος κατέστησεν. *Ambr.*

VI. (3) Δεύτερον ὑπατεύοντος Αὔλου Κορνηλίου Κόσσου καὶ Τίτου Κοιντίου αὐχμῷ μεγάλῳ κακωθεῖσα ἡ γῆ πάντων ἐσπάνισεν οὐ μόνον τῶν ὀμβρίων, ἀλλὰ καὶ τῶν ναματίων ὑδάτων· ἐκ δὲ τούτου προβάτων μὲν καὶ ὑποζυγίων καὶ βοῶν ἐπίλειψις παντελὴς ἐγένετο· εἰς δὲ τοὺς ἀνθρώπους νόσοι κατέσκηψαν πολλαὶ μὲν καὶ ἄλλαι, μάλιστα δὲ ἡ ψωρώδης καλουμένη, δεινὰς ὀδύνας παρέχουσα τοῖς χρωσὶ κατὰ τοὺς ὀδαξησμούς, καὶ πρὸς τὰς ἑλκώσεις ἔτι μᾶλλον ἀγριαινομένη· πάθος ἐλεεινὸν ἐν τοῖς πάνυ καὶ τοῦ ταχίστου τῶν ὀλέθρων αἴτιον. *Ambr.*

(4) Οὐκ ἐδόκει τοῖς προεστηκόσι τοῦ συνεδρίου βαθεῖαν εἰρήνην καὶ πολυχρόνιον ἄγειν σχολήν, ἐνθυμουμένοις ὅτι ῥᾳθυμία καὶ τρυφὴ συνεισπορεύεται ταῖς πόλεσι μετὰ τῆς εἰρήνης, καὶ ἅμα τὰς πολιτικὰς ὀρρωδοῦσι ταραχάς. καὶ αὗται γὰρ ἅμα τῷ καταλυθῆναι τοὺς ὑπερορίους πολέμους χαλεπαὶ καὶ συνεχεῖς ἐξ ἁπάσης προφάσεως ἀνίσταντο.

Κρεῖττον ταῖς φιλανθρωπίαις περιεῖναι τῶν ἐχθρῶν ἢ ταῖς τιμωρίαις, δι' ἅς, κεἰ μηδὲν ἕτερον, αἵ γέ τοι παρὰ τῶν θεῶν ἐλπίδες ἡδίους αὐτοῖς ὑπάρχουσιν. *Ambr.*

(5) Ὡς ἔμαθε τοὺς πολεμίους ἐκ τῶν κατόπιν προσιόντας, ἐπιστρέφειν μὲν ὀπίσω περιεχόμενος

ὑπὸ τῶν πολεμίων πανταχόθεν ἀπέγνω, ἐνθυμούμενος ὅτι κινδυνεύσουσιν ἅπαντες οὐθὲν ἀποδειξάμενοι γενναῖον ἔργον αἴσχιστα διαφθαρῆναι, ὀλίγοι τε πρὸς πολλοὺς μαχόμενοι καὶ τεθωρακισμένοι πρὸς ἐλαφρούς. ἰδὼν δὲ ὄχθον τινὰ ὑψηλὸν ἐπιεικῶς, ὃς ἦν αὐτῷ οὐ πρόσω, τοῦτον ἔγνω καταλαβέσθαι. *Ambr.*

(6) Ἀγρίππας Μενήνιος καὶ Πόπλιος Λουκρήτιος καὶ Σερούιος Ναύτιος, χιλίαρχοι τιμηθέντες, ἐπίθεσίν τινα κατὰ τῆς πόλεως γενομένην ὑπὸ δούλων ἐφώρασαν. ἔμελλον δὲ οἱ μετέχοντες τῆς συνωμοσίας πῦρ ἐμβαλόντες ταῖς οἰκίαις κατὰ πολλοὺς ἅμα τόπους νύκτωρ, ὁπότε μάθοιεν ἐπὶ τὴν τῶν καιομένων βοηθείαν ὡρμηκότας ἅπαντας, τό τε Καπιτώλιον καὶ τοὺς ἄλλους ἐρυμνοὺς καταλαμβάνεσθαι τόπους, ἐγκρατεῖς δὲ γενόμενοι τῶν καρτερῶν τῆς πόλεως, ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν τοὺς ἄλλους δούλους παρακαλεῖν, καὶ σὺν ἐκείνοις ἀποκτείναντες τοὺς δεσπότας τὰς τῶν πεφονευμένων γυναῖκάς τε καὶ κτήσεις παραλαμβάνειν. τῆς δὲ πράξεως περιφανοῦς γενομένης, συλληφθέντες οἱ πρῶτοι συνθέντες τὴν ἐπιβουλὴν καὶ μαστιγωθέντες ἐπὶ τοὺς σταυροὺς ἀπήχθησαν· τῶν δὲ μηνυσάντων αὐτοὺς ὄντων δυεῖν ἐλευθερίαν τε καὶ δραχμὰς ⟨χιλίας⟩ ἑκάτερος ἔλαβεν ἐκ τοῦ δημοσίου. *Ambr.*

VII. (7) Ἔσπευδε τὸν πόλεμον συντελέσαι ἐν ὀλίγαις ἡμέραις ὁ Ῥωμαίων χιλίαρχος, ὡς δὴ ῥᾴδιόν τι πρᾶγμα καὶ κατὰ χειρὸς αὐτῷ γενησόμενον, ὑποχειρίους ποιήσασθαι μιᾷ μάχῃ τοὺς πολεμίους. τῷ δὲ ἡγεμόνι τῶν πολεμίων ἐνθυμουμένῳ τό τε ἐμπειροπόλεμον τῶν Ῥωμαίων καὶ τὸ ἐν τοῖς κινδύνοις καρτερικόν, μάχην μὲν ἐκ παρατάξεως ἴσην καὶ φανερὰν ποιεῖσθαι πρὸς αὐτοὺς οὐκ ἐδόκει· διαστρατηγεῖν δὲ

τὸν πόλεμον ἀπάταις τισὶ καὶ δόλοις. καὶ παρατηρεῖν, εἴ τι πλεονέκτημα καθ' ἑαυτῶν ἐκεῖνοι παρέξουσιν. *Ambr.*

Τραυματίας καὶ παρασχεδὸν ἐλθὼν ἀποθανεῖν. *Ambr.*

VIII. (8) Ἐν Ῥώμῃ χειμῶνος γενομένου βιαίου ἔνθα ἡ ἐλαχίστη χιὼν κατηνέχθη οὐκ ἐλάττων ἦν ἑπτὰ ποδῶν τὸ βάθος. καὶ συνέπεσεν ἀνθρώπους τε ὑπὸ τοῦ νιφετοῦ διαφθαρῆναί τινας καὶ πρόβατα πολλὰ καὶ τῶν ἄλλων κτηνῶν καὶ ὑποζυγίων μοῖραν οὐκ ὀλίγην, τὰ μὲν ὑπὸ τοῦ κρυμοῦ σφακελίσαντα, τὰ δὲ νομῆς τῆς συνήθους ἀπορίᾳ. δένδρων τε καρποφόρων, ὅσα μὴ πέφυκεν ὑπερβολὰς νιφετῶν ὑπομένειν, τὰ μὲν εἰς τέλος ἐξηράνθη, τὰ δὲ ἐπικαέντα τοὺς βλαστοὺς ἄκαρπα ἐπὶ πολλοὺς χρόνους ἐγένετο. ἐλύθησάν τε καὶ τῶν οἰκιῶν συχναί, καί τινες καὶ περιετράπησαν, μάλιστα δὲ ὅσαι ἐκ τῶν λίθων κατὰ τὴν διάλυσίν τε καὶ ἀπότηξιν τῆς χιόνος. τοῦτο τὸ πάθος οὔτε πρότερόν ποτε γενόμενον ἐν ἱστορίας γραφῇ περὶ ταῦτα τὰ χωρία παρειλήφαμεν, οὔθ' ὕστερον ἕως τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου, μετρίῳ γέ τινι βορειότερα τοῦ μέσου, κατὰ τὸν ὑπὲρ Ἀθηνῶν γραφόμενον δι' Ἑλλησπόντου παράλληλον. τότε δὲ πρῶτον καὶ μόνον ἐξέβη τῆς εἰωθυίας κράσεως ἡ τοῦ περιέχοντος τήνδε τὴν γῆν φύσις. *Ambr.*

VIIII. (9) Ἑορτὰς ἦγον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς καλουμένας τῇ ἐπιχωρίῳ γλώττῃ στρωμνάς, ὑπὸ τῶν Σιβυλλείων κελευσθέντες χρησμῶν. νόσος γάρ τις λοιμώδης γενομένη θεόπεμπτός τε καὶ ὑπὸ τέχνης ἀνθρωπίνης ἀνίατος εἰς ζήτησιν αὐτοὺς ἤγαγε τῶν χρησμῶν. ἐκόσμησάν τε στρωμνὰς τρεῖς, ὡς ἐκέλευον οἱ χρησμοί, μίαν μὲν Ἀπόλλωνι καὶ Λητοῖ,

ἑτέραν δὲ Ἡρακλεῖ καὶ Ἀρτέμιδι, τρίτην δὲ Ἑρμῇ καὶ Ποσειδῶνι· καὶ διετέλουν ἐφ' ἡμέρας ἑπτὰ δημοσίᾳ τε καταθύοντες καὶ ἰδίᾳ κατ' οἰκεῖαν δύναμιν ἅπαντες τοῖς θεοῖς ἀπαρχόμενοι, ἑστιάσεις τε λαμπροτάτας ἐπιτελοῦντες, καὶ ξένων τοὺς παρεπιδημοῦντας ὑποδεχόμενοι. (10) Πείσων δὲ ὁ τιμητικὸς ἐν ταῖς ἐνιαυσίοις ἀναγραφαῖς καὶ ταῦτ' ἔτι προστίθησιν· ὅτι λελυμένων μὲν τῶν θεραπόντων ὅσους πρότερον ἐν τοῖς δεσμοῖς εἶχον οἱ δεσπόται, πληθυούσης ὄχλου ξενικοῦ τῆς πόλεως, ἀναπεπταμένων τῶν οἰκιῶν διὰ ἡμέρας τε καὶ νυκτός, καὶ δίχα κωλύσεως εἰσιόντων εἰς αὐτὰς τῶν βουλομένων, οὔτε χρῆμα οὐδὲν ἀπολωλεκέναι τις ᾐτιάσατο οὔτε ἠδικῆσθαί τινα ὑπ' οὐδενός, καίτοι πολλὰ φέρειν εἰωθότων πλημμελῆ καὶ παράνομα τῶν ἑορταίων καιρῶν διὰ τὰς μέθας. *Ambr.*

X (11) Οὐιεντανοὺς πολιορκούντων Ῥωμαίων περὶ τὴν ἐπιτολὴν τοῦ κυνός, ὅτε μάλιστα λίμναι τε ἐπιλείπουσι καὶ ποταμοὶ πάντες, ὅ τι μὴ μόνος ὁ Αἰγύπτιος Νεῖλος, λίμνη τις, ἀπέχουσα τῆς Ῥώμης οὐ μεῖον ρκ' σταδίων ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς καλουμένοις ὄρεσι, παρ' ᾗ τὸ ἀρχαῖον ἡ τῶν Ῥωμαίων μητρόπολις ᾠκεῖτο, οὔτε ὑετῶν γενομένων οὔτε νιφετῶν οὔτ' ἄλλης τινὸς αἰτίας ἀνθρώποις φανερᾶς, τοσαύτην ἔλαβεν ἐκ τῶν ἐν αὐτῇ ναμάτων ἐπίδοσιν, ὥστε πολλὴν μὲν ἐπικλύσαι τῆς παρορείου, πολλὰς δὲ οἰκήσεις γεωργικὰς καταβαλεῖν, τελευτῶσαν δὲ καὶ τὸν μεταξὺ τῶν ὀρῶν αὐλῶνα διασπάσαι καὶ ποταμὸν ἐκχέαι κατὰ τῶν ὑποκειμένων πεδίων ἐξαίσιον. (12) Τοῦτο μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι, κατ' ἀρχὰς μέν, ὡς δαιμονίου τινὸς μηνίοντος τῇ πόλει, θυσίαις ἐξιλάσασθαι τοὺς κατέχοντας τὸν τόπον θεοὺς καὶ

δαίμονας ἐψηφίσαντο, καὶ τοὺς ἐπιχωρίους μάντεις ἀνέκρινον, εἴ τι λέγειν ἔχουσιν· ἐπεὶ δ' οὔτε ἡ λίμνη τὴν ἑαυτῆς τάξιν ἀπελάμβανεν, οὔτε οἱ μάντεις ἀκριβὲς οὐδὲν ἔλεγον, ἀλλὰ τῷ θεῷ χρῆσθαι παρῄνουν, ἐπὶ τὸ Δελφικὸν μαντεῖον ἀπέστειλαν θεοπρόπους. Ambr.

XI (13) *Ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ Οὐιεντανῶν τις ἔμπειρος τῆς ἐπιχωρίου μαντικῆς διὰ προγόνων ἐτύγχανε φυλακὴν ἔχων τοῦ τείχους, ἐγεγόνει δέ τις αὐτῷ τῶν ἀπὸ τῆς Ῥώμης λοχαγῶν ἐκ παλαιοῦ γνώριμος. οὗτος ὁ λοχαγὸς ἐγγὺς τοῦ τείχους ποτὲ γενόμενος καὶ τοὺς συνήθεις ἀσπασμοὺς τῷ ἀνδρὶ ἀποδούς, οἰκτείρειν αὐτὸν ἔφη τῆς καταληψομένης ἅμα τοῖς ἄλλοις συμφορᾶς, ἐὰν ἡ πόλις ἁλῷ. καὶ ὁ Τυρρηνὸς ἀκηκοὼς τὴν ὑπέρχυσιν τῆς Ἀλβανίδος λίμνης, καὶ τὰ παλαιὰ περὶ αὐτῆς προειδὼς θέσφατα, ἀναγελάσας· οἷον, ἔφησεν, ἐστὶν ἀγαθὸν τὸ προειδέναι τὰ μέλλοντα. ὑμεῖς δὲ κατὰ τὴν ἀγνωσίαν τῶν ἀποβησομένων πόλεμον ἀτελῆ καὶ πόνους ἀνηνύτους ἀντλεῖτε τὴν Οὐιενταναῶν πόλιν ἀναστήσειν οἰόμενοι. εἰ δέ τις ὑμῖν ἐδήλωσεν, ὅτι τῇ πόλει τῇδε τότε πέπρωται ἁλῶναι, ὅταν ἡ πρὸς Ἀλβανῷ λίμνη σπανίσασα τῶν αὐθιγενῶν ναμάτων μηκέτι μίσγηται θαλάττῃ, ἐπαύσασθε ἂν αὐτοί τε δαπανώμενοι καὶ ἡμᾶς ἐνοχλοῦντες. ταῦτα ὁ Ῥωμαῖος μαθών, πολὺς ἐν τῷ σκοπεῖν καθ' ἑαυτὸν γενόμενος, τότε μὲν ἀπῄει,* (14) *τῇ δ' ἑξῆς προειπὼν τοῖς χιλιάρχοις ἃ διενοεῖτο παρῆν ἐπὶ τὸν αὐτὸν τόπον ἄνοπλος, ὥστε μηδεμίαν ὑποψίαν ἐπιβουλῆς τὸν Τυρρηνὸν ὑπὲρ αὐτοῦ λαβεῖν. χρησάμενος δὲ τοῖς συνήθεσιν ἀσπασμοῖς, πρῶτον μὲν ὑπὲρ τῆς κατεχούσης τὸ Ῥωμαικὸν στρατόπεδον ἀμηχανίας διελέγετο ἄλλ', ἐφ' οἷς*

ᾐσθήσεσθαι τὸν Τυρρηνὸν ὑπελάμβανεν, ἔπειτα ἐξηγητὴν αὐτῷ γενέσθαι ἠξίου σημείων τινῶν καὶ τεράτων νεωστὶ τοῖς χιλιάρχοις γεγονότων. πείθεται τοῖς λόγοις ὁ μάντις οὐδεμίαν δεδοικὼς ἐξαπάτην, καὶ τοὺς συνόντας αὐτῷ μεταστῆναι κελεύσας αὐτὸς ἠκολούθει μόνος τῷ λοχαγῷ. ὁ δὲ Ῥωμαῖος ὑπαγόμενος αὐτὸν ἀπωτέρω τοῦ τείχους διὰ τῶν πρὸς ἀπάτην μηχανηθέντων λόγων, ὡς ἐγγὺς ἐγένετο τοῦ περιτειχίσματος, περιλαβὼν ταῖς χερσὶν ἀμφοτέραις μέσον αἴρεταί τε καὶ πρὸς τὸ Ῥωμαικὸν ἀποφέρεται στρατόπεδον. *Ambr.*

XII. (15) Τοῦτον τὸν ἄνδρα οἱ χιλίαρχοι λόγοις τε θεραπεύοντες καὶ βασάνων ἀπειλαῖς δεδιττόμενοι ἅπαντα παρεσκεύασαν ἐξειπεῖν, ἃ περὶ τῆς Ἀλβανίδος λίμνης ἀπέκρυπτεν· εἶτα καὶ πρὸς τὴν βουλὴν αὐτὸν ἀναπέμπουσι. τοῖς δ' ἐκ τοῦ συνεδρίου οὐχ ἡ ὅμοια παρέστη δόξα· ἀλλὰ τοῖς μὲν ἐδόκει πανοῦργός τις εἶναι καὶ γόης ὁ Τυρρηνός, καὶ καταψεύδεσθαι τοῦ δαιμονίου τὰ περὶ τὸν χρησμόν· τοῖς δ' ἀπὸ πάσης ἀληθείας εἰρηκέναι. (16) Ἐν τοιαύτῃ δ' ἀμηχανίᾳ τῆς βουλῆς ὑπαρχούσης παρῆσαν οἱ προαποσταλέντες εἰς Δελφοὺς θεόπροποι, χρησμοὺς κομίζοντες τοῖς ὑπὸ τοῦ Τυρρηνοῦ πρότερον ἀπηγγελμένοις συνᾴδοντας· ὅτι θεοὶ καὶ δαίμονες οἱ λαχόντες τὴν Οὐιενταμῶν πόλιν τοσοῦτον αὐτοῖς ἐγγυῶνται χρόνον ἀσάλευτον φυλάξαι τὴν ἐκ προγόνων παραδοθεῖσαν εὐδαιμονίαν, ὅσον ἂν διαμένωσιν αἱ πηγαὶ τῆς ἐν Ἀλβανῷ λίμνης ὑπερχεόμεναι καὶ μέχρι θαλάττης ἀπορρέουσαι· ὅταν δ' ἐκεῖναι φύσιν τε τὴν ἑαυτῶν καὶ ὁδοὺς τὰς ἀρχαίας ἐκλιποῦσαι καθ' ἑτέρας ἐκτραπῶσιν, ὡς μηκέτι μίσγεσθαι τῇ θαλάττῃ, καὶ τὴν πόλιν αὐτῶν ἀνάστατον ἔσεσθαι· τοῦτο δ'

οὐκ εἰς μακρὰν ὑπὸ Ῥωμαίων γενήσεσθαι, ἐὰν ὀρύγμασι καθ' ἕτερα χωρία γενομένοις ἐκτρέψωσι τὴν πλημμύραν τῶν ὑδάτων εἰς τὰ πρόσω τῆς θαλάττης πεδία. ταῦτα μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι εὐθὺς ἐπέστησαν τοῖς ἔργοις τοὺς χειροτέχνας. *Ambr.*

XIII. (17) Ὡς δὲ ταῦτ' ἤκουσαν Οὐιεντανοὶ παρ' αἰχμαλώτου τινός, ἐπικηρυκεύεσθαι πρὸς τοὺς πολιορκοῦντας ἤθελον περὶ καταλύσεως τοῦ πολέμου, πρὶν ἁλῶναι κατὰ κράτος τὴν πόλιν· καὶ ἀποδείκνυνται πρέσβεις οἱ πρεσβύτατοι. ἀποψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς τῶν Ῥωμαίων τὰς διαλλαγάς, οἱ μὲν ἄλλοι πρέσβεις ἀπῄεσαν ἐκ τοῦ βουλευτηρίου σιωπῇ, ὁ δὲ ἐπιφανέστατος ἐξ αὐτῶν καὶ κατὰ τὴν μαντικὴν ἐμπειρίαν δοκιμώτατος, ἐπιστὰς ταῖς θύραις καὶ περιβλέψας εἰς ἅπαντας τοὺς παρόντας ἐν τῷ συνεδρίῳ· Καλόν, ἔφησεν, ὦ Ῥωμαῖοι, δόγμα ἐξενηνόχατε καὶ μεγαλοπρεπές, οἱ τὴν ἡγεμονίαν ἀξιοῦντες ἔχειν τῶν περιοίκων δι' ἀρετήν, πόλιν οὔτε μικρὰν οὔτε ἄσημον ἀποτιθεμένην τὰ ὅπλα καὶ παραδιδοῦσαν ὑμῖν ἑαυτὴν οὐκ ἀξιοῦντες ὑπήκοον ἔχειν, ἀλλὰ πρόρριζον ἀνελεῖν βουλόμενοι, οὔτε τὸν ἐκ τοῦ θείου δείσαντες χόλον, οὔτε τὴν παρ' ἀνθρώπων ἐντραπέντες νέμεσιν. ἀνθ' ὧν ὑμῖν δίκη τιμωρὸς ἥξει παρὰ θεῶν εἰς τὰ ὅμοια ζημιοῦσα· Οὐιεντανοὺς γὰρ ἀφελόμενοι τὴν πατρίδα μετ' οὐ πολὺ τὴν ἑαυτῶν ἀποβαλεῖτε. *Ambr.*

(18) Μετὰ βραχὺ δὲ ἁλισκομένης τῆς πόλεως οἱ μὲν ὁμόσε τοῖς πολεμίοις χωροῦντες ἄνδρες ἀγαθοὶ γενόμενοι καὶ πολλοὺς ἀποκτείναντες κατεκόπησαν, οἱ δ' αὐτοχειρίᾳ σφάξαντες αὑτοὺς διεφθάρησαν· ὅσοις δὲ δι' ἀνανδρίαν τε καὶ ταπεινότητα ψυχῆς πάντ' ἐφαίνετο τοῦ τεθνάναι τὰ δεινὰ

μετριώτερα, ῥίψαντες τὰ ὅπλα παρεδίδοσαν τοῖς κεκρατηκόσιν ἑαυτούς. Ambr.

XIIII. (19) *Ὁ δὲ δικτάτωρ Κάμιλλος, οὗ στρατηγίᾳ ἡ πόλις ἥλω, ἐπὶ μετεώρου τινὸς ἑστὼς ἅμα τοῖς ἐπιφανεστάτοις Ῥωμαίων, ὅθεν ἅπασα ἡ πόλις ἦν καταφανής, πρῶτον μὲν ἐμακάρισεν ἑαυτὸν τῆς παρούσης εὐτυχίας, ὅτι καθελεῖν αὐτῷ μεγάλην καὶ εὐδαίμονα πόλιν ἐξεγένετο δίχα πόνου, ἣ Τυρρηνίας μὲν ἀνθούσης τότε καὶ πλεῖστον τῶν κατοικούντων τὴν Ἰταλίαν ἐθνῶν δυναμένης οὐκ ἐλαχίστη μοῖρα ἦν, Ῥωμαίοις δὲ περὶ τῆς ἡγεμονίας διαφερομένη καὶ πολλοὺς πολέμους ὑπομείνασα ἄχρι δεκάτης γενεᾶς διετέλεσεν, ἐξ οὗ δ' ἤρξατο πολεμεῖν καὶ πολιορκεῖσθαι συνεχῶς, δέκα διήνεγκε τὴν πολιορκίαν ἔτη πάσης πειραθεῖσα τύχης.* (20) *Ἔπειτ' ἐνθυμηθείς, ὡς ἐπὶ μικρᾶς αἰωρεῖται ῥοπῆς ἡ τῶν ἀνθρώπων εὐδαιμονία, καὶ βέβαιον οὐδὲν διαμένει τῶν ἀγαθῶν, διατείνας εἰς οὐρανὸν τὰς χεῖρας εὔξατο τῷ τε Διὶ καὶ τοῖς ἄλλοις θεοῖς, μάλιστα μὲν ἀνεπίφθονον ἑαυτῷ τε καὶ τῇ πατρίδι γίνεσθαι τὴν παροῦσαν εὐδαιμονίαν· εἰ δέ τις μέλλοι κοινῇ συμφορὰ τὴν Ῥωμαίων πόλιν ἢ τὸν αὐτοῦ βίον καταλαμβάνειν ἀντίπαλος τῶν παρόντων ἀγαθῶν, ἐλαχίστην γενέσθαι ταύτην καὶ μετριωτάτην.*

XV. (21) *Ἦν δὲ ἡ Οὐιενταν ῶν πόλις οὐθὲν ὑποδεεστέρα τῆς Ῥώμης ἐνοικεῖσθαι, γῆν τε πολλὴν καὶ πολύκαρπον ἔχουσα, τὴν μὲν ὀρεινήν, τὴν δὲ πεδιάδα, καὶ τὸν περικείμενον ἀέρα καθαρώτατον καὶ πρὸς ὑγιείαν ἀνθρώποις ἄριστον, οὔτε ἕλους πλησίον ὄντος, ὅθεν ἕλκονται βαρεῖς ἀτμοὶ καὶ δυσώδεις, οὔτε ποταμοῦ τινος ψυχρὰς ἕωθεν ἀνιέντος αὔρας, ὑδάτων τε οὐ σπανίων ὄντων οὐδ' ἐπακτῶν, ἀλλ'*

αὐθιγενῶν καὶ πλουσίων καὶ πίνεσθαι κρατίστων. *Ambr.*

XVI. (22) Αἰνεῖαν λέγουσι τὸν ἐξ Ἀγχίσου καὶ Ἀφροδίτης, ὅτε κατέσχεν εἰς Ἰταλίαν, θῦσαι προαιρούμενον ὅτῳ δή τινι θεῶν, μετὰ τὴν εὐχὴν μέλλοντα τοῦ παρεσκευασμένου πρὸς τὴν θυσίαν ἱερείου κατάρχεσθαι, τῶν Ἀχαιῶν ἰδεῖν τινα πρόσωθεν ἐρχόμενον, εἴτε Ὀδυσσέα, ὅτε τῷ περὶ τὸν Ἄορνον μαντείῳ χρῆσθαι ἔμελλεν, εἴτε Διομήδην, ἡνίκα Δαύνῳ σύμμαχος ἀφίκετο· ἀχθόμενον δὲ τῷ συγκυρήματι, καὶ πολεμίαν ὄψιν ἐφ᾽ ἱεροῖς φανεῖσαν ὡς πονηρὸν οἰωνὸν ἀφοσιώσασθαι βουλόμενον, ἐγκαλύψασθαί τε καὶ στραφῆναι· μετὰ δὲ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολεμίου χερνιψάμενον αὖθις ἐπιτελέσαι τὴν θυσίαν. γενομένων δὲ τῶν ἱερῶν κρειττόνων ἡσθῆναί τε τῷ συγκυρήματι καὶ φυλάττειν ἐπὶ πάσης εὐχῆς τὸ αὐτὸ ἔθος, τούς τε ἀπ᾽ ἐκείνου γενομένους ὡς ἕν τι τῶν περὶ τὰς ἱερουργίας νομίμων καὶ τοῦτο διατηρεῖν. (23) Ἑπόμενος δὴ τοῖς πατρικοῖς ὁ Κάμιλλος νόμοις, ἐπειδὴ τὴν εὐχὴν ἐποιήσατο καὶ κατὰ τῆς κεφαλῆς εἵλκυσε τὸ ἱμάτιον, ἐβούλετο μὲν στραφῆναι· τῆς δὲ βάσεως ὑπενεχθείσης οὐ δυνηθεὶς ἀναλαβεῖν αὐτὸν ὕπτιος ἐπὶ τὴν γῆν φέρεται. τοῦτον τὸν οἰωνὸν οὔτε μαντείας οὔτ᾽ ἐνδοιασμοῦ δεόμενον, ἀλλὰ καὶ τῷ φαυλοτάτῳ ῥᾴδιον ὄντα συμβαλεῖν, ὅτι πεσεῖν αὐτῷ πᾶσα ἀνάγκη πτῶμα ἄσχημον, οὔτε φυλακῆς οὔτε ἀφοσιώσεως ἄξιον ὑπέλαβεν, ἀλλ᾽ ἐπὶ τὸ κεχαρισμένον ἑαυτῷ μετήνεγκεν, ὡς ὑπακηκοότων αὐτοῦ ταῖς εὐχαῖς τῶν θεῶν καὶ τὸ κακὸν ἐλάχιστον παρεσκευακότων γενέσθαι. *Ambr.*

EXCERPTA

EX

LIBRO XIII.

I. (1) *Καμίλλου τὴν Φαλερίων πόλιν πολιορκοῦντος, Φαλίσκων τις εἴτ' ἀπεγνωκὼς τὴν πόλιν, εἴτε κέρδη θηρώμενος ἴδια, παῖδας ἐκ τῶν ἐπιφανεστάτων οἴκων παρακρουσάμενος· ἦν δὲ διδάσκαλος γραμμάτων· ἐξήγαγεν ἐκ τῆς πόλεως, ὡς περιπατήσοντάς τε πρὸ τοῦ τείχους καὶ τὸ Ῥωμαικὸν στρατόπεδον θεασομένους. ὑπαγόμενος δὲ κατὰ μικρὸν αὐτοὺς προσωτέρω τῆς πόλεως ἐπὶ φυλακτήριον Ῥωμαικὸν ἄγει, καὶ τοῖς ἐκδραμοῦσι παραδίδωσι· ὑφ' ὧν ἀχθεὶς ἐπὶ τὸν Κάμιλλον ἔφη· βεβουλεῦσθαι μὲν ἔτι πάλαι τὴν πόλιν ὑπὸ Ῥωμαίων ποιῆσαι, οὐδενὸς δὲ κύριος ὢν οὔτε ἄκρας οὔτε πυλῶν οὔθ' ὅπλων τοῦτον ἐξευρηκέναι τὸν τρόπον, ὑποχειρίους ποιῆσαι τοὺς υἱεῖς τῶν εὐγενεστάτων, ἄφυκτον ἀνάγκην ὑπολαβὼν τοὺς πατέρας αὐτῶν καταλήψεσθαι τῆς σωτηρίας τῶν τέκνων περιεχομένους τάχιον παραδοῦναι Ῥωμαίοις τὴν πόλιν. ὁ μὲν δὴ ταῦτ' ἔλεγε, πολλὰς ἐλπίδας ἔχων θαυμαστάς τινας ἐξοίσεσθαι μισθοὺς τῆς προδοσίας. Ambr.*

II. (2) *Ὁ δὲ Κάμιλλος εἰς φυλακὴν παραδιδοὺς τὸν γραμματιστὴν καὶ τοὺς παῖδας, ἐπιστέλλει τῇ βουλῇ διὰ γραμμάτων τὰ γενόμενα, καὶ τί χρὴ ποιεῖν*

ἤρετο. ἐπιτρέψαντος δ' αὐτῷ τοῦ συνεδρίου πράττειν ὅ τι ἂν αὐτῷ φαίνηται κράτιστον, προαγαγὼν ἐκ τοῦ στρατοπέδου τὸν γραμματιστὴν ἅμα τοῖς παισί, καὶ οὐ μακρὰν ἀπὸ τῶν πυλῶν τὸ στρατηγικὸν βῆμα προστάξας τεθῆναι, πολλοῦ συνδραμόντος ὄχλου, τοῦ μὲν ἐπὶ τὰ τείχη, τοῦ δ' ἐπὶ τὰς πύλας, πρῶτον μὲν ἐδήλωσε τοῖς Φαλίσκοις οἷα ὁ γραμματιστὴς εἰς αὐτοὺς ἐτόλμησε παρανομεῖν· ἔπειτα περικαταρρῆξαι τὴν ἐσθῆτα τοῦ ἀνδρὸς ἐκέλευσε τοῖς ὑπηρέταις, καὶ ξαίνειν τὸ σῶμα μάστιξι πάνυ πολλαῖς. ὡς δὲ ταύτης ἅλις εἶχε τῆς τιμωρίας, ῥάβδους τοῖς παισὶν ἀναδοὺς ἀπάγειν αὐτὸν ἐκέλευσεν εἰς τὴν πόλιν δεδεμένον τὼ χεῖρε ὀπίσω, παίοντάς τε καὶ πάντα τρόπον αἰκιζομένους. ἀνακομισάμενοι δὲ τοὺς παῖδας οἱ Φαλίσκοι καὶ τὸν γραμματιστὴν ἀξίως τῆς κακῆς διανοίας τιμωρησάμενοι παρέδοσαν τῷ Καμίλλῳ τὴν πόλιν. *Ambr.*

III. (3) Ὁ αὐτὸς Κάμιλλος ἐπὶ τὴν Οὐιενταvῶν πόλιν στρατεύων ηὔξατο τῇ βασιλείᾳ Ἥρᾳ τῇ ἐν Οὐιενταvοῖς, ἐὰν κρατήσῃ τῆς πόλεως τό τε ξόανον αὐτῆς ἐν Ῥώμῃ καθιδρύσειν καὶ σεβασμοὺς αὐτῇ καταστήσεσθαι πολυτελεῖς. ἁλούσης δὲ τῆς πόλεως, ἀπέστειλε τῶν ἱππέων τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀρουμένους ἐκ τῶν βάθρων τὸ ἕδος· ὡς δὲ παρῆλθον οἱ πεμφθέντες εἰς τὸν νεών, καί τις ἐξ αὐτῶν εἴτε μετὰ παιδιᾶς καὶ γέλωτος εἴτε οἰωνοῦ δεόμενος, εἰ βούλοιτο μετελθεῖν εἰς Ῥώμην ἡ θεός, ἤρετο, φωνῇ γεγωνῷ τὸ ξόανον ἐφθέγξατο, ὅτι βούλεται. τοῦτο καὶ δὶς γέγονεν· ἀπιστοῦντες γὰρ οἱ νεανίσκοι, εἰ τὸ ξόανον ἦν τὸ φθεγξάμενον, πάλιν ἤροντο τὸ αὐτὸ καὶ τὴν αὐτὴν φωνὴν ἤκουσαν. *Ambr.*

IIII. (4) Ἐν δὲ τῇ ἀρχῇ τῶν μετὰ τὸν Κάμιλλον

ὑπάτων νόσος εἰς Ῥώμην κατέσκηψε λοιμική, τὴν ἀρχὴν ἀπό τε ἀνομβρίας καὶ αὐχμῶν λαβοῦσα ἰσχυρῶν· ἀφ' ὧν κακωθεῖσα ἥ τε δενδρῖτις καὶ ἡ σιτοφόρος ὀλίγους μὲν ἀνθρώποις καρποὺς ἐξήνεγκε καὶ νοσερούς, ὀλίγην δὲ καὶ πονηρὰν βοσκήμασι νομήν. προβάτων μὲν οὖν καὶ τῶν ἄλλων ὑποζυγίων ἀναρίθμητόν τι διεφθάρη πλῆθος, οὐ χιλοῦ σπανισάμενον μόνον ἀλλὰ καὶ ποτοῦ, τοσαύτη τῶν τε ποταμίων καὶ τῶν ἄλλων ναμάτων ἐπίλειψις ἐγένετο, * * * ἡνίκα μάλιστα κάμνει πάντα δίψει τὰ βοτά. ἄνθρωποι δὲ ὀλίγοι μέν τινες διεφθάρησαν, ἃς οὔπω πρότερον ἐπείρασαν προσενεγκάμενοι τροφάς· οἱ δὲ λοιποὶ μικροῦ δεῖν πάντες εἰς νόσους δεινὰς κατέπεσον, ἀρχομένας μὲν ἀπὸ μικρῶν ἐξανθημάτων, ἃ περὶ τοὺς ἔξωθεν χρῶτας ἀνίστατο, κατασκηπτούσας δ' εἰς ἕλκη μεγάλα φαγεδαίναις ὅμοια, πονηρὰν μὲν ὄψιν, δεινὴν δὲ ἀλγηδόνα παρέχοντα. ἦν τε οὐθὲν ἴαμα τῆς περιωδυνίας τοῖς κάμνουσιν, ὅ τι μὴ κνησμοὶ καὶ σπαραγμοὶ συνεχεῖς λωβώμενοι τοῖς χρωσὶ μέχρι γυμνώσεως ὀστέων. *Ambr.*

V. (5) Μετ' οὐ πολὺ δὲ οἱ δήμαρχοι Καμίλλῳ φθονήσαντες ἐκκλησίαν κατ' αὐτοῦ συνήγαγον, καὶ ἐζημίωσαν αὐτὸν δέκα μυριάσιν ἀσσαρίων, οὐκ ἀγνοοῦντες ὅτι πολλοστόν τι μέρος ὁ βίος ἦν αὐτῷ τοῦ κατακρίματος, ἀλλ' ἵν' ἀπαχθεὶς εἰς τὸ δεσμωτήριον ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀσχημονήσῃ ὁ τοὺς ἐπιφανεστάτους κατορθώσας πολέμους. τὸ μὲν οὖν ἀργύριον οἱ πελάται τε καὶ συγγενεῖς αὐτοῦ συνεισενέγκαντες ἐκ τῶν ἰδίων χρημάτων ἀπέδοσαν, ὥστε μηδεμιᾶς πειραθῆναι ὕβρεως· ὁ δ' ἀνὴρ ἀφόρητον ἡγούμενος τὸν προπηλακισμὸν ἐκχωρεῖν ἔγνω τῆς πόλεως. (6) Γενόμενος δὲ πλησίον τῶν πυλῶν καὶ τοὺς παρόντας

ἀσπασάμενος ὀλοφυρομένους καὶ δακρύοντας, οἵου στερέσθαι μέλλοιεν ἀνδρός, πολλὰ κατὰ τῶν παρειῶν ἀφεὶς δάκρυα καὶ τὴν κατασχοῦσαν αὐτὸν ἀσχημοσύνην ἀνακλαυσάμενος, εἶπεν· ὦ θεοὶ καὶ δαίμονες, ἔφοροι τῶν ἀνθρωπίνων ἔργων, ὑμᾶς ἀξιῶ δικαστὰς γενέσθαι μοι τῶν τε πρὸς τὴν πατρίδα πολιτευμάτων καὶ παντὸς τοῦ παρεληλυθότος βίου· ἔπειτ', ἐὰν μὲν ἔνοχον εὕρητέ με ταῖς αἰτίαις, ἐφ' αἷς ὁ δῆμος κατεψηφίσατό μου, πονηρὰν καὶ ἀσχήμονα τελευτὴν δοῦναι τοῦ βίου· ἐὰν δ' ἐν ἅπασιν, οἷς ἐπιστεύθην ὑπὸ τῆς πατρίδος ἐν εἰρήνῃ τε καὶ κατὰ πολέμους, εὐσεβῆ καὶ δίκαιον καὶ πάσης ἀσχήμονος ὑποψίας καθαρόν, τιμωροὺς γενέσθαι μοι, τοιούτους ἐπιστήσαντας τοῖς ἠδικηκόσι κινδύνους καὶ φόβους, δι' οὓς ἀναγκασθήσονται μηδεμίαν ἄλλην ἐλπίδα σωτηρίας ὁρῶντες ἐπ' ἐμὲ καταφυγεῖν. ταῦτ' εἰπὼν εἰς πόλιν Ἀρδέαν ᾤχετο. *Ambr.*

VI. (7) Ἐπήκουσαν δὲ αὐτοῦ ταῖς εὐχαῖς οἱ θεοί· καὶ ὑπὸ Κελτῶν μετὰ μικρὸν ἡ πόλις ἑάλω, ἄνευ τοῦ Καπιτωλίου. καταφυγόντων δὲ ἐν αὐτῷ τῶν περιφανεστέρων· τὸ γὰρ ἄλλο πλῆθος ἐν ταῖς Ἰταλικαῖς φεῦγον διεσπάρη πόλεσι· καὶ πολιορκουμένων ὑπὸ Κελτῶν, οἱ πρὸς τὴν Οὐιενταναῶν πόλιν καταφυγόντες Ῥωμαῖοι Καιδίκιόν τινα στρατοπεδάρχην ποιοῦσιν· ὁ δὲ Κάμιλλον ἀποδείκνυσι καὶ ταῦτα ἀπόντα ἡγεμόνα πολέμου καὶ εἰρήνης ἐξουσίαν ἔχοντα αὐτοκράτορα. καὶ γενόμενος ἡγεμὼν τῆς πρεσβείας παρεκάλει Κάμιλλον διαλλαγῆναι πρὸς τὴν πατρίδα, τὰς συμφορὰς ἐν αἷς ἦν ἐπιλογισάμενον, δι' ἃς ὑπέμεινεν ἐπὶ τὸν ὑβρισθέντα ὑφ' ἑαυτῆς καταφυγεῖν. (8) Ὑποτυχὼν δὲ ὁ Κάμιλλος εἶπεν· οὐ δέομαι παρακλήσεως, ὦ Καιδίκιε· αὐτὸς γάρ, εἰ μὴ θᾶττον

ὑμεῖς ἀφίκεσθε κοινωνεῖν με τῶν πραγμάτων ἀξιοῦντες, ἕτοιμος ἦν ταύτην ἄγων τὴν δύναμιν, ἣν παροῦσαν ὁρᾶτέ μοι, πρὸς ὑμᾶς ἥκειν. ὑμῖν δέ, ὦ θεοί τε καὶ δαίμονες, ὅσοι τὸν ἀνθρώπινον ἐποπτεύετε βίον, ὧν τε ἤδη τετιμήκατέ μοι πολλὴν οἶδα χάριν, καὶ περὶ τῶν μελλόντων εὔχομαι καλὴν καὶ εὐτυχῆ τῇ πατρίδι γενέσθαι τὴν ἐμὴν κάθοδον. εἰ δὲ ἐνῆν ἀνθρώπῳ τὰ μέλλοντα συμβήσεσθαι προιδεῖν, οὐδέποτ' ἂν εὐξάμην ἐς τοιαύτας ἐλθοῦσαν τυχὰς τὴν πατρίδα δεηθῆναί μου· μυριάκις δ' ἂν εἱλόμην ἄζηλον γενέσθαι μοι καὶ ἄτιμον τὸν μετὰ ταῦτα βίον, ἢ βαρβάρων ἀνθρώπων ὠμότητι γενομένην τὴν Ῥώμην ὑποχείριον ἐπιδεῖν καὶ ἐν ἐμοὶ μόνῳ τὰς λοιπὰς ἐλπίδας τῆς σωτηρίας ἔχουσαν. ταῦτα εἰπὼν καὶ τὰς δυνάμεις παραλαβὼν ἄφνω τε τοῖς Κελτοῖς ἐπιφανεὶς εἰς φυγὴν αὐτοὺς τρέπει, καὶ ἐμπεσὼν ἀσυντάκτοις τε καὶ τεταραγμένοις δίκην προβάτων κατέσφαξεν. *Ambr.*

VII. (9) Ἔτι δ' οὖν πολιορκουμένων τῶν ἐν τῷ Καπιτωλίῳ καταφυγόντων, νέος τις ἀπὸ τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως ὑπὸ Ῥωμαίων πεμφθεὶς εἰς τοὺς ἐν τῷ Καπιτωλίῳ καὶ λαθὼν τοὺς αὐτόθι φυλάσσοντας Κελτοὺς ἀνῆλθέ τε καὶ εἰπὼν ὅσα ἔδει πάλιν ὑπὸ νύκτα ἀπηλλάγη. ὡς δὲ ἡμέρα ἐγένετο τῶν Κελτῶν τις ἰδὼν τὰ ἴχνη λέγει πρὸς τὸν βασιλέα· ὁ δὲ συγκαλέσας τοὺς ἀνδρειοτάτους, ἐδήλωσεν αὐτοῖς τὴν τοῦ Ῥωμαίου ἄνοδον· ἔπειτ' αὐτοὺς ἠξίου τὴν αὐτὴν ἐκείνῳ παρασχομένους τόλμαν πειρᾶσθαι τῆς ἐπὶ τὸ φρούριον ἀναβάσεως, πολλὰς ὑπισχνούμενος τοῖς ἀναβᾶσι δωρεάς. ὁμολογησάντων δὲ συχνῶν παρήγγειλε τοῖς φύλαξιν ἡσυχίαν ἄγειν, ἵνα καθεύδειν αὐτοὺς ὑπολαβόντες οἱ Ῥωμαῖοι καὶ αὐτοὶ πρὸς ὕπνον

τράπωνται. (10) *Ἤδη δὲ τῶν πρώτων ἀναβεβηκότων καὶ τοὺς ὑστερίζοντας ἀναδεχομένων, ἵνα πλείους γενόμενοι τότε ἀποσφάξωσι τοὺς ἐν ταῖς φυλακαῖς καὶ καταλάβωνται τὸ ἔρυμα, ἀνθρώπων μὲν οὐδεὶς ἔμαθεν, ἱεροὶ δέ τινες Ἥρας χῆνες ἐν τῷ τεμένει τρεφόμενοι καταβοῶντες ἅμα καὶ τοῖς βαρβάροις ὁμόσε χωροῦντες κατήγοροι γίνονται τοῦ κακοῦ. ἐκ δὲ τούτου ταραχή τε καὶ κραυγὴ καὶ* [ὁ] *δρόμος ἁπάντων ἦν παρακαλούντων ἀλλήλους ἐπὶ τὰ ὅπλα· καὶ οἱ Κελτοὶ δὲ πλείους ἤδη γεγονότες ἐχώρουν ἐνδοτέρω. Ambr.*

VIII. (11) *Ἐνθάδε τις τῶν ἐσχηκότων τὴν ὕπατον ἀρχήν, Μάρκος Μάλλιος, ἁρπάσας τὰ ὅπλα καὶ συστὰς τοῖς βαρβάροις τόν τε πρῶτον ἀναβάντα καὶ κατὰ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ τὸ ξίφος φέροντα φθάσας παίει κατὰ τοῦ βραχίονος καὶ ἀποκόπτει τὸν ἀγκῶνα· καὶ τὸν ἐπὶ τούτῳ πρὶν* [ἢ] *εἰς χεῖρας ἐλθεῖν ὀρθῷ τῷ θυρεῷ πατάξας εἰς τὸ πρόσωπον ἀνατρέπει καὶ κείμενον ἀποσφάττει· ἔπειτα τοὺς ἄλλους τεταραγμένους ἤδη ἐλαύνων ὑπὸ πόδας, οὓς μὲν ἀπέκτεινεν, οὓς δὲ κατὰ τοῦ κρημνοῦ διώκων ἐξέχεεν. ἀντὶ ταύτης εὕρετο τῆς ἀριστείας τὴν πρέπουσαν τῷ τότε καιρῷ δωρεὰν παρὰ τῶν κατεχόντων τὸ Καπιτώλιον, οἴνου καὶ ζέας τὸ ἐφήμερον ἀνδρὸς ἑκάστου τροφῆς.* (12) *Περὶ δὲ τῶν ἐν ἐκείνῳ τῷ τόπῳ τὴν φυλακὴν ἐκλιπόντων, καθ' ὃν ἀνέβησαν οἱ Κελτοί, ζητήσεως γενομένης ὅ τι χρὴ ποιεῖν, ἡ μὲν βουλὴ θάνατον ἁπάντων κατεψηφίσατο· ὁ δὲ δῆμος ἐπιεικέστερος γενόμενος ἑνὸς τοῦ ἡγεμόνος αὐτῶν ἠρκέσθη τῇ κολάσει. ἵνα δὲ φανερὸς γένοιτο τοῖς βαρβάροις ὁ θάνατος αὐτοῦ, δεθεὶς τὰς χεῖρας ὀπίσω κατὰ τοῦ κρημνοῦ βάλλεται πρὸς αὐτούς. ἐκείνου δὲ τιμωρη-*

θέντος οὐδὲν ἔτι ῥᾴθυμον ἦν τῶν περὶ τὰς φυλακάς, ἀλλὰ παννύχιοι διετέλουν ἅπαντες ἐγρηγορότες· ὥστε τοὺς Κελτοὺς ἀπογνόντας δι' ἀπάτης ἢ κλοπῆς καθέξειν τὸ φρούριον περὶ λύτρων διαλέγεσθαι, ἃ τοῖς βαρβάροις δόντες κομιοῦνται τὴν πόλιν. *Ambr.*

VIIII. (13) Ἐπεὶ δὲ τὰ ὅρκια ἐπετέλεσαν, καὶ τὸ χρυσίον οἱ Ῥωμαῖοι κατήνεγκαν, σταθμὸς μὲν ἦν, ὃν ἔδει τοὺς Κελτοὺς λαβεῖν, ε' καὶ κ' τάλαντα· τεθέντος δὲ τοῦ ζυγοῦ, πρῶτον μὲν αὐτὸ τὸ τάλαντον ὁ Κελτὸς βαρύτερον τοῦ δικαίου παρῆν φέρων, ἔπειτα ἀγανακτούντων πρὸς τοῦτο τῶν Ῥωμαίων τοσούτου ἐδέησε μετριάσαι περὶ τὸ δίκαιον, ὥστε καὶ τὴν μάχαιραν ἅμα τῇ θήκῃ καὶ τῷ ζωστῆρι περιελόμενος ἐπέθηκε τοῖς σταθμοῖς. τῷ δὲ ταμίᾳ πυνθανομένῳ, τί θέλει τοῦτ' εἶναι τὸ ἔργον, ἀπεκρίνατο τούτοις τοῖς ὀνόμασιν· ὀδύνη τοῖς κεκρατημένοις. ἐπεὶ δὲ ὁ συγκείμενος σταθμὸς οὐκ ἐξεπληροῦτο διὰ τὴν τοῦ Κελτοῦ πλεονεξίαν, ἀλλὰ καὶ τὸ τρίτον ἐνέδει μέρος, ἀπῄεσαν οἱ Ῥωμαῖοι χρόνον εἰς συμπορισμὸν τοῦ λείποντος αἰτησάμενοι· ὑπέμειναν δὲ ταύτην τὴν ὑπερηφανίαν τῶν βαρβάρων οὐθὲν ἐγνωκότες τῶν ἐπὶ τοῦ στρατοπέδου πραττομένων παρὰ Καιδικίου καὶ Καμίλλου, ὡς ἔφαμεν. *Ambr.*

X. (14) Ἡ δὲ αἰτία τῆς ἐς Ἰταλίαν τῶν Κελτῶν ἀφίξεως τοιάδε ἦν. Λοκόμων τις Τυρρηνῶν ἡγεμὼν μέλλων τελευτᾶν τὸν βίον ἀνδρὶ πιστῷ Ἄρροντι ὄνομα παρακατέθετο τὸν υἱὸν ἐπιτροπεύειν· τελευτήσαντος δὲ τοῦ Τυρρηνοῦ παραλαβὼν τὴν ἐπιμελείαν τοῦ παιδίου ὁ Ἄρρων ἐπιμελὴς καὶ δίκαιος γέγονε τῆς πίστεως φύλαξ, καὶ εἰς ἄνδρας ἐλθόντι πᾶσαν ἀπέδειξε τῷ παιδὶ τὴν καταλειφθεῖσαν ὑπὸ τοῦ πατρὸς οὐσίαν. ἀνθ' ὧν οὐχ ὁμοίας

ἐκομίσατο παρὰ τοῦ μειρακίου χάριτας. (15) Οὔσης γὰρ αὐτῷ γυναικὸς εὐμόρφου καὶ νέας, ἧς περὶ πλείστου τὴν κοινωνίαν ἐποιεῖτο, σώφρονος τὸν ἄλλον χρόνον ἅπαντα γενομένης ἐρασθεὶς ὁ νεανίσκος ἅμα τῷ σώματι καὶ τὴν διανοίαν τῆς ἀνθρώπου διέφθειρεν, καὶ οὐκέτι κρύβδα ἀλλ' ἀναφανδὸν ἐξήτει αὐτῇ διαλέγεσθαι. ἀχθόμενος δὴ ὁ Ἄρρων τῷ ἀποσπασμῷ τῆς γυναικός, καὶ ἐφ' οἷς ὑβρίζετο πρὸς ἀμφοτέρων δυσανασχετῶν, τιμωρίαν δὲ οὐ δυνάμενος παρ' αὐτῶν λαβεῖν, ἀποδημίαν ἐστείλατο, πρόφασιν αὐτῆς ποιησάμενος ἐμπορίαν. ἀσμένως δὲ τοῦ νεανίσκου τὴν ἀπαλλαγὴν αὐτοῦ δεξαμένου καὶ παρασχόντος ὅσων εἰς τὴν ἐμπορίαν ἐδεῖτο, πολλοὺς μὲν ἀσκοὺς οἴνου τε καὶ ἐλαίου ταῖς ἁμάξαις ἐπιθέμενος, πολλοὺς δὲ φορμοὺς σύκων ἦγεν εἰς τὴν Κελτικήν. *Ambr.*

XI. (16) Οἱ δὲ Κελτοὶ οὔτε οἶνον ἀμπέλινον εἰδότες τηνικαῦτα οὔτε ἔλαιον οἷον αἱ παρ' ἡμῖν ἐλαῖαι φέρουσιν, ἀλλ' οἴνῳ μὲν χρώμενοι κριθῆς σαπείσης ἐν ὕδατι χυλῷ δυσώδει, ἐλαίῳ δὲ συείῳ στέατι πεπαλαιωμένῳ τήν τε ὀδμὴν καὶ τὴν γεῦσιν ἀτόπῳ, τότε δὲ πρῶτον ἀπολαύσαντες ὧν οὔπω ἐγεύσαντο καρπῶν, θαυμαστὰς ὅσας ἐφ' ἑκάστῳ ἐλάμβανον ἡδονάς, καὶ τὸν ξένον ἠρώτων, πῶς τε γίνεται τούτων ἕκαστον καὶ παρὰ τίσιν ἀνθρώποις. (17) Ὁ δὲ Τυρρηνὸς πρὸς αὐτούς φησιν, ὅτι γῆ μέν ἐστιν ἡ τούτους ἐκφέρουσα τοὺς καρποὺς πολλὴ καὶ ἀγαθή, νέμονται δὲ αὐτὴν ὀλίγοι τινὲς ἄνθρωποι καὶ τὰ εἰς πόλεμον οὐδὲν ἀμείνους γυναικῶν· ὑπέθετό τε αὐτοῖς μὴ δι' ὠνῆς αὐτὰ παρ' ἑτέρων ἔτι λαμβάνειν, ἀλλ' ἐκβαλόντας τοὺς τότε κυρίους ὡς οἰκεῖα καρποῦσθαι. τούτοις δὴ τοῖς λόγοις οἱ Κελτοὶ πειθό-

μενοι ἦλθον εἰς Ἰταλίαν καὶ Τυρρηνῶν τοὺς καλουμένους Κλουσίνους, ὅθεν ἦν καὶ ὁ πείσας αὐτούς, ἐπολέμουν. Ambr.

XII. (18) *Ἀποσταλέντων δὲ πρεσβευτῶν ἐκ Ῥώμης ἐπὶ Κελτούς, ἐπεὶ ἤκουσεν εἷς τῶν πρεσβευόντων Κόιντος Φάβιος τοὺς βαρβάρους ἐπὶ προνομὴν ἐξεληλυθέναι, συνάπτει πόλεμον αὐτοῖς καὶ τὸν τῶν Κελτῶν ἡγεμόνα ἀναιρεῖ· ἀποστείλαντες δὲ εἰς Ῥώμην οἱ βάρβαροι ἠξίουν παραδιδόναι σφίσι τὸν ἄνδρα καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐκδότους, ποινὰς ὑφέξοντας τῶν ἀπολωλότων.* (19) *Παρελκούσης δὲ τῆς βουλῆς τὰς ἀποκρίσεις, ἐπὶ τὴν Ῥώμην τὸν πόλεμον ἀναγκαίως οἱ Κελτοὶ μετήγαγον. Οἱ δὲ Ῥωμαῖοι ἀκούσαντες ἐξήεσαν ἐκ τῆς πόλεως ἄγοντες ἐκ μὲν τῶν ἐπιλέκτων τε καὶ κατηθλημένων ἐν τοῖς πολέμοις στρατιωτῶν τέτταρα τάγματα ἐντελῆ· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων πολιτῶν τοὺς κατοικιδίους τε καὶ σχολαίους καὶ ἧττον ὡμιληκότας πολέμοις πλείους ὄντας ἀριθμῷ τῶν ἑτέρων. τούτους δὴ τρεψάμενοι οἱ Κελτοὶ [καὶ] σύμπασαν τὴν Ῥώμην ἄνευ τοῦ Καπιτωλίου παρεστήσαντο.* Ambr.

Νέπετος πόλις Ἰταλίας, Διονύσιος τρισκαιδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας, τὸ ἐθνικὸν Νεπεσῖνος. Stephanus Byz. s. v. *Νέπετος.*

EXCERPTA

EX

LIBRO XIIII.

I. (1) Ἡ δὲ Κελτικὴ κεῖται μὲν ἐν τῷ πρὸς τὴν ἑσπέραν καθήκοντι τῆς Εὐρώπης μέρει, μεταξὺ τοῦ τε βορείου πόλου καὶ τῆς ἰσημερινῆς δύσεως· τετράγωνος δὲ οὖσα τῷ σχήματι, τοῖς μὲν Ἀλπείοις ὄρεσι μεγίστοις οὖσι τῶν Εὐρωπείων συνάπτει κατὰ τὰς ἀνατολάς· τοῖς δὲ Πυρρηναίοις κατὰ μεσημβρίαν τε καὶ νότον ἄνεμον· τῇ δὲ ἔξω στηλῶν Ἡρακλείων θαλάττῃ κατὰ τὰς δύσεις· τῷ δὲ Σκυθικῷ τε καὶ Θρᾳκίῳ γένει κατὰ βορέαν ἄνεμον καὶ ποταμὸν Ἴστρον, ὃς ἀπὸ τῶν Ἀλπείων καταβαίνων ὀρῶν μέγιστος τῶν τῇδε ποταμῶν καὶ πᾶσαν τὴν ὑπὸ τοῖς ἄρκτοις ἤπειρον διελθὼν εἰς τὸ Ποντικὸν ἐξερεύγεται πέλαγος. (2) Τοσαύτη δὲ οὖσα τὸ μέγεθος, ὅση μὴ πολὺ ἀποδεῖν τετάρτη λέγεσθαι μοῖρα τῆς Εὐρώπης, εὔυδρός τε καὶ πίειρα καὶ καρποῖς δαψιλὴς καὶ κτήνεσιν ἀρίστη νέμεσθαι, σχίζεται μέση ποταμῷ Ῥήνῳ, μεγίστῳ μετὰ τὸν Ἴστρον εἶναι δοκοῦντι τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν. καλεῖται δ' ἡ μὲν ἐπὶ τάδε τοῦ Ῥήνου Σκύθαις καὶ Θρᾳξὶν ὁμοροῦσα Γερμανία, μέχρι δρυμοῦ Ἑρκυνίου καὶ τῶν Ῥιπαίων ὀρῶν

καθήκουσα· ἡ δ' ἐπὶ θάτερα τὰ πρὸς μεσημβρίαν βλέποντα μέχρι Πυρρήνης ὄρους, ἡ τὸν Γαλατικὸν κόλπον περιλαμβάνουσα, Γαλατία τῆς θαλάττης ἐπώνυμος. (3) Κοινῷ δ' ὀνόματι ἡ σύμπασα πρὸς Ἑλλήνων καλεῖται Κελτική, ὡς μέν τινές φασιν, ἀπό τινος γίγαντος Κελτοῦ αὐτόθι δυναστεύσαντος. ἄλλοι δὲ ἐξ Ἡρακλέους καὶ Ἀστερόπης τῆς Ἀτλαντίδος δύο γενέσθαι μυθολογοῦσι παῖδας, Ἴβηρον καὶ Κελτόν, οὓς θέσθαι ταῖς χώραις, ὧν ἦρξαν ἀμφότεροι, τὰς ὀνομασίας ἀφ' αὐτῶν. οἱ δὲ ποταμὸν εἶναί τινα λέγουσι Κελτὸν ἐκ τῆς Πυρρήνης ἀναδιδόμενον, ἀφ' οὗ πρῶτον μὲν τὴν συνεγγύς, ἔπειτα δὲ καὶ τὴν ἄλλην χώραν σὺν χρόνῳ κληθῆναι Κελτικήν. φασὶ δὲ καί τινες, ὅτι τοῖς πρώτοις Ἕλλησιν εἰς τήνδε τὴν γῆν περαιουμένοις αἱ νῆες ἀνέμῳ βιαίῳ φερόμεναι κατὰ τὸν κόλπον ἔκελσαν τὸν Γαλατικόν, οἱ δὲ ἄνδρες, ἐπειδὴ τοῦ αἰγιαλοῦ ἐλάβοντο, Κελσικὴν ἀπὸ τοῦ συμβάντος αὐτοῖς πάθους τὴν χώραν ἐκάλεσαν, ἣν ἑνὸς ἀλλαγῇ γράμματος οἱ μεταγενέστεροι Κελτικὴν ὠνόμασαν. *Ambr.*

II. (4) Ἀθήνησι μὲν ἐν τοῦ γηγενοῦς Ἐρεχθέως τῷ σηκῷ ἱερά τις ὑπ' Ἀθηνᾶς φυτευθεῖσα ἐλαία κατὰ τὴν ἔριν τὴν γενομένην αὐτῇ πρὸς Ποσειδῶνα περὶ τῆς χώρας, ἅμα τοῖς ἄλλοις τοῖς ἐν τῷ ἱερῷ οὖσιν ἐμπρησθεῖσα ὑπὸ τῶν βαρβάρων, ὅτε τῆς ἀκροπόλεως ἐκράτησαν, δευτέρᾳ τῆς ἐμπρήσεως ἡμέρᾳ βλαστὸν ἐκ τοῦ στελέχους ἀνῆκεν ὅσον τε πηχυαῖον, δῆλον ἅπασι ποιῆσαι βουλομένων τῶν θεῶν, ὅτι ταχέως ἑαυτὴν ἡ πόλις ἀναλαβοῦσα βλαστοὺς ἀντὶ τῶν παλαιῶν ἐξοίσει νέους. (5) Ἐν δὲ τῇ Ῥώμῃ καλιάς τις Ἄρεος ἱερὰ περὶ τὴν κορυφὴν ἱδρυμένη τοῦ Παλατίου συγκαταφλεγεῖσα ταῖς πέριξ

οἰκίαις ἕως ἐδάφους, ἀνακαθαιρομένων τῶν οἰκοπέδων ἕνεκα τῆς ἐπισκευῆς, ἐν μέσῃ τῇ περικαύστῳ σποδῷ τὸ σύμβολον τοῦ συνοικισμοῦ τῆς πόλεως διέσωσεν ἀπαθές, ῥόπαλον ἐκ θατέρου τῶν ἄκρων ἐπικάμπιον, οἷα φέρουσι βουκόλοι καὶ νομεῖς οἱ μὲν καλαύροπας, οἱ δὲ λαγωβόλα καλοῦντες, ᾧ Ῥωμύλος ὀρνιθευόμενος διέγραφε τῶν οἰωνῶν τὰς χώρας, ὅτε τὴν πόλιν οἰκίζειν ἔμελλεν.

Εὐζώνῳ καὶ οὐδὲν ἔξω τῶν ὅπλων φερούσῃ στρατιᾷ.

Κρότου καταρραγέντος, ὡς ἐπὶ μεγίστῳ μὲν θεάματι, καλλίστῳ δ' ἀκούσματι, οἵ τε βεβαίως ἄποροι καὶ οἱ πλαττόμενοι τὴν εἰς τὸ παντελὲς ἀπορίαν. *Ambr.*

III. (8) Ὅτι Μάρκος Φούριος ὁ δικτάτωρ ἀνὴρ 2309
ἦν τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἀκμασάντων ἡλικίαν τά τε πολέμια λαμπρότατος καὶ τὰ πολιτικὰ φρονιμώτατος. *Vales.*

IIII. (6) Μάλλιος ὁ ἀριστεύσας, ὅτε εἰς τὸ Καπιτώλιον Ῥωμαῖοι κατέφυγον, κινδυνεύων διὰ τυραννίδος ἐπίθεσιν ἀπολέσθαι, βλέψας εἰς τὸ Καπιτώλιον καὶ τὰς χεῖρας ἐκτείνας εἰς τὸν ἐν αὐτῷ νεὼν τοῦ Διὸς εἶπεν· οὐδ' ἐκεῖνος ὁ τόπος ἱκανὸς ἔσται με σῶσαι, ὃν ὑπὸ τῶν βαρβάρων κρατηθέντα διέσωσα ὑμῖν ἐγώ; ἀλλὰ καὶ τότε ὑπὲρ ὑμῶν ἀπέθνησκον καὶ νῦν ὑφ' ὑμῶν ἀποθανοῦμαι. τότε μὲν οὖν συμπαθήσαντες ἀφῆκαν αὐτόν· ὕστερον δὲ κατὰ κρημνοῦ ἐρρίφη. *Ambr.*

V. (7) Κρατήσας τῶν πολεμίων καὶ τὴν στρατιὰν ἐπικλύσας ταῖς ὠφελείαις Τῖτος Κοίντιος δικτατορεύων ἐν ἡμέραις ἐννέα πόλεις ἐννέα πολεμίων ἔλαβεν.

Ληφθέντες ἀμφοτέρωθεν ἀγεληδὸν οἱ θεοστυγεῖς κατεκόπησαν. Ambr.

2310 VI. (8) *Ὅτι οἱ Ῥωμαῖοι μεγαλοπρεπεῖς. τῶν γὰρ ἄλλων ὀλίγου δεῖν πάντων ἔν τε τοῖς κοινοῖς τῶν πόλεων πράγμασι καὶ ἐν τοῖς ἰδίοις βίοις πρὸς τὰ τελευταῖα τῶν συμβαινόντων τὰς διανοίας μεθαρμοττομένων, καὶ πολλάκις ἔχθρας τε μεγάλας διὰ τὰς τυχούσας φιλανθρωπίας καταλυομένων, καὶ φιλίας πολυχρονίους διὰ μικρὰ καὶ φαῦλα προσκρούματα διαιρούντων, ἐκεῖνοι τοὐναντίον ἐπὶ τῶν φίλων ᾤοντο χρῆναι ποιεῖν, ταῖς τε παλαιαῖς εὐεργεσίαις χαρίζεσθαι τὰς ἐπὶ τοῖς προσφάτοις ἐγκλήμασιν ὀργάς.* (9) *Θαυμαστὸν μὲν δὴ καὶ τοῦτο τῶν ἀνδρῶν· λέγω δὲ τὸ μηδενὶ μνησικακῆσαι τῶν Τυσκλανῶν, ἀλλὰ πάντας ἀφεῖναι τοὺς ἐξαμαρτόντας ἀζημίους· πολλῷ δ' ἔτι τούτου θαυμασιώτερον, ὃ μετὰ τὴν ἄφεσιν τῶν ἐγκλημάτων αὐτοῖς ἐχαρίσαντο.* 2311 *σκοπούμενοι γὰρ ὡς μηδὲν ἔτι τοιοῦτον ἐπὶ τῇ πόλει γενήσεται μηδ' ἀφορμὴν νεωτερισμοῦ λήψονταί τινες, οὔτε φρουρὰν εἰς τὴν ἀκρόπολιν αὐτῶν ᾤοντο δεῖν εἰσάγειν, οὔτε παρὰ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν ὅμηρα λαμβάνειν, οὔτε ὅπλα τοὺς ἔχοντας ἀφελέσθαι, οὔτ' ἄλλο σημεῖον οὐδὲν ἀπιστουμένης φιλίας ποιῆσαι· μίαν δὲ πρᾶξιν οἰόμενοι ἅπαντας τοὺς κατὰ συγγένειαν ἢ φιλίαν προσήκοντας ἀλλήλοις τὴν τῶν ἀγαθῶν ἰσομοιρίαν, πολιτείαν ἔγνωσαν τοῖς κρατηθεῖσι χαρίσασθαι, πάντων μεταδόντες ὧν τοῖς φύσει Ῥωμαίοις μετῆν,* (10) *οὐ τὴν αὐτὴν διάνοιαν λαβόντες τοῖς ἀξιοῦσι τῆς Ἑλλάδος ἄρχειν οὔτ' Ἀθηναίοις οὔτε Λακεδαιμονίοις· τί γὰρ δεῖ περὶ τῶν ἄλλων Ἑλλήνων λέγειν; Ἀθηναῖοι μέν* 2312 *γε Σαμίους ἀποίκους ἑαυτῶν ὄντας, Λακεδαιμόνιοι*

δὲ Μεσσηνίους ἀδελφῶν οὐδὲν διαφέροντας, ἐπειδὴ προσέκρουσαν αὐτοῖς τι, διαλυσάμενοι τὴν συγγένειαν οὕτως ὠμῶς διεχειρίσαντο καὶ θηριωδῶς, ἐπειδὴ τὰς πόλεις αὐτῶν ὑποχειρίους ἔλαβον, ὥστε μηδὲ τοῖς ἀγριωτάτοις τῶν βαρβάρων ὑπερβολὴν τῆς εἰς τὰ ὁμόφυλα παρανομίας παραλιπεῖν. (11) Μυρία τοιαῦτα λέγειν ἄν τις ἔχοι ταῖς πόλεσι ταύταις ἡμαρτημένα, ἃ παρίημι, ἐπεὶ καὶ τούτων μεμνημένος ἄχθομαι· τὸ γὰρ Ἑλληνικὸν οὐκ ὀνόματι διαφέρειν τοῦ βαρβάρου ἠξίουν, οὐδὲ διαλέκτου χάριν, ἀλλὰ 2313
συνέσει καὶ χρηστῶν ἐπιτηδευμάτων προαιρέσει, μάλιστα δὲ τῷ μηδὲν τῶν ὑπὲρ τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν πρὸς ἀλλήλους παρανομεῖν. ὅσοις μὲν οὖν ταῦτα ἐπὶ πλεῖον ὑπῆρξεν ἐν τῇ φύσει, τούτους οἶμαι δεῖν λέγειν Ἕλληνας· ὅσοις δὲ τἀναντία βαρβάρους. καὶ τὰς μὲν ἐπιεικεῖς καὶ φιλανθρώπους διανοίας τε καὶ πράξεις αὐτῶν Ἑλληνικὰς εἶναι λογίζομαι· τὰς δ' ὠμὰς καὶ θηριώδεις ἄλλως τε κἂν περὶ συγγενεῖς τε καὶ φίλους γένωνται βαρβαρικάς. Τυσκλανοὶ μὲν δὴ πρὸς τῷ μηδὲν ἀφαιρεθῆναι τῶν σφετέρων ἁλούσης τῆς πόλεως, [ἀλλὰ] καὶ τὰ τῶν κεκρατηκότων ἀγαθὰ προσλαβόντες ἀπήεσαν. *Vales.*

VII. Ὅτι Σολπίκιος Ῥοῦφος ἐπίκλησιν ἀνὴρ ἦν ἔν τε ταῖς πολεμικαῖς πράξεσιν ἐπιφανής, καὶ πολιτείας προαίρεσιν ἐζηλωκὼς τὴν διὰ μέσου. *Vales.*

VIII. (12) Οἱ Κελτοὶ τῇ Ῥώμῃ ἐκ δευτέρου στρατεύσαντες τὴν χώραν τὴν Ἀλβανὴν ἐπόρθουν· ἔνθα μὲν πολλῆς ἅπαντες ἐδωδῆς ἐμπιμπλάμενοι, πολὺν δὲ πίνοντες ἄκρατον οἶνον· ἔστι δὲ ὁ τῇδε φυόμενος μετὰ τὸν Φαλερινὸν ἥδιστος οἴνων μελικράτῳ μάλιστα προσεμφερής· ὕπνον τε πλείονα τοῦ συνήθους αἱρούμενοι καὶ δίαιταν ὑπὸ σκιαῖς ὡς τὰ

πολλὰ ἔχοντες, τοσαύτην ἔλαβον ἐπίδοσιν εἰς πολυσαρκίαν τε καὶ ἁπαλότητα, καὶ οὕτως ἐξεθηλύνθησαν τὰς δυνάμεις, ὥσθ', ὁπότε γυμνάζειν ἐπιβάλοιντο τὰ σώματα καὶ διαπονεῖν ἐν τοῖς ὅπλοις, κόπτεσθαι μὲν ἄσθματι συνεχεῖ τὰ πνεύματα, ῥεῖσθαι δ' ἱδρῶτι πολλῷ τὰ μέλη, θᾶττον δὲ ἀφίστασθαι τῶν πόνων ἢ κελευσθεῖεν ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων. *Ambr.*

VIIII. (13) Ταῦτα μαθὼν ὁ τῶν Ῥωμαίων δικτάτωρ Κάμιλλος, συγκαλέσας τοὺς ἀμφ' αὐτὸν ἐδημηγόρησε πολλὰ παρορμῶντα εἰς τόλμαν, ἐν οἷς καὶ τάδε·

ὅπλα κρείττονα τῶν βαρβαρικῶν ἡμῖν μεμηχάνηται, θώρακες καὶ κράνη καὶ κνημῖδες καὶ κραταιοὶ θυρεοί, ὑφ' ὧν ὅλα τὰ σώματα ἔχομεν ἐν φυλακῇ, ξίφη τε ἀμφίστομα καὶ ἀντὶ λόγχης ὀϊστός, ἄφυκτον βέλος· τὰ μὲν σκεπαστήρια, οἷα μὴ ῥᾳδίως ταῖς πληγαῖς εἴκειν, τὰ δ' ἀμυντήρια, ὡς δι' ἁπάσης φέρεσθαι προβολῆς. τῶν δὲ γυμναὶ μὲν αἱ κεφαλαί, γυμνὰ δὲ τὰ στέρνα καὶ αἱ λαγόνες, γυμνοὶ δὲ μηροὶ καὶ σκέλη μέχρι ποδῶν, ἔρυμά τε οὐδὲν ἕτερον, ὅ τι μὴ θυρεοί· ἀμυντήρια δὲ λόγχαι καὶ [μάχαιραι,] κοπίδες ὑπερμήκεις. (14) Τὸ δὲ χωρίον, ἐν ᾧ τὸν ἀγῶνα ποιησόμεθα, σύνεργον ἡμῖν τοῖς ἀπὸ μετεώρου κατιοῦσιν ἐπὶ τὸ πρανές· ἐκείνοις δὲ πολέμιον τοῖς ἐκ τοῦ χθαμαλοῦ πρὸς τὰ μετέωρα χωρεῖν ἀναγκαζομένοις. φοβείσθω δὲ μηδεὶς ὑμῶν μήτε τὸ πλῆθος τῶν πολεμίων μήτε τὸ μέγεθος· μηδ' εἰς ταῦτά τις πλεονεκτήματα αὐτῶν ὁρῶν ἀθυμότερος πρὸς τὸν ἀγῶνα ἔστω, ἀλλ' ἐνθυμείσθω, πρῶτον μὲν ὅτι κρεῖττόν ἐστιν ἔλαττον στράτευμα ἐπιστάμενον ἃ δεῖ πράττειν, ἢ πολὺ ἀμαθές· ἔπειθ' ὅτι τοῖς μὲν ὑπὲρ τῶν ἰδίων ἀγωνιζο-

μένοις ἡ φύσις αὐτὴ θάρσος τέ τι πρὸς τοὺς κινδύνους παρίστησι, καὶ πνεῦμα ἐνθουσιῶδες ὥσπερ τοῖς θεοφορήτοις παρέχει· τοῖς δ' ἁρπάσαι τὰ ἀλλότρια προθυμουμένοις μαλακώτεραι πρὸς τὰ δεινὰ αἱ τόλμαι φιλοῦσι γίνεσθαι. (15) Ἀλλὰ μὴν οὐδ' οἷς δεδίττονται τοὺς πολεμίους καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν ἐκδειματοῦσιν ὀρρωδητέα ἡμῖν ἐστιν, ὥσπερ ἀπείροις πολέμου. τί γὰρ [ἂν] δυνήσονται δεινὸν ἐργάσασθαι τοὺς ὁμόσε χωροῦντας αἱ βαθεῖαι κόμαι καὶ τὸ ἐν τοῖς ὄμμασιν αὐτῶν πικρὸν καὶ ὁ βλοσυρὸς τῆς ὄψεως χαρακτήρ, αἵ τε δὴ πλημμελεῖς αὗται σκιρτήσεις καὶ τὰ διὰ κενῆς ἀνασείσματα τῶν ὅπλων καὶ οἱ πολλοὶ τῶν θυρεῶν κτύποι, καὶ ὅσα ἄλλα ὑπὸ βαρβάρου καὶ ἄφρονος ἀλαζονείας κατά τε μορφὰς καὶ φωνὰς ἐν ἀπειλαῖς πολεμίων σπαθᾶται, τίνα παρέχειν πέφυκε τοῖς ἀνοήτως ἐπιοῦσι πλεονεξίαν, ἢ τοῖς μετὰ λογισμοῦ παρὰ τὰ δεινὰ ἑστῶσι φόβον; (16) Ταῦτα δὴ διανοηθέντες, ὅσοι τε ὑμῶν ἐν τῷ κατὰ Κελτῶν προτέρῳ πολέμῳ παρεγένεσθε καὶ ὅσοι διὰ νεότητα ἀπελείφθητε αὐτοῦ, οἱ μὲν ἵνα τὴν τότε ἀρετὴν μὴ καταισχύνητε τῇ νῦν δειλίᾳ, οἱ δ' ἵνα μηδὲν ἐνδεέστεροι γένησθε τῶν πρεσβυτέρων ἐν ἐπιδείξει καλῶν ἔργων, ἴτε, ὦ γενναῖοι παῖδες ἀγαθῶν ζηλωταὶ πατέρων, ἴτε ἀκαταπλήκτως ἐπ' αὐτούς, θεούς τε ἀρωγοὺς ἔχοντες, οἳ παρέξουσιν ὑμῖν ἐξουσίαν, οἵας ἐβούλεσθε παρὰ τῶν ἐχθίστων ἀναπράξασθαι δίκας, καὶ στρατηγὸν ἐμέ, ᾧ πολλὴν μὲν εὐβουλίαν μαρτυρεῖτε, πολλὴν δ' εὐποτμίαν· μακάριον μὲν ἕξοντες τὸν ἀπὸ τοῦδε χρόνον, οἷς ἂν ἐγγένηται τὸν ἐπιφανέστατον τῇ πατρίδι στέφανον καταγαγεῖν, καλὴν δὲ καὶ ἀθάνατον εὔκλειαν καταλείψοντες ἀντὶ τοῦ θνητοῦ σώματος νηπίοις παισὶ καὶ γηραιοῖς γονεῦ-

σιν, οἱ ταύτην ἐκπληρώσοντες τὴν τοῦ βίου τελευτήν. οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγειν· κινεῖται γὰρ ἤδη τὸ βάρβαρον στράτευμα χωροῦν ἐφ' ἡμᾶς. ἀλλ' ἄπιτε καὶ καθίστασθε εἰς τάξιν. *Ambr.*

X. (17) Ἡ μὲν οὖν τῶν βαρβάρων μάχη πολὺ τὸ θηριῶδες καὶ μανικὸν ἔχουσα πλημμελής τις ἦν καὶ σοφίας τῆς ἐν ὅπλοις ἄμοιρος. τοτὲ μὲν γὰρ ἀνατείνοντες ἄνω τὰς μαχαίρας τὸν ἄγριον τρόπον ἔπαιον ὅλοις συνεμπίπτοντες τοῖς ἑαυτῶν σώμασιν, ὥσπερ ὑλότομοί τινες ἢ σκαπανεῖς, τοτὲ δ' ἐκ τῶν πλαγίων ἀστοχάστους πληγὰς ἐξέφερον, ὡς αὐτοῖς σκεπαστηρίοις ὅλα διακόψοντες τὰ σώματα τῶν ἀντιπολέμων· ἔπειτα τὰς ἀκμὰς τῶν σιδήρων ἀπέστρεφον. (18) Ἡ δὲ τῶν Ῥωμαίων ἀλκὴ καὶ πρὸς τὸ βάρβαρον αὐτῶν ἀντιτέχνησις εὐπαίδευτός τε ἦν καὶ πολὺ τὸ ἀσφαλὲς ἔχουσα. ἔτι γὰρ αὐτῶν ἀναιρομένων τὰς μαχαίρας ὑποδύνοντες ὑπὸ τοὺς βραχίονας καὶ τοὺς θυρεοὺς εἰς ὕψος ἀνατείνοντες, ἔπειτα γυροὶ καὶ βραχεῖς γινόμενοι, τὰς μὲν ἐκείνων πληγὰς ὑπερπετεῖς γινομένας ἀπράκτους καὶ κενὰς ἐποίουν αὐτοὶ δὲ ὀρθὰ τὰ ξίφη φέροντες βουβῶνάς τε αὐτῶν ἔπαιον καὶ λαγόνας διῄρουν καὶ διὰ στέρνων ἐπὶ τὰ σπλάγχνα τὰς πληγὰς ἐξέτεινον· ὅσους δὲ ταῦτα τὰ μέρη διὰ φυλακῆς ἔχοντας αἴσθοιντο, γονάτων ἢ σφυρῶν νεῦρα διακείροντες ἐξέχεον ἐπὶ τὴν γῆν βεβρυχότας καὶ τοὺς θυρεοὺς ὀδακτίζοντας καὶ βοὴν ὠρυγῇ παραπλησίαν ὥσπερ τὰ θηρία προϊεμένους. (19) Ἥ τε δύναμις ὑπέλειπε πολλοὺς τῶν βαρβάρων, ἐκλυομένων τῶν μελῶν ὑπὸ κόπων, καὶ τῶν ὅπλων τὰ μὲν ἀπεστόμωτο, τὰ δὲ συνετέθραυστο, τὰ δ' οὐκέτι προσωφελεῖν δυνατὰ ἦν· χωρὶς γὰρ τοῦ καταρρέοντος ἐκ τῶν τραυμάτων αἵματος, οἱ δι' ὅλων ἐκχεό-

μενοι τῶν σωμάτων ἱδρῶτες οὔτε τὰς μαχαίρας εἴων κρατεῖν οὔτε τοὺς θυρεοὺς κατέχειν, περιολισθαινόντων ταῖς λαβαῖς τῶν δακτύλων καὶ τὰς ἀφὰς οὐκέτι κραταιὰς ἐχόντων. Ῥωμαῖοι δὲ πολλῶν ἐθάδες ὄντες πόνων διὰ τὰς ἀτρύτους καὶ συνεχεῖς στρατείας ἅπαντα τὰ δεινὰ γενναίως ἀνέφερον. *Ambr.*

XI. (20) Ἐν Ῥώμῃ πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα σημεῖα θεόπεμπτα γέγονε, μέγιστον δὲ ἁπάντων τόδε· τῆς ἀγορᾶς κατὰ τὸ μέσον μάλιστα διερράγη τι τῆς γῆς εἰς βάθος ἄβυσσον, καὶ τοῦτ' ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας διέμεινεν. ψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς, οἱ ἐπὶ τῶν Σιβυλλείων χρησμῶν ἐπισκεψάμενοι τὰ βιβλία εἶπον, ὅτι τὰ πλείστου ἄξια τῷ Ῥωμαίων δήμῳ λαβοῦσα ἡ γῆ συνελεύσεταί τε καὶ πολλὴν ἀφθονίαν εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἁπάντων αὐτῶν ἀνήσει. τοιαῦτα τῶν ἀνδρῶν ἀποφηναμένων ἀπαρχὰς ἕκαστος εἰς τὸ χάσμα ἔφερεν, ὧν ᾤετο δεῖν ἀγαθῶν τῇ πατρίδι, ἀπό τε καρπῶν πελάνους καὶ ἀπὸ χρημάτων ἀπαρχάς. (21) Μάρκος δέ τις Κούρτιος ἐν τοῖς πρώτοις τῶν νέων ἀριθμούμενος σωφροσύνης ἕνεκα καὶ τῆς κατὰ πολέμους ἀρετῆς, ἔφοδον αἰτησάμενος ἐπὶ τὴν βουλὴν εἶπεν, ὅτι τῶν πάντων ἐστὶν ἀγαθῶν χρῆμα κάλλιστον καὶ πόλει Ῥωμαίων ἀναγκαιότατον ἀνδρῶν ἀρετή· εἰ δὴ καὶ ταύτης ἀπαρχήν τινα ἡ γῆ λάβοι καὶ γένοιτο ἑκὼν ὁ τοῦτο χαριούμενος τῇ πατρίδι, πολλοὺς ἀνήσει ἡ γῆ ἄνδρας ἀγαθούς. ταῦτ' εἰπὼν καὶ μηδενὶ παραχωρήσειν ἑτέρῳ τῆς φιλοτιμίας ταύτης ὑποσχόμενος, τά τε ὅπλα περιέθετο καὶ ἐπὶ τὸν πολεμιστὴν ἵππον ἀνέβη· συναχθέντος δ' ἐπὶ τὴν θέαν τοῦ κατὰ τὴν πόλιν ὄχλου, πρῶτον μὲν ηὔξατο τοῖς θεοῖς ἐπιτελῆ ποιῆσαι τὰ μαντεύματα καὶ πολλοὺς ἄνδρας ὁμοίους αὐτῷ δοῦναι τῇ πόλει τῇ Ῥωμαίων

γενέσθαι· ἔπειτ' ἐφεὶς τῷ ἵππῳ τὰς ἡνίας καὶ τὰ κέντρα προσβαλὼν ἔρριψε κατὰ τοῦ χάσματος ἑαυτόν. ἐπὶ δὲ αὐτῷ πολλὰ μὲν ἱερεῖα, πολλοὶ δὲ καρποί, πολλὰ δὲ χρήματα, πολὺς δὲ κόσμος ἐσθῆτος, πολλαὶ δὲ ἀπαρχαὶ συμπασῶν τεχνῶν δημοσίᾳ κατὰ τοῦ χάσματος ἐρρίφησαν· καὶ αὐτίκα ἡ γῆ συνῆλθεν. *Ambr.*

XII. (22) ὑπερφυές τι χρῆμα σώματος ἦν ὁ Κελτός, οἷος ὑπεραίρειν πολὺ τὴν κοινὴν φύσιν. *Ambr.*

Λικίνιος Στόλων, ὁ δεκάκις δημαρχήσας καὶ τοὺς νόμους εἰσηγησάμενος ὑπὲρ ὧν ἡ δεκαετὴς στάσις ἐγένετο, ἁλοὺς ἐν δίκῃ καὶ ὑπὸ τοῦ δήμου καταψηφισθεὶς τίμημα ἀργυρικὸν εἶπεν, ὅτι θηρίον οὐδέν ἐστι δήμου μιαρώτερον, ὃς οὐδὲ τῶν σιτιζόντων ἀπέχεται. *Ambr.*

XIII. (23) Τοῦ ὑπάτου Μαρκίου Πριβερνάτας πολιορκοῦντος, ἐπεὶ οὐδεμία τούτοις σωτηρίας ἐλπὶς ὑπολείπεται, ἐπρεσβεύοντο πρὸς αὐτόν· τοῦ δ' εἰπόντος· φράσατέ μοι, πῶς αὐτοὶ κολάζετε τοὺς ἀφισταμένους ὑμῶν οἰκέτας; ἀποκρίνεται πρὸς αὐτὸν ὁ πρεσβύτατος· ὡς δεῖ κολάζεσθαι τοὺς ποθοῦντας ἀπολαβεῖν τὴν ἔμφυτον ἐλευθερίαν. καὶ ὁ Μάρκιος ἀποδεξάμενος αὐτοῦ τὴν παρρησίαν φησίν· ἐὰν δὲ δὴ καὶ πεισθῶμεν ὑμῖν ἀφεῖναι τὰς ὀργάς, τίνα δώσετε πίστιν ὑπὲρ τοῦ μηδὲν ἔτι ποιήσειν ἐχθρῶν ἔργον; ἀποκρίνεται πάλιν ὁ πρεσβευτής· ἐπὶ σοὶ τοῦτ' ἐστὶ καὶ τοῖς ἄλλοις Ῥωμαίοις, Μάρκιε· κομισάμενοι μὲν γὰρ ἅμα τῇ πατρίδι καὶ τὴν ἐλευθερίαν βεβαίως διὰ παντὸς ὑμῖν ἐσόμεθα φίλοι· δουλεύειν δ' ἀναγκασθέντες οὐδέποτε. ἠγάσθη τε δὴ τῆς μεγαλοφροσύνης τοὺς ἄνδρας ὁ Μάρκιος, καὶ τὴν πολιορκίαν ἔλυσε. *Ambr.*

EXCERPTA

EX

LIBRO XV.

I. *Τῶν Κελτῶν ἐπιστρατευσάντων τῇ Ῥώμῃ, καί τινος βασιλέως εἰς μονομαχίαν προκαλουμένου τῶν Ῥωμαίων ὅστις εἴη ἀνήρ, Μάρκος Οὐαλέριος, εἷς τῶν χιλιάρχων, ἀπόγονος ὢν Οὐαλερίου Ποπλικόλα τοῦ συνελευθερώσαντος ἀπὸ τῶν βασιλέων τὴν πόλιν, ἐξῄει τῷ Κελτῷ διαγωνίσασθαι. ὡς δὲ συνῄεσαν ὁμόσε, κόραξ καθεζόμενος ἐπὶ τοῦ κράνους αὐτοῦ ἐκεκράγει τε δεινὸν εἰς τὸν βάρβαρον ὁρῶν, καὶ ὁπότε μέλλοι πληγὴν ἐκφέρειν, πηδῶν ἐπ' αὐτὸν τοτὲ μὲν τοῖς ὄνυξιν ἤμυττε τὰς παρειάς, τοτὲ δὲ τῷ ῥύγχει τοὺς ὀφθαλμοὺς ἔκοπτεν, ὥστε τὸν Κελτὸν ἔξω γενέσθαι τῶν φρενῶν, οὔθ' ὅπως τὸν ἄνδρα ἀμύνοιτο δυνάμενον συμβαλεῖν, οὔθ' ὅπως τὸν κόρακα φυλάττοιτο.* (2) *Ὡς δὲ πολὺς ἐγεγόνει τῇ μάχῃ χρόνος, ὁ μὲν Κελτὸς φέρων ἐπὶ τὸν Οὐαλέριον τὴν μάχαιραν ὡς διὰ τῆς προβολῆς εἰς τὰ πλευρὰ βάψας, ἔπειτ' ἐπιπτάντος αὐτῷ τοῦ κόρακος καὶ τὰς ὄψεις ὀρύττοντος ἀνέτεινε τὸν θυρεὸν ὡς ἀπελάσων τὸν ὄρνιν· ὁ δὲ Ῥωμαῖος ἔτι μετεωρίζοντος τὸ ὅπλον ἀκολουθήσας κάτωθεν ὑποφέρει τὸ ξίφος καὶ ἀναιρεῖ τὸν Κελτόν. ὁ δὲ στρατηγὸς Κάμιλλος χρυσέῳ τοῦτον στεφάνῳ ἐκόσμησεν, ἐπωνυμίαν θέμενος αὐτὸν Κορβῖνον, ἀπὸ τοῦ συναγωνισαμένου κατὰ τὴν μονομαχίαν ζῴου· κ ό ρ β ο υ ς γὰρ οἱ Ῥωμαῖοι καλοῦσι*

τοὺς κόρακας· αὐτός τε διετέλεσεν ἐξ ἐκείνου συμβόλῳ κατὰ τοῦ κράνους κοσμούμενος κόρακι, καὶ ταῖς εἰκόσιν αὐτοῦ πάσαις οἱ πλάττοντες καὶ γράφοντες τοῦτο τὸ ζῷον ἐπὶ τὴν κεφαλὴν ἐφήρμοττον. *Ambr.*

II. (3) Ἐπόρθουν τὰς ἐπὶ τῶν ἀγρῶν κτήσεις πολλῆς εὐδαιμονίας γεμούσας.

Ἀνθρώπους πεπονημένους ὑπὸ πολέμου σώματα, καὶ πλὴν ὅσον ἀνέπνεον τὰ λοιπὰ νεκροῖς ὁμοίους.

Ἔτι θερμῆς τὸ δὴ λεγόμενον οὔσης τῆς τοῦ ἀναιρεθέντος σποδοῦ.

Τὸν οἴκτιστον ἀπολεῖται τρόπον ὑπ' ἀνδρὸς ἐχθροῦ πολιτικῷ σιτίζοντος αἵματι τὸν φθόνον.

Μοῖραν οὐκ ἐλαχίστην τῶν ὠφελειῶν τοῖς στρατιώταις χαριζόμενος, ὥστ' ἐπικλύσαι πλούτῳ τὴν ἑκάστου πενίαν.

Διέφθειραν αὐτῶν ἀκμαζούσας ἤδη σπορολογεῖσθαι τὰς ἀρούρας, καὶ τὰ κράτιστα τῆς καρποφόρου ἐλωβήσαντο. *Ambr.*

III. Ὅτι Κοίντου Σερουιλίου τὸ τρίτον [ὑπατεύοντος] καὶ Γαίου Μαρκίου Ῥουτίλου ὑπατευόντων κίνδυνοι τὴν Ῥώμην χαλεποὶ καὶ ἀπροσδόκητοι κατέσχον, οὓς εἰ μὴ θεία τις πρόνοια διεσκέδασε, δυεῖν κακῶν θάτερον ἂν αὐτῇ συνέπεσεν, ἢ δόξαν αἰσχίστην ἐνέγκαι ξενοκτονίας, ἢ φόνων ἅψασθαι πολιτικῶν. ἀφ' ἧς δ' αἰτίας εἰς τούτους ἦλθε τοὺς κινδύνους, μικρὰ τῶν πρόσθεν ἀναλαβὼν δι' ὀλίγων πειράσομαι διελθεῖν. ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ τὸν Σαυνιτικὸν πόλεμον ὑπὲρ ἁπάσης Καμπανίας ἡ τῶν Ῥωμαίων πόλις ἀραμένη καὶ τρισὶ νικήσασα μάχαις τοὺς ἀντιταχθέντας, ἐβούλετο μὲν ἁπάσας ἀπάγειν τὰς δυνάμεις, ὡς οὐθενὸς ἔτι κινδύνου ταῖς πόλεσι καταλειπομένου· δεομένων δὲ τῶν Καμπανῶν

μὴ καταλιπεῖν αὐτοὺς συμμάχων ἐρήμους, ὡς ἐπιθησομένων σφίσι τῶν Σαυνιτῶν, εἰ μηδεμίαν ἔχοιεν ξενικὴν βοήθειαν, ἔγνω τὸν ἀπαλλάξαντα τοῦ πολέμου τὰς πόλεις ὕπατον Μάρκον Οὐαλέριον ὅσην ἂν αὐτοὶ βουληθῶσι τρέφειν στρατιὰν ἐν ταῖς πόλεσι καταλιπεῖν. γενόμενος δὲ τῆς ἐξουσίας ταύτης κύριος ὁ ὕπατος, ὅσοις ἦν βουλομένοις ὀψώνια καὶ μισθοὺς φέρεσθαι τῆς φυλακῆς, τούτους καθίστησιν ἐν ταῖς πόλεσιν· ἐν οἷς ἦν τὸ πλεῖον μέρος ἀνεστίων καὶ καταχρέων καὶ τὴν οἴκοι πενίαν καὶ ἀγνωσίαν ἀσμένως ἀποδιδρασκόντων. Τούτους οἱ Καμπανοὶ ταῖς οἰκίαις ἀναλαμβάνοντες τραπέζαις τε ὑπεδέχοντο λαμπραῖς καὶ ταῖς ἄλλαις ἐξένιζον φιλοφροσύναις. πολυτελὴς δὲ καὶ ἁβροδίαιτος ἱκανῶς τοῖς Καμπανίαν οἰκοῦσι καὶ νῦν ἐστι καὶ τότε ἦν ὁ βίος καὶ πάντα τὸν λοιπὸν ἔσται χρόνον, πολύκαρπόν τε πεδιάδα καὶ πολύβοτον καὶ πρὸς ὑγίειαν ἀνθρώποις γεωργοῦσιν ἀρίστην οὖσαν. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν ἀγαπητῶς οἱ φρουροὶ τὴν φιλοξενίαν τῶν ἀνθρώπων ἐλάμβανον· ἔπειτα διαφθειρόμενοι τὰς ψυχὰς ὑπὸ τοῦ κόρου τῶν ἀγαθῶν πονηροὺς ὑπολογισμοὺς κατὰ μικρὸν ἐλάμβανον, καὶ συνιόντες ἀλλήλοις ἔλεγον ὡς ἀνοήτων ἀνθρώπων ποιήσουσιν ἔργον, εἰ τοσαύτην καταλιπόντες εὐδαιμονίαν ἐπὶ τὸν ἐν Ῥώμῃ βίον ἀνακάμψουσιν, ἔνθα λυπρὰ μὲν ἡ γῆ, πολλαὶ δὲ εἰσφοραί, πολέμων δὲ καὶ κακῶν ἀνάπαυσις οὐδεμία, τὰ δὲ τῶν κοινῶν πόνων ἆθλα παρ᾽ ὀλίγοις. οἱ δὲ ἀσθενεῖς τοῖς βίοις καὶ τῶν καθ᾽ ἡμέραν ἀναγκαίων ἀποροῦντες, καὶ ἔτι μᾶλλον οἱ τὰ χρέα μὴ δυνάμενοι διαλῦσαι τοῖς συμβαλοῦσι καὶ τὴν ἀνάγκην ἀποχρῶσαν εἶναι σύμβουλον τῶν συμφερόντων σφίσιν ἀποφαίνοντες ἄνευ τοῦ καλοῦ, οὐδ᾽ εἰ πάντες νόμοι τε καὶ ἄρχοντες

τὰς ἐσχάτας τιμωρίας ἀπειλοῖεν αὐτοῖς [ἐν] Καμπανοῖς ἔτι μεθήσεσθαι τῆς παρούσης εὐδαιμονίας ἔλεγον καὶ τελευτῶντες εἰς τοσαύτην ἀπόνοιαν ἦλθον, ὥστε καὶ λέγειν ἐτόλμων· Τί δὴ καὶ δράσομεν δεινόν, ἐὰν Καμπανοὺς ἐκβαλόντες τὰς ἐκείνων πόλεις κατασχῶμεν; οὗτοι γὰρ αὐτοὶ πρότερον οὐκ ἐκ τοῦ βελτίστου κτησάμενοι τὴν γῆν κατέσχον, ἀλλὰ ἐπιξενωθέντες Τυρρηνοῖς τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν, καὶ τοὺς ἄνδρας ἅπαντας διαφθείραντες, τάς τε γυναῖκας αὐτῶν καὶ τοὺς βίους καὶ τὰς πόλεις καὶ τὴν περιμάχητον χώραν παρέλαβον· ὥστε σὺν δίκῃ πείσονται πᾶν ὅ τι ἂν πάθωσιν αὐτοὶ τῆς παρανομίας κατάρξαντες καθ' ἑτέρων. τί δὴ καὶ τὸ κωλῦσον ἡμᾶς ἔσται ταῦτα μέχρι τοῦ παντὸς χρόνου καρποῦσθαι τἀγαθά; Σαυνῖται μέν γε καὶ Σιδικῖνοι καὶ Αὔσονες καὶ πάντες οἱ περίοικοι τοσοῦτον δεήσουσι Καμπανοῖς τιμωροῦντες ἐφ' ἡμᾶς γε στρατεύειν, ὥστε ἀποχρῆν ὑπολήψονταί σφισιν, εἰ τὰ ἑαυτῶν ἐάσομεν ἑκάστους ἔχειν. Ῥωμαῖοι δὲ ἴσως μὲν καὶ κατ' εὐχὴν δέξονται τὸ πραχθέν, ἅπασαν ἀξιοῦντες Ἰταλίαν ταῖς αὑτῶν ἀποικίαις κρατεῖσθαι· εἰ δὲ ἀγανακτεῖν προσποιούμενοι, πολεμίους ἡμᾶς κρίναντες οὐ τοσαῦτα δεινὰ διαθήσουσιν, ὅσα πείσονται πρὸς ἡμῶν. χώραν τε γὰρ αὐτῶν δῃώσομεν, ὅσον ἂν ἡμῖν δοκῇ, καὶ δεσμώτας ἐκ τῶν ἀγρῶν λύσομεν καὶ θεράποντας ἐλευθερώσομεν, καὶ μετὰ τῶν ἐχθίστων αὐτοῖς Οὐολούσκων τε καὶ Τυρρηνῶν καὶ Σαυνιτῶν καὶ τῶν ἔτι ἐνδοιαστῶς ἀκροωμένων Λατίνων στησόμεθα. ἠναγκασμένοις δ' ἀνθρώποις καὶ τὸν ἔσχατον περὶ ψυχῆς τρέχουσι δρόμον οὔτ' ἄπορον οὐδὲν οὔτ' ἀντίπαλον. Τοιαῦτα διαλεγόμενοι πρὸς ἀλλήλους ὀλίγοι μὲν τὰ πρῶτα, ἔπειτα πλείους, ἔγνωσαν ἐπιχειρεῖν

ταῖς πόλεσι καὶ δι' ὅρκων ἐδίδοσαν ἀλλήλοις τὸ πιστόν. ἔφθασε δὲ τὴν ἐπιχείρησιν αὐτῶν εἰς τοὐμφανὲς ἀγαγοῦσα μήνυσις, ἣν τῶν συνομοσάντων τινὲς ἐποιήσαντο πρὸς τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Μάρκιον, ᾧ τὸν κατὰ Σαυνιτῶν πόλεμον ὁ κλῆρος ἀπένειμεν, ἤδη παρειληφότα τὰς ἐν τῇ Ῥώμῃ καταγραφείσας δυνάμεις καὶ ὄντα ἐν ὁδῷ. ὁ δὲ ὕπατος ἀπροσδοκήτου καὶ δεινοῦ πράγματος ἀκούσας ἔκρινε μὴ λέξαι τὸ πρᾶγμα μηδ' εἰδέναι δοκεῖν, ἀλλὰ δι' ἀπάτης τινὸς καὶ στρατηγίας κωλῦσαι τὰ συμβησόμενα ταῖς πόλεσιν. ἀποστείλας δή τινας ἅμα τοῖς μηνυταῖς κατασκευαστοὺς εἰς τὰς πόλεις πρὶν αὐτὸς ἐλθεῖν, προπαρεσκεύασε λέγεσθαι πρὸς τοὺς ἐν ταῖς παραχειμασίαις, ὅτι τὰς μὲν φρουρὰς ἔγνω καταλιπεῖν ἐν ταῖς πόλεσι τὰς τότε οὔσας, ἐπειδὴ βουλομένοις ἐστὶ τοῖς Καμπανοῖς αὐτὰς μένειν, τῇ δ' οἴκοθεν ἀφιγμένῃ σὺν αὐτῷ δυνάμει πολεμεῖν πρὸς Σαυνίτας παρασκευάζεται, καὶ ἔπεισεν ἅπαντας ταῦτα ὑπολαβεῖν. ἀφικόμενος δὲ εἰς τὴν Καμπανίαν μετὰ τῆς στρατιᾶς ἁπάσης εἰς ἑκάστην παρῄει πόλιν· καὶ τοὺς ἐν ταῖς φρουραῖς ἀνακαλούμενος διέκρινεν ἁπάντων τοὺς μετασχόντας τῆς συνωμοσίας. ἔπειτα φιλανθρώπως ἑκάστοις διαλεγόμενος, οὓς μὲν ἀπέλυσε τῶν σημείων, ὡς ἂν χαριζόμενος τὴν ἄφεσιν τῆς στρατείας· οὓς δὲ τῷ πρεσβευτῇ καὶ τῷ χιλιάρχῳ παραδοὺς ὡς ἐπὶ χρείας δή τινας στρατιωτικὰς ἀπέλυσεν· οὗτοι δ' ἦσαν οἱ πονηρότατοι καὶ οὐχ ὑπομενοῦντες ἀφεῖσθαι τῆς στρατείας· ἐντειλάμενος τοῖς ἄγουσιν αὐτοὺς εἰς Ῥώμην διακομίσαι καὶ φυλάττειν ἐν ἀδήλοις φυλακαῖς, χωρίσαντας ἄλλους ἀπ' ἄλλων, ἕως ἂν αὐτὸς ἀφίκηται. τοῖς δὲ ἀνδράσιν ἐνθυμουμένοις ὅτι πάντες οἱ κορυφαιότατοι τῆς συν-

ωμοσίας οἱ μὲν ἀπολύονται τῶν σημείων, οἱ δ' ἀποστέλλονται δίχα τῶν ἄλλων ὁποιδήποτε, λογισμὸς εἰσῆλθε περιφανῆ γεγονέναι σφῶν τὴν συνωμοσίαν, καὶ μετὰ ταῦτα δέος, εἰ χωρὶς ἀλλήλων γένοιντο καὶ τὰ ὅπλα θεῖεν, μὴ δίκας ὑπόσχωσιν εἰς Ῥώμην ἀπαχθέντες· συνιόντες τε κατ' ὀλίγους ἐσκόπουν τί χρὴ πράττειν. ἔπειτα γνώμην τινῶν εἰσηγησαμένων περὶ ἀποστάσεως, ἐπαινέσαντες τὸ βούλευμα καὶ πίστεις ἀπορρήτους ἐν ἀλλήλοις ποιησάμενοι, οἱ τῆς στρατείας ἀφειμένοι περὶ Ταρρακίναν πόλιν ἐν ἐπιτηδείοις χωρίοις παρ' αὐτὴν τὴν ὁδὸν στρατοπεδεύονται. ἔπειθ' οἱ μετὰ τοῦ πρεσβευτοῦ καὶ τῶν χιλιάρχων ἀποστελλόμενοι τοὺς ἡγεμόνας καταλιπόντες, ἐστὶ δ' οὓς καὶ τῶν ἀγόντων σφᾶς στρατιωτῶν πείσαντες ἀποστῆναι, περὶ τὸν αὐτὸν ἱδρύονται τόπον. ὡς δὲ ἅπαξ οὗτοι τὰς παρόδους κατελάβοντο, πολλοὶ προσήεσαν αὐτοῖς ὁσημέραι, καὶ χεὶρ ἐγένετο περὶ αὐτοὺς καρτερά· ἔπειτα τὰ δεσμωτήρια ὑπ' αὐτῶν, ὅσα κατὰ τοὺς ἀγροὺς ἦν, ἐλύετο καὶ συνέρρει .... *Escor.*

IIII. *Οἱ δὲ τῶν Ῥωμαίων ὕπατοι πᾶσαν τὴν μεταξὺ γῆν ἀδεῶς διελθόντες, τῶν μὲν οὐκ ἐναντιουμένων, τῶν δὲ συμπροπεμπόντων· πολλαὶ δ' εἰσὶ δυσχωρίαι κατὰ τὴν ἐκ Ῥώμης εἰς Καμπανίαν ἄγουσαν ὁδὸν ὄρεσί τε καὶ τέλμασι καὶ θαλάτταις καὶ ποταμοῖς ναυσιπόροις διακλειόμεναι, ἃς οὐ ῥᾴδιον ἦν διελθεῖν ὑπὸ τῶν πολεμίων προκαταληφθείσας· καί τινα καὶ ποταμόν, ὃς διὰ τῆς Κασιλίνων χώρας καὶ πόλεως φέρεται, τριάκοντα τῆς Καπύης ἀπέχοντα στάδια, Οὐολτοῦρνον ὄνομα, τεττάρων οὐκ ἐλάττω πλέθρων ὄντα τὸ πλάτος, ξυλίνῃ γεφύρᾳ διαβάντες, ἣν ἐν τρισὶ κατεσκεύασαν ἡμέραις, διεξῄεσαν, ἵνα*

τοῖς μὲν τὰ σφέτερα φρονοῦσι Καμπανοῖς θάρσος ὡς τὰ κράτιστα προῃρημένοις ἐγγένηται, τοῖς δὲ τἀναντία δέος. καὶ προελθόντες ἐπέκεινα τῆς πόλεως ἀπὸ τετταράκοντα σταδίων Καπύης στρατοπεδεύονται ἐν ὑψηλῷ τόπῳ θέντες τὸν χάρακα, ἔνθα ὑπομένοντες τὰς παρὰ Σαυνιτῶν ἀγοράς τε καὶ συμμαχίας ἐκαραδόκουν. οἱ δ' ἄρα ὑπισχνοῦντο μὲν αὐτοῖς πλείω τῶν ἱκανῶν, ἐπήρκουν δ' οὐδὲν ὅτι καὶ λόγου ἄξιον, στρατιάν τ' ἀγείρειν ἐκ πάσης πόλεως σκηπτόμενοι κατέτριβον τοὺς χρόνους. ἀπογνόντες δὴ τὰς ἐκεῖθεν ἐπικουρίας, καὶ τὰς μὲν ἑαυτῶν δυνάμεις ὁρῶντες οὐθὲν ἰσχύος ἐκ τοῦ χρονισμοῦ προσλαμβανούσας, τὰς δὲ τῶν πολεμίων μακρῷ πλείους γιγνομένας, ἐπὶ τὰ ἔργα χωρεῖν ἔγνωσαν. ἐνθυμούμενοι δ' ὅτι πολὺ τῆς στρατιᾶς ἐστι τὸ δυσάγωγον καὶ ταῖς ἐπιταγαῖς τῶν ἡγεμόνων ἀπειθές, ὡς ἐν ἄλλαις τε πολλαῖς πείραις ἐδήλωσε καὶ τὰ τελευταῖα ἐν τῇ Καμπανικῇ παραχειμασίᾳ, ἀφ' ἧς εἰς τοσαύτην ἀπόνοιαν ἦλθον αὐτῶν τινες, ὥστε καὶ πόλεσιν ἐπιθέσθαι καὶ τὸν ὕπατον καταλιπεῖν καὶ κατὰ τῆς πατρίδος ὅπλα ἀναλαβεῖν, τούτους ᾤοντο δεῖν πρῶτον ἀποδεῖξαι σωφρονεστέρους, δεινότερον ποιήσαντες αὐτοῖς τὸν ἀπὸ τῶν ἡγεμόνων φόβον ἢ τὸν ἀπὸ τῶν πολεμίων κίνδυνον. ταῦτα διανοηθέντες ἐκκλησίαν συνῆγον, καὶ λέγει Μάλλιος· [ζήτει ἐν τῷ περὶ στρατηγημάτων καὶ δημηγοριῶν. περὶ τοῦ υἱοῦ Μαλλίου τοῦ μονομαχήσαντος.] Escor.

V. (4) *ἀλλὰ καὶ διότι τοὺς φίλους αὐτῶν Καμ-* 23
πανοὺς πολλὰ καὶ μεγάλα ἔβλαπτον. ἡ δὲ βουλὴ τῶν Ῥωμαίων, Καμπανῶν πολλάκις ἐμφανιζόντων καὶ ἀποδυρομένων κατὰ τῶν Νεαπολιτῶν, γνώμην ἐποιήσατο πρέσβεις πρὸς τοὺς Νεαπολίτας ἀποστεῖλαι τοὺς

ἀξιώσοντας αὐτοὺς μηδὲν εἰς τοὺς ὑπηκόους τῆς τῶν Ῥωμαίων ἡγεμονίας παρανομεῖν, ἀλλὰ καὶ διδόναι τὰ δίκαια καὶ λαμβάνειν [καὶ] εἴ τι διαφέρονται πρὸς ἀλλήλους, μὴ δι' ὅπλων, ἀλλὰ διὰ λόγων, σύμβολα ποιησαμέ-
2315 νους πρὸς αὐτούς, καὶ τὸ λοιπὸν εἰρήνην ἄγειν πρὸς ἅπαντας τοὺς περιοικοῦντας τὸ Τυρρηνικὸν πέλαγος, μήτ' αὐτοὺς ἔργα πράττοντας ἃ μὴ προσῆκεν Ἕλλησι, μήτε τοῖς πράττουσι συνεργοῦντας· μάλιστα δ' εἰ δύναιντο θεραπείαις τῶν δυνατῶν παρασκευάσοντας ἀποστῆναι μὲν ἀπὸ Σαυνιτῶν τὴν πόλιν, σφίσι δ' αὐτοῖς γενέσθαι φίλην. (5) Ἔτυχον δὲ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἀφιγμένοι πρὸς τοὺς Νεαπολίτας πρέσβεις ὑπὸ Ταραντίνων ἀποσταλέντες, ἄνδρες ἐπιφανεῖς καὶ πρόξενοι διὰ γένους τῶν Νεαπολιτῶν· καὶ ἕτεροι ὑπὸ Νωλάνων ὁμόρων ὄντων καὶ σφόδρα τοὺς Ἕλληνας ἀσπαζομένων, τἀναντία τοὺς Νεαπολίτας ἀξιώσοντες μήτε σύμβολα ποιεῖσθαι πρὸς τοὺς Ῥω-
2316 μαίους ἢ τοὺς ὑπηκόους αὐτῶν μήτε διαλύεσθαι τὴν πρὸς Σαυνίτας φιλίαν. ἐὰν δὲ ταύτην ποιήσωνται Ῥωμαῖοι τοῦ πολέμου τὴν πρόφασιν, μὴ ὀρρωδεῖν, μηδ' ὡς ἄμαχόν τινα τὴν ἰσχὺν αὐτῶν καταπεπλῆχθαι, ἀλλὰ μένειν γενναίως καὶ ὡς προσῆκεν Ἕλλησι πολεμεῖν, τῇ τ' οἰκείᾳ πιστεύοντας δυνάμει καὶ τῇ παρὰ Σαυνιτῶν ἀφιξομένῃ βοηθείᾳ, ναυτικήν τ' ἰσχὺν προσληψομένους ἔξω τῆς ἑαυτῶν, ἣν Ταραντῖνοι πέμψουσιν, ἐὰν ἄρα καὶ ταύτης δέωνται, πολλὴν καὶ ἀγαθήν. *Vrsin.*

VI. (6) Συναχθείσης οὖν τῆς βουλῆς καὶ πολλῶν ῥηθέντων ἐν αὐτῇ λόγων, οὓς αἵ τε πρεσβεῖαι διεξῆλθον καὶ οἱ συναγορεύοντες αὐταῖς, διέστησαν αἱ γνῶμαι τῶν συνέδρων· καὶ οἵ γε χαριέστατοι τὰ
2317 τῶν Ῥωμαίων ἔδοξαν φρονεῖν. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν

ἡμέραν οὐδὲν ἐξηνέχθη προβούλευμα, εἰς ἑτέραν δὲ
πάλιν ἕδραν ἀναβληθείσης τῆς περὶ τῶν πρεσβειῶν
διαγνώσεως, ἀφικόμενοι κατὰ πλῆθος εἰς τὴν Νεά-
πολιν Σαυνιτῶν οἱ δυνατώτατοι, καὶ τοὺς προεστη-
κότας τῶν κοινῶν θεραπείαις τισὶν οἰκειωσάμενοι,
πείθουσι τὴν βουλὴν ἐπὶ τῷ δήμῳ ποιῆσαι τὴν τοῦ
συμφέροντος αἵρεσιν. καὶ παρελθόντες εἰς τὴν ἐκ-
κλησίαν πρῶτον μὲν τὰς ἑαυτῶν εὐεργεσίας διεξῆε-
σαν, ἔπειτα τῆς Ῥωμαίων πόλεως πολλὰ κατηγόρουν,
ὡς ἀπίστου καὶ δολίου. τελευτῶντες δὲ τοῦ λόγου
θαυμαστὰς ἐποιοῦντο τοῖς Νεαπολίταις ὑποσχέσεις,
ἐὰν εἰς τὸν πόλεμον καταστῶσι, στρατιάν τε πέμψειν,
ὅσης ἂν δέωνται, τὴν φυλάξουσαν αὐτῶν τὰ τείχη,
καὶ ταῖς ναυσὶν ἐπιβάτας καὶ τὴν εἰρεσίαν ἅπασαν 2318
παρέξειν, οὐ μόνον καταγγέλλοντες τοῖς ἰδίοις στρα-
τεύμασιν ἀλλὰ κἀκείνοις ἁπάσας τὰς εἰς πόλεμον
δαπάνας ἐπιχορηγήσειν· ἀπωσαμένοις τε τὸ Ῥωμαϊ-
κὸν στράτευμα Κύμην τ' ἀνασώσειν, ἣν δευτέρᾳ
γενεᾷ πρότερον ἐξελάσαντες τοὺς Κυμαίους Καμπανοὶ
κατέσχον, καὶ συγκατάξειν ἐπὶ τὰ σφέτερα τοὺς πε-
ριόντας ἔτι Κυμαίων, οὓς οἱ Νεαπολῖται τῆς πατρί-
δος ἐκπεσόντας ὑπεδέξαντο καὶ πάντων ἐποιήσαντο
κοινωνοὺς τῶν ἰδίων ἀγαθῶν, χώραν τε προσθήσειν
τοῖς Νεαπολίταις ἐξ ἧς οἱ Καμπανοὶ κατεῖχον πάνυ
πολλήν. (7) Τῶν δὲ Νεαπολιτῶν ὅσον μὲν ἦν μέρος
εὔλογον καὶ πρὸ πολλοῦ δυνάμενον ὁρᾶν τὰς κατα- 2319
ληψομένας τὴν πόλιν ἐκ τοῦ πολέμου συμφοράς, εἰ-
ρήνην ἄγειν ἠξίου· τὸ δὲ φιλόκαινον καὶ τὰς ἐκ τῆς
ταραχῆς πλεονεξίας διῶκον ἐπὶ τὸν πόλεμον συνε-
λάμβανον, καταβοαί τ' ἀλλήλων ἐγίνοντο καὶ χειρο-
κρασίαι, καὶ προέβη τὸ νεῖκος εἰς λίθων βολάς, καὶ
τελευτῶντες ἐκράτησαν οἱ κακίους τῶν κρειττόνων,

ὥστε τοὺς πρέσβεις τῶν Ῥωμαίων ἀπράκτους ἀπελθεῖν. διὰ ταύτας τὰς αἰτίας ἡ βουλὴ τῶν Ῥωμαίων στρατιὰν ἐπὶ Νεαπολίτας ἀποστεῖλαι ἐβουλεύθη. *Vrsin.*

VII. (8) Ὅτι μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι Σαυνίτας στρατιὰν ἀγείρειν, τὸ μὲν πρῶτον πρέσβεις ἔπεμψαν·
2320 οἱ δὲ προχειρισθέντες ἐκ τῶν βουλευτῶν πρέσβεις ἐλθόντες ἐπὶ τοὺς προβούλους τῶν Σαυνιτῶν ἔλεξαν·

Ἀδικεῖτε, ἄνδρες Σαυνῖται, παραβαίνοντες τὰς ὁμολογίας, ἃς ἐποιήσασθε πρὸς ἡμᾶς, ὀνόματα μὲν ὑποδυόμενοι συμμάχων, ἔργα δὲ πράττοντες πολεμίων, πολλαῖς μὲν ἡττηθέντες ὑπὸ Ῥωμαίων μάχαις, δεήσει δὲ μεγάλῃ καταλυσάμενοι τὸν πόλεμον, καὶ τυχόντες εἰρήνης οἵας ἐβούλεσθε· τὰ δὲ τελευταῖα φίλοι γενέσθαι τῆς πόλεως ἡμῶν προθυμηθέντες καὶ σύμμαχοι καὶ τοὺς αὐτοὺς Ῥωμαίοις ὀμόσαντες ἕξειν ἐχθροὺς καὶ φίλους. (9) Ὧν ἁπάντων ἐπιλαθόμενοι, καὶ παρ' οὐδὲν ἡγησάμενοι τοὺς ὅρκους, ἐγκατελείπετε μὲν ἡμᾶς ἐν τῷ πρὸς Λατίνους πολέμῳ καὶ πρὸς Οὐολούσκους συστάντι, οὓς δι' ὑμᾶς ἐχθροὺς
2321 ἔχομεν, οὐ βουλόμενοι τοῦ καθ' ὑμῶν αὐτοῖς συνάρασθαι πολέμου. ἐν δὲ τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ Νεαπολίτας δεδιότας ἀναδεῖξαι τὸν καθ' ἡμῶν πόλεμον ἁπάσῃ σπουδῇ καὶ προθυμίᾳ χρώμενοι παρωρμήσατε, μᾶλλον δ' ἠναγκάσατε καὶ τὰς δαπάνας ἐπιχορηγεῖτε, καὶ τὴν πόλιν δι' ὑμῶν αὐτῶν ἔχετε. νῦν δὲ παρασκευάζεσθε στρατιὰν ἐκ παντὸς ἀγείροντες τόπου· πρόφασιν μὲν ἑτέραν ποιούμενοι, τὸ δ' ἀληθὲς ἐπὶ τοὺς ἡμετέρους ἐγνωκότες ἄγειν ἀποίκους· καὶ ἐπὶ ταύτας τὰς ἀδίκους πλεονεξίας Φουνδανοὺς παρακαλεῖτε καὶ Φορμιανοὺς καὶ ἄλλους τινάς, οἷς ἡμεῖς ἰσοπολιτείας μετεδώκαμεν. (10) Οὕτω δὲ φανερῶς καὶ ἀναισχύντως συγχεόντων ὑμῶν τὰ περὶ τῆς φιλίας

καὶ συμμαχίας ὅρκια, [ποιοῦντες] πρεσβείαν πρὸς ὑμᾶς ἐκρίναμεν ἀποστεῖλαι πρῶτον, καὶ μὴ πρότερον 2322 ἄρξαι τῶν ἔργων πρὶν ἢ πειραθῆναι τῶν λόγων. ἃ δὲ προκαλούμεθα ὑμᾶς, καὶ ὧν τυχόντες τὴν ἐπὶ τοῖς παρελθοῦσιν ὀργὴν ἀποπληρώσειν οἰόμεθα, ταῦτά ἐστι· πρῶτον μὲν ἀπάγειν ὑμᾶς ἀξιοῦμεν τὴν ἀποσταλεῖσαν Νεαπολίταις συμμαχίαν· ἔπειτα μηδεμίαν ἐκπέμπειν στρατιὰν κατὰ τῶν ἀποίκων τῶν ἡμετέρων, μηδὲ τοὺς ὑπηκόους ἐπὶ πάσας τὰς πλεονεξίας παρακαλεῖν· εἰ δὲ μὴ πᾶσιν ἔδοξεν ταῦτα ὑμῖν, ἀλλ᾽ ἀπὸ τῆς ἑαυτῶν γνώμης ἔπραττόν τινες, παραδοῦναι τοὺς ἄνδρας ἡμῖν ἐπὶ δίκην. τούτων τυχόντες ἀρκούμεθα, μὴ τυχόντες δὲ θεοὺς καὶ δαίμονας, οὓς ἐν ταῖς συνθήκαις ὠμόσατε, μαρτυρόμεθα, καὶ τοὺς εἰρηνοδίκας ἐπὶ τοῦτο ἄγοντες ἐληλύθαμεν. *Vrsin.*

VIII. (11) Τοιαῦτα τοῦ Ῥωμαίου λέξαντος, βουλευσάμενοι καθ᾽ αὑτοὺς οἱ πρόβουλοι τῶν Σαυνιτῶν τοιαύτην ἐξήνεγκαν ἀπόκρισιν·

Τοῦ μὲν ὀψισμοῦ τῆς ἐπὶ τὸν κατὰ Λατίνων πόλεμον 2323 συμμαχίας οὐ τὸ κοινὸν αἴτιον· ἐψηφισάμεθα γὰρ ἀποσταλῆναι τὴν στρατιὰν ὑμῖν· οἱ δὲ τὴν ἡγεμονίαν ἔχοντες αὐτῆς πλείονα χρόνον ἀναλώσαντες ἐν τῇ παρασκευῇ, καὶ ὑμεῖς αὐτοὶ θᾶττον ἐπειχθέντες ἐπὶ τὸν ἀγῶνα. τρισὶ γοῦν ἢ τέτταρσιν ἡμέραις ὕστερον τῆς μάχης οἱ πεμφθέντες ὑφ᾽ ἡμῶν ἀφίκοντο. περὶ δὲ τῆς Νεαπολιτῶν πόλεως, ἐν ᾗ τῶν ἡμετέρων τινές εἰσιν, τοσοῦτον δέομεν ἀδικεῖν ὑμᾶς, εἴ τινα τοῖς κινδυνεύουσι βοήθειαν εἰς σωτηρίαν κοινῇ παρεχόμεθα, ὥστ᾽ αὐτοὶ δοκοῦμεν ὑφ᾽ ὑμῶν ἀδικεῖσθαι μεγάλα. φίλην γὰρ ἡμῶν καὶ σύμμαχον οὖσαν τὴν 2324 πόλιν ταύτην οὐκ ἔναγχος, οὐδ᾽ ἀφ᾽ οὗ τὰς πρὸς ὑμᾶς ἐποιησάμεθα ὁμολογίας, ἀλλὰ δευτέρᾳ γενεᾷ

πρότερον διὰ πολλὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας, οὐθὲν ἀδικηθέντες ὑμεῖς κατεδουλώσασθε. (12) Οὐ μὴν οὐδὲ τούτῳ γε τῷ ἔργῳ τὸ κοινὸν ὑμᾶς τῶν Σαυνιτῶν ἠδίκησεν· ἰδιόξενοι δέ τινές εἰσιν, ὡς πυνθανόμεθα, καὶ φίλοι τῶν Νεαπολιτῶν, οἳ κατὰ τὴν ἑαυτῶν προαίρεσιν τῇ πόλει βοηθοῦντες, καί τινες καὶ δι' ἀπορίαν ἴσως βίου μισθοφόροι. διαφθείρειν δὲ τοὺς ὑπηκόους ὑμῶν οὐθὲν δεόμεθα· καὶ γὰρ ἄνευ Φουνδανῶν καὶ Φορμιανῶν ἱκανοὶ βοηθεῖν αὐτοῖς ἐσμεν, ἐὰν καταστῶμεν εἰς ἀνάγκην πολέμου. ἡ δὲ παρασκευὴ τῆς στρατιᾶς ἡμῶν ἐστιν οὐχ ὡς ἀφαιρησομένων τοὺς ὑμετέρους ἀποίκους τὰ ἴδια, ἀλλ' ὡς τὰ ἴδια ἑξόντων διὰ φυλακῆς. ἀντι-
2325 προκαλούμεθά τε ὑμᾶς, εἰ βούλεσθε τὰ δίκαια ποιεῖν, ἐκχωρεῖν Φρεγέλλης, ἣν πρὸ πολλοῦ πολέμῳ κρατησάντων ἡμῶν, ὅσπερ ἐστὶ νόμος κτήσεως δικαιότατος, ὑμεῖς οὐδενὶ δικαίῳ σφετερισάμενοι δεύτερον ἔτος ἤδη κατέχετε. τούτων ἡμεῖς τυχόντες, οὐδὲν ὑποληψόμεθα ἀδικεῖσθαι. *Vrsin.*

VIIII. (13) Μετὰ τοῦτο παραλαβὼν τὸν λόγον ὁ τῶν Ῥωμαίων εἰρηνοδίκης εἶπεν·

Οὐθὲν ἔτι τὸ κωλῦσον ἐστίν, οὕτω φανερῶς ἀνῃρηκότων ὑμῶν τὰ περὶ τῆς εἰρήνης ὅρκια . . . . βουλεύεσθαι τὸν Ῥωμαίων δῆμον αἰτιάσασθαι. πάντα γὰρ αὐτῷ πέπρακται κατὰ τοὺς ἱερούς τε καὶ πα-
2326 τρικοὺς νόμους, τά τε πρὸς τοὺς θεοὺς ὅσια καὶ τὰ πρὸς ἀνθρώπους δίκαια. δικασταὶ δὲ τῶν μενόντων ἐν ταῖς ὁμολογίαις οἱ λαχόντες πολέμους ἐπισκοπεῖν ἔσονται θεοί.

Μέλλων δ' ἀπιέναι τήν τε περιβολὴν κατὰ κεφαλῆς εἵλκυσεν καὶ τὰς χεῖρας ἀνασχὼν εἰς τὸν οὐρανόν, ὡς ἔθος ἐστίν, ἀρὰς ἐποιήσατο τοῖς θεοῖς· εἰ

μὲν ἄδικα πάσχουσα ὑπὸ Σαυνιτῶν ἡ Ῥωμαίων πόλις καὶ μὴ δυναμένη μετὰ λόγου καὶ κρίσεως διαλῦσαι τὰς διαφορὰς ἐπὶ τὰ ἔργα χωρήσει, βουλάς τ᾽ ἀγαθὰς αὐτῇ θεοὺς καὶ δαίμονας ἐπὶ νοῦν ἄγειν, καὶ πράξεις ἐν πᾶσι διδόναι τοῖς πολέμοις εὐτυχεῖς· εἰ δ᾽ αὐτή τι πλημμελοῦσα περὶ τὰ τῆς φιλίας ὅρκια 2327 *προφάσεις κατασκευάζεται τῆς ἔχθρας οὐκ ἀληθεῖς, μήτε βουλὰς ὀρθοῦν αὐτούς, μήτε πράξεις. Vrsin.*

X. (14) *Ὡς δὲ διελύθησαν ἐκ τοῦ συλλόγου, καὶ τὰ λεχθέντα ἐδήλωσαν ἑκάτεροι ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι, τὰς ἐναντίας ἔσχον ὑπὲρ ἀλλήλων δόξας ἀμφότεροι· Σαυνῖται μὲν βραδύτερα τὰ τῶν Ῥωμαίων ἔσεσθαι νομίζοντες, ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἐστὶ ποιεῖν, ὅτε μέλλοιεν ἄρχειν πολέμου· Ῥωμαῖοι δ᾽ ἐν ὀλίγῳ τὴν Σαυνιτῶν στρατιὰν ἥξειν ἐπὶ τοὺς αὐτῶν ἀποίκους Φρεγελλάνους οἰόμενοι. ἔπειτ᾽ αὐτοῖς τὰ εἰκότα παθεῖν συνέβη. οἱ μὲν γὰρ παρασκευαζόμενοι καὶ μέλλοντες ἀπώλεσαν τοὺς καιροὺς τῶν πράξεων· Ῥωμαῖοι δ᾽ ἐν ἑτοίμῳ πᾶσαν ἔχοντες παρασκευήν,* 2328 *ἅμα τῷ πυθέσθαι τὰς ἀποκρίσεις τόν τε πόλεμον ἐψηφίσαντο καὶ τοὺς ὑπάτους ἀπέστειλαν ἀμφοτέρους· καὶ πρὶν αἰσθέσθαι τοὺς πολεμίους τὴν ἔξοδον, ἥ τε νεωστὶ καταγραφεῖσα καὶ ἡ περὶ Οὐολούσκους χειμάζουσα δύναμις, ἣν εἶχε Κορνήλιος, ἐντὸς ἦν τῶν Σαυνιτικῶν ὅρων. Vrsin.*

Φοῦνδα — πόλις Ἰταλίας οἱ πολῖται Φουνδανοί, Διονύσιος ιε´ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. Steph. Byz. s. v. Φοῦνδα.

Καλησία, πόλις Αὐσονική. Διονύσιος ιε´ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. τὸ ἐθνικὸν Καλησιανός, ὡς αὐτός. Steph. Byz. s. v. Καλησία.

EXCERPTA

EX

LIBRO XVI.

I. Ῥωμαίων εἰς τὸν κατὰ Σαυνιτῶν τελευταῖον πόλεμον ἐξιόντων, κεραυνὸς εἰς τὸν ἐπιφανέστατον τόπον κατασκήψας πέντε μὲν στρατιώτας ἀπέκτεινε, δύο δὲ σημείας διέφθειρεν, ὅπλα δὲ πολλὰ τὰ μὲν κατέκαυσε, τὰ δ᾽ ἐσπίλωσε. κεραυνοὶ δὲ κατήχθησαν τοῖς ἔργοις ἔτυμον φέροντες τοὔνομα· κεραϊσμοὶ γάρ τινές εἰσι καὶ μεταβολαὶ τῶν ὑποκειμένων, εἰς τἀναντία τρέποντες τὰς ἀνθρωπίνας τύχας. αὐτὸ γὰρ πρῶτον ἠνάγκασται τὴν ἰδίαν ἀλλάξαι φύσιν τὸ κεραύνιον πῦρ, εἴτε δὴ αἴθριον εἴτε μετάρσιόν ἐστι, κάτω φερόμενον· οὐ γὰρ δὴ αὐτῷ θέμις ἐπὶ γῆν βρίθειν κατὰ τὴν ἑαυτοῦ φύσιν, ἀλλ᾽ ἀπὸ γῆς ἄνω μετεωροπολεῖν· ἐν αἰθέρι γὰρ αἱ πηγαὶ τοῦ θείου πυρός. (2) Δηλοῖ δὲ καὶ τὸ πῦρ τὸ παρ᾽ ἡμῖν, εἴτε Προμηθέως εἴτε Ἡφαίστου δῶρόν ἐστιν, ὁπότε λύσειεν τοὺς δεσμούς, ἐν οἷς ἠνάγκασται μένειν, δι᾽ ἀέρος ἄνω φερόμενον ἐπὶ τὸ συγγενὲς ἐκεῖνο καὶ πᾶσαν ἐν κύκλῳ περιειληφὸς τὴν τοῦ κόσμου φύσιν. τὸ δὴ θεῖον ἐκεῖνο καὶ χωρισθὲν ὕλης φθαρτῆς δι᾽ ἀέρος ὀχούμενον, ὅταν ἐπὶ τὴν γῆν καταφέρηται,

βιασθὲν ὑπ' ἀνάγκης τινὸς ἰσχυρᾶς μεταβολὰς μαντεύεται καὶ τροπὰς ἐπὶ τοὔμπαλιν. (3) Τοιούτου γοῦν τινος γενομένου καὶ τότε καταφρονήσαντες οἱ Ῥωμαῖοι, καὶ ὑπὸ Ποντίου τοῦ Σαυνίτου κατακλεισθέντες εἰς ἀνεξόδους δυσχωρίας, μέλλοντες ἤδη τῷ λίμῳ διαφθείρεσθαι παρέδωκαν ἑαυτοὺς τοῖς πολεμίοις ἀμφὶ τοὺς τετρακισμυρίους ὄντες· καὶ καταλείψαντες τά τε ὅπλα καὶ τὰ χρήματα τὸν ζυγὸν ἅπαντες ὑπῆλθον· τοῦτο δὲ σημεῖον τῶν ὑπὸ χεῖρας ἐλθόντων ἐστί. μετ' οὐ πολὺ δὲ τὰ αὐτὰ καὶ ὁ Πόντιος ὑπὸ Ῥωμαίων ἔπαθε, καὶ τὸν ζυγὸν ὑπῆλθον καὶ αὐτὸς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ. *Ambr.*

II. (4) Ἓν τοῦτό σε ἀξιοῦμεν ἤδη κείμενοι καὶ τὸ μηδὲν ὄντες, μηδεμίαν ἡμῶν ὕβριν προσθεῖναι ταῖς συμφοραῖς, μηδὲ βαρεῖ ποδὶ ταῖς ἀθλίαις ἐπεμβῆναι τύχαις.

Οὐκ οἶδας, ὅτι πολλοὶ μὲν τῶν ἡμετέρων παῖδας ἐν τοῖς πολέμοις ἀπολωλέκασι, πολλοὶ δὲ ἀδελφούς, πολλοὶ δὲ φίλους; οἷς ἅπασι πῶς ἄκρατον νομίζεις ἐπὶ τῶν σπλάγχνων ἀνθήσειν τὴν χολήν, ἐὰν κωλύῃ τις αὐτοὺς τοσαύταις ψυχαῖς πολεμίων τιμῆσαι τοὺς κατὰ γῆν, αἵπερ μόναι τῶν κατοιχομένων δοκοῦσιν εἶναι τιμαί; (5) Φέρε δὴ κἂν τοῦτο πεισθέντες ἢ βιασθέντες ἢ ὅ τι δή ποτε παθόντες εἴξωσί γε καὶ ζῆν αὐτοὺς ἐάσωσιν, ἆρ' ἔτι σοι δοκοῦσι καὶ τὰ χρήματα αὐτοὺς ἐάσειν ἔχειν, καὶ μηδεμιᾶς πειραθέντας ἀσχημοσύνης, ὥσπερ ἥρωάς τινας ἐπ' ἀγαθῷ τῆσδε τῆς γῆς φανέντας, ὁπότε δόξειεν αὐτοῖς, ἀπελθεῖν, ἀλλ' οὐχ ὥσπερ θηρία περιχυθέντας διασπάσεσθαι ταῦτα λέγειν ἐπιβαλόμενον ἐμέ; οὐχ ὁρᾷς ὅτι καὶ τοὺς κυνηγοὺς οἱ θηρευταὶ κύνες, ὅταν ἁλῷ θηρίον κατακλεισθὲν ὑπ' αὐτῶν εἰς

τὰ λίνα, περιίστανται τὴν ἐπιβάλλουσαν μοῖραν ἀπαιτοῦντες τῆς ἄγρας, καὶ ἐὰν μὴ μεταλάβωσιν εὐθὺς αἵματος ἢ σπλάγχνων, ἀρράζουσιν ἑπόμενοι καὶ σπαράττουσι τὸν κυνηγόν, καὶ οὔτε διωκόμενοι οὔτε παιόμενοι ἀπείργονται; *Ambr.*

III. (6) *Δι' ἡμέρας μὲν ὅλης ἀγωνιζόμενοι τῶν πόνων ἠνείχοντο· ἀφελομένου δὲ τοῦ σκότους τὴν γνῶσιν τῶν τε οἰκείων καὶ τῶν πολεμίων, πρὸς τοὺς οἰκείους χάρακας ἀπηλλάγησαν.*

Ἄππιος Κλαύδιος περὶ τὰς θυσίας παρανομήσας τι ἀπετυφλώθη καὶ Καῖκος προσηγορεύθη· οὕτω γὰρ τοὺς τυφλοὺς Ῥωμαῖοι καλοῦσιν.

Αἱ ἐντοίχιοι γραφαὶ ταῖς τε γραμμαῖς πάνυ ἀκριβεῖς ἦσαν καὶ τοῖς μίγμασιν ἡδεῖαι, παντὸς ἀπηλλαγμένον ἔχουσαι τοῦ καλουμένου ῥωποῦ τὸ ἀνθηρόν.

Τὰς νουμηνίας οἱ Ῥωμαῖοι καλάνδας καλοῦσι, τὰς δὲ διχοτόμους νόννας, τὰς δὲ πανσελήνους εἰδούς. Ambr.

(7) *Τοῖς δὲ κατὰ μέσην ἀγωνιζομένοις τὴν φάλαγγα ἀσπάθητον οὖσαν καὶ λαγαρὰν οἱ τῇδε τεταγμένοι συμπεσόντες ἐξέωσαν τῆς στάσεως.*

Ὁ κατοικίδιός τε καὶ κλινοπετὴς πόλεμος ἐμάραινε τὴν ἀκμὴν τῆς πόλεως.

Ἄνδρας ἱεραγωγοὺς καὶ ἱεραφορίᾳ τετιμημένους.

Φορᾶς ἀβούλου μεστὸς ἀνὴρ καὶ μανικὸν ἔχων τὸ τολμηρόν, ἰδιογνωμονήσας καὶ ἐφ' ἑαυτῷ ποιήσας πάντα τοῦ πολέμου.

Ἔπειτα σὺ τολμᾷς κατηγορεῖν τῆς τύχης ὡς κακῶς τοῖς πράγμασι χρησαμένης, ἐπὶ περιτραπέντος αὐτὴν καθίσας σκάφους; οὕτω σκαιὸς ἦν.

Μέλη τὰ μὲν θεραπείας ἔτι δεόμενα, τὰ δὲ τὰς οὐλὰς ἐφέλκοντα νεωστί. Ambr,

IIII. (8) Ὅτι, φησὶ Διονύσιος, μιᾶς ἔτι μνησθήσομαι 2336 πράξεως πολιτικῆς ἀξίας ὑπὸ πάντων ἀνθρώπων ἐπαινεῖσθαι, ἐξ ἧς καταφανὲς ἔσται τοῖς Ἕλλησιν, ὅσον ἦν τὸ μισοπόνηρον ἐν τῇ Ῥώμῃ τότε καὶ τὸ πρὸς τοὺς παραβαίνοντας τὰ κοινὰ νόμιμα τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως ἀμείλικτον. Γάιος Λαιτώριος Μέργος ἐπίκλησιν ἐπιφανὴς κατὰ γένος, καὶ κατὰ τὰς 2337 πολεμικὰς πράξεις οὐκ ἀγεννής, ἑνὸς τῶν ταγμάτων χιλίαρχος ἀποδειχθεὶς ἐν τῷ Σαυνιτικῷ πολέμῳ, νεανίαν τινὰ τῶν ὁμοσκήνων διαφέροντα τὴν ὄψιν ἑτέρων μέχρι μέν τινος ἔπειθεν ἑαυτῷ χαρίσασθαι τὴν τοῦ σώματος ὥραν ἑκόντα. ὡς δ' οὔτε δωρεαῖς οὔτ' ἄλλῃ φιλανθρωπίᾳ τὸ μειράκιον ἡλίσκετο, κατέχειν τὴν ἐπιθυμίαν ἀδύνατος ὢν βίαν προσφέρειν ἐπεβάλετο. περιβοήτου δὲ τῆς ἀκοσμίας τοῦ ἀνδρὸς ἅπασι τοῖς ἐπὶ [τοῦ] στρατοπέδου γενομένης, κοινὸν ἀδίκημα τῆς πόλεως εἶναι νομίσαντες οἱ δήμαρχοι γραφὴν ἀποφέρουσι κατ' αὐτοῦ δημοσίᾳ, καὶ ὁ δῆμος ἁπάσαις ταῖς ψήφοις τοῦ ἀνδρὸς κατέγνω τίμημα δίκης ὁρίσας θάνατον, οὐκ ἀξιῶν εἰς ἐλεύθερα σώματα καὶ προπολεμοῦντα τῆς τῶν ἄλλων ἐλευθερίας τοὺς ἐν ταῖς ἄλλαις ὄντας ἀρχαῖς ὑβρίζειν τὰς ἀνηκέστους καὶ παρὰ φύσιν τοῖς ἄρρεσιν ὕβρεις. *Vales. et Suid. s. v.* Γάιος Λαιτώριος.

V. (9) Ἔτι δὲ τούτου θαυμασιώτερον ἔπραξαν οὐ πολλοῖς πρότερον χρόνοις, καίτοι περὶ δοῦλον σῶμα γενομένης τῆς ὕβρεως. ἑνὸς γὰρ τῶν παρα- 2338

Ῥωμαῖός τις Γάιος Λαιτώριος, νεανίαν τινὰ τῶν ὁμοσκήνων ἔπειθεν ἑαυτῷ χαρίσασθαι τὴν τοῦ σώματος ὥραν· ὡς δ' οὔτε δωρεαῖς οὔτε φιλανθρωπίᾳ τὸ μειράκιον ἡλίσκετο, περιβοήτου τῆς ἀκοσμίας τοῦ ἀνδρὸς γενομένης, οἱ δήμαρχοι θάνατον αὐτοῦ κατέγνωσαν. *Ambr.*

δόντων Σαυνίταις τὸ στρατόπεδον χιλιάρχων καὶ ὑπὸ ζυγὸν ὑπελθόντων, Ποπλίου υἱός, ὡς ἐν πολλῇ καταλειφθεὶς πενίᾳ δάνειον ἠναγκάσθη λαβεῖν εἰς τὴν ταφὴν τοῦ πατρός, ὡς ἐρανισθησόμενος ὑπὸ τῶν συγγενῶν. διαψευσθεὶς δὲ τῆς ἐλπίδος ἀπήχθη πρὸς τὸ χρέος τῆς προθεσμίας διελθούσης, κομιδῇ νέος ὢν καὶ τῇ ὄψει ὡραῖος. οὗτος τὰ μὲν ἄλλα ὑπηρετῶν, ὅσα δούλους δεσπόταις νόμος ἦν, ἠνείχετο, τὴν δὲ τοῦ σώματος ὥραν χαρίσασθαι κελευόμενος ἠγανάκτει καὶ μέχρι παντὸς ἀπεμάχετο. πολλὰς δὲ διὰ τοῦτο μαστίγων λαβὼν πληγὰς ἐξέδραμεν εἰς τὴν ἀγοράν, καὶ στὰς ἐπὶ μετεώρου τινός, ἔνθα πολλοὺς ἔμελλε τῆς ὕβρεως λήψεσθαι μάρτυρας, τήν τ' ἀκολασίαν τοῦ δανειστοῦ διηγήσατο καὶ τῶν μαστίγων
2339 τοὺς μώλωπας ὑπέδειξεν. ἀγανακτήσαντος δὲ τοῦ δήμου καὶ δημοσίας ὀργῆς ἄξιον ἡγησαμένου τὸ πρᾶγμα, ἀχθεὶς εἰς τὴν κρίσιν, κατηγορούντων τὴν εἰσαγγελίαν τῶν δημάρχων, ὦφλε θανάτου δίκην. καὶ δι' ἐκεῖνο τὸ πάθος ἅπαντες οἱ δουλωθέντες πρὸς τὰ χρέα Ῥωμαῖοι νόμῳ κυρωθέντι τὴν ἀρχαίαν ἐλευθερίαν ἐκομίσαντο. *Vales. et Suidas s. v.* Γάιος Λαιτώριος.

VI. (10) Ἀξιῶν τὴν βουλὴν ὑπὲρ τῶν ἀπόρων καὶ κατάχρεων.

Αἱ νεοσφαγεῖς τῶν θυομένων σάρκες μέχρι τούτου διατελοῦσι τρέμουσαί τε καὶ παλλόμεναι, ἕως ἂν τὸ κατεχόμενον ἐν αὐταῖς συγγενὲς πνεῦμα βιασάμενον τοὺς πόρους ἅπαν ἐξαναλωθῇ. τοῦτο σεισμῶν αἴτιον γίνεται καὶ τῇ Ῥώμῃ· ἅπασα γὰρ ὑπόνομος οὖσα μεγάλαις καὶ συνεχέσι τάφροις, δι' ὧν ὀχετεύεται τὸ ὕδωρ, καὶ πολλὰς ἀναπνοὰς στομάτων ἔχουσα, διὰ τούτων ἀνίησι τὸ κατακλεισθὲν πνεῦμα ἐν αὐτῇ·

καὶ τοῦτο ἐστίν, ὃ κραδαίνει τε αὐτὴν καὶ σπαράττει τὴν ἐπιφάνειαν, ὅταν πολὺ καὶ βίαιον ἐναποληφθὲν εἴργηται. *Ambr.*

Φρέγελλα πόλις Ἰταλίας, ἣ τὸ μὲν ἀρχαῖον ἦν Ὀπικῶν, ἔπειτα Οὐολούσκων ἐγένετο. τὸ ἐθνικὸν Φρεγελλανός, ὡς Διονύσιος ιϛ´ τῆς Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας καὶ ἄλλοι πλεῖστοι. *Steph. Byz.* (*Liv.* VIII, 22.)

Μέντυρνα πόλις ἐν Ἰταλίᾳ Σαυνιτῶν. Διονύσιος ἑκκαιδεκάτῳ. τὸ ἐθνικὸν Μεντυρναῖος. *Steph. Byz.* (*Liv.* IX, 25.)

Αἴκαλον φρούριον τῆς Ἰταλίας. Διονύσιος ιϛ´ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.*

Ἰάποδες ἔθνος Κελτικὸν πρὸς τῇ Ἰλλυρίᾳ. Διονύσιος ἑκκαιδεκάτῳ (?). *Steph. Byz.*

EXCERPTA

EX

LIBRIS XVII et XVIII.

2328 I. (16, 11) Ὅτι ὁ Σαυνιτικὸς αὖθις ἀνερριπίσθη πό-
λεμος, ἀπὸ τοιαύτης αἰτίας ἀρξάμενος. μετὰ τὰς σπον-
δάς, ἃς ἐποιήσαντο πρὸς τὴν Ῥωμαίων πόλιν οἱ Σαυνῖ-
ται, χρόνον ὀλίγον ἐπισχόντες ἐπὶ Λευκανοὺς ἐστρά-
τευσαν ὁμόρους ὄντας, ἐκ παλαιᾶς τινος ὁρμηθέντες
ἔχθρας. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ταῖς ἑαυτῶν δυνάμεσι
πιστεύοντες οἱ Λευκανοὶ τόν [τε] πόλεμον διέφερον·
2329 ἐν ἁπάσαις δὲ μειονεκτοῦντες ταῖς μάχαις, καὶ πολλὰ
μὲν ἀπολωλεκότες ἤδη χωρία, κινδυνεύοντες δὲ
καὶ περὶ τῆς ἄλλης γῆς ἁπάσης, ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων
βοήθειαν ἠναγκάσθησαν καταφυγεῖν· συνειδότες μὲν
ἑαυτοῖς ἐψευσμένοις ἃς πρότερον ἐποιήσαντο πρὸς
αὐτοὺς ὁμολογίας, ἐν αἷς φιλίαν συνέθεντο καὶ συμ-
μαχίαν, οὐκ ἀπογνόντες δὲ συμπείσειν αὐτούς, ἐὰν
ἐξ ἁπάσης τῆς πόλεως τοὺς ἐπιφανεστάτους παῖδας
ὁμήρους ἅμα τοῖς πρεσβευταῖς ἀποστείλωσιν· ὅπερ
καὶ συνέβη. (12) ἀφικομένων γὰρ τῶν πρέσβεων
καὶ πολλὰ δεομένων, ἥ τε βουλὴ δέχεσθαι τὰ ὅμηρα
ἔγνω καὶ τὴν φιλίαν πρὸς τοὺς Λευκανοὺς συνάψαι,
καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε τὰ ψηφισθέντα ὑπ' αὐτῆς.
γενομένων δὲ τῶν συνθηκῶν πρὸς τοὺς ἀποσταλέν-
τας ὑπὸ τῶν Λευκανῶν ἄνδρας, οἱ πρεσβύτατοι Ῥω-
2330 μαίων καὶ τιμιώτατοι προχειρισθέντες ὑπὸ τῆς βου-

λῆς πρέσβεις ἀπεστάλησαν ἐπὶ τὴν κοινὴν τῶν
Σαυνιτῶν σύνοδον, δηλώσοντες αὐτοῖς, ὅτι φίλοι
καὶ σύμμαχοι Ῥωμαίων εἰσὶ Λευκανοί, καὶ τήν τε
χώραν ἣν ἔτυχον αὐτῶν ἀφῃρημένοι παρακαλέσοντες
ἀποδιδόναι, καὶ μηδὲν ἔτι πράττειν ἔργον πολεμίων,
ὡς οὐ περιοψομένης τῆς Ῥωμαίων πόλεως τοὺς ἑαυτῆς
ἱκέτας ἐξελαυνομένους ἐκ τῆς σφετέρας. Ursin.

II. (16, 13) *Οἱ δὲ Σαυνῖται τῶν πρέσβεων ἀκού-*
σαντες ἠγανάκτουν τε καὶ ἀπελογοῦντο· πρῶτον μὲν
οὐκ ἐπὶ τούτῳ πεποιῆσθαι λέγοντες τὰς περὶ τῆς εἰ-
ρήνης ὁμολογίας, ἐπὶ τῷ μηδένα μήτε φίλον ἴδιον
ἡγήσασθαι μήτ' ἐχθρόν, ἐὰν μὴ Ῥωμαῖοι κελεύωσιν·
ἔπειθ' ὅτι Λευκανοὺς οὐ πρότερον ἐποιήσαντο Ῥω-
μαῖοι φίλους, ἀλλ' ἔναγχος πολεμίους ἤδη σφῶν ὄν-
τας, πρόφασιν οὔτε δικαίαν οὔτ' εὐσχήμονα κατα- 233
σκευαζόμενοι τοῦ καταλῦσαι τὰς σπονδάς. ἀποκρι-
νομένων δὲ τῶν Ῥωμαίων, ὅτι τοὺς ὑπηκόους
ὁμολογήσαντας ἔσεσθαι καὶ ἐπὶ τούτῳ τῷ δικαίῳ
καταλυσαμένους τὸν πόλεμον ἅπαντα πείθεσθαι δεῖ
τοῖς παρειληφόσι τὴν ἀρχήν· καὶ εἰ μὴ ποιήσουσι τὰ
κελευόμενα ἑκόντες, πολεμήσειν αὐτοῖς ἀπειλούντων.
ἀφόρητον ἡγησάμενοι τὴν αὐθάδειαν τῆς πόλεως οἱ
Σαυνῖται, τοὺς μὲν πρέσβεις ἐκέλευσαν ἀπαλλάττε-
σθαι παραχρῆμα· αὐτοὶ δὲ τὰ πρὸς τὸν πόλεμον ἐψηφί-
σαντο κοινῇ τε καὶ κατὰ πόλεις εὐτρεπίζεσθαι. Ursin.

III. (16, 14) *Ἡ μὲν δὴ φανερὰ τοῦ Σαυνιτικοῦ*
πολέμου πρόφασις καὶ πρὸς πάαντας εὐπρεπὴς λέγε-
σθαι ἡ Λευκανῶν ἐγένετο βοήθεια τῶν καταφυγόντων
ἐπ' αὐτούς· ὡς κοινὸν δή τι τοῦτο καὶ πάτριον ἔθος
τῇ Ῥωμαίων πόλει τοῖς ἀδικουμένοις καὶ καταφεύ- 23
γουσιν ἐπ' αὐτὴν βοηθεῖν· ἡ δ' ἀφανὴς καὶ μᾶλλον
αὐτοὺς ἀναγκάζουσα διαλύεσθαι τὴν φιλίαν ἡ τῶν

Σαυνιτῶν ἰσχὺς πολλή τ' ἤδη γεγονυῖα καὶ ἔτι πλείων γενήσεσθαι νομιζομένη, εἰ Λευκανῶν τε χειρωθέντων καὶ δι' αὐτοὺς τῶν προσοίκων, ἀκολουθήσειν ἔμελλε τά [τε] βαρβαρικὰ ἔθνη τὰ προσεχῆ τούτοις. αἵ τε δὴ σπονδαὶ μετὰ τὴν ἄφιξιν τῶν πρεσβευτῶν εὐθὺς ἐλέλυντο, καὶ στρατιαὶ δύο κατεγράφοντο. *Ursin.*

IV. (16, 15) Ὅτι Ποστόμιος ὁ ὕπατος τῆς διαδοχῆς αὐτοῦ ἐγγισάσης μέγα φρονῶν ἐφ' ἑαυτῷ τῆς τ' ἀξιώ-
2333 σεως τοῦ γένους ἕνεκα, καὶ ὅτι διτταῖς ὑπατείαις ἤδη κεκοσμημένος ἦν. ἐφ' οἷς ὁ συνύπατος αὐτοῦ, καταρχὰς μὲν ὡς ἀπελαυνόμενος τῶν ἴσων ἠγανάκτει, καὶ πολλάκις ἐπὶ τῆς βουλῆς τὰ δίκαια πρὸς αὐτὸν ἔλεγεν· ὕστερον δὲ συγγνοὺς ἑαυτῷ κατά τε προγόνων ὄγκον καὶ φίλων πλῆθος καὶ κατὰ τὰς ἄλλας δυνάμεις ἐλάττονα ἰσχὺν ἔχοντι· δημοτικὸς γὰρ ἦν καὶ τῶν νεωστὶ παρελθόντων εἰς γνῶσιν· εἶξέ τε τῷ συνυπάτῳ καὶ παρεχώρησε τοῦ Σαυνιτικοῦ πολέμου τὴν ἡγεμονίαν. πρῶτον μὲν δὴ τοῦτο διαβολὴν ἤνεγκε τῷ Ποστομίῳ κατὰ πολλὴν αὐθάδειαν γενόμενον· καὶ ἕτερον αὖθις ἐπὶ τούτῳ βαρύτερον ἢ ὡς κατὰ Ῥωμαῖον ἡγεμόνα. ἐπιλεξάμενος γὰρ ἐκ τῆς ἑαυτοῦ στρατιᾶς περὶ τοὺς δισχιλίους ἄνδρας εἰς τοὺς ἰδίους ἀγροὺς ἀπήγαγεν· οἷς ἄνευ σιδήρου δρυμὸν ἐκέλευσε κείρειν. καὶ μέχρι πολλοῦ κατέσχε τοὺς ἄνδρας ἐν τοῖς ἀγροῖς θητῶν ἔργα καὶ θεραπόντων ὑπηρετοῦντας. (16) Τοσαύτῃ δὲ αὐθαδείᾳ πρὸ τῆς ἐξόδου χρησάμενος, ἔτι βαρύτερος ἐφάνη τοῖς κατ' αὐτὴν τὴν στρατείαν ἐπιτελεσθεῖσι, καὶ παρέσχε τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ μίσους ἀφορμὰς δικαίου. τὸν γὰρ ὑπατεύσαντα τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ
2334 καὶ νικήσαντα Σαυνιτῶν τοὺς καλουμένους Πέντρους Φάβιον τῆς βουλῆς ψηφισαμένης μένειν ἐπὶ τοῦ

στρατοπέδου, καὶ τὴν ἀνθύπατον ἀρχὴν ἔχοντα πρὸς ταύτην τὴν μερίδα τῶν Σαυνιτῶν πολεμεῖν, γράμματα πέμπων ἐκχωρεῖν ἐκ τῆς Σαυνίτιδος ἐκέλευσεν, ὡς αὐτῷ μόνῳ τῆς ἡγεμονίας προσηκούσης. καὶ πρὸς τοὺς ἀποσταλέντας ὑπὸ τῶν συνέδρων πρέσβεις, ἀξιοῦντας μὴ κωλύειν τὸν ἀνθύπατον ἐπὶ τοῦ στρατοπέδου μένειν, μηδ' ἀντιπράττειν τοῖς ἐψηφισμένοις ὑφ' ἑαυτῶν, ὑπερηφάνους καὶ τυραννικὰς ἔδωκεν ἀποκρίσεις· οὐ τὴν βουλὴν ἄρχειν ἑαυτοῦ φήσας, ἕως ἐστὶν ὕπατος, ἀλλ' αὐτὸν τῆς βουλῆς. ἀπολύσας δὲ τοὺς πρέσβεις ἐπὶ τὸν Φάβιον ἦγε τὴν στρατιάν, ὡς εἰ μὴ βούλοιτο ἑκὼν παραχωρεῖν τῆς ἀρχῆς τοῖς ὅπλοις προσαναγκάσων. καταλαβὼν δὲ τοῦτον Κομινίῳ πόλει προσκαθήμενον, ἐξήλασεν ἐκ τοῦ στρατοπέδου κατὰ πολλὴν ὑπεροψίαν τῶν ἀρχαίων ἐθισμῶν καὶ δεινὴν ὑπερηφανίαν. Φάβιος μὲν αὐτοῦ εἴξας τῇ μανίᾳ τῆς ἡγεμονίας ἐξεχώρησεν. Vales. et Suidas s. v. *Ποστόμιος.*

V. (16, 17) *Ὅτι ὁ αὐτὸς Ποστόμιος πρῶτον μὲν τὸ* 2335
Κομίνιον ἐκ πολιορκίας παραλαμβάνει, χρόνον οὐ πολὺν ἐν ταῖς προσβολαῖς διατρίψας· ἔπειτα Οὐενουσίαν πολυάνθρωπον καὶ ἄλλας πόλεις πλείστας ὅσας· ἐξ ὧν μύριοι μὲν ἐσφάγησαν, ἑξακισχίλιοι δὲ καὶ διακόσιοι τὰ ὅπλα παρέδοσαν. ταῦτα διαπραξάμενος οὐχ ὅπως χάριτος ἢ τιμῆς τινος ἠξιώθη παρὰ τῆς βουλῆς, ἀλλὰ καὶ τὴν προϋπάρχουσαν ἀξίωσιν ἀπέβαλεν. ἀποστελλομένων γὰρ εἰς μίαν τῶν ἁλουσῶν ὑπ' ἐκείνου πόλεων, τὴν καλουμένην Οὐενουσίαν, δισμυρίων ἐποίκων, ἕτεροι τῆς ἀποικίας ᾑρέθησαν ἡγεμόνες· ὁ δὲ τὴν πόλιν ἐξελὼν καὶ τὴν γνώμην τῆς ἀποστολῆς τῶν κληρούχων εἰσηγησάμενος, οὐδὲ ταύτης ἄξιος ἐφάνη τῆς τιμῆς. (18) *Εἰ*

μὲν οὖν σώφρονι λογισμῷ τὰ συμβάντα ἤνεγκε, καὶ τὸ χαλεπὸν τοῦ συνεδρίου λόγων τε καὶ ἔργων χρηστῶν θεραπείαις ἐπράυνεν, οὐδεμιᾶς ἂν ἔτι συμφορᾶς εἰς ἀτιμίαν φερούσης ἐπειράθη. νῦν δ' ἀγανα-
2336 κτῶν καὶ ἀντιχαλεπαίνων τάς τ' ὠφελείας ἃς ἔλαβεν ἐκ τῶν πολεμίων ἁπάσας τοῖς στρατιώταις ἐχαρίσατο, καὶ πρὶν ἀποσταλῆναι τὸν διάδοχον τῆς ἀρχῆς ἀπέλυσεν ἀπὸ τῶν σημείων τὰς δυνάμεις, καὶ τελευτῶν ὃν οὔτε ἡ βουλὴ οὔτε ὁ δῆμος συνεχώρησεν αὐτῷ θρίαμβον ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γνώμης κατήγαγεν. ἐφ' οἷς ἅπασιν ἔτι μείζονος ἐξ ἁπάντων μίσους ἐκκαυθέντος, ἅμα τῷ παραδοῦναι τὴν ἀρχὴν τοῖς μεθ' ἑαυτὸν ὑπάτοις, εἰς δίκην ὑπάγεται δημοσίαν ὑπὸ δυεῖν δημάρχων. καὶ κατηγορηθεὶς ἐν τῷ δήμῳ πάσαις ταῖς φυλαῖς κατακρίνεται, τίμημα τῆς εἰσαγγελίας ἐχούσης χρηματικὸν πέντε μυριάδας ἀργυρίου. *Vales.*

Φερεντῖνος πόλις Σαυνιτῶν ἐν Ἰταλίᾳ. τὸ ἐθνικὸν Φερεντανός λέγεται καὶ Φερέντιοι, ὡς Διονύσιος ιζ' τῆς Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.*

Μιλωνία πόλις Σαυνιτῶν ἐπιφανεστάτη. Διονύσιος ιζ'. τὸ ἐθνικὸν Μιλωνιάτης. *Steph. Byz.* (*Liv.* X, 3.)

Νηκούια πόλις Ὀμβρικῶν. Διονύσιος ἑπτακαιδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. τὸ ἐθνικὸν Νηκουιάτης. *Steph. Byz.* (*Liv.* X, 9.)

Ναρνία πόλις Σαυνιτῶν, ἀπὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ Νάρνου, ὡς Διονύσιος ὀκτωκαιδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.* (*Liv.* X, 10.)

Ὀκρίκολα πόλις Τυρρηνῶν. Διονύσιος ὀκτωκαιδεκάτω Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. τὸ ἐθνικὸν Ὀκρικολανός, ὡς αὐτός φησιν. *Steph. Byz.* (*Liv.* IX, 41.)

EXCERPTA

EX

LIBRO XVIIII.

I. (17, 1) Ὅτι Κρότων πόλις ἐν Ἰταλίᾳ ἐστὶ καὶ Σύβαρις, ἀπὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ οὕτως κληθεῖσα.

Ὅτε Λακεδαιμόνιοι Μεσήνην ἐπολέμουν, καὶ χῆρος ἀνδρῶν ἡ πόλις ἦν, δεομέναις ταῖς γυναιξὶ καὶ μάλιστα ταῖς ἐν ἀκμῇ παρθένοις μὴ περιιδεῖν τὰς μὲν ἀγάμους, τὰς δὲ ἀτέκνους γενομένας, ἐπέμποντό τινες ἀεὶ νέοι παραλλὰξ ἀπὸ τοῦ στρατοπέδου τῆς μίξεως τῶν γυναικῶν ἕνεκα, καὶ συνῄεσαν αἷς ἐπιτύχοιεν· ἐκ τούτων γίνονται τῶν ἀδιακρίτων ἐπιμιξιῶν παῖδες, οὓς ἀνδρωθέντας οἱ Λακεδαιμόνιοι προεπηλάκιζον τά τε ἄλλα καὶ Παρθενίας προσηγόρευον. (2) Στάσεως δὲ γενομένης, ἡττηθέντες οἱ παρθενίαι ἀναχωροῦσιν ἑκόντες ἐκ τῆς πόλεως· καὶ πέμψαντες εἰς Δελφοὺς χρησμὸν ἔλαβον πλεῖν εἰς Ἰταλίαν, ἐξευρόντας δὲ χωρίον τῆς Ἰαπυγίας Σατύριον καὶ ποταμὸν Τάραντα, ἔνθ' ἂν ἴδωσι τράγον τῇ θαλάττῃ τέγγοντα τὸ γένειον, ἐκεῖ τοὺς βίους ἱδρύσασθαι. πλεύσαντες δὲ τόν τε ποταμὸν ἐξεῦρον, καὶ κατά τινος ἐρινεοῦ πλησίον τῆς θαλάττης πεφυκότος ἄμπελον ἐθεάσαντο κατακεχυμένην, ἐξ ἧς τῶν

ἐπιτράγων τις καθειμένος ἥπτετο τῆς θαλάττης. τοῦτο ὑπολαβόντες εἶναι τὸν τράγον, ὃν προεῖπεν αὐτοῖς ὁ θεὸς ὄψεσθαι τέγγοντα τὸ γένειον τῇ θαλάττῃ, αὐτοῦ μένοντες ἐπολέμουν Ἰάπυγας, καὶ ἱδρύονται τὴν ἐπώνυμον τοῦ ποταμοῦ Τάραντος πόλιν. *Ambr.*

II. (17, 3) Ἀρτιμήδης ὁ Χαλκιδεὺς λόγιον εἶχεν, ἔνθ' ἂν εὕρῃ τὸν ἄρρενα ὑπὸ τῆς θηλείας ὠπυισμένον, αὐτόθι μένειν καὶ μηκέτι προσωτέρω πλεῖν· πλεύσας δὲ περὶ τὸ Παλλάντιον τῆς Ἰταλίας, καὶ ἰδὼν ἄμπελον [κατά τινος ἐρινεοῦ ὁμοίως κατακεχυμένην, θηλεῖαν μὲν τὴν ἄμπελον,] ἄρρενα δὲ τὸν ἐρινεόν, ὀχείαν δὲ τὴν πρόσφυσιν, τέλος ἔχειν τὸν χρησμὸν ὑπέλαβε· καὶ τοὺς κατέχοντας τὸν τόπον βαρβάρους ἐκβαλὼν οἰκεῖ. Ῥήγιον ὁ τόπος καλεῖται, εἴθ' ὅτι σκόπελος ἦν ἀπορρώξ, εἴθ' ὅτι κατὰ τοῦτον ἡ γῆ τὸν τόπον ἐρράγη καὶ διέστησεν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας τὴν ἀντικρὺ Σικελίαν, εἴτε ὑπ' ἀνδρὸς δυνάστου ταύτην ἔχοντος τὴν προσηγορίαν. *Ambr.*

III. (17, 4) Λευκίππῳ τῷ Λακεδαιμονίῳ πυνθανομένῳ, ὅπου πεπρωμένῳ αὐτῷ εἴη κατοικεῖν καὶ τοῖς περὶ αὐτόν, ἔχρησεν ὁ θεὸς πλεῖν μὲν εἰς Ἰταλίαν, γῆν δὲ οἰκίζειν, εἰς ἣν ἂν καταχθέντες ἡμέραν καὶ νύκτα μείνωσι· καταχθέντος δὲ τοῦ στόλου περὶ Καλλίπολιν ἐπίνειόν τι τῶν Ταραντίνων, ἀγασθεὶς τοῦ χωρίου τὴν φύσιν ὁ Λεύκιππος πείθει Ταραντίνους συγχωρῆσαί σφισιν ἡμέραν αὐτόθι καὶ νύκτα ἐναυλίσασθαι. ὡς δὲ πλείους ἡμέραι διῆλθον, ἀξιούντων αὐτοὺς ἀπιέναι τῶν Ταραντίνων, οὐ προσεῖχεν αὐτοῖς τὸν νοῦν ὁ Λεύκιππος, παρ' ἐκείνων εἰληφέναι λέγων τὴν γῆν καθ' ὁμολογίας εἰς ἡμέραν καὶ νύκτα· ἕως δ' ἂν ᾖ τούτων θάτερον, οὐ μεθήσεσθαι τῆς

γῆς. μαθόντες δὴ παρακεκρουσμένους ἑαυτοὺς οἱ Ταραντῖνοι συγχωροῦσιν αὐτοῖς μένειν. Ambr.

IIII. (17, 5) *Ἄκραν τῆς Ἰταλίας Ζεφύριον οἱ Λοκροὶ κατοικήσαντες Ζεφύριοι ὠνομάσθησαν.*

Μένειν αὐτὸν ἐγνώκεσαν ἐφ' ᾧ ἦν τόπῳ, καὶ τὸν ἐκεῖθεν ῥέοντα πόλεμον ἀνέχειν.

Εἰς ὕλας καὶ φάραγγας καὶ τραχῶνας ὀρεινοὺς διεσκεδάσθησαν.

(6) *Ταραντῖνός τις ἀνὴρ Αἰνησίας καὶ περὶ πάσας τὰς ἡδονὰς ἀσελγής, ἀπὸ τῆς ἀκολάστου καὶ κακῶς δημοσιευθείσης ἐν παισὶν ὥρας ἐπεκαλεῖτο Θάις.*

Τὸ πλῆθος ἀνδρολογήσαντες ἀπήεσαν.

Οἱ σπερμολογώτατοι τῶν κατὰ τὴν πόλιν καὶ ἀναγωγότατοι. Ambr.

V. (17, 7) *Ὅτι Ποστόμιος πρέσβυς ἐστάλη πρὸς* 2339
Ταραντίνους· καί τινα αὐτοῦ διεξιόντος λόγον οὐχ
ὅπως προσεῖχον αὐτῷ τὴν διάνοιαν ἢ λογισμοὺς
ἐλάμβανον οἱ Ταραντῖνοι σωφρόνων ἀνθρώπων καὶ
περὶ πόλεως κινδυνευούσης βουλευομένων· ἀλλ' εἴ
τι μὴ κατὰ τὸν ἀκριβέστατον τῆς Ἑλληνικῆς δια-
λέκτου χαρακτῆρα ὑπ' αὐτοῦ λέγοιτο παρατηροῦντες
ἐγέλων· καὶ πρὸς τὰς ἀνατάσεις ἐτραχύνοντο, καὶ 2340
βαρβάρους ἀπεκάλουν, καὶ τελευτῶντες ἐξέβαλλον ἐκ
τοῦ θεάτρου. ἀπιόντων δ' αὐτῶν, εἷς τῶν ἐφεστη-
κότων ἐν τῇ παρόδῳ Ταραντίνων, Φιλωνίδης ὄνομα,
σπερμολόγος ἄνθρωπος, ὃς ἀπὸ τῆς οἰνοφλυγίας, ἧ

Φιλωνίδης τις Ταραντῖνος σπερμολόγος ἄνθρωπος, ὃς ἀπὸ τῆς οἰνοφλυγίας, ᾗ παρὰ πάντα τὸν βίον ἐκέχρητο, προσηγορεύετο Κοτύλη, ἰδὼν τοὺς Ῥωμαίων πρέσβεις διιόντας, ἀνασυράμενος τὴν περιβολὴν καὶ σχηματίσας ἑαυτὸν ὡς αἴσχιστον ὀφθῆναι, τὴν οὐδὲ λέγεσθαι πρέπουσαν ἀκαθαρσίαν κατὰ τῆς ἱερᾶς ἐσθῆτος τοῦ πρεσβευτοῦ κατεσκέδασεν. ἀνθ' ὧν οὐ μεμπτὰς δίκας ἔτισαν οἱ Ταραντῖνοι. Ambr.

παρὰ πάντα τὸν βίον ἐκέχρητο, προσηγορεύετο Κοτύλη, μεστὸς ὢν ἔτι τῆς χθιζῆς μέθης, ὡς ἐγγὺς ἦσαν οἱ πρέσβεις, ἀνασυράμενος τὴν ἀναβολήν, καὶ
2341 σχηματίσας ἑαυτὸν ὡς αἴσχιστον ὀφθῆναι, τὴν οὐδὲ λέγεσθαι πρέπουσαν ἀκαθαρσίαν κατὰ τῆς ἱερᾶς ἐσθῆτος τοῦ πρεσβευτοῦ κατεσκέδασε.

(8) Γέλωτος δὲ καταρραγέντος ἐξ ὅλου τοῦ θεάτρου, καὶ συγκροτούντων τὰς χεῖρας τῶν ἀγερωχοτάτων, ἐμβλέψας εἰς τὸν Φιλωνίδην ὁ Ποστόμιος εἶπεν· Δεχόμεθα τὸν οἰωνόν, ὦ σπερμολόγε ἄνθρωπε, ὅτι καὶ τὰ μὴ αἰτούμενα δίδοτε ἡμῖν. ἔπειτα εἰς τὸν ὄχλον ἐπιστραφεὶς καὶ τὴν ὑβρισμένην ἐσθῆτα δεικνύς, ὡς ἔμαθεν ἔτι πλείονα γινόμενον ἐξ ἁπάντων τὸν γέλωτα, καὶ φωνὰς ἤκουσεν ἐνίων ἐπιχαιρόντων καὶ τὴν ὕβριν ἐπαινούντων· Γελᾶτε, ἔφησεν, ἕως ἔξεστιν ὑμῖν, ἄνδρες Ταραντῖνοι, γελᾶτε· πολὺν γὰρ τὸν μετὰ ταῦτα χρόνον κλαύσετε. ἐκπικρανθέντων δέ τινων πρὸς τὴν ἀπειλήν· καὶ ἵνα γε μᾶλλον, ἔφησεν, ἀγανακτήσητε, καὶ τοῦθ' ὑμῖν λέγομεν, ὅτι πολλῷ τὴν ἐσθῆτα ταύτην αἵματι ἐκπλυνεῖτε. ταῦτα
2342 οἱ τῶν Ῥωμαίων πρέσβεις ὑβρισθέντες ὑπὸ τῶν Ταραντίνων ἰδίᾳ τε καὶ δημοσίᾳ, καὶ ταύτας τὰς φωνὰς ἐπιθεσπίσαντες, ἀπέπλευσαν ἐκ τῆς πόλεως. *Ursin.*

VI. (17, 9) Ἄρτι δ' Αἰμιλίου Βαρβούλα ἐπίκλησιν τὴν ἀρχὴν παρειληφότος, παρῆσαν οἱ σὺν τῷ Ποστομίῳ πεμφθέντες εἰς τὸν Τάραντα πρέσβεις, ἀπόκρισιν μὲν οὐδεμίαν φέροντες, τὰς δὲ ὕβρεις ἃς ἦσαν ὑβρισμένοι πρὸς αὐτῶν διεξιόντες, καὶ τὴν ἐσθῆτα τοῦ Ποστομίου πίστιν τῶν λόγων παρεχόμενοι. ἀγανακτήσεως δὲ μεγάλης ἐξ ἁπάντων γενομένης, συναγαγόντες τὴν βουλὴν οἱ περὶ τὸν Αἰμίλιον ὕπατοι.

τί χρὴ πράττειν ἐσκόπουν, ἕωθεν ἀρξάμενοι μέχρι δύσεως ἡλίου· καὶ τοῦτ᾽ ἐποίησαν ἐφ᾽ ἡμέρας συχνάς. (10) Ἦν δ᾽ ἡ ζήτησις οὐχ ὑπὲρ τοῦ λελύσθαι τὰς περὶ τῆς εἰρήνης ὁμολογίας ὑπὸ τῶν Ταραντί- 234 νων· τοῦτο γὰρ ἅπαντες ὡμολόγουν· ἀλλ᾽ ὑπὲρ τοῦ χρόνου τῆς ἀποσταλησομένης ἐπ᾽ αὐτοὺς στρατιᾶς. ἦσαν γάρ τινες οἱ παραινοῦντες μήπω τοῦτον ἀναλαμβάνειν τὸν πόλεμον, ἕως Λευκανοί τ᾽ ἀφεστήκασι καὶ Βρέττιοι καὶ τῶν Σαυνιτῶν πολὺ καὶ φιλοπόλεμον ἔθνος, καὶ Τυρρηνία παρ᾽ αὐταῖς οὖσα ταῖς θύραις ἔτι ἀχείρωτος ἦν· ἀλλ᾽ ὅταν ὑποχείρια γένηται τάδε τὰ ἔθνη, μάλιστα μὲν ἅπαντα, εἰ δὲ μή γε, τὰ πρὸς ἀνατολὰς καὶ πλησίον τοῦ Τάραντος κείμενα. τοῖς δὲ τἀναντία τούτοις ἐφαίνετο συμφέρειν μηδὲ τὸν ἐλάχιστον χρόνον ἀναμένειν, ἀλλ᾽ ἐπιψηφίζειν τὸν πόλεμον ἤδη. καὶ ἐπεὶ τὰς γνώμας ἔδει διαριθμεῖσθαι, πλείους ἐφάνησαν οὗτοι τῶν ἀναβάλλεσθαι τὸν πόλεμον εἰς ἑτέρους καιροὺς παραινούντων· καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ [ζήτει ἐν τῷ περὶ στρατηγημάτων]. *Ursin.*

VII. (17, 11) ... Φύσιν ἔχουσι τοῖς μὲν διασῶσαι τὰ ἑαυτῶν ἀγαθὰ βουλομένοις οἱ περὶ τὸν αὐτὸν ἀναστρεφόμενοι τόπον οἰωνοὶ σχολαιοτέρᾳ τῇ πτήσει πρὸς ἀγαθοῦ εἶναι συμβόλου· τοῖς δὲ τῶν ἀλλοτρίων ἐφιεμένοις οἱ τὴν ἐπίτομον καὶ ταχεῖαν ὁρμὴν ἔχοντες εἰς τὰ πρόσω· οὗτοι μὲν γὰρ πορισταί τε καὶ θηρευταὶ τῶν οὐχ ὑπαρχόντων εἰσίν, ἐκεῖνοι δὲ ἐπίσκοποι καὶ φύλακες τῶν παρόντων. *Ambr.*

(12) Ἅπασαν τὴν πολεμίαν διεξῄει, ἀρούρας τε ἀκμαῖον ἤδη τὸ σιτικὸν μέρος ἐχούσας πυρὶ διδοὺς καὶ δένδρα καρποφόρα κείρων.

Παραπλήσιόν τι πάσχουσιν αἱ δημοκρατούμεναι

πόλεις τοῖς πελάγεσιν· ἐκεῖνά τε γὰρ ὑπὸ τῶν ἀνέμων ταράττεται φύσιν ἔχοντα ἠρεμεῖν, αὗταί τε ὑπὸ τῶν δημαγωγῶν κυκῶνται μηδὲν ἐν ἑαυταῖς ἔχουσαι κακόν. *Ambr.*

VIII. (17, 13) Τῶν Ταραντίνων βουλομένων ἐκ τῆς Ἠπείρου Πύρρον μετακαλεῖν ἐπὶ τὸν κατὰ Ῥωμαίων πόλεμον, καὶ τοὺς κωλύοντας ἐξελαυνόντων, Μέτων τις καὶ αὐτὸς Ταραντῖνος, ἵνα τύχοι προσοχῆς καὶ διδάξειεν αὐτούς, ὅσα μετὰ τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας εἰς πόλιν ἐλευθέραν καὶ τρυφῶσαν εἰσελεύσεται, συγκαθημένου τοῦ πλήθους παρῆν εἰς τὸ θέατρον ἐστεφανωμένος ὥσπερ ἐκ συμποσίου, παιδίσκην περιειληφὼς αὐλητρίδα κωμαστικὰ μέλη προσαυλοῦσαν. (14) Διαλυθείσης δὲ τῆς ἁπάντων σπουδῆς εἰς γέλωτα, καὶ τῶν μὲν ᾄδειν αὐτὸν κελευόντων, τῶν δὲ ὀρχεῖσθαι, περιβλέψας κύκλῳ καὶ τῇ χειρὶ διασημήνας ἡσυχίαν αὐτῷ παρασχεῖν, ἐπειδὴ κατέστειλε τὸν θόρυβον· Ἄνδρες, ἔφη, πολῖται, τούτων, ὧν ἐμὲ ποιοῦντα ὁρᾶτε νῦν, οὐδὲν ὑμῖν ἐξέσται ποιεῖν, ἐὰν βασιλέα καὶ φρουρὰν εἰς τὴν πόλιν εἰσελθεῖν ἐάσητε. ὡς δὲ κινουμένους καὶ προσέχοντας εἶδε πολλοὺς καὶ κελεύοντας λέγειν, σῴζων ἔτι τὸ προσποίημα τῆς κραιπάλης τὰ συμβησόμενα αὐτοῖς ἠριθμεῖτο κακά· ἔτι δὲ αὐτοῦ λέγοντος, οἱ τῶν κακῶν αἴτιοι συλλαβόντες αὐτὸν κατὰ κεφαλὴν ἐξωθοῦσιν ἐκ τοῦ θεάτρου. *Ambr.*

VIIII. (17, 15) Βασιλεὺς Ἠπειρωτῶν Πύρρος, βασιλέως Αἰακίδου, Ποπλίῳ Οὐαλερίῳ τῷ Ῥωμαίων ὑπάτῳ χαίρειν. πεπύσθαι μὲν εἰκός σε παρ' ἑτέρων, ὅτι πάρειμι μετὰ τῆς δυνάμεως Ταραντίνοις τε καὶ τοῖς ἄλλοις Ἰταλιώταις ἐπικαλεσαμένοις βοηθήσων· καὶ μηδὲ ταῦτα ἀγνοεῖν, τίνων τε ἀνδρῶν ἀπόγονός

εἰμι, καὶ τίνας αὐτὸς ἀποδέδειγμαι πράξεις, καὶ πόσην δύναμιν ἐπάγομαι καὶ ὡς τὰ πολέμια ἀγαθήν. οἴομαι δέ σε τούτων ἕκαστον ἐπιλογιζόμενον μὴ περιμένειν ἕως ἂν ἔργῳ καὶ πείρᾳ μάθῃς τὴν κατὰ τοὺς ἀγῶνας ἡμῶν ἀρετήν, ἀλλ' ἀποστάντα τῶν ὅπλων χωρεῖν ἐπὶ τοὺς λόγους, συμβουλεύω τε σοι, περὶ ὧν ὁ Ῥωμαίων δῆμος διαφέρεται πρὸς Ταραντίνους ἢ Λευκανοὺς ἢ Σαυνίτας ἐμοὶ τὴν διάγνωσιν ἐπιτρέπειν· διαιτήσω γὰρ ἀπὸ παντὸς τοῦ δικαίου τὰ διάφορα, καὶ παρέξω τοὺς ἐμαυτοῦ φίλους ἁπάσας τὰς βλάβας ἀποτίνοντας, ἃς ἂν αὐτῶν ἐγὼ καταγνῶ. (16) Ὀρθῶς δὲ ποιήσετε καὶ ὑμεῖς βεβαιωτὰς παρασχόντες ὑπὲρ ὧν ἂν ἐκείνων τινὲς ἐπικαλῶσιν, ὅτι τὰ κριθέντα ὑπ' ἐμοῦ φυλάξετε κύρια. ταῦτα ποιοῦσι μὲν ὑμῖν εἰρήνην ἐπαγγέλλομαι παρέξειν καὶ φίλος ἔσεσθαι καὶ ἐφ' οὓς ἂν με παρακαλῆτε πολέμους προθύμως βοηθήσειν· μὴ ποιοῦσι δ' οὐκ ἂν ἐπιτρέψαιμι χώραν συμμάχων ἀνδρῶν ἐξερημοῦν καὶ πόλεις Ἑλληνίδας ἀναρπάζειν καὶ σώματα ἐλεύθερα λαφυροπωλεῖν, ἀλλὰ κωλύσω τοῖς ὅπλοις, ἵνα παύσησθε ἤδη ποτὲ ἄγοντες καὶ φέροντες ὅλην Ἰταλίαν, καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις ὡς δούλοις ἐντρυφῶντες. ἐκδέξομαι δὲ τὰς σὰς ἀποκρίσεις μέχρι δεκάτης ἡμέρας· περαιτέρω γὰρ οὐκ ἂν ἔτι δυναίμην. *Ambr.*

X. (17, 17) Πρὸς ταῦτα ὁ Ῥωμαίων ὕπατος ἀντιγράφει, τήν τε αὐθάδειαν τοῦ ἀνδρὸς ἐπιρραπίζων καὶ τὸ φρόνημα τῆς Ῥωμαίων πόλεως ἐνδεικνύμενος· Πόπλιος Οὐαλέριος Λαβίνιος, στρατηγὸς ὕπατος Ῥωμαίων, βασιλεῖ Πύρρῳ χαίρειν. ἀνδρὸς ἔργον εἶναί μοι δοκεῖ σώφρονος ἀπειλητικὰς πέμπειν ἐπιστολὰς πρὸς τοὺς ὑπηκόους· ὧν δ' οὔτε τὴν δύναμιν ἐξήτακεν οὔτε τὰς ἀρετὰς ἐπέγνωκε, τούτων ὡς φαύ-

λων καὶ μηδενὸς ἀξίων καταφρονεῖν, ἀνοήτου μοι φαίνεται τρόπου τεκμήριον εἶναι καὶ τὸ διάφορον οὐκ ἐπισταμένου. ἡμεῖς δὲ οὐ τοῖς λόγοις τιμωρεῖσθαι τοὺς ἐχθροὺς εἰώθαμεν, ἀλλὰ τοῖς ἔργοις, καὶ οὔτε δικαστὴν ποιούμεθά σε περὶ ὧν Ταραντίνοις ἢ Σαυνίταις ἢ τοῖς ἄλλοις πολεμίοις ἐγκαλοῦμεν, οὔτ' ἐγγυητὴν λαμβάνομεν ἐκτίσματος οὐδενός· ἀλλὰ τοῖς ἡμῶν αὐτῶν ὅπλοις τὸν ἀγῶνα κρινοῦμεν, καὶ τὰς τιμωρίας, ὡς ἂν αὐτοὶ θέλωμεν, ἀναπράξομεν. ταῦτα δὴ προειδὼς ἀνταγωνιστὴν ἡμῖν παρασκεύαξε σαυτόν, ἀλλὰ μὴ δικαστήν. (18) Καὶ περὶ ὧν ἡμᾶς αὐτὸς ἀδικεῖς οὕστινας ἐγγυητὰς ἐκτισμάτων παρέξεις σκόπει· μὴ Ταραντίνους ἀναδέχου μηδὲ τοὺς πολεμίους τὰ δίκαια ὑφέξειν. εἰ δ' ἐκ παντὸς τρόπου πόλεμον αἱρεῖσθαι πρὸς ἡμᾶς διέγνωκας, ἴσθι σοι ταὐτὸ συμβησόμενον, ὃ πᾶσι συμβαίνειν ἀνάγκη τοῖς μάχεσθαι βουλομένοις, πρὶν ἐξετάσαι πρὸς οὓς ποιήσονται τὴν μάχην. ταῦτα ἐνθυμούμενος, εἴ τινος δέῃ τῶν ἡμετέρων, ἀποθέμενος τὰς ἀπειλὰς καὶ τὸ βασιλικὸν αὔχημα καταβαλὼν ἴθι πρὸς τὴν βουλήν, καὶ δίδασκε καὶ πεῖθε τοὺς συνέδρους, ὡς οὐδενὸς ἀτυχήσων οὔτε τῶν δικαίων οὔτε τῶν εὐγνωμόνων. *Ambr.*

XI. (18, 1) *Λαβίνιος ὁ Ῥωμαίων ὕπατος κατάσκοπον τοῦ Πύρρου συλλαβὼν καὶ καθοπλίσας τὴν στρατιὰν πᾶσαν καὶ εἰς τάξιν καταστήσας, ὡς ἐπέδειξε τῷ κατασκόπῳ, φράζειν ἐκέλευσε πρὸς τὸν ἀποστείλαντα πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν, καὶ πρὸς οἷς ἐθεάσατο λέγειν, ὅτι Λαβίνιος ὁ Ῥωμαίων ὕπατος αὐτὸν παρακαλεῖ μὴ λάθρα πέμπειν ἑτέρους ἔτι τοὺς κατασκεψομένους, ἀλλ' αὐτὸν ἐλθόντα φανερῶς ἰδεῖν τε καὶ μαθεῖν τὴν Ῥωμαίων δύναμιν.* *Ambr.*

XII. (18, 2) *Ἀνήρ τις Ὀβλάκος ὄνομα, Οὐλσίνιος ἐπίκλησιν, τοῦ Φερεντανῶν ἔθνους ἡγεμών, ὁρῶν τὸν Πύρρον οὐ μίαν ἔχοντα στάσιν, ἀλλὰ πᾶσι τοῖς μαχομένοις ὀξέως ἐπιφαινόμενον, προσεῖχεν ἐκείνῳ μόνῳ τὸν νοῦν, καὶ ὅποι παριππεύοι τὸν ἴδιον ἀντιπαρῆγεν ἵππον· καί τις ἰδὼν αὐτὸν τῶν μετὰ τοῦ βασιλέως, Λεοννάτος Λεοφάντου Μακεδών, ὑποπτεύει τε καὶ δείξας τῷ Πύρρῳ λέγει· τοῦτον τὸν ἄνδρα φυλάττου, βασιλεῦ· πολεμιστὴς γὰρ ἄκρος καὶ οὐκ ἐφ᾽ ἑνὸς ἑστηκὼς τύπου μάχεται, σὲ δὲ παρατηρεῖ καὶ τέτακεν ἐπὶ σοὶ τὸν νοῦν.* (3) *Τοῦ δὲ βασιλέως λέγοντος· τί δ᾽ ἄν με δράσειεν εἷς ὢν τοσούτους ἔχοντα περὶ ἐμαυτόν; καί τι καὶ νεανιευομένου περὶ τῆς ἑαυτοῦ ῥώμης, ὡς εἰ καὶ συνέλθοι πρὸς ἕνα μόνος οὐκ ἄπεισιν ὀπίσω χαίρων, λαβὼν ὃν ἀνέμενε καιρὸν ὁ Φερεντανὸς Ὀβλάκος ἐλαύνει σὺν τοῖς περὶ αὐτὸν εἰς μέσην τὴν βασιλικὴν ἴλην· διακόψας δὲ τὸ στίφος τῶν πέριξ ἱππέων ἐπ᾽ αὐτὸν ἐφέρετο τὸν βασιλέα, διαλαβὼν ἀμφοτέραις ταῖς χερσὶ τὸ δόρυ· κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ χρόνον ὁ μὲν Λεοννάτος, ὁ προειπὼν τῷ Πύρρῳ φυλάττεσθαι τὸν ἄνδρα, μικρὸν ἐκνεύσας εἰς τὰ πλάγια τὸν ἵππον αὐτοῦ παίει τῷ ξυστῷ διὰ τῆς λαγόνος· ὁ δὲ Φερεντάνος ἤδη καταφερόμενος τὸν τοῦ βασιλέως διὰ τοῦ στήθους ἐλαύνει. καὶ συγκαταπίπτουσι τοῖς ἵπποις ἀμφότεροι.* (4) *Τὸν μὲν οὖν βασιλέα τῶν σωματοφυλάκων ὁ πιστότατος ἐπὶ τὸν ἴδιον ἵππον ἀναβιβάσας ἐξελαύνει· τὸν δὲ Ὀβλάκον μέχρι πολλοῦ διαγωνισάμενον, ἔπειτα ὑπὸ πλήθους τῶν τραυμάτων καταπονηθέντα, τῶν ἑταίρων τινὲς ἀράμενοι μεγάλου περὶ τὸν νεκρὸν ἀγῶνος γενομένου διακομίζουσιν. ἐκ τότε δὲ ὁ βασιλεύς, ἵνα μὴ διάσημος εἴη τοῖς*

πολεμίοις, τὴν μὲν ἰδίαν χλαμύδα, ἣν ἐν ταῖς μάχαις εἰώθει φορεῖν, ἁλουργῆ τε οὖσαν καὶ χρυσόπαστον, καὶ τὸν ὁπλισμὸν πολυτελέστερον ὄντα τῶν ἄλλων τῆς τε ὕλης ἕνεκα καὶ τῆς τέχνης, τὸν πιστότατον τῶν ἑταίρων καὶ κατὰ τοὺς ἀγῶνας ἀνδρειότατον Μεγακλῆν ἐκέλευσεν ἐνδῦναι, τὴν δὲ φαιὰν ἐκείνου χλαμύδα καὶ τὸν θώρακα καὶ τὴν ἐπὶ τῇ κεφαλῇ καυσίαν αὐτὸς ἔλαβεν· ὅπερ αἴτιον αὐτῷ τῆς σωτηρίας ἔδοξε γενέσθαι. *Ambr.*

XIII. (18, 5) Ὅτι Πύρρου τοῦ Ἠπειρωτῶν βασιλέως ἐπὶ τὴν Ῥώμην στρατιὰν ἐξαγαγόντος, ἐβουλεύσαντο πρεσβευτὰς ἀποστεῖλαι τοὺς ἀξιώσοντας Πύρρον ἀπολυτρῶσαι σφίσι τοὺς αἰχμαλώτους εἴτ' ἀντιδιαλλαξάμενον ἑτέρων σωμάτων εἴτ' ἀργύριον κατ' ἄνδρα ὁρίσαντα, καὶ ἀποδεικνύουσι πρέσβεις Γάιον Φαβρίκιον, ὃς ἐνιαυτῷ τρίτῳ πρότερον ὑπατεύων Σαυνίτας καὶ Λευκανοὺς καὶ Βρεττίους ἐνίκησε μεγάλαις μάχαις καὶ τὴν Θουρίων πολιορκίαν ἔλυσε, καὶ Κόιντον Αἰμίλιον τὸν συνάρξαντα τῷ Φαβρικίῳ καὶ τὴν ἡγεμονίαν τοῦ Τυρρηνικοῦ πολέμου σχόντα, καὶ Πόπλιον Κορνήλιον, ὃς ἐνιαυτῷ τετάρτῳ πρότερον ὑπατεύων Κελτῶν ἔθνος ὅλον, τοὺς καλουμένους Σένωνας ἐχθίστους Ῥωμαίων ὄντας, πολεμῶν ἅπαντας ἡβηδὸν κατέσφαξεν. (6) Οὗτοι πρὸς Πύρρον ἀφικόμενοι καὶ διαλεχθέντες ὅσα τῇ τοιαύτῃ χρείᾳ πρόσφορα ἦν, ὡς ἀτέκμαρτον πρᾶγμα τύχη καὶ ταχεῖαι τῶν πολέμων αἱ τροπαὶ καὶ τῶν συμβησομένων οὐδὲν ἀνθρώποις προειδέναι ῥᾴδιον, ἐπ' ἐκείνῳ τὴν αἵρεσιν ἐποίουν, εἴτ' ἀργύριον ἀντὶ τῶν αἰχμαλώτων ἐβούλετο λαβεῖν εἴτε ἑτέρους αἰχμαλώτους. (7) Πύρρος δὲ μετὰ τῶν φίλων βουλευσάμενος ἀποκρίνεται τάδε αὐτοῖς·

Σχέτλιόν τι πρᾶγμα ποιεῖτε, ὦ ἄνδρες Ῥωμαῖοι, φιλίαν μὲν οὐ βουλόμενοι συνάψαι πρὸς ἐμέ, τοὺς δὲ ἁλόντας κατὰ πόλεμον ἀξιοῦντες ἀπολαβεῖν· ἵνα τοῖς αὐτοῖς τούτοις σώμασιν εἰς τὸν κατ᾽ ἐμοῦ πόλεμον ἔχητε χρῆσθαι. ἀλλ᾽ εἰ τὰ κράτιστα βούλεσθε πράττειν, καὶ τὸ κοινῇ συμφέρον ἀμφοτέροις ἡμῖν σκοπεῖτε, σπεισάμενοι τὸν πόλεμον τὸν πρὸς ἐμὲ καὶ τοὺς ἐμοὺς συμμάχους ἀπολάβετε τοὺς ἰδίους προῖκα 2346 παρ᾽ ἐμοῦ πολίτας τε καὶ συμμάχους ἅπαντας· ἄλλως δ᾽ οὐκ ἂν ὑπομείναιμι πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ὑμῖν προέσθαι. *Ursin.*

XIIII. (18, 8) *Ταῦτα μὲν τῶν τριῶν πρεσβευτῶν παρόντων ἔλεξεν· ἰδίᾳ δὲ τὸν Φαβρίκιον ἀπολαβών· Ἐγὼ δέ, φησίν, ὦ Φαβρίκιε, πυνθάνομαί σε κράτιστον ἐν ἡγεμονίαις πολέμων εἶναι, καὶ τῷ βίῳ δίκαιον καὶ σώφρονα, καὶ τὰς ἄλλας ἁπάσας ἔχοντα ἀρετάς· χρημάτων δ᾽ ἄπορον, καὶ καθ᾽ ἓν τὸ μέρος τοῦτο ἐλασσούμενον ὑπὸ τῆς τύχης, ὥστε μηδὲν ἄμεινον τῶν πενεστάτων βουλευτῶν ἐν τοῖς κατὰ τὸν βίον διατελεῖν. τοῦτο δὴ τὸ μέρος ἐκπληρῶσαι προθυμούμενος, ἕτοιμός εἰμι διδόναι σοὶ πλῆθος ἀργυρίου καὶ χρυσίου τοσοῦτον, ὅσον κτησάμενος ἅπαντας ὑπερβαλεῖς πλούτῳ τοὺς μάλιστα δοκοῦντας Ῥωμαίων εὐπορεῖν· καλὸν νομίσας ἀνάλωμα καὶ πρέπον ἡγεμόνι τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀναξίως τῆς* 2347 *ἀρετῆς διὰ πενίαν πράττοντας εὐεργετεῖν, καὶ βασιλικοῦ πλούτου τοῦτ᾽ ἀνάθημα καὶ κατασκεύασμα λαμπρότατον.* (9) *μαθὼν δὲ τὴν ἐμὴν προαίρεσιν, Φαβρίκιε, καὶ πᾶσαν ἀποθέμενος αἰδῶ, μέτεχε τῶν παρ᾽ ἡμῖν ὑπαρχόντων ἀγαθῶν, ὡς ἐμοῦ μέλλοντος εἴσεσθαι καὶ μεγάλην σοι χάριν, καὶ μὰ Δί᾽ οὐκ ἐλάττω . . . . καὶ ξένων τοὺς τιμιωτάτους*

*εἶναι νόμιζε. ἐμοὶ δ' ἀντὶ τούτων μήτ' ἄδικον μήτ'
αἰσχρὰν πρᾶξιν ὑπηρετήσῃς μηδεμίαν, ἀλλ' ἐξ ὧν
αὐτός τε κρείττων ἔσῃ καὶ τιμιώτερος ἐν τῇ ἑαυ-
τοῦ πατρίδι. καὶ πρῶτον μὲν ἐπὶ τὰς διαλλαγάς,
ὅση δύναμις ἐν σοί, παρόρμησον τὴν ἄχρι τοῦδε δύσ-
εριν καὶ οὐδὲν τῶν μετρίων φρονοῦσαν βουλήν,*
2348 *διδάσκων, ὡς ἐπὶ κακῷ τῆς πόλεως ὑμῶν ἀφῖγμαι,
Ταραντίνοις καὶ τοῖς ἄλλοις Ἰταλιώταις ὑποσχόμενος
βοηθήσειν, οὓς οὔτε ὅσιον οὔτ' εὔσχημόν ἐστί μοι
παρόντι μετὰ δυνάμεως καὶ τὴν πρώτην νενικηκότι
μάχην ἐγκαταλιπεῖν. καὶ πάνυ πολλὰ καὶ ἀναγκαῖα
πράγματα κατὰ τοῦτον γενόμενα τὸν καιρὸν ἐπὶ τὴν
ἰδίαν με ἀρχὴν μετακαλεῖ.* (10) *πίστεις τε ὑπέχομαι
πάσας, ὁπόσαι βεβαιοῦσιν ἀνθρώπων ὁμολογίας, καὶ
μόνῳ καὶ μετὰ τῶν ἄλλων πρεσβευτῶν περὶ τῆς οἴ-*
2349 *καδε ἀνακομιδῆς εἰ Ῥωμαῖοι ποιήσονται φιλίαν, ἵνα
θαρρῶν πρὸς τοὺς ἑαυτοῦ πολίτας λέγῃς, εἰ δή τισι
τὸ τῆς βασιλείας ὄνομα ὕποπτόν ἐστιν ὡς ἀπατηλὸν
ἐν ὁμολογίαις, ἐξ ὧν ἕτεροί τινες ἐν ὅρκοις καὶ
σπονδαῖς παρανομεῖν ἔδοξαν ὅμοια καὶ περὶ ἐμοῦ
τεκμαιρομένοις. γενομένης δὲ τῆς εἰρήνης, ἴθι
μετ' ἐμοῦ σύμβουλός τε ἁπάντων ἐσόμενος ἐμοὶ καὶ
ὑποστράτηγος καὶ τῆς βασιλικῆς εὐτυχίας μέτοχος.
ἐμοί τε γὰρ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ πιστοῦ φίλου
δεῖ, σοί τε χορηγίας βασιλικῆς καὶ πραγμάτων βα-
σιλικῶν· ἐὰν δὴ συνενέγκωμεν ταῦτ' εἰς τὸ κοινόν,
τὰ μέγιστα τῶν ἀγαθῶν παρ' ἀλλήλων ἀποισόμεθα.
Ursin.*

XV. (18, 11) *Παυσαμένου δ' αὐτοῦ, μικρὸν ἐπι-
σχὼν ὁ Φαβρίκιος εἶπε· Περὶ μὲν τῆς ἀρετῆς, ἥτις
ἐστὶ περὶ ἡμᾶς, ἢ κατὰ τὰς κοινὰς πράξεις, ἢ κατὰ τὸν*
2350 *ἴδιον βίον, οὐδὲν ἐμὲ δεῖ ἐπ' ἐμαυτοῦ λέγειν, ἐπειδὴ*

πέπυσαι παρ' ἑτέρων· οὐδέ γε περὶ τῆς πενίας, ὅτι μοι γήδιον μικρόν ἐστι κομιδῇ καὶ φαῦλον οἰκίδιον καὶ οὔτ' ἀπὸ δανεισμάτων οὔτ' ἀπ' ἀνδραπόδων ὁ βίος· φαίνῃ γὰρ καὶ τούτων ἀκριβῶς ἀκηκοέναι παρ' ἑτέρων. (12) *Περὶ δὲ τοῦ κάκιόν με Ῥωμαίων τινὸς πράττειν δι' ἀπορίαν, καὶ μηδὲν εἶναί μοι πλέον ἀσκοῦντι καλοκαγαθίαν, ὅτι τῶν πλουσίων οὐκ εἰμί, κακῶς ὑπείληφας, εἴτ' ἀκούσας τινὸς εἴτ' αὐτὸς εἰκάζων. ἐμοὶ γὰρ οὐδεμία πώποτε κακοδαιμονίας αἴσθησις παρὰ τὸ μὴ πολλὰ κεκτῆσθαι γέγονεν οὐδ' ἔστιν, οὐδ' ὠδυράμην τὴν ἐμαυτοῦ τύχην οὔτ' ἐν τοῖς κοινοῖς πράγμασιν οὔτ' ἐν τοῖς ἰδίοις.* (13) *τί γὰρ καὶ παθὼν ἐγκαλοίην ἂν αὐτῇ; πότερον, ὅτι μοι τῶν καλῶν καὶ περιμαχήτων, ἐφ' οἷς ἅπασα φύσις ἐσπούδακεν εὐγενής, οὐδενὸς ἐξεγένετο παρὰ τῆς* 235 *πατρίδος μεταλαβεῖν διὰ πενίαν; ὃς ἄρχω τε τὰς μεγίστας ἀρχὰς καὶ πρεσβεύω τὰς ἐπιφανεστάτας πρεσβείας καὶ σεβασμοὺς ἱερῶν πιστεύομαι τοὺς ἁγιωτάτους καὶ γνώμην ἀγορεύειν ἀξιούμενος περὶ τῶν ἀναγκαιοτάτων καλοῦμαι ἐν ᾧ προσήκει μοι τόπῳ, ἐπαινοῦμαι τε καὶ ζηλοῦμαι καὶ οὐδενὸς δεύτερος εἰμὶ τῶν μέγιστα δυναμένων, καὶ παράδειγμα τοῖς ἄλλοις εἶναι δοκῶ καλοκαγαθίας, οὐδὲν ἐκ τῆς ἐμῆς οὐσίας εἰς ταῦτα δαπανῶν, ὥσπερ οὐδὲ τῶν ἄλλων οὐδείς.* (14) *οὐ γὰρ ἐνοχλεῖ τοῖς ἑκάστου βίοις ἡ πόλις ἡ Ῥωμαίων, ὥσπερ τινὲς ἕτεραι, ἐν αἷς ὁ κοινὸς μὲν πλοῦτος ὀλίγος ἐστιν, ὁ δὲ τῶν ἰδιωτῶν πολύς· ἀλλ' αὐτὴ παρέχει τοῖς πρὸς τὰ κοινὰ προσιοῦσιν ἅπαντα ὅσων ἂν δέωνται, λαμπρὰς* 235 *καὶ μεγαλοπρεπεῖς ὑποτιθεῖσα χορηγίας· ὥστε μηδὲν ἀτιμότερον εἶναι τὸν πενέστατον τοῦ πλουσιωτάτου κατὰ τὴν ἐπαξίωσιν τῶν καλῶν, ἀλλὰ πάντας εἶναι*

Ῥωμαίους, ὅσοι ἂν ὦσι διὰ καλοκαγαθίαν τούτων ἄξιοι τῶν τιμῶν, ἀλλήλοις ἴσους. ὁπότε δὲ πενόμενος οὐδὲν παρὰ τοῦτ' ἔλαττον ἔχω τῶν πολλὰ κεκτημένων, τί παθὼν ἂν κατηγόρησα τῆς τύχης, ὅτι οὐχ ὑμῖν ἐξίσωσε τοῖς βασιλεῦσιν, οἷς ὁ πολὺς θησαυρίζεται χρυσός; ἀλλὰ μὴν ἔν γε τοῖς ἰδίοις τοσοῦτον ἀπέχω κακοδαιμονίας, ὥστ' ἐν ὀλίγοις πάνυ τῶν μακαρίων ἐμαυτὸν εἶναι δοκῶ παρὰ τοὺς πλουσίους ἐξετάζων, καὶ ἐπὶ τούτῳ μέγιστον φρονῶ, (15) ἐπειδὴ τὰ μὲν ἀναγκαῖα τὸ λυπρὸν ἀπόχρη μοι γήδιον φιλεργοῦντι καὶ ταμιευομένῳ παρέχειν· τὰ δ' ἔξω τῶν ἀναγκαίων οὐ βιάζεται ζητεῖν ἡ φύσις, ἀλλὰ καὶ τροφὴ πᾶσα ἡδεῖά μοι, ἣν ἂν ὁ
2353 λιμὸς σκευάσῃ, καὶ ποτὸν ἅπαν γλυκύ, ὅ τι ἂν ἡ δίψα πορίσῃ, καὶ ὕπνος μαλθακός, ὅταν ἡγήσηται κόπος, ἐσθής τε ἡ παρέχουσα μὴ ῥιγοῦν αὐταρκεστάτη, καὶ σκεῦος ὅ τι ἂν εὐτελέστατον τῶν δυναμένων τὰς αὐτὰς παρέχειν χρείας οἰκειότατον. ὥστ' οὐδὲ κατὰ τοῦτο δίκαιος εἴην τῆς τύχης κατηγορεῖν, ἥ μοι τοσαύτην παρέσχεν οὐσίαν, ὅσην ἡ φύσις ἐβούλετο ἔχειν· τῶν δ' ὑπερβαλλόντων οὔτε πόθον ἐνέφυσεν οὔτ' εὐπορίαν ἔδωκεν. *Ursin.*

XVI. (18, 16) Νὴ Δί', ἀλλ' οὐ περίεστί μοι τοῖς πλησίον ἐπαρκεῖν, οὐδ' ἐκ περιουσίας ἐπιστήμην
2354 ἔδωκέ μοι ὁ θεὸς ἔχειν οὐδὲ μαντικήν, αἷς ὠφέλουν ἂν τοὺς δεομένους, οὐδ' ἄλλα πολλά· ἃ δ' ἐστὶν ἐν ἐμοί, τούτων μεταδιδοὺς καὶ πόλει καὶ φίλοις, καὶ ἀφ' ὧν δύναμαι ποιεῖν εὖ τινας, ταῦτα κοινὰ τοῖς δεομένοις παρέχων, οὐκ ἂν ἡγησαίμην αἴτιον ἐμαυτόν; ταῦτα δ' ἐστίν, ἃ σὺ κράτιστα νομίζεις εἶναι, καὶ πολλῶν χρημάτων αἰτεῖς πρίασθαι. (17) εἰ δὲ δὴ καὶ τὰ μάλιστα διὰ τὰς εὐεργεσίας τῶν δεομένων

τὸ πολλὰ κεκτῆσθαι χρήματα μεγάλης ἦν σπουδῆς
καὶ φιλοτιμίας ἄξιον, καὶ μακαριωτάτους ὑπῆρχεν
εἶναι τοὺς πλουσιωτάτους, ὡς τοῖς βασιλεῦσιν ὑμῖν 2355
δοκεῖ, πότερος ἦν μοι τρόπος εὐπορίας κρείττων;
ἀφ' ὧν σύ μοι νῦν μεταδίδως αἰσχρῶς, ἢ ἀφ' ὧν
αὐτὸς ἐκτησάμην καλῶς πρότερον; παρέσχε γάρ μοι
τὰ πολιτικὰ πράγματα χρηματισμῶν ἀφορμὰς δικαίας,
πολλάκις μὲν καὶ πρότερον, μάλιστα δ', ἐπεὶ ἐπὶ
Σαυνίτας καὶ Λευκανοὺς καὶ Βρεττίους στρατιὰν
ἄγων ἐστάλην τετάρτῳ πρότερον ἐνιαυτῷ τὴν ὕπατον
ἀρχὴν ἔχων, καὶ πολλὴν μὲν χώραν ἐλεηλάτησα, πολ-
λαῖς δὲ μάχαις τοὺς ἀντιταξαμένους ἐνίκησα, πολλὰς
δὲ καὶ εὐδαίμονας πόλεις κατὰ κράτος ἑλὼν ἐξεπόρ-
θησα, ἐξ ὧν τὴν στρατιὰν ἅπασαν ἐπλούτισα, καὶ
τὰς εἰσφορὰς τοῖς ἰδιώταις ἃς εἰς τὸν πόλεμον προ-
εισήνεγκαν ἀπέδωκα, καὶ τετρακόσια τάλαντα μετὰ
τὸν θρίαμβον εἰς τὸ ταμιεῖον εἰσήνεγκα. (18) ἔπειτ' 2356
ἐκείνων τῶν δορικτήτων ἐξόν μοι λαβεῖν ὁπόσα ἐβου-
λόμην οὐ λαβών, ἀλλὰ καὶ τὸν ἐκ τοῦ δικαίου πλοῦτον
ὑπεριδὼν ἕνεκα δόξης, ὡς Οὐαλέριος Ποπλικόλας
ἐποίησε καὶ ἄλλοι πλεῖστοι πρὸς τούτῳ συχνοί, δι' 2357
οὓς ἡ πόλις ἡμῶν τηλικαύτη γέγονε, τὰς παρὰ σοῦ
δέξομαι δωρεάς, καὶ ἀντὶ τῆς κρείττονος εὐπορίας
ἀλλάξομαι τὴν χείρονα; ἐκείνῃ μέν γε τῇ κτήσει καὶ
τὸ μεθ' ἡδονῆς ποιεῖσθαι τὰς ἀπολαύσεις πρὸς τῷ
καλῶς καὶ δικαίως προσῆν· ταύτης δὲ καὶ τοῦτ'
ἄπεστι. δανείσματα γάρ ἐστιν, ὅσα προσλαμβάνου-
σιν ἄνθρωποι παρ' ἑτέρων, βαρύνοντα τὴν ψυχὴν
ἕως ἂν ἀποδοθῇ, κἂν ὀνόμασι καλοῖς αὐτὰ κοσμήσαι
τις, φιλανθρωπίας καλῶν καὶ δωρεὰς ἢ χάριτας. 2358
(19) φέρε, ἐὰν δὴ μανεὶς δέξωμαι χρυσόν, ὃν δίδως
μοι, καὶ τοῦθ' ἅπασι Ῥωμαίοις γένηται φανερόν,

ἔπειθ' οἱ τὴν ἀνυπεύθυνον ἔχοντες ἀρχήν, οὓς ἡμεῖς Τιμητὰς καλοῦμεν, οἷς ἀποδέδοται τοὺς ἁπάντων Ῥωμαίων ἐξετάζειν βίους καὶ τοὺς ἐκβαίνοντας ἐκ τῶν πατρίων ἐθῶν ζημιοῦν, καλέσαντές με λόγον ἀποδοῦναι κελεύσωσι τῆς δωροδοκίας, ἁπάντων παρόντων ταῦτα προφερόμενοι· *Ursin. et* 246, 22—27 *Ambr.*

XVII. (18, 20) Ἐπέμψαμέν σε, ὦ Φαβρίκιε, πρεσβευτὴν σὺν ἑτέροις δυσὶν ὑπατικοῖς ἀνδράσι πρὸς βασιλέα Πύρρον ὑπὲρ αἰχμαλώτων λύσεως διαλεξόμενον· ἥκεις ἀπὸ τῆς πρεσβείας, τοὺς μὲν αἰχμαλώτους οὐκ ἄγων, οὐδὲ ἄλλο τῇ πόλει φέρων ἀγαθὸν οὐθέν, αὐτὸς δὲ βασιλικὰς δωρεὰς εἰληφὼς μόνος τῶν συναποσταλέντων σοι πρέσβεων, καὶ ἣν ὁ δῆμος ἀπεψηφίσατο ποιήσασθαι εἰρήνην, ταύτην ποιήσας μόνος, ἐπ' οὐθενὶ τῆς πόλεως ἀγαθῷ· πόθεν γάρ; ἀλλ' ἵνα προδῷς αὐτὴν τῷ βασιλεῖ, καὶ διὰ σοῦ μὲν ἐκεῖνος ἅπασαν Ἰταλίαν ὑφ' αὑτῷ ποιήσηται, δι' ἐκείνου δὲ σὺ τῆς πατρίδος ἀφέλῃ τὴν ἐλευθερίαν. τοῦτο γάρ ἐστιν ὃ διώκουσιν ἅπαντες οἱ μὴ τὴν ἀληθινήν, ἀλλὰ τὴν προσποιητὸν ἐπιτηδεύσαντες ἀρετήν, ὅταν εἰς ὄγκον καὶ μέγεθος πραγμάτων προέλθωσιν. (21) εἰ δὲ δὴ μὴ τὸ πρεσβευτικὸν ἔχων ἀξίωμα, μηδὲ παρὰ τῶν πολεμίων τῆς πατρίδος, μηδ' ἐπὶ προδοσίᾳ καὶ τυραννίδι τῶν σεαυτοῦ πολιτῶν ἐδωροδόκεις, ἀλλ' ἰδιώτης ὢν καὶ παρ' ἀνδρὸς συμμάχου καὶ ἐπ' οὐδενὶ κακῷ τῆς πόλεως, ἆρ' οὐ δι' ἐκεῖνα τῆς μεγίστης ἄξιος εἶ ζημίας, ὅτι διαφθείρεις μὲν τοὺς νέους πλούτου καὶ τρυφῆς καὶ πολυτελείας βασιλικῆς ζῆλον εἰς τοὺς βίους εἰσάγων, οἷς πολλῆς δεῖ σωφροσύνης, εἰ μέλλει σωθήσεσθαι τὰ κοινά· καταισχύνεις δὲ τοὺς σεαυτοῦ προγόνους, ὧν οὐθεὶς ἐξέβη τοὺς πατρίους ἐθισμούς, οὐδ' ἠλλάξατο πλοῦτον αἰσχρὸν

ἀντὶ πενίας καλῆς, ἀλλ' ἅπαντες ἐπ' αὐτῆς ἔμειναν τῆς μικρᾶς οὐσίας, ἣν σὺ παραλαβὼν ἐλάττονα ἢ κατὰ σεαυτὸν ἡγήσω· (22) διαφθείρεις δὲ τὴν ἐκ τῶν προτέρων ἐπιτηδευμάτων γενομένην σοι δόξαν, ὡς ἐγκρατὴς καὶ σώφρων καὶ πάσης αἰσχρᾶς ἐπιθυμίας κρείττων; ἔπειτα χαιρήσεις κακὸς ἐξ ἀγαθοῦ γενόμενος, ὅτ' ἔδει σε, καὶ εἰ πρότερον πονηρὸς ἦσθα, πεπαῦσθαι; ἢ τῶν καλῶν τινὸς ἔτι μεθέξεις τῶν ὀφειλομένων τοῖς ἀγαθοῖς, ἀλλ' οὐκ ἄπει μάλιστα μὲν ἐκ τῆς πόλεως, εἰ δὲ μή γ' ἐκ τῆς ἀγορᾶς; *Ambr.*

XVIII. Ἂν ταῦτα λέγοντες ἐκγράψωσί με τῆς βουλῆς καὶ μεταγάγωσιν εἰς τὰς τῶν ἀτίμων φυλάς, τί πρὸς αὐτοὺς ἕξω λέγειν δίκαιον ἢ ποιεῖν; τίνα τὸν μετὰ ταῦτα βίον ζήσομαι τηλικαύτῃ περιπεσὼν ἀτιμίᾳ, καὶ τοὺς ἐξ ἐμαυτοῦ πάντας περιβαλών; (23) σοὶ δὲ αὐτῷ τί χρήσιμος ἔτι φανήσομαι, τὸ δύνασθαί τι καὶ τιμᾶσθαι παρὰ τοῖς πολίταις ἀποβαλών, δι' ἃ νῦν ἐσπούδακας περὶ ἐμοῦ; λείπεται δὴ τὸν οὐδεμίαν ἔτι χώραν ἐν τῇ πατρίδι κατέχειν δυνάμενον ἀπιέναι πανοικεσίᾳ, τὰς ἀσχήμονας αὐτοῦ καταγνόντα φυγάς. ἔπειτα ποῦ τὸν λοιπὸν ἔσομαι χρόνον; ἢ τίς ὑποδέξεταί με τόπος ἀπαρρησίαστον γενόμενον ὥσπερ εἰκός; ἡ σὴ βασιλεία, νὴ Δία, καὶ παρέξεις μοι σὺ τὴν τυραννικὴν ἅπασαν εὐδαιμονίαν; καὶ τί μοι τηλικοῦτο δώσεις ἀγαθόν, ὅσον ἀφελεῖ τὸ πάντων τιμιώτατον κτημάτων ἀφελόμενος, τὴν ἐλευθερίαν; (24) πῶς δ' ἂν ὑπομεῖναι δυναίμην ἐγὼ τοῦ βίου μεταβολήν, ὀψὲ δουλεύειν διδασκόμενος; ὅπου γὰρ οἱ γεννηθέντες ἐν βασιλείαις καὶ τυραννίσιν, ὅταν τὸ εὐγενὲς ἔχωσι, τῆς ἐλευθερίας γλίχονται, καὶ πάνθ' ἡγοῦνται τἀγαθὰ ταύτης ἐλάττω, ἦ που οἱ

ἐν ἐλευθέρᾳ καὶ ἑτέρων ἄρχειν μαθούσῃ πόλει βιώσαντες πρᾴως οἴσουσι τὴν ἐκ τῶν κρειττόνων ἐπὶ τὰ χείρω μεταβολήν, ἐξ ἐλευθέρων ὑπομείναντες δοῦλοι γενέσθαι, ἵνα λαμπρὰς παρατιθῶνται καθ' ἡμέραν τραπέζας, καὶ πολλοὺς θεράποντας περιάγωνται, καὶ γυναικῶν καὶ παίδων εὐπρεπῶν ἀφειδεῖς ἀπολαύσεις λαμβάνωσιν, ὥσπερ ἐν τούτοις τῆς ἀνθρωπίνης εὐδαιμονίας κειμένης, ἀλλ' οὐκ ἐν ἀρετῇ; (25) *αὐτῶν δὲ τούτων, ἵνα συγχωρήσῃ τις αὐτὰ πολλῆς εἶναι σπουδῆς ἄξια, τίς γένοιτ' ἂν ἱλαρὰ χρῆσις οὐκ ἔχουσα τὸ βέβαιον; ἐφ' ὑμῖν γάρ ἐστι τοῖς παρέχουσι τὰς ἡδονὰς ταύτας, ὅταν αὐτοὶ θέλητε, πάλιν αὐτὰς ἀφαιρεῖσθαι. ἐῶ γὰρ λέγειν τοὺς φθόνους, τὰς διαβολάς, τὸ μηδένα χρόνον ἄνευ κινδύνου καὶ φόβου ζῆν, τἆλλα πολλά, ὅσα φέρει χαλεπὰ καὶ οὐκ ἄξια γενναίου φρονήματος ὁ παρὰ τοῖς βασιλεῦσι βίος. μὴ τοσαύτη μανία κατάσχοι Φαβρίκιον, ὥστε τὴν περιβόητον καταλιπόντα Ῥώμην τὸν ἐν Ἠπείρῳ προελέσθαι βίον, καὶ ἐξὸν ἡγεμόνος ἡγεῖσθαι πόλεως ὑφ' ἑνὸς ἀνδρὸς ἄρχεσθαι μηθὲν ἴσον τοῖς ἄλλοις φρονοῦντος καὶ τὰ πρὸς ἡδονὴν ἀκούειν παρὰ πάντων ἐθισθέντος.* (26) *ἀλλάξαι μέν γε τὸ φρόνημα καὶ ταπεινὸν ἐμαυτὸν ποιῆσαι βουλόμενος, ἵνα μηδὲν ὑποπτεύῃς ἐξ ἐμοῦ κακόν, οὐκ ἂν δυναίμην· διαμένων δὲ τοιοῦτος, οἷον ἡ φύσις καὶ τὰ ἔθη πεποίηκέ με, βαρὺς φανήσομαί σοι, καὶ περισπᾶν δόξω τὴν ἡγεμονίαν εἰς ἐμαυτόν. τὸ δ' ὅλον ἔχω σοι παραινεῖν, μὴ ὅτι Φαβρίκιον, ἀλλὰ μηδ' ἄλλον μηδένα δέχεσθαι τῇ βασιλείᾳ μήτε κρείττονα μήτε ἴσον σεαυτοῦ, μήθ' ὅλως ἄνδρα ἐν ἐλευθέροις ἤθεσι τραφέντα καὶ φρόνημα μεῖζον ἢ κατ' ἰδιώτην ἔχοντα. οὔτε γὰρ ἀσφαλὴς βασιλεῖ σύνοικος ἀνὴρ μεγαλόφρων*

οὔτε ἡδύς. ἀλλὰ περὶ μὲν τῶν ἰδίων συμφερόντων ἅ σοι πρακτέον ἐστὶν αὐτὸς διαγνώσῃ, περὶ δὲ τῶν αἰχμαλώτων ἐπιεικές τι βουλευσάμενος ἄφες ἡμᾶς ἀπιέναι.

(27) Ὡς δὲ ἐπαύσατο λέγων, ἀγασθεὶς αὐτοῦ τὴν εὐγένειαν τῆς ψυχῆς ὁ βασιλεύς, τῆς δεξιᾶς λαμβάνεται καί φησιν· Οὐκέτι θαυμάζειν ἐπέρχεταί μοι, διὰ τί περιβόητος ἡ πόλις ὑμῶν ἐστι καὶ τοσοῦτον ἡγεμονίας περιβέβληται μέγεθος, τοιούτων ἀνδρῶν οὖσα τροφός· καὶ μάλιστα μὲν οὖν ἐβουλόμην ἂν ἐξ ἀρχῆς μηδεμίαν συμβῆναί μοι πρὸς ὑμᾶς διαφοράν· ἐπεὶ δὲ συνέβη, καὶ θεῶν τις ἐβούλετο πειραθέντας ἡμᾶς τῆς ἀλλήλων δυνάμεως καὶ ἀρετῆς τότε συναγαγεῖν, ἕτοιμός εἰμι διαλύεσθαι· καὶ ἵνα πρῶτος ἄρξω τῶν φιλανθρώπων, ἐφ' ἃ παρακαλεῖτέ με, χαρίζομαι τῇ πόλει τοὺς αἰχμαλώτους ἅπαντας ἄνευ λύτρων. *Ambr.*

Λιβύην χειρωσάμενος μέχρι καὶ τῶν προσωκεανίων ἐθνῶν. Steph. Byz. s. v. Ὠκέανος.

Κωστάντεια — ἔστι καὶ Βρεττίας ἄλλη, ὡς Διονύσιος ἐννεακαιδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. Steph. Byz.

EXCERPTA

EX

LIBRO XX.

I. [Πύρρου καὶ Ῥωμαίων ὑπάτων Ποπλίου Δεκίου καὶ Ποπλίου Σουλπικίου]

Συνθέμενοι δὲ διὰ κηρύκων τὸν χρόνον ἐν ᾧ διαγωνιοῦνται κατέβαινον ἐκ τῶν στρατοπέδων καὶ εἰς τάξιν καθίσταντο τοιάνδε· βασιλεὺς μὲν Πύρρος τὴν Μακεδονικὴν φάλαγγα πρώτην ἔταξεν ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος, καὶ μετ᾽ αὐτὴν τοὺς ἐκ τοῦ Τάραντος μισθοφόρους Ἰταλιώτας. ἔπειτα τοὺς ἐξ Ἀμπρακίας καὶ μετ᾽ αὐτοὺς τὴν Ταραντίνων λεύκασπιν φάλαγγα· ἑξῆς δὲ τὸ Βρεττίων καὶ Λευκανῶν συμμαχικόν. ἐπὶ μέσης δὲ τῆς φάλαγγος Θεσπρωτούς τε καὶ Χάονας, τούτοις δὲ συνεχεῖς τοὺς Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων καὶ Ἀθαμάνων μισθοφόρους· τελευταίους δὲ Σαυνίτας τὸ λαιὸν ἐκπληροῦντας κέρας. τῆς δὲ ἵππου τὴν μὲν Σαυνῖτιν καὶ Θετταλικὴν καὶ Βρεττίαν καὶ τὴν ἐκ τοῦ Τάραντος μισθοφόρον ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος ἔστησεν, τὴν δὲ Ἀμπρακιῶτιν καὶ Λευκανὴν καὶ Ταραντίνην καὶ τὴν Ἑλληνικὴν μισθοφόρον ἣν ἐξεπλήρουν Ἀκαρνᾶνές τε καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Μακεδόνες καὶ Ἀθαμᾶνες ἐπὶ τοῦ λαιοῦ. τοὺς δὲ ψιλοὺς καὶ τοὺς ἐλέφαντας διχῇ νείμας, ἀμφοτέρων κατόπιν ἔστησε τῶν

κεράτων, σύμμετρόν τι χωρίον ἀφεστῶτας ὀλίγον ἐπανεστηκὸς τοῦ πεδίου. αὐτὸς δὲ τὸ καλούμενον βασιλικὸν ἄγημα τῶν ἐπιλέκτων ἱππέων ὁμοῦ τι δισχιλίων περὶ αὐτὸν ἔχων ἐκτὸς ἦν τάξεως, εἶναι τοῖς κάμνουσιν αἰεὶ τῶν σφετέρων ἐξ ἑτοίμου ἐπάρκεσιν.

Οἱ δὲ ὕπατοι κατὰ μὲν τὸ λαιὸν κέρας ἔστησαν τάγμα τὸ καλούμενον πρῶτον ἐναντίον τῇ Μακεδονικῇ καὶ Ἀμπρακιωτικῇ φάλαγγι καὶ τοῖς μισθοφόροις τῶν Ταραντίνων. ἑπόμενον δὲ τῷ πρώτῳ τάγματι τὸ τρίτον, καθ᾽ ὃ μέρος ἡ λεύκασπις ἦν τῶν Ταραντίνων φάλαγξ καὶ τὸ Βρεττίων καὶ τὸ Λευκανῶν συμμαχικόν. συναφὲς δὲ τῷ τρίτῳ τὸ τέταρτον ἔστησαν, κατὰ τοὺς Μολοττούς τε καὶ Χάονας καὶ Θεσπρωτούς· τὸ δὲ δεύτερον ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος ἐναντίον τοῖς μισθοφόροις τοῖς ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος Αἰτωλοῖς καὶ Ἀκαρνᾶσι καὶ Ἀθαμᾶσι καὶ τῇ Σαυνιτῶν θυρεαφόρῳ φάλαγγι. Λατίνους δὲ καὶ Καμπανοὺς καὶ Σαβίνους καὶ Ὀμβρικοὺς καὶ Οὐολούσκους καὶ Μαρουγκίνους καὶ Πελίγνους καὶ Φερεντανοὺς καὶ τοὺς ἄλλους ὑπηκόους, εἰς τέτταρα διελόντες μέρη, τοῖς Ῥωμαικοῖς παρενέβαλον τάγμασιν, ἵνα μηδὲν αὐτοῖς ἀσθενὲς εἴη μέρος. τὴν δὲ ἵππον τήν τ᾽ οἰκείαν καὶ τὴν συμμαχικὴν διελόντες ἐπ᾽ ἀμφοτέρων ἔταξαν τῶν κεράτων. ἐκτὸς δὲ τάξεως τούς τε ψιλοὺς κατέστησαν καὶ τὰς ἁμάξας, τριακοσίας τὸν ἀριθμόν, ἃς παρεσκευάσαντο πρὸς τὴν τῶν ἐλεφάντων μάχην. αὗται κεραίας εἶχον ἐπιβεβηκυίας στόμιξιν ὀρθοῖς πλαγίας, εὐτρόχους, ὅπη βουληθείη τις ἅμα νοήματι περιάγεσθαι δυναμένας· ἐπ᾽ ἄκρων δὲ τῶν κεραιῶν ἢ τριόδοντες ἦσαν ἢ κέστροι μαχαιροειδεῖς ἢ δρέπανα ὁλοσίδηρα· ἢ καταρράκτας τινὰς ἐπιρριπτοῦντας ἄνωθεν βαρεῖς κόρακας. πολλαῖς δ᾽

αὐτῶν χεῖρες προσήρτηντο πυρφόροι στυππία πολλῇ πίττῃ λελιπασμένα περὶ αὐτὰς ἔχουσαι, προεκκείμεναι τῶν ἁμαξῶν, αἷς ἔμελλον ἑστηκότες ἐπ' αὐτῶν τινες, ὅτε πλησίον γένοιντο τῶν θηρίων, πλήσαντες πυρὸς ἐπὶ τὰς προβοσκίδας αὐτῶν καὶ τὰ πρόσωπα τὰς πληγὰς φέρειν. ἐφεστήκεσαν δὲ ταῖς ἁμάξαις τετρακύκλοις ὑπαρχούσαις καὶ τῶν ψιλῶν συχνοὶ τοξόται καὶ χερμάται καὶ τριβόλων σιδηρῶν σφενδονῆται καὶ παρ' αὐτὰς κάτωθεν ἔτι πλείους ἕτεροι.

Τάξις μὲν αὕτη τῶν στρατευσάντων ἦν ἀμφοτέρων· ἀριθμὸς δὲ τοῦ βασιλικοῦ μυριάδες ἑπτὰ πεζῶν, ἐν οἷς Ἕλληνες οἱ τὸν Ἰόνιον κόλπον διαπεράσαντες ἐπὶ μυρίοις ἦσαν ἑξακισχίλιοι· τοῦ δὲ Ῥωμαικοῦ πλείους τῶν ἑπτὰ μυριάδων· ἐξ αὐτῆς μέντοι τῆς Ῥώμης ὁμοῦ τι δισμύριοι. ἱππεῖς δὲ παρεγένοντο Ῥωμαίοις μὲν ἀμφὶ τοὺς ὀκτακισχιλίους, Πύρρῳ δὲ μικρῷ πλείους καὶ θηρία ἑνὸς δέοντα εἴκοσι. *Ath.*

II. Ἐπεὶ δὲ τὰ σημεῖα τῆς μάχης ἀνεδείχθη, παιανίσαντες οἱ στρατιῶται καὶ τὸ σύνολον ἀλαλάξαντες ἐχώρουν ὁμόσε, καὶ συμπεσόντες ἐμάχοντο πᾶσαν ἀποδεικνύμενοι τὴν ἐνόπλιον ἐπιστήμην. οἱ μὲν ἱππεῖς οἱ παρὰ ἀμφότερα τεταγμένοι τὰ κέρατα, προειδότες ἐν οἷς ἐπλεονέκτουν αὐτοὶ τῶν πολεμίων, εἰς ταῦτα κατέφευγον· Ῥωμαῖοι μὲν εἰς τὴν ἐκ χειρὸς καὶ σταδιαίαν μάχην· τὸ δὲ τῶν Ἑλλήνων ἱππικὸν εἰς τὰς περιελάσεις καὶ τοὺς ἐξελιγμούς· καὶ οἱ μὲν ὁπότε διώκοιντο ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, ἐπιστρέψαντες τοὺς ἵππους καὶ τοὺς χαλινοὺς κατασχόντες ἐπεζομάχουν, οἱ δὲ ὁπότε τοὺς Ῥωμαίους μάθοιεν εἰς ἀντίπαλα καθισταμένους, ἐπὶ δόρυ κλίναντες καὶ δι' ἀλλήλων ἐξελίξαντες περιεδίνουν τοὺς ἵππους αὖθις ἐπὶ τὸ μέτωπον καὶ τὰ κέντρα προσβαλόντες ἐχώρουν

ὁμόσε. ἡ μὲν οὖν δὴ τῶν ἱππέων μάχη τοιαύτη τις ἦν· ἡ δὲ τῶν πεζῶν τῇ μὲν ἐμφερὴς ἐκείνῃ, τῇ δὲ διάφορος. ἐμφερὴς μὲν κατὰ τὸ σύμπαν, διάφορος δὲ κατὰ τὰ μέρη. τὸ μὲν γὰρ δεξιὸν κέρας ἐπιρρεπέστερον ὑπῆρχεν ἑκατέροις, τὸ δ' ἀριστερὸν ὑποδεέστερον. οὐ μέντοι σὺν τῷ ἀσχήμονι τὰ νῶτα τοῖς πολεμίοις ἐνέκλιναν οὐδέτεροι, ἀλλὰ σὺν κόσμῳ καὶ παρὰ ταῖς σημείαις μένοντες ἑκάτεροι καὶ τὴν προβολὴν φυλάττοντες κατὰ μικρὸν ὑπεχώρουν ὀπίσω. οἱ δὲ ἀριστεύσαντες ἦσαν ἐκ μὲν τῆς βασιλικῆς στρατιᾶς Μακεδόνες· οὗτοι γὰρ ἀνέστειλαν τὸ πρῶτον τῶν Ῥωμαίων στρατόπεδον καὶ τοὺς σὺν αὐτοῖς ταχθέντας Λατίνους· ἐκ δὲ τῆς Ῥωμαικῆς οἱ συνελθόντες εἰς τὸ δεύτερον τάγμα Μολοττοῖς καὶ Θεσπρωτοῖς καὶ Χάοσιν ἐναντίοι. κελεύσαντος δὲ τοῦ βασιλέως τοὺς ἐλέφαντας ἐπὶ τὸ κάμνον τῆς στρατιᾶς ἄγειν, μαθόντες τὴν ἔφοδον τῶν θηρίων οἱ ταῖς κεραιοφόροις ἐπιβεβηκότες ἁμάξαις ἤλαυνον ὁμόσε. οὗτοι τὸ μὲν πρῶτον ἐπέσχον τῆς ὁρμῆς τὰ θηρία, παίοντες ταῖς μηχαναῖς καὶ τὰς πυρφόρους χεῖρας ἐς τὰς ὄψεις αὐτῶν ἐντρέποντες. ἔπειτα οὐκέτι προσαγόντων τὰ θηρία τῶν ἐφεστηκότων τοῖς πύργοις, ἀλλὰ ταῖς λόγχαις βαλλόντων ἄνωθεν καὶ τῶν ψιλῶν διακοπτόντων τὰ περικείμενα γέρρα ταῖς ἁμάξαις καὶ νευροτομούντων τοὺς βόας [καὶ] καταπηδῶντες ἀπὸ τῶν ὀχημάτων οἱ πρὸς ταῖς μηχαναῖς κατέφευγον εἰς τοὺς ἔγγιστα πεζοὺς καὶ πολλὴν παρεῖχον αὐτοῖς ταραχήν. οἱ δὲ ἐν μέσῃ τῇ βασιλικῇ φάλαγγι ταχθέντες Λευκανοὶ καὶ Βρέττιοι χρόνον οὐ πολὺν ἀγωνισάμενοι τρέπονται πρὸς φυγὴν ὑπὸ τοῦ τετάρτου Ῥωμαικοῦ τάγματος ἀνασταλέντες. ὡς δὲ ἅπαξ ἐνέκλιναν οὗτοι, καὶ διερράγη τὸ κατ' αὐτοὺς μέρος τῆς φάλαγγος,

οὐδὲ οἱ τὴν πλησίον αὐτῶν λαβόντες στάσιν Ταραντῖνοι παρέμενον, ἀλλὰ ἐντρέψαντες κἀκεῖνοι τὰ νῶτα τοῖς πολεμίοις ἔφευγον. *Ath.*

III. Βασιλεὺς δὲ Πύρρος ὡς ἔμαθεν ὅτι Λευκανοὶ καὶ Βρέττιοι καὶ Ταραντῖνοι φεύγουσι προτροπάδην, καὶ λελώβηται τὸ κατ' ἐκείνους μέρος ἡ φάλαγξ, ἐκ τῆς καθ' ἑαυτὸν ἴλης μέρος τι παραδοὺς ἑτέροις ἡγεμόσι, καὶ ἀπὸ τοῦ δεξιοῦ κέρατος ἑτέρους ἱππεῖς ὅσους ὑπέλαβεν ἀρκεῖν ἀποστέλλει βοηθοὺς τοῖς ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων διωκομένοις. ἐν οἷς δὲ ταῦτα ἐγίνετο χρόνοις, παρὰ τοῦ δαιμονίου βοήθεια τοῖς Ῥωμαίοις ἔκδηλος γίνεται. Δαυνίων γάρ τινες ἐκ πόλεως Ἀργυρίππων, ἣν νῦν Ἄρπους καλοῦσι, πεζοὶ μὲν τετρακισχίλιοι, ἱππεῖς δὲ ἀμφὶ τοὺς τετρακοσίους, ἐπίκουροι τοῖς ὑπάτοις ἀποσταλέντες, ὡς ἐγένοντο πλησίον τοῦ βασιλικοῦ στρατοπέδου τὴν κατὰ νώτου τῶν πολεμίων ἄγουσαν ὁδὸν ἀπὸ ταὐτομάτου πορευόμενοι, καὶ τὸ πεδίον εἶδον μεστὸν ἀνθρώπων, ὀλίγον ἐπισχόντες αὐτόθι χρόνον καὶ λογισμοὺς παντοδαποὺς λαβόντες, καταβαίνειν μὲν ἀπὸ τῶν μετεώρων καὶ συλλαμβάνειν τῆς μάχης ἀπέγνωσαν, οὔτε ὅπῃ τι φίλιόν ἐστιν εἰδότες οὔτε ὅπῃ πολέμιον, οὔτ' ἐν ᾧ χωρίῳ στάντες ὠφέλειάν τινα παρέξουσι τοῖς σφετέροις δυνάμενοι συμβαλεῖν, κράτιστον δὲ ὑπέλαβον εἶναι περιστάντες τὸ στρατόπεδον τῶν πολεμίων ἐξελεῖν, ὡς αὐτοί τε πολλὰς καὶ καλὰς ἕξοντες ὠφελείας, εἰ κρατήσειαν τῶν ἀποσκευῶν, καὶ μεγάλην παρέξοντες τοῖς πολεμίοις ταραχήν, εἰ θεάσαιντο καιόμενον ἄφνω τὸν χάρακα· ἀπεῖχε δὲ τὸ χωρίον τῆς μάχης οὐ πλέον εἴκοσι σταδίων. ταῦτά τε δὴ βουλευσάμενοι καὶ παρὰ αἰχμαλώτων τινῶν ἀκούσαντες, οὓς ἐπὶ ξυλισμὸν ἐλθόντας εἰλήφεσαν, ὅτι κομιδῇ τινες ὀλίγοι

φυλάττουσι τὸν χάρακα, προσέβαλον αὐτοῖς πανταχόθεν. ὑπὲρ ὧν ἐπιγνοὺς ὁ Πύρρος ἱππέως τινὸς ἀπαγγείλαντος, ὃς ἀρξαμένου πολιορκεῖσθαι τοῦ χάρακος διεξελάσας τὸν ἵππον καὶ τὰ κέντρα προσβαλὼν παρῆν διὰ ταχέων, τὴν μὲν [γὰρ] ἄλλην δύναμιν ἐν τῷ πεδίῳ κατέχειν ἔγνω καὶ μήτε ἀνακαλεῖν μήτε κινεῖν τὴν φάλαγγα, τοὺς δ' ἐλέφαντας καὶ ἀπὸ τῶν ἱππέων τοὺς εὐτολμοτάτους ἐπιλεξάμενος ἀποστέλλει βοηθοὺς τῷ χάρακι. ἔτι δὲ τούτων πορευομένων ἐκπολιορκηθεὶς ἄφνω ὁ χάραξ ἀνάπτεται. καὶ οἱ διαπραξάμενοι τὸ ἔργον, ὡς ἔμαθον ἀπὸ τῶν μετεώρων ἐπιόντας σφίσι τοὺς ἀπὸ τοῦ βασιλέως ἀπεσταλμένους, εἰς ὄρους τινὸς κορυφὴν ἔφυγον, ἔνθα οὔτε τοῖς θηρίοις ἀνελθεῖν ῥᾴδιον ἦν οὔτε τοῖς ἵπποις. οἱ δὲ βασιλικοὶ τοῦ καιροῦ τῆς βοηθείας ὑστερήσαντες ἐπὶ τοὺς ἐκ τοῦ τρίτου καὶ τετάρτου τάγματος Ῥωμαίους ἐτράποντο πολὺ προεληλυθότας ἀπὸ τῶν ἄλλων, ὅτε τοὺς κατὰ σφᾶς πολεμίους ἐτρέψαντο. προιδόντες δὲ αὐτῶν οἱ Ῥωμαῖοι τὴν ἔφοδον εἰς ὑψηλόν τι καὶ λάσιον χωρίον ἀναδραμόντες εἰς τάξιν καθίσταντο. οἱ μὲν οὖν ἐλέφαντες οὐ δυνάμενοι πρὸς τὸν ὄχθον ἀναβαίνειν οὐδὲν αὐτοὺς ἠδίκουν, οὐδὲ αἱ τῶν ἱππέων ἶλαι· οἱ δὲ τοξόται καὶ σφενδονῆται βάλλοντες πανταχόθεν κατετίτρωσκόν τε καὶ διέφθειρον ἐξ αὐτῶν συχνούς. αἰσθήσεως δὲ γενομένης τοῖς ἡγεμόσι τῶν ἐκεῖ πραττομένων, Πύρρος μὲν ἐκ τῆς ἀσπιστικῆς φάλαγγος Ἀθαμᾶνάς τε καὶ Ἀκαρνᾶνας καὶ τῶν Σαυνιτῶν τινας ἀποστέλλει, ὁ δὲ τῶν Ῥωμαίων ὕπατος ἴλας τινὰς ἱππέων, ἐπειδὴ τοιαύτης ἔδει τοῖς πεζοῖς συμμαχίας. καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἑτέρα πάλιν ἐκεῖ γίνεται μάχη πεζῶν τε καὶ ἱππέων, καὶ φόνος ἔτι πλείων.

Ἀρξαμένου δὲ τοῦ βασιλέως καὶ οἱ τῶν Ῥωμαίων ὕπατοι τοὺς ἑαυτῶν ἀνεκάλουν περὶ καταφορὰν ὄντος τοῦ ἡλίου, καὶ διαβιβάσαντες τὸν ποταμὸν ἀπῆγον εἰς τὸν χάρακα συσκιάζοντος ἤδη. ἡ δὲ τοῦ Πύρρου δύναμις ἀπολωλεκυῖα σκηνάς τε καὶ ὑποζύγια καὶ ἀνδράποδα καὶ τὴν ἀποσκευὴν ἅπασαν, ἐπὶ μετεώρου τινὸς χώρου παρενέβαλεν, ἔνθα τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα διήγαγεν ὑπαίθριος, ἀσκευής, ἀθεράπευτος, οὐδὲ τῆς ἀναγκαίας εὐποροῦσα τροφῆς, ὥστε καὶ διαφθαρῆναι συχνοὺς τραυματίας, οἷς ἐνῆν ἔτι σώζεσθαι βοηθείας τε καὶ κηδεμονίας μεταλαβοῦσιν. τοιούτου τέλους ἔτυχεν ἡ δευτέρα μάχη Ῥωμαίοις πρὸς Πύρρον περὶ πόλιν Ἄσκλον. *Ath.*

IV. Ὅτι περὶ τὴν Ῥηγίνων πόλιν πάθος γίγνεται δεινόν, οἷον καὶ περὶ Μεσσήνην ἐγένετο τὴν ἐν Σικελίᾳ, μεγάλης φυλακῆς καὶ προνοίας ἄξιον ἁπάσαις ταῖς πόλεσιν. ἀνάγκη δὲ τὰς αἰτίας καὶ τὰς προφάσεις τῶν κατασχόντων αὐτὴν κακῶν προειπεῖν. Ὅτε Λευκανοὶ καὶ Βρέττιοι δυνάμεσι πολλαῖς ἐπὶ Θουρίους στρατεύσαντες τήν τε χώραν αὐτῶν ἐξεπόρθησαν καὶ τὴν πόλιν περιχαρακώσαντες ἐπολιόρκουν· ἐφ' οὓς ἀπεστάλη Ῥωμαίων δύναμις, ἧς ἡγεῖτο Φαβρίκιος ὁ ὕπατος· φοβηθέντες οἱ Ῥηγῖνοι μὴ καὶ ἐπὶ σφᾶς οἱ βάρβαροι Ῥωμαίων ἀπελθόντων στρατιὰν ἀποστείλωσι, καὶ τὴν Ταραντίνων πόλιν ἐν ὑποψίαις ἔχοντες, ἐδεήθησαν τοῦ Φαβρικίου δύναμιν τῇ πόλει λιπεῖν πρὸς τὰς αἰφνιδίους τῶν βαρβάρων ἐπιδρομάς, καὶ εἴ τις ἐκ τῶν Ταραντίνων ἐπιβουλή σφισιν ἀπροσδόκητος γένοιτο. καὶ λαμβάνουσι Καμπανοὺς μὲν ὀκτακοσίους, Σιδικίνους δὲ τετρακοσίους, ὧν ἁπάντων ἡγεῖτο Δέκιος Καμπανὸς τὸ γένος. οὗτος ὁ ἀνήρ, ὅτε κατάγοιτο παρὰ τοῖς ἐπιφανεστάτοις

τῶν ἐπιχωρίων ἑστιάσεις [τε] λαμπρὰς κατὰ τὴν φιλοφροσύνην τῶν ξένων ἑστιώμενος, κατασκευὰς οἰκιῶν λαμπρὰς καὶ βαθυπλούτους παρὰ πολλοῖς ὁρῶν κατ' ἀρχὰς μὲν ἐμακάριζε τοὺς Ῥηγίνους τῆς εὐδαιμονίας, ἔπειθ' ὡς ἀναξίοις ἐφθόνει, τελευτῶν δ' ὡς πολεμίοις ἐπιβουλεύειν ἤρξατο. καὶ προσλαβὼν κοινωνὸν τῶν ἀπορρήτων βουλευμάτων τὸν γραμματέα πανοῦργον ἄνδρα καὶ πάσης πονηρίας ἀρχιτέκτονα, πρὸς αὐτοῦ πάντας Ῥηγίνους ἀποκτεῖναι καὶ τὴν εὐδαιμονίαν αὐτῶν τὴν μὲν αὐτὸς κατασχεῖν, τὴν δὲ τοῖς στρατιώταις διελεῖν, λέγοντος ὅτι Μεσσήνην ὀλίγῳ πρότερον εἷλον.... [ὑφ' οὗ] πεισθεὶς, καὶ τὸν τρόπον τῆς ἐπιχειρήσεως σὺν αὐτῷ βουλευσάμενος, τοὺς ταγματάρχας καὶ τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν στρατιωτῶν εἰς τὸ συνέδριον ἐκάλεσεν· δεηθεὶς δὲ ἁπάντων ἀπορρήτους φυλάξαι τοὺς λόγους, κίνδυνον ἔφη μέγαν αὐτῷ ἐπικρεμασθῆναι πολλῆς πάνυ φυλακῆς καὶ ταχείας δεόμενον, ὡς τοῦ καιροῦ μὴ διδόντος ἀναστροφήν. πεπυσμένους γὰρ τὴν Πύρρου διάβασιν τοὺς ἐπιφανεστάτους Ῥηγίνων κρύφα διαπέμπεσθαι πρὸς αὐτὸν ὑπισχνουμένους κατασφάξειν τὴν φρουρὰν καὶ παραδώσειν ἐκείνῳ τὴν πόλιν. ἔτι ταῦτα λέγοντος αὐτοῦ παρῆν τις ἐγκάθετος, αὐχμηρὸς ὡς ἐξ ὁδοῦ, γράμματα ὑπ' αὐτοῦ Δεκίου κατεσκευασμένα κομίζων, ὡς παρὰ ξένου δή τινος ἰδίου, ἐν οἷς ἐδηλοῦτο μέλλων ὁ βασιλεὺς ἀποστέλλειν ἐπὶ τὸ Ῥήγιον πεντακοσίους στρατιώτας ὡς καταληψομένους τὴν πόλιν, ἀνοίξειν ὑπεσχημένων αὐτοῖς Ῥηγίνων τὰς πύλας. Τινὲς μὲν λέγουσι τὸν γραμματηφόρον ὑπὸ Φαβρικίου τοῦ ὑπάτου κατὰ σπουδὴν ἀπεστάλθαι, τὴν δ' ἐπιστολὴν ταῦτα περιέχειν, ἃ μικρῷ πρότερον ἔφην, καὶ παραινεῖν Δεκίῳ φθάσαι

τοὺς Ῥηγίνους· ἔχει δὲ λόγον ἀμφότερα. ἔδειξε δὴ ταῦτα τοῖς ἐν τῷ συνεδρίῳ παροῦσι, καὶ ἐπεὶ τάχιστα νὺξ ἐγένετο, φράσαντες οἱ ταγματάρχαι τοῖς ἄλλοις στρατιώταις ἃ διενοοῦντο πράττειν ἐπὶ τὰς οἰκίας τῶν Ῥηγίνων ἐχώρουν, καὶ τοὺς μὲν εὐωχουμένους ἔτι, τοὺς δὲ κοιμωμένους καταλαβόντες ἐν τοῖς ἰδίοις κατασφάττουσιν ἐφεστίοις ἀντιβολοῦντας καὶ γόνασι προσκυλιομένους καὶ ἀνθ' ὅτου ταῦτα πάσχουσι μαθεῖν ἀξιοῦντας, οὔτε ἡλικίας οὔτε τύχης οὐδεμιᾶς φειδόμενοι. φονεύσαντες δὲ τοὺς ἄνδρας ἔτι δεινότερον ἔργον ἐξειργάσαντο, τάς τε γυναῖκας τῶν ἰδίων ξένων καὶ τὰς παρθένους διελόμενοι συνῆσαν ἀκούσαις, ὧν τοὺς πατέρας καὶ τοὺς ἄνδρας ἐν ὀφθαλμοῖς ἀπέκτειναν. Δέκιος δὲ ἀντὶ φρουράρχου τύραννος ἐγεγόνει τῆς Ῥηγίνων πόλεως· καὶ λογιζόμενος ὅτι δώσει Ῥωμαίοις ὧν ἔδρασε δίκας, Καμπανοῖς τοῖς κατέχουσι Μεσσήνην συμμαχίαν τίθεται μεγίστην ἰσχὺν τῶν ἐν Σικελίᾳ πόλεων ἔχουσι, καὶ τὴν πόλιν διὰ πολλῆς εἶχε φυλακῆς. Esc.

V. *Ἡ δὲ βουλὴ μαθοῦσα τὰ περὶ τοὺς Ῥηγίνους πάθη παρὰ τῶν διαφυγόντων τὸν ὄλεθρον, οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον ἀναμείνασα χρόνον ἀποστέλλει στρατιὰν νεοσύλλεκτον ἄγοντα τὸν ἕτερον τῶν κατὰ πόλιν στρατηγῶν. φθάσασα δὲ τὴν Ῥωμαίων ἄφιξιν ἡ τοῦ δαιμονίου πρόνοια τὸν ἡγεμόνα τῆς φρουρᾶς Δέκιον ἀντὶ τῶν ἀνοσίων βουλευμάτων εἰς τὰ κυριώτατα τοῦ ζῆν ἐτιμωρήσατο μέρη, νόσον εἰς τοὺς ὀφθαλμοὺς ἐμβαλοῦσα δεινὰς περιωδυνίας φέρουσαν· ἣν ἰάσασθαι προθυμούμενος ἄνθρωπος ἐκ Μεσσήνης ἰατρὸν μεταπέμπεται Δεξικράτην ὄνομα, πυνθανόμενος ἄριστον εἶναι τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡλικίαν ἰατρῶν, ἀγνοῶν δὲ ὅτι Ῥηγῖνος ἦν*

τὸ γένος· ὃς ἀφικόμενος εἰς τὸ Ῥήγιον ἐναλείφει τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ καυστικῷ φαρμάκῳ, καὶ διακελευσάμενος ἀνέχεσθαι τὰς περιωδυνίας ἕως ἂν ἀφίκηται, καταβὰς ἐπὶ θάλατταν εἰς τὸ παρεσκευασμένον πορθμεῖον ἐνέβη καὶ πρὶν αἰσθέσθαι τινὰ τὸ πραχθὲν εἰς Μεσσήνην ἀπέπλευσεν. Δέκιος δὲ μέχρι μέν τινος ἐκκαιομένης τῆς ὁράσεως ἀλγηδόνας τε δεινὰς ὑπομένων ἠνείχετο τὸν ἰατρὸν προσδεχόμενος· ὡς δὲ πολὺς ἐγίγνετο ὁ χρόνος καὶ τὰς περιωδυνίας ἀδύνατος ἦν ἔτι φέρειν, σπογγίσας τὸ φάρμακον καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀνοίξας ἔγνω τὰς ὄψεις ἐκκεκαυμένας, καὶ τὸν ἐξ ἐκείνου χρόνον διέμεινε τυφλός· ἡμέρας τε ὀλίγας ἔτι περιενέγκας ὑποχείριος τοῖς Ῥωμαίοις γίγνεται συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν ἰδίων. ταύτην γὰρ οἰόμενοί τινες ἀπολογίαν [Φαβρικίου] τήν τε πόλιν ἀνέῳξαν τῷ στρατηγῷ καὶ τὸν Δέκιον δήσαντες παρέδοσαν Φαβρικίῳ. ὁ δὲ τὴν μὲν πόλιν ἀποδίδωσι τοῖς περιοῦσι Ῥηγίνων, τοὺς δὲ φρουροὺς ἅπαντα καταλιπεῖν αὐτόθι κελεύσας ἀπήγαγεν οὐδὲν ἐπιφερομένους ἔξω τῶν ὅπλων· ἐξ ὧν τοὺς κορυφαιοτάτους ἄνδρας ἐπιλεξάμενος, οὓς ἀπέφαινον οἱ λοιποὶ τῶν ἀνοσίων βουλευμάτων εἶναι κοινωνούς, δεσμίους εἰς Ῥώμην ἤγαγεν· οὓς ἐν ἀγορᾷ μάστιξιν αἰκισάμενοι, ὡς ἦν πάτριον ἐπὶ τοῖς κακούργοις κείμενον, ἀπέκτειναν τῷ πελέκει τὰς κεφαλὰς ἀποκοπέντας, ἐκτὸς Δεκίου καὶ τοῦ γραμματέως·

Δέκιός τις Καμπανὸς φρούραρχος ἐν τῇ Ῥηγίνων πόλει καταλειφθεὶς ὑπὸ Φαβρικίου Ῥωμαίων ὑπάτου, καὶ τῆς εὐδαιμονίας τῆς πόλεως ἐρασθείς, ἐπιστολὴν πλασάμενος ὡς παρὰ ξένου δή τινος ἰδίου, ἐν ᾗ ἐδηλοῦτο μέλλων ὁ βασιλεὺς Πύρρος ἀποστέλλειν ἐπὶ τὸ Ῥήγιον πεντακισχιλίους ἄνδρας καταληψομένους τὴν πόλιν, ἀνοίξειν ὑποσχομένων αὐτοῖς Ῥηγίνων τὰς πύλας, ταύτην εὑρὼν πρόφασιν τοὺς

οὗτοι δὲ παρακρουσάμενοι τοὺς φυλάττοντας ἢ χρήμασιν ὠνησάμενοι τὸ μὴ μεθ' ὕβρεως ἀποθανεῖν ἑαυτοὺς διεχειρίσαντο. καὶ ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτοις. *Esc.*

VI. (19, 2) Αὐτὸς δὲ ὁ Πύρρος τοὺς Ὁμηρικοὺς ἐπιφθεγξάμενος στίχους, οὓς Ἕκτωρ αὐτῷ πεποίηται πρὸς Αἴαντα λέγων, ὡς ὑπὸ Ῥωμαίων εἰρημένους πρὸς ἑαυτόν·

Τῷ σε καὶ οὐκ ἐθέλω βαλέειν, τοιοῦτον ἐόντα,
Λάθρη ὀπιπτεύσας, ἀλλ' ἀμφαδόν, αἴ κε τύχοιμι

καὶ μετὰ τοῦτ' εἰπὼν ὅτι κινδυνεύει πονηρὰν πεποιῆσθαι τὴν ὑπόθεσιν τοῦ πολέμου πρὸς ἀνθρώπους ὁσιωτάτους Ἑλλήνων καὶ δικαιοτάτους, μίαν ἔφη θεωρεῖν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολέμου καλὴν καὶ συμφέρουσαν, εἰ φίλους ἀντὶ πολεμίων αὐτοὺς ποιήσαιτο, φιλανθρωπίας τινὸς μεγάλης καταρξάμενος.

(3) Προαχθῆναι δὲ κελεύσας τοὺς Ῥωμαίων αἰχμαλώτους, καὶ δοὺς ἅπασιν ἐσθῆτας ἐλευθέροις πρεπούσας σώμασι καὶ ἐνοδίους δαπάνας, παρεκάλεσεν αὐτοὺς μεμνῆσθαι, οἷος εἰς αὐτοὺς ἐγένετο, καὶ τοῖς ἄλλοις λέγειν· ὅταν δ' εἰς τὰς ἑαυτῶν ἔλθωσι πατρίδας, πάσῃ προθυμίᾳ πράττειν ὅπως φίλους ποιήσουσι τὰς πόλεις.

Ἄμαχον δή τινα ἰσχὺν τὸ βασιλικὸν ἔχει χρυσίον, καὶ οὐδεμία εὕρηται πρὸς τοῦτο τὸ βέλος ἀνθρώποις φυλακή. *Ambr.*

2358 VII. (19, 4) Ὅτι Κλεινίας ὁ Κροτωνιάτης τύραννος ὢν ἀφείλετο τὴν ἐλευθερίαν τὰς πόλεις, φυγάδας

Ῥηγίνους πάντας κατέσφαξε, καὶ τὰς αὐτῶν γυναῖκας καὶ παρθένους μετὰ τῶν στρατιωτῶν διελόμενος, τύραννος τῆς πόλεως ἦν· μετὰ δέ, νοσήσας τοὺς ὀφθαλμούς, ἰατρὸν ἐκ Μεσήνης μεταπέμπεται, Δεξικράτην ὄνομα, πυνθανόμενος ἄριστον αὐτὸν εἶναι. *Ambr.*

ἀθροίσας ἐκ παντὸς τόπου καὶ δούλους ἐλευθερώσας·
οἷς τὴν τυραννίδα κρατυνάμενος τοὺς ἐπιφανεστάτους 2359
Κροτωνιατῶν οὓς μὲν ἀπέκτεινεν, οὓς δὲ ἐξέβαλεν
ἐκ τῆς πόλεως· Ἀναξίλας δὲ Ῥηγίνων τὴν ἀκρόπολιν
κατελάβετο, καὶ πάντα τὸν τοῦ βίου χρόνον κατασχὼν Λεόφρονι τῷ παιδὶ τὴν ἀρχὴν κατέλιπε. καὶ ἄλλοι ἀπὸ τούτων δυναστείας ἐν ταῖς πόλεσι κατασκευάσαντες πάντα τὰ πράγματα διέφθειραν. (5) *Ἡ δὲ τελευταία τε καὶ πασῶν μεγίστη κάκωσις ἁπάσαις ταῖς πόλεσιν ἡ Διονυσίου τυραννὶς ἐγένετο τοῦ κρατήσαντος Σικελίας. διέβη γὰρ εἰς Ἰταλίαν ἐπὶ Ῥηγίνους Λοκρῶν ἐπικαλεσαμένων, οἷς ἦσαν οἱ Ῥηγῖνοι διάφοροι· καὶ συνελθόντων ἐπ' αὐτὸν Ἰταλιωτῶν δυνάμεσι μεγάλαις, συνάψας μάχην ἀπέκτεινε συχνοὺς καὶ πόλεις αὐτῶν δύο κατὰ κράτος ἐξεῖλεν. εἶτ' αὖθις ἑτέραν ποιησάμενος διάβασιν Ἱππωνιεῖς ἀνέστησεν ἐκ τῆς ἑαυτῶν, οὓς ἀπήγαγεν εἰς Σικελίαν, καὶ Κροτωνιάτας ἐξεῖλε καὶ Ῥηγίνους, καὶ διετέλεσεν ἔτη δώδεκα τούτων τυραννῶν τῶν πόλεων.*
ἔπειθ' οἱ μὲν τὸν τύραννον δεδιότες τοῖς βαρβάροις 2360
αὑτοὺς ἐνεχείριζον, οἱ δ' ὑπ' ἐκείνων πολεμούμενοι τῷ τυράννῳ τὰς πόλεις παρεδίδοσαν· ὑφ' ὅτου δὲ πάσχοιεν ἀεὶ κακῶς δυσχεραίνοντες εὐρίπου δίκην τῇδε καὶ τῇδε πρὸς τὸ συντυχὸν ἐτράποντο. Vales.

VIII. (19, 6) *Ὅτι Πύρρος διέβη τὸ δεύτερον εἰς Ἰταλίαν, οὐ χωρούντων αὐτῷ τῶν ἐν Σικελίᾳ πραγμάτων κατὰ νοῦν διὰ τὸ μὴ βασιλικὴν φανῆναι τὴν ἡγεμονίαν αὐτοῦ ταῖς ἐπιφανεστάταις πόλεσιν, ἀλλὰ δεσποτικήν. εἰσαχθεὶς γὰρ εἰς Συρακούσας ὑπό τε Σωσιστράτου τοῦ κρατοῦντος τῆς πόλεως τότε καὶ Θοίνωνος τοῦ φρουράρχου, παραλαβὼν παρ' ἐκείνων τὰ χρήματα καὶ ναῦς χαλκεμβόλους ὁμοῦ τι*

διακοσίας, καὶ πᾶσαν ὑφ᾽ ἑαυτῷ ποιησάμενος Σι-
κελίαν πλὴν Λιλυβαίου πόλεως, ἣν ἔτι μόνην Καρ-
χηδόνιοι κατεῖχον, εἰς αὐθάδειαν τυραννικὴν ἐτρά-
πετο. *Vales. et Suidas s. v.* Πύρρος.

(7) Τάς τε γὰρ οὐσίας τῶν Ἀγαθοκλέους οἰκείων
ἢ φίλων ἀφαιρούμενος τοὺς παρ᾽ ἐκείνου λαβόντας
τοῖς ἑαυτοῦ φίλοις ἐχαρίσατο, καὶ τὰς μεγίστας ἐν
ταῖς πόλεσιν ἀρχὰς τοῖς ἰδίοις ὑπασπισταῖς καὶ λοχα-
2361 γοῖς προσένειμεν, οὐ κατὰ τοὺς ἐπιχωρίους ἑκάστης
πόλεως νόμους, οὐδ᾽ εἰς τὸν εἰωθότα χρόνον, ἀλλ᾽
ὡς αὐτῷ φίλον ἦν. δίκας τε καὶ ἀμφισβητήσεις καὶ
τὰς ἄλλας πολιτικὰς οἰκονομίας ἁπάσας τὰς μὲν
αὐτὸς διῄτα, τὰς δὲ τοῖς περὶ τὴν αὐλὴν ἀναστρέ-
φειν καὶ διακρίνειν ἀπεδίδου ἀνθρώποις οὐθὲν ἕτε-
ρον ὁρῶσιν ὅ τι μὴ κερδαίνειν καὶ καθηδυπαθεῖν
τὰς εὐπορίας· καὶ διὰ ταῦτα πάντα βαρὺς ταῖς ὑπο-
δεξαμέναις πόλεσι καὶ μισητὸς ἦν. (8) αἰσθόμενος
δ᾽ ὑπούλως ἤδη πολλοὺς πρὸς ἑαυτὸν ἔχοντας, εἴς
τε τὰς πόλεις φρουρὰς εἰσῆγε πρόφασιν ποιούμενος
τὸν ἀπὸ Καρχηδονίων πόλεμον, καὶ τοὺς ἐπιφανε-
στάτους ἄνδρας ἐξ ἑκάστης πόλεως συλλαμβάνων
ἀπέκτεινεν, ἐπιβουλὰς καὶ προδοσίας εὑρηκέναι ψευ-
σάμενος· ἐν οἷς καὶ Θοίνων ὁ φρούραρχος, ὃς ὑπὸ
πάντων ὡμολόγητο πλείστην σπουδὴν καὶ προθυμίαν
εἴς τε τὴν διάβασιν αὐτῷ καὶ τὴν παράληψιν τῆς
νήσου παρεσχῆσθαι· καὶ γὰρ ὑπήντησεν αὐτῷ ναυ-
2362 τικὸν στόλον ἄγων, καὶ τὴν ἐν ταῖς Συρακούσαις
νῆσον, ἣν αὐτὸς ἐκράτει, παρέσχεν. ἐπιχειρήσας δὲ
καὶ Σωσίστρατον συλλαβεῖν διήμαρτε τῆς ἐλπίδος,
προαισθομένου τὴν ἐπιβουλὴν τοῦ ἀνδρὸς καὶ φυ-
γόντος ἐκ τῆς πόλεως. ἀρξαμένων δὲ ταράττεσθαι
τῶν πραγμάτων καὶ ἡ τῶν Καρχηδονίων πόλις και-

ρὸν ἐπιτήδειον εἰληφέναι νομίζουσα πρὸς ἀνάκτησιν τῶν ἀπολωλότων χωρίων στρατιὰν ἀπέστειλεν ἐπὶ τὴν νῆσον. *Vales.*

IX. (19, 9) Ὅτι ἀμηχανοῦντα τὸν Πύρρον καὶ πόρους παντοδαποὺς ἐπιζητοῦντα ὁρῶντες αὐτὸν οἱ κάκιστοι καὶ ἀνοσιώτατοι τῶν φίλων, Εὐήγορος Θεοδώρου καὶ Βάλακρος Νικάνδρου καὶ Δείναρχος Νικίου, τῶν ἀθέων καὶ ἐξαγίστων δογμάτων ζηλωταί, πόρον ὑποτίθενται χρημάτων ἀνόσιον, τοὺς ἱεροὺς ἀνοῖξαι τῆς Περσεφόνης θησαυρούς. ἦν γὰρ ἱερὸν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἅγιον καὶ πολὺν χρυσὸν ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου πεφυλαγμένον ἄθικτον ἔχον, ἐν ᾧ χρυσός τις ἄβυσσος, ἀόρατος τοῖς πολλοῖς κατὰ γῆς κείμενος. ὑπὸ τούτων ἐξαπατηθεὶς τῶν κολάκων, καὶ τὴν 2363
ἀνάγκην κρείττονα παντὸς ἡγησάμενος πράγματος, τοῖς εἰςηγησαμένοις τὴν γνώμην ἀνδράσι διακόνοις τῆς ἱεροσυλίας ἐχρήσατο, καὶ τὸν ἐξελθόντα χρυσὸν ἐκ τοῦ ἱεροῦ ναυσὶν ἐνθέμενος μετὰ τῶν ἄλλων χρημάτων ἀπέστειλεν εἰς Τάραντα, πολλῆς μεστὸς εὐθυμίας γενόμενος. *Vales. et Suidas s. v.* Πύρρος.

(10) Ἡ δὲ δικαία πρόνοια τὴν αὑτῆς δύναμιν ἀπεδείξατο. ὡς γὰρ ἀνήχθησαν αἱ νῆες ἀπὸ τοῦ λιμένος, τὴν μὲν ἀπόγειον αὔραν λαβοῦσαι προέκοψαν· ἄνεμος δ' ἐναντίος γενόμενος καὶ δι' ὅλης νυκτὸς κατασχὼν ἃς μὲν κατέκλυσεν, ἃς δ' εἰς τὸν τῆς Σικελίας πορθμὸν ἐξέβαλεν, ἐν αἷς δὲ παρεκομίζετο τὰ ἀναθήματα καὶ ὁ προενεχθεὶς ἐκ τῶν ἀναθημάτων χρυσὸς ἐπὶ τοὺς Λοκροὺς ἐξώκειλεν αἰγιαλούς· καὶ τοὺς μὲν πλέοντας ἐν αὐταῖς ἐν τῇ παλιρροίᾳ τῶν κυμάτων κατακλυζομένους διέφθειρε, τὰ δ' ἱερὰ χρήματα διασπασθεισῶν τῶν νεῶν ἐπὶ τὰς ἔγγιστα τῶν Λοκρῶν θῖνας ἐξέβρασεν. ὁ δὲ βασιλεὺς κατα- 2364

πλαγεὶς ἅπαντα τὸν κόσμον καὶ τοὺς θησαυροὺς ἀπέδωκε τῇ θεῷ, ὡς παραιτησόμενος αὐτῆς διὰ τοῦτο τὸν χόλον·

Νήπιος, οὐδὲ τὸ ᾔδει, ὃ οὐ πείσεσθαι ἔμελλεν.
Οὐ γάρ τ' αἶψα θεῶν τρέπεται νόος αἰὲν ἐόντων,

ὡς Ὁμήρῳ εἴρηται. ἀλλ' ἐπειδὴ τῶν ἱερῶν ἐτόλμησεν ἅψασθαι χρημάτων καὶ πόρον ὑποθέσθαι πολέμων, ἀνόνητον ἐποίησε τὴν ἔννοιαν αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον, ἵνα παράδειγμα καὶ παίδευμα πᾶσιν ἀνθρώποις γένοιτο τοῖς μεθ' ἑαυτόν. Vales.

X. (19, 11) *Διὰ τοῦτο καὶ ὑπὸ Ῥωμαίων ἡττήθη ὁ Πύρρος κατὰ κράτος· οὐ γὰρ στρατιά τις φαύλη καὶ ἀνάσκητος ἦν αὐτῷ, ἀλλ' ἡ κρατίστη τῶν τότε οὐσῶν ἐν Ἕλλησι καὶ πλείστους ἀγωνισαμένη πολέμους· οὐδὲ πλῆθος ἀνδρῶν τῶν τότε παραταξαμένων ὀλίγον, ἀλλ' ὅσον καὶ τριπλάσιον εἶναι· οὐδὲ στρατηγὸς τῶν ἐπιτυχόντων τις, ἀλλ' ὃν ἅπαντες ὁμολογοῦσι μέγιστον γενέσθαι τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡλικίαν ἀκμασάντων στρατηγῶν· οὐδὲ τόπου φύσις ἄνισος οὔτ' ἐπικουρίας τοῖς ἑτέροις ἄφιξις αἰφνίδιος*
2365 *οὔτ' ἄλλη τις συμφορὰ καὶ πρόφασις ἀπροσδόκητος ἐπιπεσοῦσα συνέτριψε τὰ Πύρρου πράγματα, ἀλλ' ὁ τῆς ἀσεβηθείσης θεᾶς χολός, ὃν οὐδ' αὐτὸς ἠγνόει Πύρρος, ὡς Πρόξενος ὁ συγγραφεὺς ἱστορεῖ καὶ αὐτὸς ὁ Πύρρος ἐν τοῖς ἰδίοις ὑπομνήμασι γράφει.* Vales.

XI. (19, 12) *Ἔμελλον ὅπερ εἰκὸς ὁπλῖται κράνεσι καὶ θώραξι καὶ θυρεοῖς βαρεῖς πρὸς ὀχθηρὰ χωρία καὶ μακρὰς ἀτραποὺς πορευόμενοι καὶ οὐδὲ ταύτας λεωφόρους, ἀλλ' αἰγότριβας δι' ὕλης τε καὶ κρημνῶν, τάξιν τε οὐδεμίαν φυλάξειν, καὶ πρὶν ἐπιφανῆναί σφισι τοὺς πολεμίους ἐξασθενήσειν τὰ σώματα δίψει καὶ κόπῳ.*

Τοὺς τοῖς ἱππικοῖς δόρασιν ἐκ διαλαβῆς ἀμφοτέραις ταῖς χερσὶ κρατουμένοις μαχομένους συστάδην καὶ τὰ πολλὰ κατορθοῦντας ἐν ταῖς μάχαις Πρίγκιπας Ῥωμαῖοι καλοῦσιν. *Ambr.*

XII. (19, 13) Ἐν τῇ νυκτί, ἐν ᾗ τὴν στρατιὰν ἀπάξειν ὁ Πύρρος ἔμελλεν ἐπὶ τὸ ὄρος τῷ Ῥωμαίων ἐπιθησόμενος χάρακι λάθρα, ἔδοξε κατὰ τοὺς ὕπνους ἐκπεσεῖν αὐτοῦ τοὺς πλείους ὀδόντας, καὶ πλῆθος αἵματος ἐκ τοῦ στόματος φέρεσθαι. ταραχθεὶς δὲ διὰ τὴν ὄψιν καὶ μεγάλην ἔσεσθαι συμφορὰν μαντευόμενος· ἤδη γὰρ αὐτῷ καὶ πρότερον τοιαύτην ὄψιν ἐνυπνίου θεασαμένῳ δεινή τις συνέβη δυσποτμία· ἐβούλετο μὲν ἐπισχεῖν τὴν ἡμέραν ἐκείνην, οὐκ ἴσχυσε δὲ νικῆσαι τὴν πεπρωμένην, ἐναντιουμένων τῶν φίλων πρὸς τὴν ἀναβολὴν καὶ μὴ μεθεῖναι τὸν καιρὸν ἐκ τῶν χειρῶν ἀξιούντων. *Vales. Ambr.*

(14) Ἀναβάντων δὲ τῶν σὺν τῷ Πύρρῳ μετὰ τῶν ἐλεφάντων αἴσθησιν οἱ Ῥωμαῖοι λαβόντες σκυμνίον ἐλέφαντος τιτρώσκουσιν, ὃ πολλὴν ἀκοσμίαν τοῖς Ἕλλησιν ἐνεποίησε καὶ φυγήν· οἱ δὲ Ῥωμαῖοι δύο μὲν ἐλέφαντας ἀποκτείνουσιν, ὀκτὼ δὲ κατακλείσαντες εἰς χωρίον ἀνέξοδον παραδόντων τῶν ἐπ' αὐτοῖς Ἰνδῶν ζῶντας παραλαμβάνουσι· τῶν δὲ στρατιωτῶν πολὺν φόνον ἐργάζονται. *Ambr.*

XIII. (20, 1) Ὁ ὕπατος Φαβρίκιος τιμητὴς γενόμενος ἄνδρα δυσὶ μὲν ὑπατείαις, μιᾷ δὲ δικτατωρείᾳ κεκοσμημένον, Πόπλιον Κορνήλιον Ῥουφῖνον ἐξέβαλεν ἐκ τοῦ συνεδρίου τῆς βουλῆς, ὅτι πρῶτος ἐν ἀργυρῶν ἐκπωμάτων κατασκευῇ πολυτελὴς ἔδοξε γενέσθαι, δέκα λίτρας ἐκπωμάτων κτησάμενος· αὗται δ' εἰσὶν ὀλίγῳ πλείους ὀκτὼ μνῶν Ἀττικῶν. *Ambr.*

(2) Ἀθηναῖοι μὲν δ᾽ξης ἔτυχον, ὅτι τοὺς ῥαθύμους καὶ ἀργοὺς καὶ μηδὲν ἐπιτηδεύοντας τῶν χρησίμων ὡς ἀδικοῦντας τὸ κοινὸν ἐζημίουν· Λακεδαιμόνιοι δέ, ὅτι τοῖς πρεσβυτάτοις ἐπέτρεπον τοὺς ἀκοσμοῦντας τῶν πολιτῶν ἐν ὁτῳδήτινι τῶν δημοσίων τόπῳ ταῖς βακτηρίαις παίειν· τῶν δὲ κατ᾽ οἰκίαν γενομένων οὔτε πρόνοιαν οὔτε φυλακὴν ἐποιοῦντο, τὴν αὔλειον θύραν ἑκάστῳ ὅρον εἶναι τῆς ἐλευθερίας τοῦ βίου νομίζοντες. (3) Ῥωμαῖοι δὲ πᾶσαν ἀναπετάσαντες οἰκίαν, καὶ μέχρι τοῦ δωματίου τὴν ἀρχὴν τῶν τιμητῶν προαγαγόντες, ἁπάντων ἐποίησαν ἐπίσκοπον καὶ φύλακα τῶν ἐν αὐταῖς γινομένων, οὔτε δεσπότην οἰόμενοι δεῖν ὠμὸν εἶναι περὶ τὰς τιμωρίας οἰκετῶν, οὔτε πατέρα πικρὸν ἢ μαλθακὸν πέρα τοῦ μετρίου περὶ τέκνων ἀγωγάς, οὔτε ἄνδρα περὶ κοινωνίαν γαμετῆς γυναικὸς ἄδικον, οὔτε παῖδας γηραιῶν ἀπειθεῖς πατέρων, οὔτε ἀδελφοὺς γνησίους τὸ πλεῖον ἀντὶ τοῦ ἴσου διώκοντας, οὐ συμπόσια καὶ μέθας παννυχίους, οὐκ ἀσελγείας καὶ φθορὰς ἡλικιῶν νέων, οὐχ ἱερῶν ἢ ταφῶν προγονικὰς τιμὰς ἐκλιπούσας, οὐκ ἄλλο τῶν παρὰ τὸ καθῆκον ἢ συμφέρον τῇ πόλει πραττομένων οὐδέν.

ἐληίζοντο τὰς κτήσεις τῶν πολιτῶν κατὰ τὴν τοῦ βασιλίζειν αἰτίαν. *Ambr.*

XIIII. (20, 4) Νεμέριος Φάβιος Πίκτωρ καὶ Κόιντος Φάβιος Μάξιμος καὶ Κόιντος Ὀγούλνιος πρὸς τὸν Φιλάδελφον Πτολεμαῖον πρεσβεύσαντες [περὶ πρεσβείας] καὶ δωρεαῖς ἰδίαις τιμηθέντες ὑπ᾽ αὐτοῦ· ἦρχε δὲ τῆς Αἰγύπτου δεύτερος μετὰ τὸν Μακεδόνα Ἀλέξανδρον· ἐπειδὴ κατέπλευσαν εἰς τὴν πόλιν, τά τε ἄλλα ἀπήγγειλαν ὅσα διεπράξαντο κατὰ τὴν ἀποδημίαν, καὶ τὰς δωρεὰς ἃς παρὰ τοῦ βασι-

λέως ἔλαβον εἰς τὸ δημόσιον ἀνήνεγκαν· οὓς ἡ βουλὴ πάντων ἀγασθεῖσα τῶν ἔργων οὐκ εἴασε δημοσιῶσαι τὰς βασιλικὰς χάριτας, ἀλλ' εἰς τοὺς ἑαυτῶν οἴκους ἀπενέγκασθαι τιμὰς ἀρετῆς καὶ κόσμους ἐκγόνοις. *Ambr.*

XV. (20, 5) *Οἱ Βρέττιοι ἑκόντες ὑποταγέντες Ῥωμαίοις τὴν ἡμίσειαν τῆς ὀρεινῆς παρέδωκαν αὐτοῖς, ἣ καλεῖται μὲν Σίλα, μεστὴ δ' ἐστὶν ὕλης εἰς οἰκοδομάς τε καὶ ναυπηγίας καὶ πᾶσαν ἄλλην κατασκευὴν εὐθέτου· πολλὴ μὲν γὰρ ἐλάτη πέφυκεν οὐρανομήκης ἐν αὐτῇ, πολλὴ δὲ αἴγειρος, πολλὴ δὲ πίειρα πεύκη ὀξύη τε καὶ πίτυς καὶ φηγὸς ἀμφιλαφὴς καὶ μελίαι ταῖς διαρρεούσαις λιβάσι πιαινόμεναι, καὶ πᾶσα ἄλλη βαθεῖα συνυφαινομένη τοῖς κλάδοις ὕλη σκιερὸν ἀποτελοῦσα δι' ὅλης ἡμέρας τὸ ὄρος.*

(6) *Ἐξ ἧς ἡ μὲν ἔγγιστα θαλάττης καὶ ποταμῶν φυομένη τμηθεῖσα τὴν ἀπὸ ῥίζης τομὴν ὁλόκληρος ἐπὶ τοὺς λιμένας τοὺς ἔγγιστα κατάγεται, πάσῃ διαρκὴς Ἰταλίᾳ πρός τε τὰ ναυτικὰ καὶ πρὸς τὰς τῶν οἰκιῶν κατασκευάς· ἡ δὲ ἄνω θαλάττης καὶ ποταμῶν πρόσω κορμασθεῖσα κατὰ μέρη κώπας τε παρέχει καὶ κοντοὺς καὶ ὅπλα παντοῖα καὶ σκεύη τὰ κατοικίδια, φοράδην ὑπ' ἀνθρώπων κομιζομένη· ἡ δὲ πλείστη καὶ πιοτάτη πιττουργεῖται καὶ παρέχει πασῶν ὧν ἴσμεν ἡμεῖς εὐωδεστάτην τε καὶ γλυκυτάτην τὴν καλουμένην Βρεττίαν πίτταν· ἀφ' ἧς μεγάλας ὁ τῶν Ῥωμαίων δῆμος καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἐκ τῶν μισθώσεων λαμβάνει προσόδους.* *Ambr.*

XVI. (20, 7) *Ἐγένετο δευτέρα ἐπανάστασις ἐν τῇ πόλει τῶν Ῥηγίνων ὑπὸ τῆς καταλειφθείσης αὐτόθι Ῥωμαικῆς καὶ συμμαχικῆς φρουρᾶς, καὶ δι' αὐτὴν σφαγαί τε πολλῶν ἀνθρώπων καὶ φυγαί. τού-*

τους τιμωρησόμενος τοὺς ἀποστάντας ἅτερος τῶν ὑπάτων Γάιος Γενύκιος ἐξήγαγε τὴν στρατιάν· γενόμενος δὲ τῆς πόλεως ἐγκρατής, Ῥηγίνων μὲν τοῖς φυγάσι ἀπέδωκε τὰ ἑαυτῶν ἔχειν, τοὺς δὲ ἐπιθεμένους τῇ πόλει συλλαβὼν δεσμίους εἰς Ῥώμην ἀπήγαγεν· ἐφ' οἷς οὕτως ὠργίσθη καὶ ἠγανάκτησεν ἥ τε βουλὴ καὶ ὁ δῆμος, ὥστε μηδεμίαν γνώμην ἐπιεικῆ γενέσθαι περὶ αὐτῶν, ἀλλὰ πάσαις ταῖς φυλαῖς δὴ ἁπάντων τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις τὸν ἐπὶ τοῖς κακουργοῖς τεταγμένον ὑπὸ τῶν νόμων καταψηφισθῆναι θάνατον. (8) Κυρωθέντος δὲ τοῦ περὶ τῆς τιμωρίας δόγματος πάτταλοί τε κατεπάγησαν ἐν τῇ ἀγορᾷ, καὶ παραγόμενοι κατὰ τριακοσίους ἄνδρας, περιηγμένοι τοὺς ἀγκῶνας ὀπίσω προσεδοῦντο τοῖς παττάλοις γυμνοί· ἔπειτα μάστιξιν αἰκισθέντες ἁπάντων ὁρώντων ἀπεκόπτοντο τῷ πελέκει τοὺς ὑπὸ ταῖς κεφαλαῖς νωτιαίους τένοντας· καὶ μετὰ τούτους ἕτεροι τριακόσιοι, καὶ αὖθις ἄλλοι τοσοῦτοι διεφθάρησαν, οἱ σύμπαντες τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι. καὶ οὐδὲ ταφῆς ἔτυχον, ἀλλ' ἑλκυσθέντες ἐκ τῆς ἀγορᾶς εἰς ἀναπεπταμένον τι πρὸ τῆς πόλεως χωρίον ὑπὸ οἰωνῶν καὶ κυνῶν διεφθάρησαν. *Ambr.*

XVII. (20, 9) τὸ ἄπορον πλῆθος, ᾧ καλῶν καὶ δικαίων φροντὶς ἦν οὐδεμία, παρακρουσθὲν ὑπὸ Σαυνίτου τινὸς εἰς τὸ αὐτὸ συνέρχεται. καὶ τὸ μὲν πρῶτον ἐπὶ τοῖς ὄρεσιν ἄγραυλον καὶ μείονα τὸν βίον εἶχεν· ἐπεὶ δὲ πλεῖον ἤδη καὶ ἀξιόμαχον ἐδόκει γεγονέναι, πόλιν ἐχυρὰν καταλαμβάνεται, ὅθεν ὁρμώμενον ἐληίζετο πᾶσαν τὴν κύκλῳ χώραν. ἐπὶ τούτους ἐξήγαγον στρατιὰν οἱ ὕπατοι· καὶ οὐ πολλῇ σὺν πραγματείᾳ τὴν πόλιν αἱρησά-

μενοι, τοὺς μὲν αἰτίους τῆς ἀποστάσεως αἰκισάμενοι ῥάβδοις ἀπέκτειναν· τοὺς δὲ λοιποὺς ἐλαφυροπώλησαν. ἔτυχε τῷ πρότερον ἐνιαυτῷ πεπραμένη μετὰ τῶν ἄλλων δορικτήτων ἡ γῆ, καὶ τὸ πεσὸν ἀπὸ τῆς τιμῆς ἀργύριον διῃρημένον τοῖς πολίταις. *Ambr.*

INDEX SCRIPTORUM.

INDEX NOMINUM.

B.

C.

G.

H.

I.

L.

M.

Q.

R.

S.

V.

X.

Z.
